जतारा का ध्रुव तारा

(जीवनी : आचार्य श्री विमर्शसागरजी महाराज)
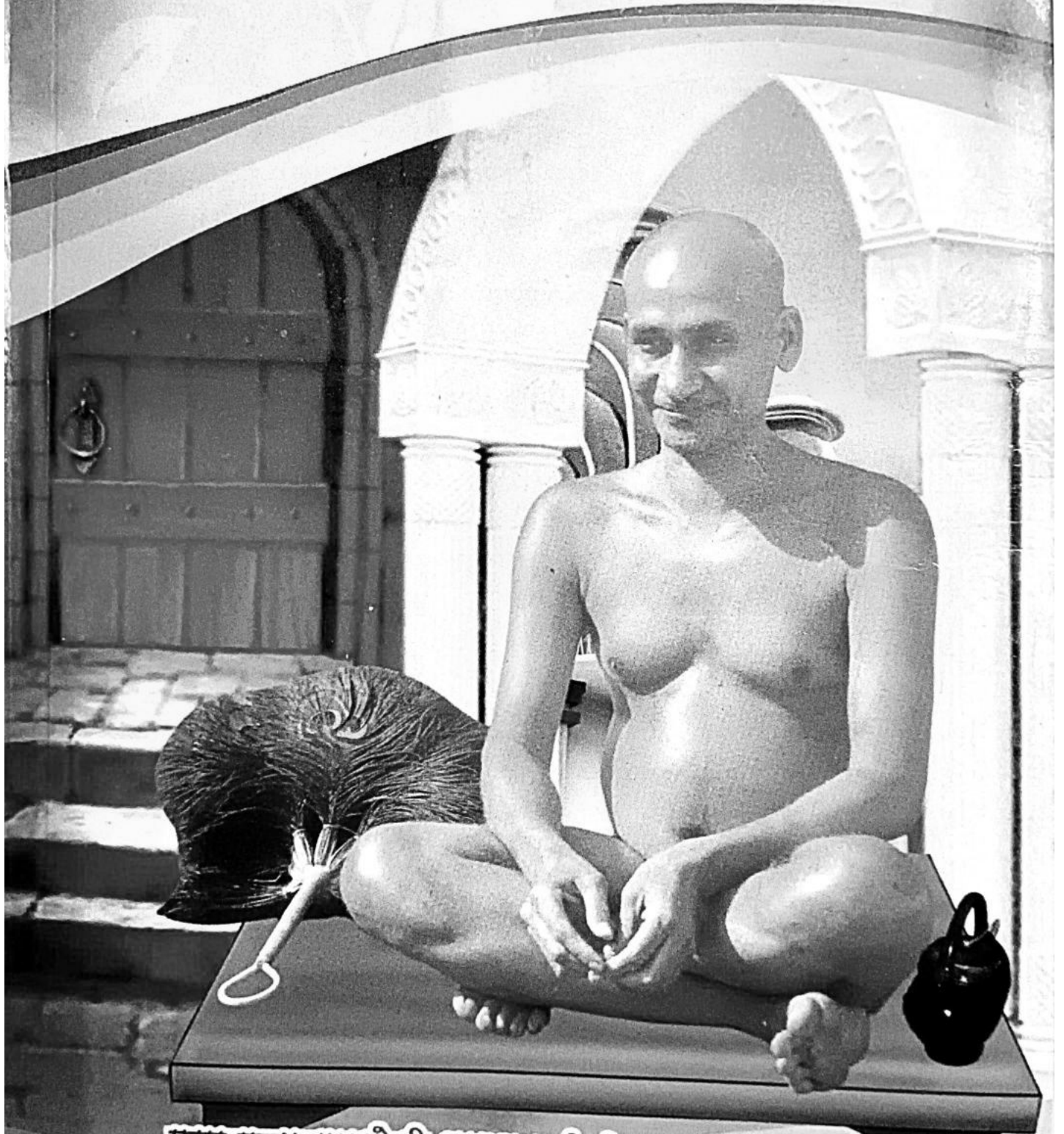
परम पूज्य राष्ट्रयोगी श्रमणाचार्य श्री 108 विमर्शसागरजी महाराज

लेखक : कपूरचन्द्र जैन 'बंसल'

आचार्य विरागसागर ग्रंथमाला : (हिन्दी ग्रंथांक-25)

जतारा का ध्रुवतारा

परम पूज्य राष्ट्रयोगी श्रमणाचार्य श्री 108 विमर्शसागरजी महाराज

लेखक : कपूरचन्द्र 'बंसल'

श्री विमर्श जागृति मंच, प्रकाशन

आचार्य विरागसागर ग्रंथमाला : (हिन्दी ग्रंथांक- 25)

जतारा का ध्रुवतारा

कपूरचन्द्र बंसल

प्रकाशक :

श्री विमर्श जागृति मंच (रजि.)

धर्मेन्द्र जैन (पोस्ट ऑफिस वाले), 116, भूता कम्पाउण्ड, इटावा रोड,
भिण्ड (म.प्र.) पिन कोड- 477001 * मो.: 9826217291, 9826244355

प्रथम संस्करण : 2014

मुद्रक : राजू ग्राफिक आर्ट, जयपुर
फोन : 2313339, मो.: 9829050791
E-mail : rajugraphicart@gmail.com, shahsundeep@rocketmail.com

Jatara Ka Dhruvtara
By Kapoor Chand Bansal

Published by :
Shri Vimarsh Jagriti Manch
116, Bhuta Compound etawah Road, Behind (M.P.)

वंदनीय आचार्य परम्परा
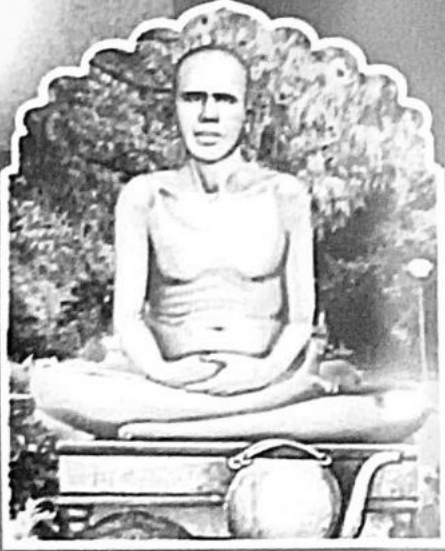
प.पू. चा.च. मुनि कुञ्जर,
आचार्य 108 श्री आदिसागरजी महाराज
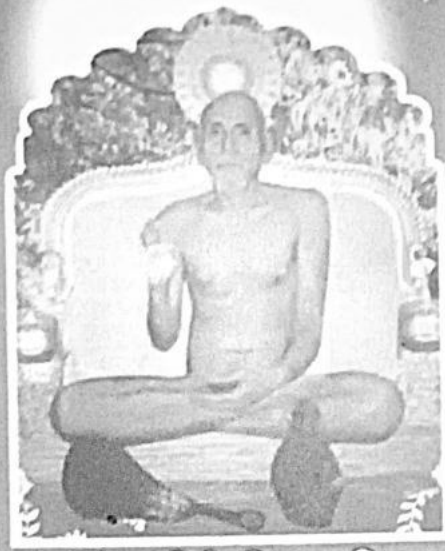
प.पू. तीर्थभक्त शिरोमणि, समाधि सम्राट,
आचार्य 108 श्री महावीरकीर्तिजी महाराज
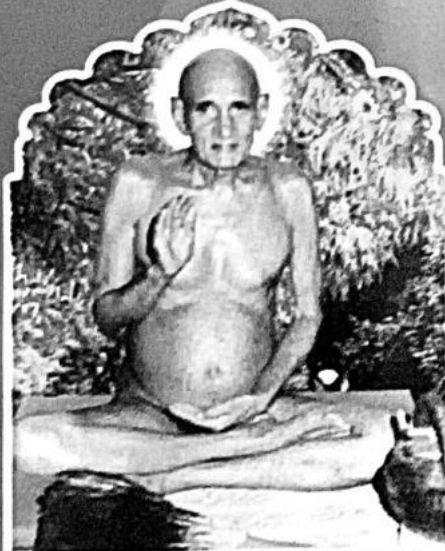
प.पू. वात्सल्य रत्नाकर, सन्मार्ग दिवाकर,
आचार्य 108 श्री विमलसागरजी महाराज
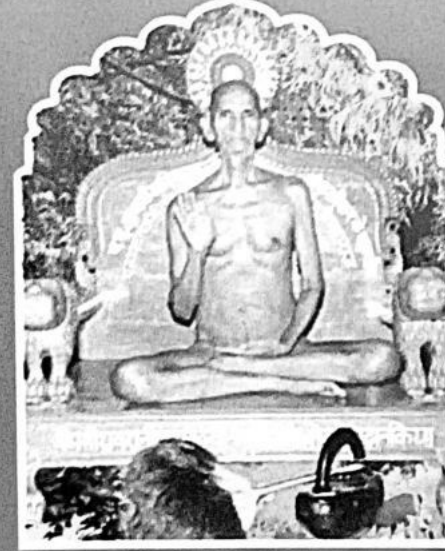
प.पू. तपस्वी सम्राट
आचार्य 108 श्री सन्मतिसागरजी महाराज
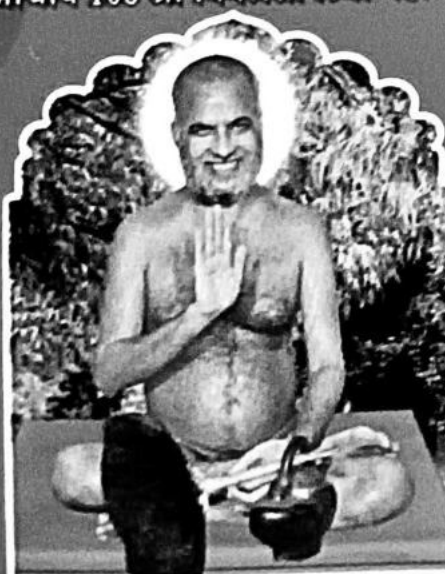
प.पू. सूरिगच्छाचार्य 108
श्री विरागसागरजी महाराज
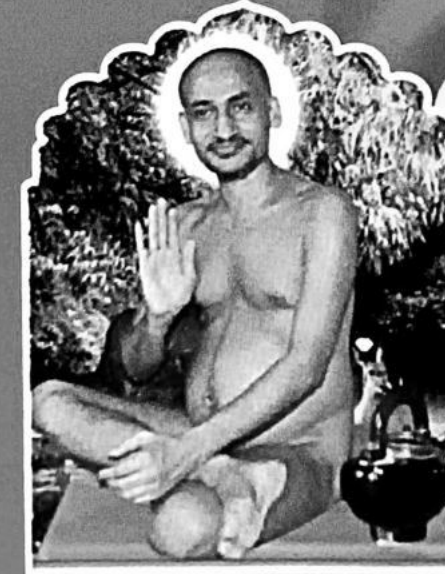
परम पूज्य श्रमणाचार्य
श्री 108 विमर्शसागरजी महाराज
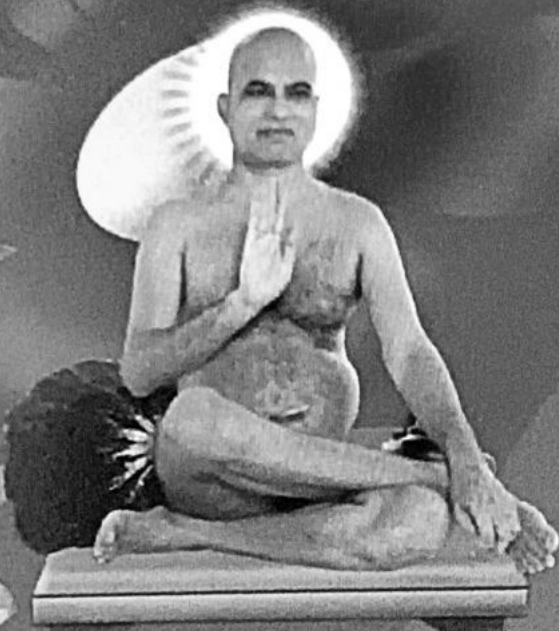
प.पू. सूरिगच्छाचार्य 108
श्री विरागसागरजी महाराज
परम पूज्य श्रमणाचार्य श्री 108 विमर्शसागरजी महाराज
नमन कर्त्ता :
श्री निर्मलकुमारजी-श्रीमती मधुबाला सेठी
अनुराग-श्रीमती सरिता सेठी
मा. आरव (दरॉटु वाले), कोटा
श्री हेमन्तकुमारजी - श्रीमती ज्योति जैन
शुभम, सोभीत जैन (आमली वाले)
1 एच-44, महावीर नगर, कोटा
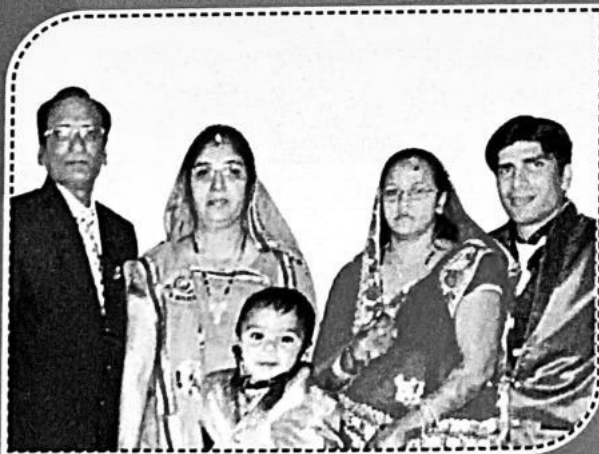
संस्थापक ग्रंथमाला

श्री कस्तूरचन्दजी बाबरिया
(दौतड़ा वाले)

श्री धापूबाई बाबरिया
(दौतड़ा वाले)

शिरोमणि संरक्षक

श्री विनोदकुमारजी मित्तल
श्रीमती कल्पनाजी मित्तल
C/o लाईम स्टोन ट्रेडर्स
बाजार नं.2, रामगंज मण्डी

डॉ. सुगनचन्दजी जैन
श्रीमती ऊषा जैन
अशोक नगर (म.प्र.)

श्री पदमचन्दजी पाटनी
श्रीमती कमलादेवी पाटनी
1-घ-34, दादाबाड़ी,
कोटा-324009 (राज.)

श्री लक्ष्मीलालजी जैन
श्रीमती भगवती जैन
डूँगरपुर (राज.)

श्री भगवतीलालजी जैन
श्रीमती शोभा जैन
डूँगरपुर (राज.)

श्री पुरुषोत्तमजी जैन
श्रीमती मीरा जैन
शिवपुरी (म.प्र.)

लेखक का नम्र निवेदन
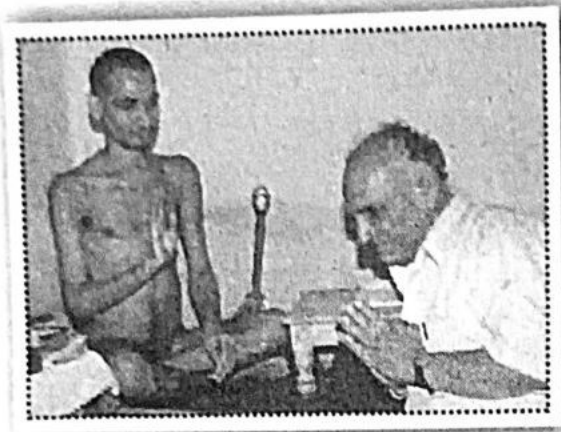
बुन्देलखण्ड के प्रथमजैनाचार्य, उपसर्ग विजेता, राष्ट्रसंत परम पूज्य गणाचार्य श्री विरागसागरजी महाराज के प्रियाग्र शिष्य, कवि हृदय, श्रमण गौरव, परम पूज्य आचार्य श्री विमर्शसागरजी महाराज को गुरुवार, दिनांक 15 नवम्बर, 1973 को जन्म देने का सौभाग्य हमारे नगर जतारा, जिला-टीकमगढ़ (म.प्र.) को प्राप्त हुआ है जिससे नगर जतारा स्वयं में धन्य होकर उसके सभी नगरवासी कृतार्थ हो गये हैं।

भैया राकेशजी परम पूज्य आचार्य श्री विमर्शसागरजी महाराज के गृहस्थावस्था का पूर्व नाम। बचपन से ही कुशाग्र बुद्धि एवं बहुमुखी प्रतिमा के धनी रहे है। भैयाजी का 22 वर्ष का गृहस्थावस्था का जीवन हम सबके सामने अपूर्व प्रगतिशील कार्यों के साथ व्यतीत हुआ है।

नगर जतारा की जैन सामाजिक संस्था श्री जैन नवयुवक संघ के सदस्य एवं मंत्री पद पर रहने पर भैयाजी ने जो दिव्यघोष नाटक मंचन, सामाजिक सेवा, मुनि सेवा के साथ-साथ बैंडमिंटन, शतरंज आदि खेलों में जो कीर्ति जतारा में पाई है, वह चिर-स्मरणीय रहेगी। सभी क्षेत्रों में उनकी भागीता सर्वश्रेष्ठ रही है।

मेरा एवं मेरे परिवार का भैया राकेशजी से घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है। भैया राकेशजी मुझे 'गुरुजी' शब्द से सम्बोधित किया करते रहे है।

श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र आहारजी, टीकमगढ़ (म.प्र.) के प्रांगण में जब भैयाजी परम पूज्य आचार्य श्री विरागसागरजी महाराज के कर-कमलों से दिनांक 27 फरवरी, 1995 के ब्रह्मचर्य व्रत अंगीकार करने वाले थे इसके पूर्व मैंने आहारजी में भैयाजी को असफल प्रयास भी किया था।

भैयाजी की ऐलक दीक्षा के पूर्व दिनांक 13 फरवरी, 1996 को भव्य बिनोली समारोह के पूर्व ब्रह्मचर्यावस्था में अन्तिम भोजन मेरे निवास पर ही हुआ था। तथा उक्त दिवस को आयोजित भव्य बिनोली महोत्सव में मैं एवं मेरा परिवार भैयाजी के साथ–साथ रहा है।

भैया राकेशजी की ऐलक दीक्षा (दिनांक 23 फरवरी, 1996) भैयाजी का ऐलक दीक्षोपरान्त नामकरण परम पूज्य ऐलक श्री विमर्शसागरजी महाराज हुआ।

परम पूज्य ऐलक श्री विमर्शसागरजी महाराज द्वारा परम पूज्य आचार्य श्री विरागसागरजी महाराज के कर–कमलों से दिनांक 14 दिसम्बर, 1998 को अन्य 12 भव्य–आत्माओं के साथ मुनि दीक्षा ग्रहण करने पर मैं नगर जतारा के अनेक श्रद्धालुओं के साथ मुनि दीक्षा स्थल श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र बरासोजी, भिण्ड (म.प्र.) के प्रांगण में परम पूज्य महाराजश्री के मुनि अवस्था में दर्शन करने गया।

दिनांक 12 दिसम्बर, 2010 को बाँसवाड़ा (राज.) में परम पूज्य गणाचार्य श्री विरागसागरजी महाराज के कर–कमलों से परम पूज्य मुनि श्री विमर्शसागरजी महाराज के आचार्य पद पर प्रतिष्ठित किये जाने पर नगर जतारा का हर नागरिक, हर श्रद्धालु अपने को धन्य मानने लगा और नगर जतारा अपने नगर के गौरव पुंज एवं लाड़ले सपूत के आचार्य पद पर प्रतिष्ठित होने पर कृतार्थ हो गया।

आचार्य पद पर प्रतिष्ठित होने पर नगर जतारा के अनेक श्रद्धालुजनों ने विभिन्न स्थानों पर 15 बार दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त किया है जिसमें दो स्थानों पर जाना मैं भी अपने नगर के गौरव पुंज परम पूज्य आचार्य श्री विमर्शसागरजी महाराज के दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त किया।

लगभग 22 वर्ष तक गृहस्थावस्था में घनिष्ठ सम्पर्क में रहने साधू जीवन की हर अवस्थाओं ऐलक, मुनि, आचार्य अवस्था में अनेक बार परम पूज्य आचार्य श्री विमर्शसागरजी महाराज के निकट से दर्शन करने पर परम पूज्य महाराज श्री की चर्याओं से प्रभावित होकर तथा अपने नगर के गौरव पुंज पर गौरवान्वित हो मेरे अन्तरंग में यह भावना जागृत हुई कि ऐसे कवि हृदय श्रमण गौरव के जीवन–दर्शन

को लिखूँ। लेखन कार्य में श्रद्धेय बा.ब्र. श्री राजीव भैयाजी (अशोकनगर) वर्तमान में इन्हीं प.पू. आचार्यश्री से दीक्षित परम पूज्य ऐलक श्री विचिन्त्यसागरजी महाराज, परम पूज्य महाराजश्री के गृहस्थावस्था के पिताजी आदरणीय श्री पं. सनतकुमारजी जैन एवं लघु भ्राता भैया श्री चक्रेशकुमारजी जैन का पूरा-पूरा सहयोग मुझे प्राप्त हुआ जिसके लिये मैं उनका आभारी हूँ मेरी इस कृति ''जतारा का ध्रुव तारा'' के संशोधन, मार्गदर्शन प्रकाशन में परम पूज्य आचार्यश्री संघस्थ परम पूज्य ऐलक श्री विचिन्त्यसागरजी महाराज की विशेष कृपा दृष्टि रही है। उसके लिये मैं परम पूज्य ऐलक महाराज के पावन चरणों का विशेष आभारी हूँ।

इस पुस्तक के प्रकाशन के पुण्यार्जक आदरणीय श्री निर्मलजी सेठी एवं हेमन्तकुमारजी जैन, महावीर नगर विस्तार, कोटा है। उनका भी मैं हृदय से आभारी हूँ जिन्होंने अपना आर्थिक सहयोग देकर तथा इस कृति का प्रकाशन करवाकर परम पूज्य आचार्य श्री विमर्शसागरजी महाराज के पावन जीवन दर्शन को जन-जन तक पहुँचाने का पुण्यार्जन किया है।

इस कृति में त्रुटियाँ होना स्वाभाविक है। अतः पाठक महानुभाव उसे सुधार कर पढ़ते हुये त्रुटियों से मुझे अवगत कराने का कष्ट करे। ऐसी मेरी सबसे विनम्र प्रार्थना है।

परम पूज्य गुरुवर, गणाचार्य श्री विरागसागरजी महाराज के पावन चरणों में उनके द्वारा प्रदत्त मंगल आशीर्वाद के लिये उनके चरणों का आभार व्यक्त करता हुआ मैं उनके पावन चरणों में त्रिकाल नमोऽस्तु निवेदित करता हूँ।

अंत में इस कृति के नायक परम पूज्य आचार्य श्री विमर्शसागरजी महाराज के पावन चरणों में बारम्बार नमन करता हुआ पुस्तक में होने वाली त्रुटियों के लिये हृदय से क्षमायाचना करता हूँ।

निवेदक

कपूरचन्द्र जैन 'बंसल'

श्री गोकुल सदन, जतारा, जिला-टीकमगढ़ (म.प्र.)

* विषय की क्रम बद्धता *

प्रथम खण्ड : 1 से 18

समय के गर्भ में समय का पल्लवन

द्वितीय खण्ड : 19 से 34

समय की प्राप्ति के लिये बढ़ते कदम

तृतीय खण्ड : 35 से 54

संयम के पथ पर समय का गमन

चतुर्थ खण्ड : 55 से 76

समय (आत्मा) को पाने संयम की यात्रा

पंचम खण्ड : 77 से 162

समय (आत्मा) को पाने समय की साधना

* दीक्षा होते ही परीक्षा
* द्वय गुरू भाईयों का अदभुत मिलन
* मूलसंघ से निकले उपसंघ
* नायक ने संघ नायक बनाया
* जखौरा में प्रभावना का जखीरा
* खुशनसीब जखौरा
* सम्यक्ज्ञान की प्रेरणा
* वर्षायोग २००० (महरौनी)
* मानस पटल पर अंकित वर्षायोग २००१ (सागर)
* रजवास में पंचकल्याणक
* गुरू चरणों में मुनि श्री
* सतना वर्षायोग २००२
* श्रेयांसगिरी में गुरू चरणों में
* महरौनी पंच कल्याणक
* अशोक नगर के साधक अशोकनगर में
* संतों की समता
* गुरू कृपा से विश्व तीर्थ बन गये
* वर्षायोग २००४ रामगंजमण्डी
* तीर्थंकर समवाणी

* हृदय परिवर्तन गुरू की चर्या से
* ये छोटा सा चन्दा सबके दिल में बसा है
* ४० साल में पहली बार
* अभूतपूर्व नगर प्रवेश (सिंगोली वर्षायोग २००५)
* साधना का चमत्कार
* तुमने धीरज हमें बंधाया
* हर रोज रविवार है
* आचार्य पद की घोषणा
* जहाँ भी देखता हूँ भगवान आत्मा दिखता है।
* नान्यथा मुनि भाषण
* कोटा चातुर्मास २००६,
* आनंद महोत्सव
* चर्या से समझौता नहीं
* शिवपुरी के साधक शिवपुरी में
* हवा ने भी बदला रुख
* आगरा में आगमन वर्षायोग २००८
* ११ वां यादगार मुनि दीक्षा दिवस
* १०८ के चरणों में १००८
* मुनि अवस्था में झलकता आचार्यत्व
* वात्सल्य शिरोमणि
* अब बुलाना तो दिगम्बर बुलाना

जतारा का ध्रुव तारा

जतारा का ध्रुव तारा

समय के गर्भ में समय का पल्लवन
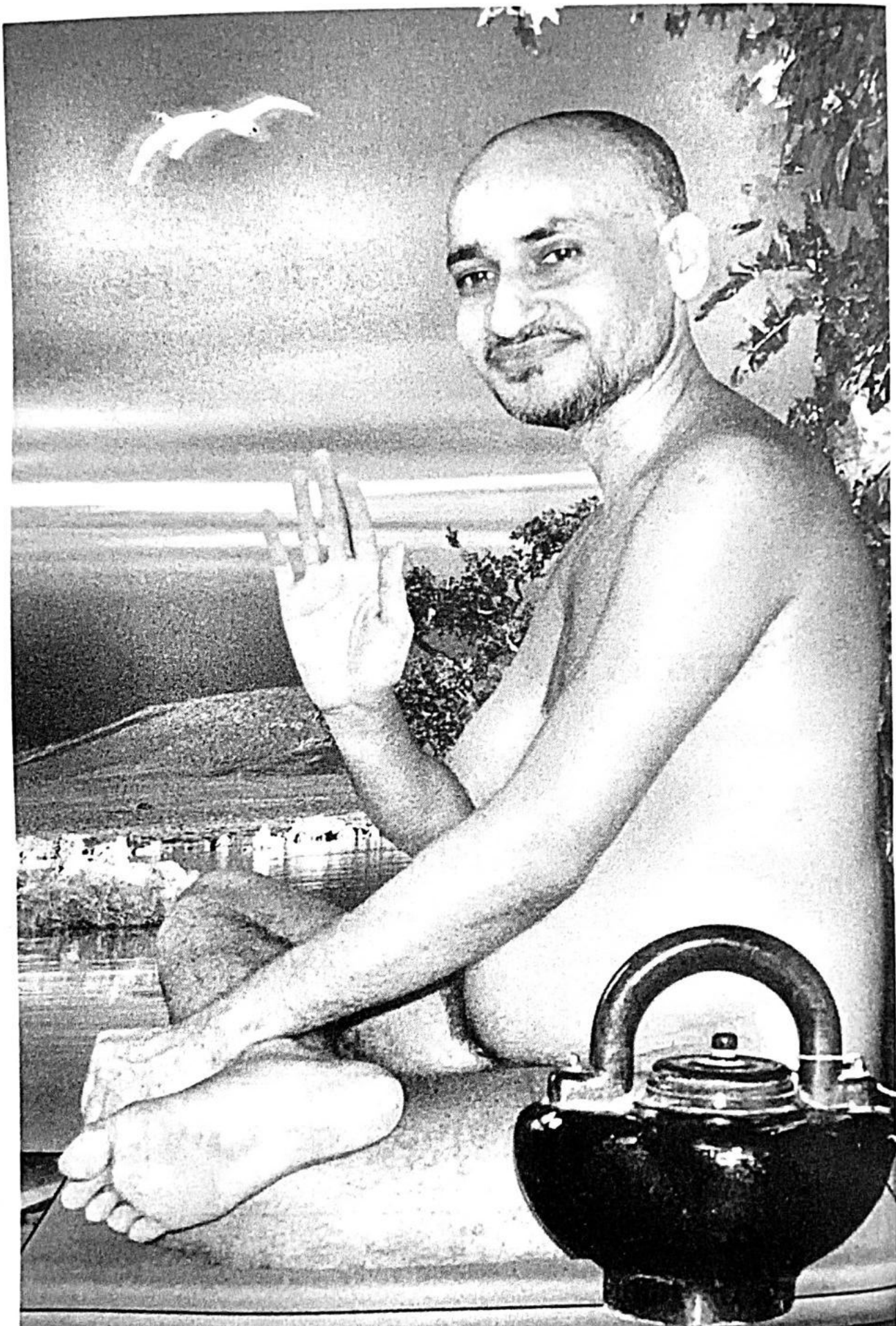
"जीवन है पानी की बूँद" गीत के मूल रचयिता एवं "विमर्श लिपि" के सृजेता

परम पूज्य राष्ट्रयोगी श्रमणाचार्य 108 श्री विमर्शसागर जी महाराज

राकेश जैन अपने
अध्यापक एवं सहपाठियों
के साथ
जतारा रा.उ.मा.
विद्यालय में

मैनासुन्दरी के अभिनय में
राकेशकुमार
साथ में प्रमोद सेकेट्री,
अरविन्द जैन
कपूरचंदजी बंसल एवं
राजेश जैन
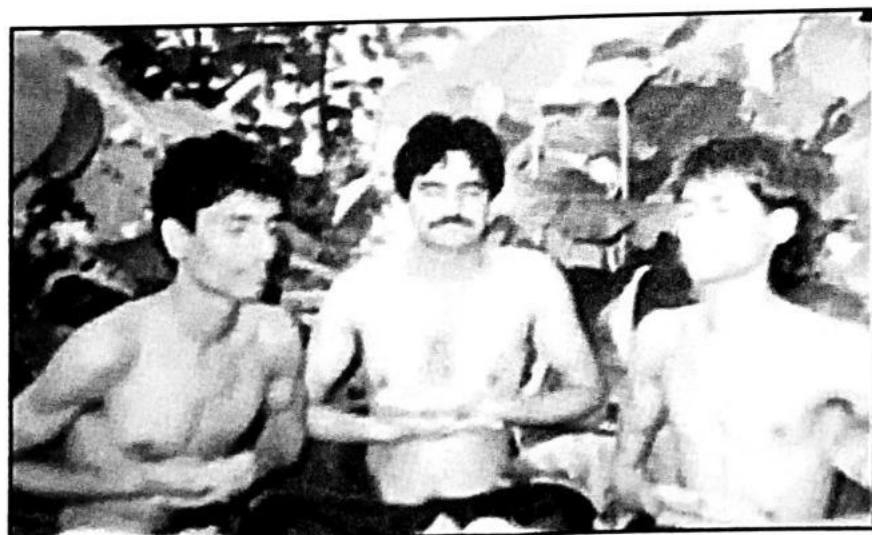
राकेश, स्वतंत्र
एवं
अरविन्द माते
ध्यानस्थ मुद्रा में

राकेशकुमार अपने
सर चौरसिया जी
एवं
मित्र लोकेश खरे
कमलेश जैन के साथ
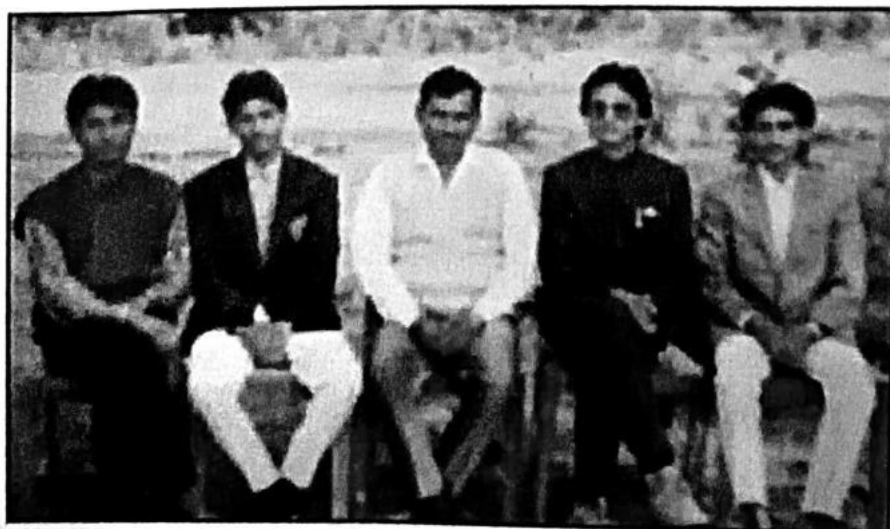
बी.एस.सी. के समय
राकेश अपने
सहपाठियों के साथ
पिकनिक मनाते हुए

बी.एस.सी.छात्र के रूप में
राकेश कुमार

ब्र. राकेश भैया जतारा मेंअपने परिवार के साथ।
दादी बैनीबाई, पिता सनतजी, माता भगवतीजी,
बड़ी बहिन कमला, बड़े भैया राजेश एवं भाभी स्नेहलता
छोटे भैया चक्रेश एवं छोटी बहिन महिमा।

ब्र. राकेश भैया
को बिनौली हेतु
साफा बाँधते
फूलचन्दजी जैन
(13-2-1996, जतारा)
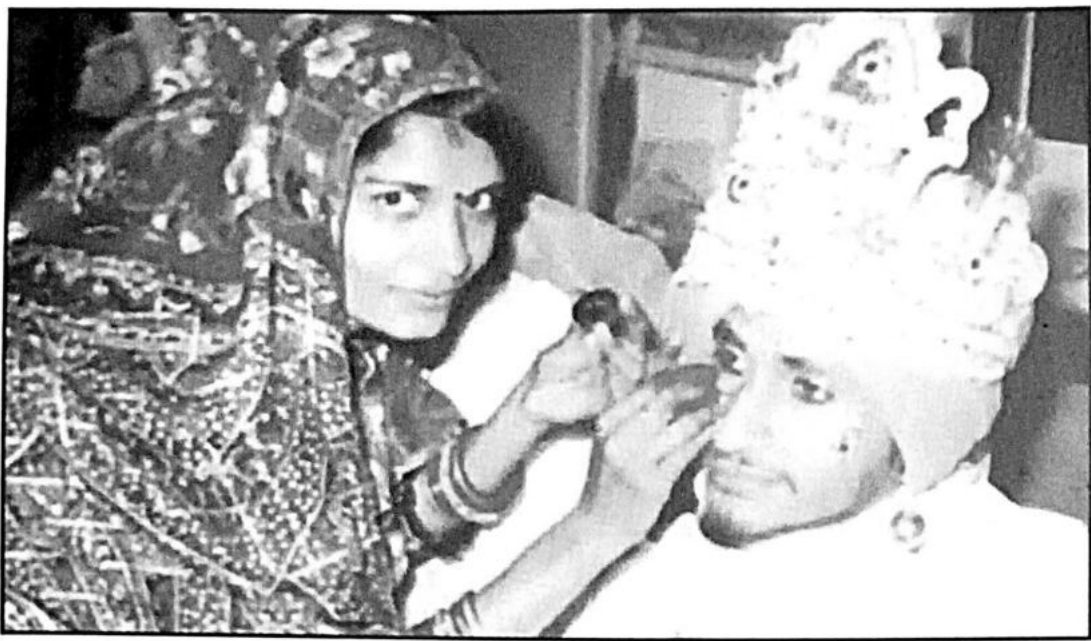
बिनौली हेतु ब्र. राकेश भैया को काजल लगाते भाभी स्नेहलता (जतारा 13.2.1996)

जतारा बिनौली के लिए तैयार ब्र. राकेश भैया। भाभी स्नेहलता महावर लगाती हुई

ब्र. राकेश भैया जतारा में बिनौली के समय घोड़े पर सवार
पास खड़े हैं कपूरचंदजी बंसल, लोकेश खरे, संजीव जैन, अतुल नगाइच, डल्ले रानीपुरा

ब्र. राकेश भैया और ब्र. विनोद भैया

ब्र. राकेश भैया को खीर खिलाती श्रीमती शांतिदेवी बंसल

ब्र. राकेश भैया जतारा में अपने कक्ष में
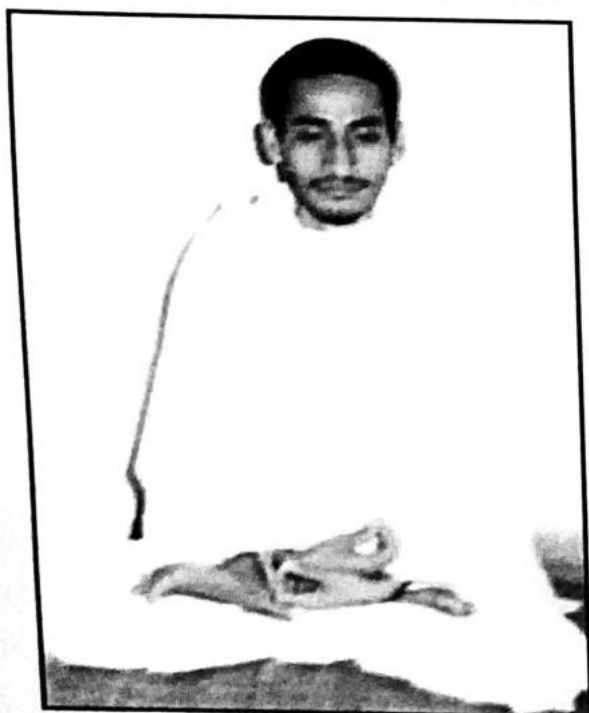
ब्र. राकेश भैया सामायिक करते हुए (ललितपुर-1995)

ब्र. राकेश भैया ऐलक दीक्षा हेतु राजकुमार के रूप में मंचासीन (देवेन्द्रनगर 23.02.1996)

ऐलक दीक्षा के समय ब्र. राकेश भैया
वस्त्र परित्याग करते हुए
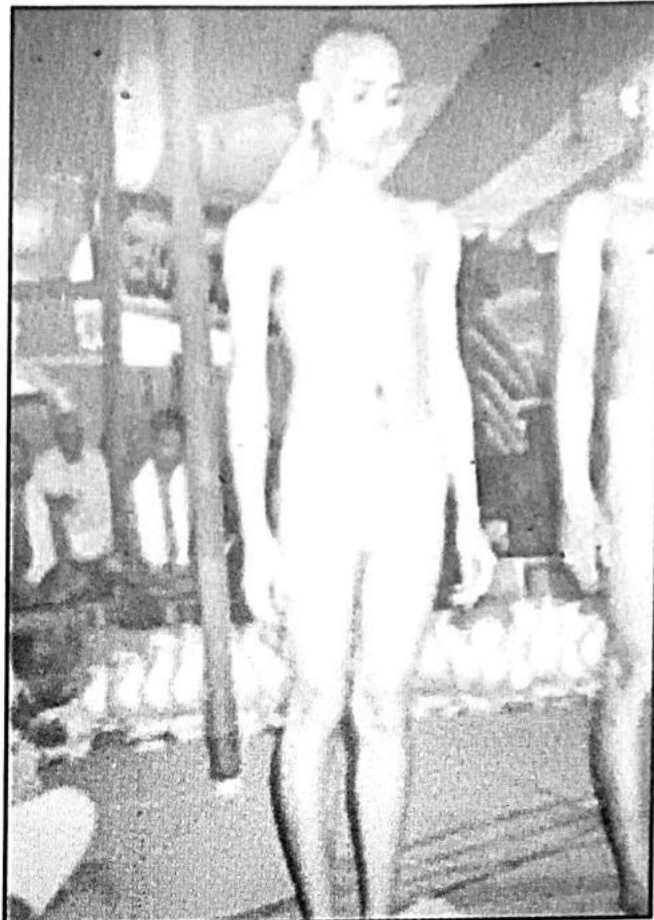
ऐलक दीक्षा के समय वस्त्राभूषण त्यागकर
ध्यानस्थ खड़े ब्र. राकेश भैया

ऐलक विमर्शसागरजी की मुनिदीक्षा के समय केशलोंच उपरांत
सिर प्रक्षालन करते ब्र. विमल भैया

मुनिदीक्षा के समय वस्त्र परित्याग हेतु
कायोत्सर्ग मुद्रा में विमर्शसागरजी
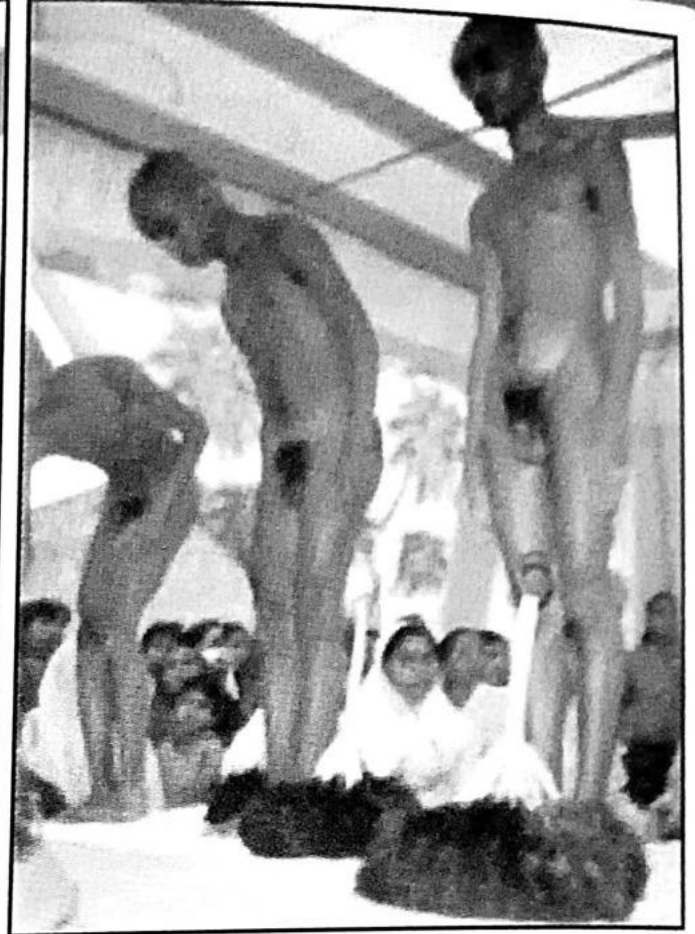
मुनिदीक्षा के समय ध्यानस्थ
विमर्शसागरजी
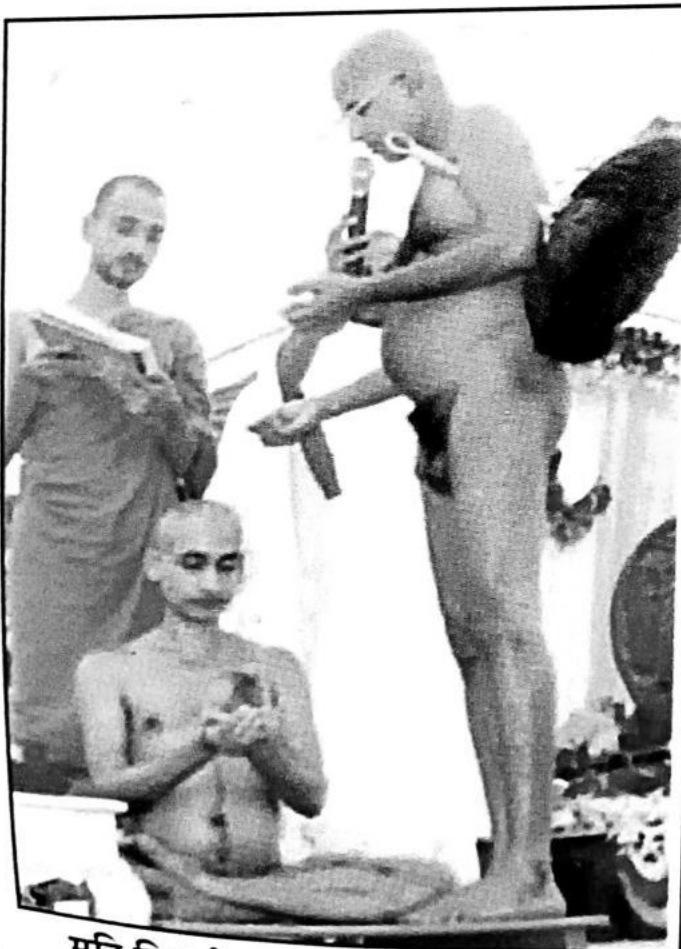
मुनि विमर्शसागरजी के आचार्य पद के
संस्कार करते आचार्यश्री विरागसागरजी
साथ में क्षुल्लक अतुल्यसागरजी
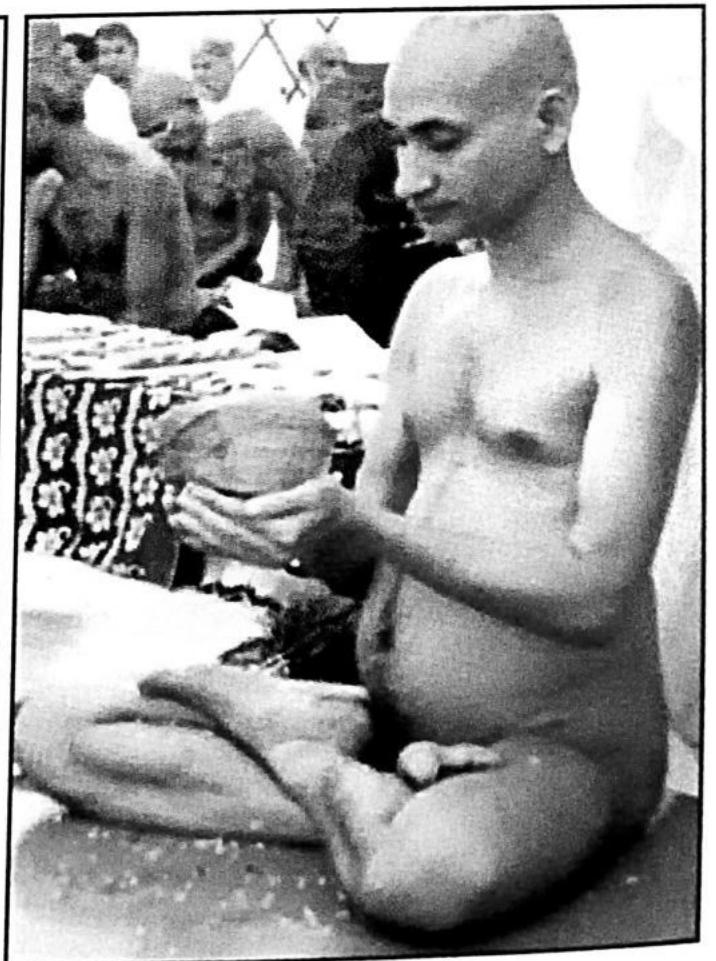
आचार्यपद स्थापना के समय
मुनि विमर्शसागरजी वीतराग मुद्रा में

आचार्यपद स्थापना के समय
उपस्थित जन समुदाय
(बाँसवाड़ा, 12.12.2010)
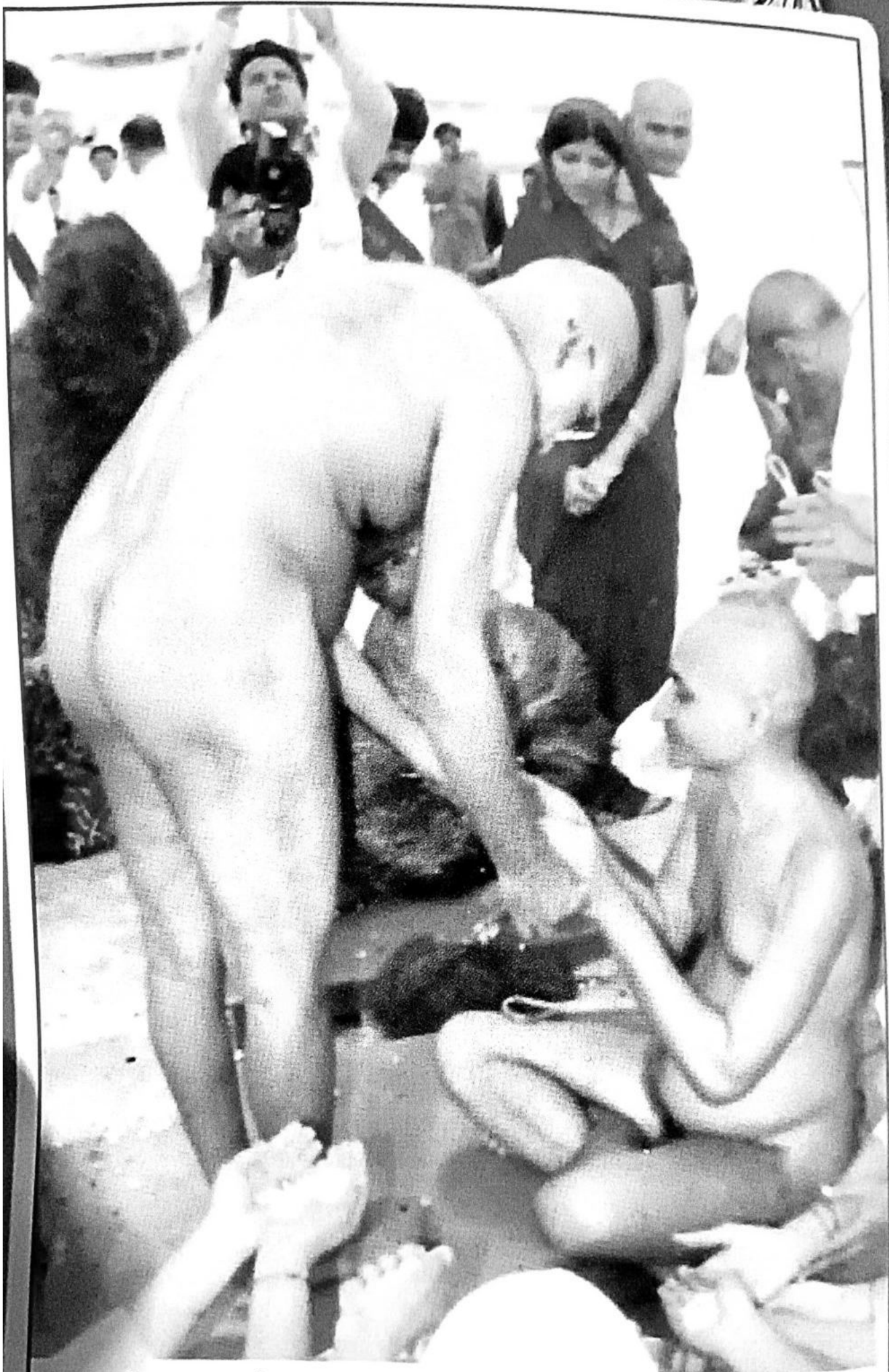
आचार्यपद स्थापना के समय नवोदित आचार्य विमर्शसागरजी को नवीन पिच्छिका प्रदान करते हुए पूज्य आचार्य विरागसागरजी (बाँसवाड़ा, 12.12.2010)

माटी का गौरव

भारत देश की पावन वसुंधरा का गौरवमयी इतिहास किसी से अछूता नहीं है भारत सदियों से सारे विश्व को आध्यात्मिकता का अनुपम संदेश प्रसारित करता आया है। इस क्षितितल को अनेक महान संतों ने अपनी पूज्यपाद रज से पवित्र और पावन किया है। मैं अगर यहाँ के परिवेष को साधु कहदूँ तो यह कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी, क्योंकि जैसा परिवेष होता है वैसा ही व्यक्तित्व उससे जन्म लेता है कहा जाता है "जैसा उपादान होता है वैसा ही उसमें कार्य निष्पन्न होता देखा जाता है" अनेकानेक महान पुरुषों ने इस मंगलमयी धरा पर जन्म लेकर सारे विश्व को अहिंसा और अध्यात्म के साथ जीने के नये आयाम प्रस्तुत किये। इसी भारत देश का हृदयस्थल कहे जाने वाले मध्यप्रदेश की हृदयस्थली बुंदेलखण्ड की अमृत धरा, जो चाहे प्राचीन तीर्थ हों, ऊँचे-ऊँचे पहाड़ हों या घने सघन और हरितिमा से परिपूर्ण वन हों, या फिर कल-कल करते झरने हों, प्रकृति के अनेक सुंदर दृश्यों को जो अपने सुंदर आंचल में संजोए हुये है। एक ओर जहाँ बुंदेलखण्ड प्राकृतिक वातायन से समृद्ध है वहीं दूसरी ओर दर्शन, ज्ञान, चारित्र तप और अध्यात्म के धन से धनाढ्यता को प्राप्त है। इस बुंदेलखण्ड की वसुधा ने अपनी दर्शन की माटी में, ज्ञान का खाद डालकर अनेकानेक चारित्र के वृक्षों को विकसित, पल्लवित और पुष्पित किया है। जिनमें कुछ का नाम उद्धृत है। बुंदेलखण्ड के प्रथमाचार्य परम पूज्य सूरिगच्छाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज, पू. आचार्यश्री आनंद सागर जी 'मौनप्रिय', मुनि नेमि सागर जी (पठा), मुनिश्री अरह सागर जी (टीकमगढ़), क्षुल्लक श्री मनोहर लाल जी वर्णी, सहजानंद जी वर्णी आदि सहित अनेकानेक जैनेत्तर संतो को भी इस माटी ने प्रसूत किया है।

इसी बुंदेलखण्ड की सीमाओं के अंदर एक जिला है टीकमगढ़ जो अपने

आप में धार्मिक, आध्यात्मिक और सांस्कृतिक, संस्कारों से परिपूर्णता लिये हुये है। इसी टीकमगढ़ जिले में धन धान्य से समृद्ध धार्मिक संस्कारों से सम्पन्न जतारा नगर है जिसे मोतीलाल जी वर्णी जैसे सुप्रसिद्ध विद्वान् एवं अपनी सहजता, बालक सम सरलता, सागर सम ज्ञान की गम्भीरता और सुमेरू सी चारित्र की दृढ़ता एवं हिमालय सी मनोबल की ऊँचाई से जन-जन को प्रभावित करनेवाले अपनी लेखनी से जिनवाणी के अनछुये पहलुओं को प्रकाशित करने वाले परमपूज्य सूरिगच्छाचार्य श्री विरागसागर जी के प्रियाग्र शिष्य आचार्यश्री विमर्शसागर जी महाराज को अपनी गोद से जन्म देने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। धन्य हो गया वह जतारा नगर।

गर्भावतरण : शुभ स्वप्न :-

इतिहास इस बात का साक्षी है कि जब कोई भव्यात्मा, जिसके द्वारा धर्म तीर्थ का प्रवर्धन होना है, माता के गर्भ में आता है तो आने से पूर्व वह किसी न किसी शुभ स्वप्न के माध्यम से अपने आगमन का संकेत दे दिया करता है। कुछ इसी प्रकार की घटना माँ भगवती के साथ घट गई। सन् १९७३ में माँ भगवती ने रात्रि के पिछले पहर में कुछ शुभ फल दर्शायक मंगल स्वप्न देखे।

उन स्वप्नों में माँ भगवती ने देखा :-

- एक सुन्दर चाँदी की थाली में चाँदी के सिक्कों का ढेर लगा देखा ।
- अनार, सेब, केला, अंगूर के गुच्छों (फलों) से लदे पेड़ों का बगीचा देखा।
- दो चाँदी के कलश देखे, जिसमें एक कलश दूध से भरा था और दूसरा कलश दही से भरा था।
- एक खूब बड़ा सुन्दर सरोवर देखा ।

❖ स्वपन में ही माँ भगवती जाप कर रही हैं तभी दो हाथियों को आते देखा।

❖ इसके बाद गेहूँ और चावल से भरे सुन्दर खेत देखे।

प्रातःकाल माँ भगवती में रात्रि को देखे सारे स्वपन सनत कुमार जी को सुनाये और पूछने लगी ।

" इको फल का हुइए" सुनकर सनतकुमार जी प्रसन्न हुये और कहा कि तुम्हारे स्वप्न तो अति सुंदर और शुभ हैं। लेकिन इनका फल तो हमें भविष्य ही बतलायेगा। फिर दोनों दम्पत्ति अपने दैनिक कार्यों में संलग्न हो जाते है। समय अपनी गति से निरंतर गतिशील था। ज्यों-ज्यों समय चक्र चलता गया त्यों-त्यों माँ भगवती प्रसन्न और धर्म के यथोचित कार्यों में संलग्न रहने लगीं।

समय का उद्‍भव :-

अंततः वो पावन दिन भी आ ही गया जिसका सारी सृष्टि को इन्तजार था। वह दिन था १५ नवम्बर १६७३ का। जब श्री सनतकुमार जी और माँ भगवती का कई जन्मों का पुण्य एक सुकौमल और गौरवर्ण पुत्र के रूप में फलित हुआ। वह प्रभात की पीयूष बेला, मंद मंद पवन का बहना और चारों तरफ प्रशस्त वातावरण के बीच प्रातः ६ बजकर ३१ मिनट पर तृतीय संतान के रूप में सनतकुमार के घर में इस गौरवर्ण पुत्र ने जन्म लिया। जन्म का समाचार लेकर शिशु की दादी ज्यों ही बाहर दहलान में आईं तो खुशी का ठिकाना न रहा। सभी लोग हर्षोल्लास से नाचने लगे सनतकुमार जी भी एक कोने में खड़े खड़े मंद मंद मुस्का रहे थे। बड़ी बहिन कमला और बड़े भैया राजेश भी खुशी से झूम रहे थे। आस पड़ौस के लोगों को जब यह समाचार मिला तो सनतकुमार जी के घर बधाई देने वालों का तांता लग गया चारों तरफ वस. हर्ष ही हर्ष नजर आ रहा था ऐसा लग रहा था जैसे माँ भगवती ने एक अवतार पुरुष को जन्म दिया हो। घर में छोटे से लेकर बड़े तक सभी

लोगों ने उस दिन बड़े ही हर्ष के साथ जन्मोत्सव मनाया, एक-एक करके १० दिन व्यतीत हो गये और १० वें दिन दसटोन का कार्यक्रम बड़ी धूमधाम और उल्लास के साथ मनाया गया और सनतकुमार जी ने लोक प्रथानुसार अपने नवजात शिशु की कुण्डली बनवाने के लिये स्थानीय पंडित जी को आमंत्रित करके बुलाया और कुण्डली तैयार करवाई। कुण्डली के फलादेश को सुनकर कुछ हर्ष हुआ तो कुछ विषाद के बादल आत्मा पर छाये। पर सभी ने सब कुछ समय के ऊपर छोड़कर भविष्य का इंतजार करने लगे। और उस बालक का नाम रखा गया 'राकेश' राकेश का अर्थ होता है - चन्द्रमा, सच में उस गौरवर्ण शिशु को देखकर ऐसा लगता था मानो आकाश का चाँद माँ भगवती की गोद में समाहित हो गया हो। बालक राकेश की कुण्डली में बड़े ही शुभ और सुंदर फलादेश घटित हुये -

जन्म कुण्डली और उसका फलादेश :-

(१) शिशु का जन्म पुनर्वसु नक्षत्र में हुआ।
इस नक्षत्र में जन्म लेने वाला जातक सुप्रतिष्ठित कार्यकर्ता, मेधावी विचारक, महात्मा एवं तपस्वी होता है।

(२) धनु लग्न जन्म फल - इस लग्न के उदय में जातक सुगठित शरीर, मध्यम कद, विस्तृत मस्तक, शानदार व्यक्तित्त्व रंग गोरा, भौंहे घनी, नाक लम्बी, आँखें चमकदार और सुंदर शरीर वाला होता है।
आत्मविश्वास का धनी और सोच विचार कर निर्णय लेने वाला होता है। उच्च शिक्षा प्राप्त, यात्रा का शौकीन, उदार हृदय और आध्यात्मिक प्रवृतिवाला न्यायप्रिय होता है।

(३) शुभ योग :- शुभ योग में शिशु का जन्म हुआ, इस योग में जन्म लेने वाला प्रसिद्ध वक्ता, वाणी में मंत्रमुग्ध करने की शक्ति, रूपवान तथा सदाचारी होता है।

(४) काहल, बुध, आदित्य और मृगेन्द्र योग – शिशु का जन्म उक्त नक्षत्रों में हुआ जो यह दर्शाते हैं कि जातक बलिष्ट शरीर, वीर साहसी और उच्च पद प्राप्त करने वाला होगा, समाज में सम्मान व प्रसिद्धि प्राप्त करता है। अपने कार्यों से विख्यात होता है, राजा के समान, धनवान बुद्धिमान और लोगों द्वारा वंदनीय होता है। नाम प्रसिद्धि आदि शुभ फल दर्शाते है।

(५) कुटुम्ब त्याग योग :- यह जातक कुटुम्ब के साथ ज्यादा समय नहीं रहता।

(६) अचल सम्पत्ति त्याग योग :- अचल सम्पत्ति का भी अधिकारी नहीं होता।

(७) विवाह अभाव योग :- यह जातक विवाह, शादी से दूर रहता है।

(८) दीर्घायु योग :- चिर आयु होता है।

(१) जब अष्टमेश और लग्नेश चर राशि में हों तो जातक दीर्घायु होता है।

(२) अष्टमेश या शनि या दोनों लग्नेश में हों।

(३) लग्नेश यदि सूर्य का मित्र हो।

(४) अष्टमेश और लग्नेश दोनों मित्र हों।

(५) जन्म राशि यदि सूर्य का मित्र हो।

(६) यदि अष्टमेश सूर्य का मित्र हो।

(७) अष्टम का स्वामी अपनी स्वराशी, उच्च राशि मित्र राशी में हो तो।

(८) आयुष्कारक शनि अपनी मित्र राशी में होकर, केन्द्रगत हो तो।

(६) केन्द्र में बलि एक भी शुभ ग्रह हो तो अथवा बुध, गुरू, शुक्र इनमें से कोई एक ग्रह केन्द्र में हो।

(१०) चन्द्रमा अपनी स्वराशी, उच्च राशी या मित्र राशी में हो तो, सूर्य, लग्नेश, और अष्टमेश आपस में मित्र हों तो उपरोक्त होने पर जातक दीर्घायु होता है।

(११) कुण्डली में वैराग्य योग है। :- सदैव वैरागी प्रकृति का होता है।

(१२) कुण्डली में दीक्षा योग भी है। :- सदैव संसार को त्याग दीक्षा के भाव वाला होता है।

(१३) कुण्डली में राजयोग भी है। :- जहाँ जहाँ भी रहता है आज्ञा एश्वर्य के साथ रहता है।

बालक राकेश के फलादेश सुनकर एक ओर परिवारजनों का मन प्रसन्न और आल्हादित था कि हमारा बेटा बड़ा होकर हमारा नाम रोशन करेगा, धार्मिक क्षेत्र में उन्नति करेगा लेकिन दूसरी ओर मन में अन उभरा सा दुःख भी था कि कहीं यह बालक बड़ा होकर हमसे बिछड़ न जाये। पर होनी और अनहोनी को कौन टाल सका है ऐसा विचार कर अपने मन को सुदृढ़ कर बालक की परवरिस में संलग्न हो गये, शुक्लपक्ष के चन्द्रमा की भाँति वह माँ भगवती का चाँद (राकेश) उम्र के सोपान चढ़ने लगा। बचपन में सभी जन राकेश को "बल्लु भैया" के नाम से पुकारते थे। और धीरे-धीरे वह माँ भगवती का बल्लु, पिता सनतकुमार जी का बल्लु, दादी बैनीबाई का बल्लु दो साल का हो गया। पूर्व के संस्कार अंतरंग में हिलोरें मारा करते थे।

भगवती का बल्लु, पिता सनतकुमार जी का बल्लु, दादी बैनीबाई का बल्लु दो साल का हो गया। पूर्व के संस्कार अंतरंग में हिलोरें मारा करते थे।

संस्कारित बचपन :-

बल्लु का मन दो साल की अबोधदशा में भी मंदिर जाने को लालायित रहा करता था। और अपने पिता सनतकुमार जी को मंदिर जाता देख मचल

जाता था। लेकिन सनतकुमार जी स्नान न किये हुये होने के कारण आज घर पर ही छोड जाते हैं। वह अबोध बालक बेचारा फिर क्या करता अपने छोटे-छोटे से पैरों से दौड़ता हुआ माँ के आँचल में शरण लेता है और कहता है। अपनी तुतली बुंदेली भाषा में –

अम्मा... अम्मा ! "दादा दी मंदिल तले दय हमें नई लुवा दय" (तब बल्लु भैया माँ को अम्मा और पिता को बोलते थे) तब माँ ने अपना आशीष का हाथ बेटा के सिर पर फेरा और कहा बल्लु भैया को दादाजी मंदिर नहीं लिवा गये। कोई बात नहीं बल्लु भैया तुम हमारे साथ मंदिर चला करो। अब क्या था दोनों टाईम मंदिर अपनी अम्मा की उंगली पकड़कर जाना यह बल्लु भैया का रोज का काम हो गया।

किसी दिन सनतकुमार जी किसी कार्यवसात बाहर गये हुये थे। और संयोग की बात कि माँ (अम्मा) को भी मंदिर नहीं जाना था। शाम होते ही खाना आदि से निवृत होकर बल्लु भैया रोज की तरह माँ से कहने लगे कि "अम्मा मंदिल तलो न" तो माँ ने मंदिर जाने से मना कर दिया अम्मा के मना करते ही बल्लु भैया तो रोने लगे, "नहीं मैं तो मंदिल दाऊंगा" तो अम्मा ने बड़ी बहिन कमला के साथ (जो मंदिर की पाठशाला में पढ़ा करती थी) बल्लु भैया को मंदिर भेज दिया। और अपनी बड़ी बहिन कमला के साथ नन्हें बल्लु भैया मंदिर चले गये, वहाँ पर रात में मंदिर के प्रांगण में बल्लु भैया को एक बिच्छु ने काट लिया और वह नन्हा सा बल्लु दर्द के मारे चीखकर रोने लगा तभी से उस बालक के कोमल मन में भय की धारणा प्रवेश कर गई कि मंदिर में तो बिच्छु हैं। घर आकर अपनी माँ से तोतली भाषा में कहते हैं अम्मा अम (हम) लात (रात) को मंदिल (मंदिर) नई दायेंगे (जायेंगे) मंदिल में विदू (बिच्छू) है। माँ ने कहा, अच्छा बेटा ठीक है। रात को नहीं सुबह मंदिर जाया करो। सुबह मंदिर जाओगे न? तो बल्लु भैया बोले हाँ हम सुबह मंदिल दादा

दी के साथ जलूल दायेंगे। सुबह बड़े भैया राजू (राजेश) के साथ बल्लु भैया नहा धोकर छोटे-छोटे धोती दुपट्टे पहिनकर मंदिर जाने को तैयार हो गये और अपने पिता जी के साथ मंदिर जी गये, भगवान जिनेन्द्र की पूजन पिता जैसे कर रहे थे तो उन्हें देखकर बल्लु भैया भी अपने हाव भाव बना रहे थे।

जयजय नाथ पलम गुलु होय :-

पूजन के उपरान्त जब वापिस घर लौटे तो अम्मा से कहने लगे "कि हमने आज दादाजी के साथ पूजन की तो बहुत अच्छा लगा। तो मां ने बेटों के सिर पर हाथ फेरते हुये पूछा की अच्छा बताओं तो तुमने आज पूजन में क्या-क्या पढ़ा था? तो राजू भैया बोले अम्मा हमने आज पढ़ा था " जय जय नाथ परम गुरू होय" माँ ने कहा शाबास बेटा और बल्लु भैया तुमने क्या पढ़ा था आज पूजन में? तो बल्लु भैया ने अपनी तोतली भाषा में अम्मा को उत्तर दिया। और कहा "जय जय नाथ पलम गुलु होय" पूजन करना उन बालकों को अच्छा लगा और अपने पिता जी से बल्लु भैया कहते है "अब अम लोज लोज पूदन कलने दायेंगे" अब तो दोनों बालकों का सुबह से उठकर नहा धोकर दादाजी के साथ पूजन करने जाना रोज का काम हो गया। दोनों भाई जब धोती दुपट्टा पहिनकर निकलते थे, तो लगता था मानो राम लखन और कृष्ण बलदाऊ की जोड़ी हो। इस जोड़ी को जो भी देखता बस देखता ही रह जाता था।

एक दिन उस गौरवर्ण के राजकुमार बल्लु को किसी की नजर लग गई जिससे बल्लु भैया का शरीर बुखार से तपने लगा। माँ की ममता, व्याकुल हो उठी और दिनभर झाड़ा फूकी करती रही। दिनभर भोजन करने का भी ख्याल नहीं आया। शाम को बल्लु भैया को बुखार और अपनी पत्नि को उदास देख सनतकुमार जी पूछते है " भैया कों का हो गओ (भैया को क्या हो गया) तब माँ भगवती कहती है कि आप दोनों को पूजन के लिये ले जाते हो, तो

बल्लु भैया को नजर लग गई है और बुखार आ गया है। मैं आज दिनभर से परेशान हो रही हूँ। 'इको' बुखार कैसे ठीक हुइऐ। अरी भाग्यवान चिंता मत करो बल्लु जल्दी ही ठीक हो जायेगा।

सनतकुमार जी ने अपने बेटों की तरफ देखते हुए कहा बेटा अब तुम दोनों मेरे साथ सुबह पूजन करने नहीं जाया करो। अपनी अम्मा के साथ सिर्फ दर्शन कर के आया करो। तब बुखार में ही बल्लु भैया बोल उठे क्यों नहीं जायेंगे पूजन करने। तब अपने नन्हें से पुत्र को समझाते हुये पिता सनतकुमार जी कहते है। कि बेटा! जब आप दोनों पूजन करते हो, तो लोग आपको देखकर कहते है, कि देखो कितने सुंदर है दोनों भाई जैसे राम लखन की जोड़ी ही हो इससे बेटा तुम्हें नजर लग जाती है। और आपकी अम्मा हमसे नाराज होती हैं। इसीलिये बेटा अब तुम हमारे साथ नहीं, अपनी अम्मा के साथ सिर्फ दर्शन करके आ जाया करो। फलतः बल्लु भैया को पिताजी की बात समझ में आ गई अब दोनों भाई अपनी अम्मा के साथ प्रतिदिन मंदिर जाने लगे।

अद्भुत तर्क शीलता :–

एक दिन की बात है घर के आंगन में मां भगवती बैठी है और बल्लु भैया खेलकर आते हैं और पूछते है अपनी अम्मा से कहा कि अम्मा! मंदिर जाने से क्या होता है?तब अपने लाल की जिज्ञासा का समाधान माँ ने कुछ इस प्रकार किया। माँ ने कहा बेटा भगवान जिनेन्द्र के दर्शन करने से मन को शांती मिलती है। पुनः बल्लु भैया पूछते हैं, कि भगवान तो कुछ बोलते ही नहीं फिर भी मंदिर जी क्यों जाते है। तो माँ कहती है?कि बेटा! भगवान बोलते नहीं हैं लेकिन उनके दर्शन से पापों का नाश हो जाता है। इसलिये रोज मंदिर जाना चाहिये। बच्चों के अंदर जिज्ञासाऐं निरंतर उठती ही रहती हैं। बल्लु ने फिर प्रश्न रखा, अम्मा! मंदिर में भगवान कहाँ पर रहते है?माँ ने कहा बेटा भगवान तो सभी के हृदय में रहते है। तो बल्लु भैया ने कहा जब भगवान हृदय

में ही है तो फिर मंदिर क्यों जाना?अब में मंदिर नहीं जाऊँगा ऐसा कहकर वह नन्हे-नन्हे पावों से बाहर आंगन की ओर दौड़ जाते हैं । और जब खेलकर बल्लु भैया खाना खाने आते है तो माँ पूछती है कि मंदिर जी के दर्शन करने गये कि नहीं ? तब बल्लु भैया ने अपनी माँ का ही पुरोवाक् दोहरा दिया कि भगवान तो हृदय में है तो मंदिर क्यों जाऊँ ?कौन जानता था कि यह तर्कशील बालक एक दिन जैन दर्शन के गूढ़ रहस्यों को युक्ति से सिद्ध करेगा ।

माँ की डाँट एवं दुलार :-

एक दिन बल्लु भैया अपने बड़े भैया राजू के साथ नहाने के लिये तालाब पर गये थे। तालाब के ठंडे जल का स्पर्श पाकर मन स्नान करने में ही मस्त हो गया और समय का पता ही नहीं चला भूल गये कि हमको घर जाना है और काफी देर बाद लौटे तो मन में भय था कि देर से आने के कारण पिताजी डाँट लगायेंगे। पिता की डाँट के भय से दौनों ही भाई चुपके से आकर कमरे में छिपकर बैठ गये । माँ, पिता काफी देर तक उनको खोजते रहे। कुछ आवाज सुनाई दी, और जाकर देखा तो दोनों भाई छुपे हुये बैठे थे। तब दोनों भाई जिससे डर रहे थे वहीं हुआ माँ भगवती ने बल्लू भैया को जोर की डांट लगाई और कहा कि बड़े भैया के साथ नहाने नहीं जाया करो। माँ की ममता, माँ के गुस्से को ज्यादा देर नहीं रहने देती भूखे बेटों के चेहरों को देखकर माँ का गुस्सा दूर हो गया। माँ भगवती ने दोनों पुत्रों को अपनी ममता से दुलारा और भोजन कराया।

शिक्षा के सोपान :- अब इस कथा का नायक पूरे तीन वर्ष का हो चुका था। घर में सभी को अब बल्लु की शिक्षा की चिन्ता हुई, सभी ने निर्णय लिया बड़े भैया के साथ अभी स्कूल में बैठना सीख जायेगा इसलिये स्कूल भेजना शुरू कर दिया गया। स्कूल में नाम तो दर्ज नही कराया गया लेकिन शिक्षा के प्रति समर्पण उस बालक में उसकी रूचि देखकर तभी से नजर आने लगा था। कि

यह आगामी समय में बहुत होशियार छात्र बनेगा। कहा भी गया है कि "होनहार विरहान के होत चीकने पात" पण्डित की भविष्यवाणी और कुण्डली का फलादेश सार्थक सा नजर आने लगा था। राकेश शुरू से प्रखर प्रज्ञा के धनी थे। वह तीन साल का बल्लू अपने भाई के साथ स्कूल जाने लगा। माँ भगवती भी एक छोटा सा खाने का टिफिन साथ में रख दिया करती थी। बल्लू जाते और भूख लगती तो टिफिन खोलकर पेट पूजा कर लेते और नींद आ जाये तो वही पर सो लेते। बड़े भाई की स्लेट पर उल्टी सीधी आकृति बनाया करते, किसी को मालूम नहीं था, कि यह टेडी मेडी रेखायें खींचने वाला एक दिन तकदीर की रेखायें अपने हाथ से खींचकर महान संत बनेगा। कभीखुद अक्षर बनाने का प्रयास करते और कभी बड़े भैया उनका हाथ पकड़कर लिखवाया करते थे।

शिक्षा के प्राथमिक चरण :-

राकेश ने यद्यपि अपने बड़े भैया के साथ ३ साल की उम्र में ही विद्यालय जाने का अभ्यास शुरू कर दिया था। किन्तु अध्ययन हेतु विधिवत विद्यालय में प्रवेश ५ वर्ष की उम्र में सन् १९७९ में दिलाया गया। उस विद्यालय का नाम, जिसमें अध्ययन की शुरूआत करनेवाला समाज का मार्ग दृष्टा बनकर हम सब के बीच विराजित है वह था प्रा. मदन सागर विद्यालय, जतारा। अब राकेश क्रमशः प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होता हुआ कक्षा ५ को पार-कर गया। जब माध्यमिक सोपान पूरा हो गया, तो सनतकुमार जी ने अपने उस होनहार पुत्र को जतारा के बालक उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में ६ जुलाई १९८४ को कक्षा ६ में प्रवेश दिला दिया। जहाँ राकेश ने कक्षा ६ एवं ७ तो प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण की साथ ही, कक्षा आठ में प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण होकर एक कीर्तिमान रचा। और माध्यमिक सोपान चढ़ने के बाद १९८७ में कदम उच्चतर माध्यमिक विद्यालय की ओर बढ़ चले। १९८८ में

कक्षा ९ एवं १९८९ में कक्षा १० को उत्तीर्ण किया।

इसी विद्यालय में विद्याअध्ययन का क्रम जारी रखते हुये कक्षा ११ सन् १९९० में विज्ञान संकाय से प्रथम श्रेणि में पास करके १९९१ में कक्षा १२ में फिर वही पढ़ाई के प्रति अपनी संलग्नता का परिचय देते हुये प्रथम श्रेणी में सर्वाधिक अंको के साथ उत्तीर्ण की। १० वीं कक्षा में राकेश को सर्वाधिक अंको के साथ मेधावी छात्र की उपाधि से अलकृंत किया गया ।

गुरू जानते हैं शिष्य की क्षमताओं को :- घटना उस समय की है जब गुरूवर कक्षा १२ की परीक्षा देने परीक्षा हॉल में बैठे थे, आस पास बैठे विद्यार्थी नकल करने का प्रयास कर रहे थे, और टीचर बार बार संकेत कर रहे थे कि ऐसा ना करें। नये टीचर थे, जिनकी ड्यूटी उस कक्ष में लगी थी, उन टीचर को भी राकेश के इस व्यवहार ने प्रभावित किया और टीचर ने कहा, दूसरे टीचर से कि ये बालक शान्त बैठा है और सारे लड़के उदण्डता कर रहे हैं, तो दूसरे टीचर ने कहा जो राकेश को पढ़ाते थे कि सर आप देखना ये ही बालक सबसे अच्छे नम्बर लायेगा । और वही हुआ उस वर्ष कक्षा १२वीं में राकेश ने स्कूल टॉप किया । इसके लिये राकेश को अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद शाखा जतारा (टीकमगढ़ म. प्र.) द्वारा मेधावी छात्र के रूप में सम्मानित किया गया। इसी समय राकेश ने टीचर्स रिसर्च मार्डन इन्सटीट्यूट की परीक्षा भी दी । जिसमें उन्होंने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। और हायर सैकेण्ड्री तक जतारा में अध्ययन के उपरान्त कदम बढ़ चले कॉलेज की ओर। टीकमगढ़ के शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय में सन् १९९४ में बी. एससी. (बायो.) के तीनों सोपान से उत्तीर्णकर ग्रेजुयेसन कम्पलीट कर ली। इस छात्र की एक विशेषता रही। मेधावी छात्र होने के कारण विशेष योग्यता (छात्रवृति) भी प्राप्त होती रही। जीवन में कुछ लोग ऐसे मिल जाते है जिनसे खून का रिश्ता तो नहीं होता लेकिन उससे भी ज्यादा घनिष्ट हो जाते हैं, जिन्हें हम अपनी भाषा

में मित्र कहते है। ऐसे ही राकेश के अभिन्न मित्र थे, लोकेश खरे (वर्तमान में डॉ. लोकेश खरे) और ऐसे ही एक साथी थे जिनका नाम है कमलेश जैन (वर्तमान में डॉ. कमलेश 'वसंत' गीतकार कवि) जो राकेश के साथ हर कदम पर साथ रहे। चाहे खेल का मैदान या फिर सांस्कृतिक मंच पर अभिनय का मौका।

जिनसे सीखा उन्हीं को हराया :-

राकेश जहाँ अध्ययन में विशेष योग्यता रखते थे, वही खेल के मैदान में भी वह किसी से पीछे नहीं थे। चाहे बैडमिन्टन का ग्राउण्ड हो या फिर शतरंज की टेबिल जिनसे उन्होंने सीखा उन्हीं को उस खेल में परास्त कर दिया।

(१) बैडमिंटन राकेश का प्रिय खेल था। जो उनको सिखाया श्री अतुल जी नगाइच ने। जब विद्यालय में बैडमिंटन टूर्नामेन्ट का आयोजन हुआ तो संयोगवश राकेश फाइनल में पहुंचे और उनके साथ अतुल जी फाईनल में पहुँचे। खेल आरंभ हुआ गुरू और शिष्य के बीच, और परिणाम यह हुआ कि उस फाईलन खेल में राकेश जी ने अतुल जी नगाइच को हरा दिया।

(२) राकेश जी का दूसरा प्रिय खेल था शतरंज। शतरंज खेलना राकेश ने अपने मित्र लोकेश खरे से सीखा था। विद्यालय में वार्षिक खेल के अवसर पर शतरंज प्रतियोगिता का भी आयोजन था। राकेश जी शतरंज में इतने माहिर हो चुके थे कि सभी प्रतियोगियों को हराकर वह फाइनल में पहुँचे और 'लोकेश खरे से' आमना-सामना हुआ। खेल प्रारंभ हुआ और देखते ही देखते राकेश ने लोकेश को मात दे दी। ऐसी अदभुत क्षमता के धनी रहे राकेश जी। बचपन से ही जो हर किसी के लिये साधारण नहीं है।

यहाँ कहने में आता है कि गुरु गुड रह गये, चेला शक्कर हो गया। कई पुरुष्कार और अन्य सामग्री आज भी उनके निवास वाले कमरे की शोभा बड़ा रही हैं।

(१) सन् १९९१ में वैडमिन्टन में फाइनल जीतकर स्कूल चैम्पियन बने।
(२) १९९१ में ही शतरंज का फाइनल अपनी झोली में डालकर स्कूल चैम्पीयन बने।

(जैन नवयुवक संघ में सहभागिता)

जतारा की एक धार्मिक संस्था ''जैन नवयुवक संघ'' में उस संस्था के अध्यक्ष अरविन्द कुमार जैन की प्रेरणा पाकर १९९० में राकेश ने संस्था की सदस्यता ग्रहण की। उस संस्था का मुख्य उद्देश्य समाज की सेवा के साथ साथ जैन सिद्धान्तों पर चलते हुये समाज में जागृति लाना, जैन समाज के नवयुवकों को प्रोत्साहन देकर आगे बड़ाना। जैन पर्वों को अनेकानेक कार्यक्रमों के साथ भव्यता और प्रभावना में कारण बनाना। संस्था में दिव्य घोष भी था। यह शाखा मज्जिनेन्द्र पंच कल्याणक गजरथ एवं धार्मिक पर्वों पर भी जतारा से बाहर जाकर धर्म प्रभावना किया करती है। संघ के अंतरगत एक ड्रामा पार्टी भी थी जो धार्मिक पर्वों पर धार्मिक नाटिकाओं का मंचन करती थी । राकेश इस कथा के नायक सदैव मैनासुंदरी, राजुल आदि का अभिनय करते थे। और अपनी कला का इतना सुंदर मंचन करते थे कि दर्शक चित्राम हो जाया करते थे।

गीत काव्य कला :-

राकेश जहाँ खेल में चैम्पियन और अध्ययन में अव्वल थे, वहीं एक और विशेषता उनके अंदर थी, जो हर किसी को प्राप्त नहीं होती। और वह विशेषता थी, काव्य लेखन । गीत लिखना, उनकी हौबी थी, और उनका सुरीला कंठ जो भी उनके द्वारा गाया हुआ गीत काव्य आदि को सुन लेता था वह बार बार सुनने को लालायित रहता था

जैन धर्म से वैरागी :-

बीस वर्ष के नवयुवक राकेश को देखकर कोई यह नहीं कह सकता था कि वह एक बहुत धार्मिक सुसंस्कृत युवक था। बचपन से परिवार का माहौल धार्मिक था, लेकिन फिर भी राकेश की रूचि भव धर्म की ओर न थी। लौकिक

शिक्षा और भौतिकवादी माहौल के प्रभाव से वह मंदिर जाना, साधु संतों के प्रवचन सुनना, आहार देना आदि धर्म कार्यों के प्रति मन में उत्साह नहीं रहता था। रात्रि भोजन करना तथा आलू की सब्जी तो इतनी पसंद थी और इतनी अच्छी बनाते कि मित्रगण उन्हें कभी-कभी सब्जी बनाने को विशेष रूप से बुलाते थे। साधु संतों के पास जाने से उन्हें इसलिये डर लगता था, कि कहीं महाराज रात्रि भोजन और आलू का त्याग न करा दें जिसे वो कभी त्याग नहीं करना चाहते थे। विषयों के रागी धर्म से वैरागी ही होते है।

देव बना राकेश :-

48 दिवसीय श्री भक्तामर जी के अखण्ड पाठ का आयोजन था। तभी एक आश्चर्यकारी घटना घटी जो सिर्फ रहस्य बनकर रह गई। एक रात्रि की घटना थी - राकेश और छोटे भाई चक्रेश दोनों की पाठ करने की ड्यूटी रात्रि 12 बजे के बाद लगाई गई थी क्योंकि दोनों को रात्रि जागरण का अनुभव था। रात्रि को जब चक्रेश पाठ करने को बैठे तो राकेश भी पाठ करने, पास में आकर बैठ गये, कुछ देर बाद दोनों भाइयों के अलावा एक तीसरी आवाज सुनाई देने लगी, जो साथ ही भक्तामर का उच्चारण कर रही थी। अतः चक्रेश ने राकेश भैया को इशारा कर उस आवाज के बारे बताया परन्तु राकेश निर्भय होकर पाठ करते रहे ! आधा घण्टे बाद राकेश पाठ से चले जाते है और चक्रेश अकेले पाठ करते रहे और वह आवाज भी साथ चलती रही। जब चक्रेश का समय पूरा हुआ और अन्य लोग ड्यूटी देने आये तो वह आवाज अपने आप ही बंद हो गई। चक्रेश सीधे वहाँ पहुँचे जहाँ राकेश भैया अन्य मित्रों के साथ सो रहे थे। चक्रेश ने राकेश को जगाया और शिकायती लहजे में कहा - कि तुम आज मात्र आधा घण्टे पाठ करके यहाँ आके सो गये ? राकेश आश्चर्य प्रगट करते हुये बोले - अरे! लेकिन आज रात तो मैंने कोई पाठ किया ही नहीं, मैं तो सीधा घर से आकर यहाँ पर सो रहा हूँ। तीसरी आवाज का तो मुझे कोई पता ही नहीं है। जब यह चक्रेश ने सुना तो वह तो सन्न रह गया, पूरा शरीर कांप गया, और वह सोचने लगा, तो फिर आधा घण्टे तक

राकेश के रूप में किसने मेरे साथ भक्तामरजी का पाठ किया और वह घटना आज तक एक रहस्य है।

कुण्डलपुर वंदना :-

पूज्य ऐलक दयासागर जी महाराज की प्रेरणा से दमोह में नाटक मंचन हेतु जतारा संघ गया और नाटक मंचन की सफल प्रस्तुति के बाद अगले दिन सभी मित्रों संग राकेश, कुण्डलपुर वंदना के लिये गये और 1 जुलाई 1993 को बरसते पानी में भक्तिभाव के साथ कुण्डलपुर की श्रद्धापूर्वक भाव वंदना की।

भावी संत, संतों से दूर :-

युवक राकेश आम युवा की तरह अपने जीवन की मौज मस्ती में व्यस्त कर रहे थे। डेक बजाना, फिल्मी गीत सुनना, शतरंज खेलना, तास के पत्तों में समय गुजारना ये सब राकेश की दैनंदिनी में पूर्ण रूप से हावी थे। पंचकल्याणक की तैयारी हेतु आचार्य श्री विरागसागर जी के प्रिय शिष्य मुनि श्री विशुद्धसागर जी (ससंघ) जतारा पधारे राकेश कभी भी उनके दर्शन हेतु मंदिर नहीं गये। एक दिन मुनिराज राकेश के घर के बाहर से आहार चर्या के लिये जा रहे थे, तभी भैया राकेश घर के आगे वाले कमरे में तेज आवाज में डेक बजाकर फिल्मी गीत सुन रहे थे, तभी मां भगवती टोकती हैं - कि राकेश घर के बाहर से मुनिराज निकल रहे हैं, डेक की आवाज कम करके, बाहर आकर कम से कम नमोस्तु तो कर लो। राकेश ने अपने मस्ती भरे मूड में कहा मां ये महाराज कम उम्र में साधु बन गये हैं, इतने बचपन में कुछ भी गाने आदि नहीं सुन पाये होंगे, हम तेज आवाज में गाने इसलिये बजा रहे है, कि कम से कम एक दो गीत इतई से सुनत जायें।

जतारा का ध्रुव तारा

संयम की प्राप्ति के लिए बढ़ते कदम

''जीवन है पानी की बूँद'' गीत के मूल रचयिता एवं ''विमर्श लिपि'' के सृजेता

परम पूज्य राष्ट्रयोगी श्रमणाचार्य 108 श्री विमर्शसागर जी महाराज

जतारा में पंचकल्याणक

किसी भी कार्य की निष्पत्ति में कोई न कोई कारण जरूर बना करता है और जब प्रबल निमित्त सामने उपस्थित होता है, तो उपादान कार्य रूप से सहसा ही परिणमित हो जाया करता है। बस ऐसा ही कुछ हुआ राकेश के साथ जहाँ एक ओर यह पंचकल्याणक राकेश के पुराने जीवन की इति श्री में कारण बना, वही दूसरी जीवन की नव प्रभात में सबल निमित्त बनकर खड़ा हुआ। यही पंचकल्याणक राकेश के जीवन का Turning point बन गया।

हुआ यूँ कि जतारा की दिगम्बर जैन समाज ने परमपूज्य आचार्य गुरुवर श्री विरागसागर जी महाराज की मंगल प्रेरणा से उन्हीं के श्री सानिध्य में दिनाँक ८ फरवरी ९५ से १३ फरवरी ९५ तक, जतारा के कुण्ड पहाड़ी प्रांगण में श्री मज्जिनेन्द्र पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव एवं त्रय गजरथ महोत्सव को आयोजित करने का निर्णय लिया। उस समय परम पूज्य आचार्यश्री विरागसागर जी महाराज सागर में विराजमान थे, आचार्यश्री से आयोजन की स्वीकृति एवं ससंघ मंगल सानिध्य के लिये, जतारा से दिनांक ३/१२/१९९५ को एक श्रावकों का दल, बस लेकर आचार्यश्री के पास आयोजन की स्वीकृति हेतु गया और आचार्यश्री से आयोजन की स्वीकृति लेकर वापिस आये।

परमपूज्य आचार्यश्री के आदेश एवं निर्देशानुसार पंचकल्याणक की पूर्व तैयारी और दिशा निर्देश हेतु परम पूज्य मुनिश्री विशुद्धसागर जी एवं ऐलक विज्ञानसागर जी महाराज का दिनांक ३०/०१/९५ को नगर जतारा में मंगल आगमन हुआ । पूज्य मुनिश्री के सानिध्य में पंच कल्याणक महोत्सव की पूर्व सभी तैयारियाँ शुरू हो गई।

जतारा आगमन :-

अपरान्ह बेला, हल्की-हल्की ठंड और सूर्य का अपनी किरणों के साथ

क्षितिज से आगमन, प्रकृति का यह सुहावना दृश्य मानो आचार्यश्री की अगवानी करने को लालायित था। नवयुवक संघ के साथ भैया राकेश के मन में भी जैसे एक सोया हुआ पौरुष जागा था । आज के दिन अपने विशाल संघ के साथ आचार्यश्री का जतारा नगर में शुभागमन था। सभी श्रावक श्राविकायें जैन नवयुवक संघ के नेतृत्व में, दिव्य घोष, बैनर, ध्वज और बैंडबाजों के साथ पूज्य मुनिश्री विशुद्धसागर जी के निर्देशन में परम पूज्य आचार्यश्री का अपने नगर में स्वागत के लिये जा रहे थे। सारे श्रावकों में अपूर्व उल्लास था । आचार्यश्री के नगर आगमन का और उससे भी ज्यादा आचार्यश्री एवं मुनिश्री विशुद्धसागर जी का महामिलन देखने का उत्साह लोगों की नजरों में स्पष्ट दिखाई दे रहा था। आचार्यश्री का संघ ग्राम मांची से जतारा के लिये प्रस्थान कर चुका था। और एक और जतारा से पूज्य मुनिश्री विशुद्धसागर जी महाराज के साथ विशाल जन समुदाय आचार्यश्री की अगवानी के लिये बड़ा जा रहा था। लगभग जतारा से २ कि.मी. दूर आचार्यश्री एवं विशुद्धसागर जी का अद्भुत और अविस्मरणीय महामिलन देखकर देखने वालों की आँखों से खुशी के आसूं छलक उठे। विशुद्धसागर जी ने आचार्यश्री की तीन परिक्रमा की और त्रय भक्ति करते हुये भक्ति के जल से आचार्यश्री के चरण पखार दिये।

भरना है तो खाली होना पड़ेगा :-

मिलन के उपरान्त आचार्यश्री ने ससंघ संध्या बेला में जतारा में पदार्पण किया, और विशाल शोभायात्रा के साथ आचार्यश्री को पंचकल्याणक महोत्सव स्थल पर लाया गया। समाज के विशेष आग्रह पर आचार्यश्री का १० मिनट का मंगल उपदेश हुआ। वह १० मिनट का मंगल उपदेश राकेश को अंतर से आंदोलित कर गया। आचार्यश्री ने अपने उपदेश में कहा कि यदि "भरना है तो पहले खाली होना पड़ेगा, हृदय को यदि सद्गुणों के अमृत से भरना है तो अवगुणों के विष को निकालना होगा। वह आचार्यश्री के श्री मुख

से निकलने वाला एक एक शब्द राकेश को चिंतन के सागर में डूबोय जा रहा था। आचार्यश्री ओजभरी मृदुल वाणी राकेश को जीवन जीने की नई दिशा दे रही थी। आचार्यश्री की मीठी मुस्कान, गम्भीर चर्या और अगाध वात्सल्य राकेश को सहसा ही साधु जीवन की ओर आकृष्ट कर रहा था।

कहते है कि योग्य उपादान को जब तक योग्य और प्रबल निमिप्त नहीं मिलता तब तक उस उपादान में कार्य की सिद्धि नहीं देखी जाती। राकेश ने पहले भी कई साधुओं के दर्शन किये थे, लेकिन, उसकी दृढ़ धारणाओं को पलटने के लिये कोई उपसर्ग विजेता आचार्य विरागसागर जैसा व्यक्तित्व नहीं मिला था। मन की गांठे खुलने लगी थी साधु सानिध्य में मन लगने लगा था।

पारसमणि का सम्पर्क :-

वह थी ८ फरवरी १९९५ की शाम जिसने राकेश में आचार्य विमर्शसागर का बीजारोपण किया था। हुआ कुछ इस प्रकार कि - अपने दैनिक कार्यक्रम के अनुसार राकेश भैया अपनी मित्र मण्डली के साथ निकले और मित्र प्रकाश देवराहा के घर पहुँचे, कहा कि अभी तक दुकान बंद नहीं की चलो जल्दी से दुकान बंद करो और ताश खेलने चलते है। प्रकाश देवराहा ने दुकान बंद की और कहा, राकेश! आज हम लोग पहले आचार्यश्री की वैय्यावृति करने चलते है फिर बाद में आकर ताश खेलेंगे। अशोक बैतपुर और स्वतंत्र सिंघई ने भी प्रकाश की बात का समर्थन किया। लेकिन राकेश सकुचाये से नजर आ रहे थे। प्रकाश देवराहा के और अन्य मित्रों के कहने पर राकेश भी अनमने मन से तैयार हो गये, सभी मित्र मंदिर जी में पहुँच गये, और धर्मशाला में आचार्य कक्ष में परमपूज्य आचार्यश्री विराजमान थे, वैय्यावृति करने वाले अनेक श्रावक आचार्यश्री की वैय्यावृति कर रहे थे, कुछ श्रावक भजनों का सुमधुर गान कर रहे थे। सभी मित्र कमरे में गये। लेकिन राकेश के पैर कमरे के दरवाजे के बाहर ही

ठिठक गये। मित्र उन्हें आगे लेकर आये। राकेश पहली बार किसी साधु की वैय्यावृति करने को आये थे, राकेश ने ज्यौं ही अपने हाथ आचार्यश्री के चरणों को दबाने के लिये आगे बढ़ाये, कि मित्र प्रकाश देवराहा ने आचार्यश्री से शिकायती तौर पर कहा- कि आचार्यश्री ये राकेश हमारा अभिन्न मित्र है लेकिन ये रात्रि को भोजन करता है। आचार्यश्री ने सुना तो इशारे से पूछा कि क्या तुम रात्रि भोजन करते हो ?राकेश ने कहा हाँ आचार्यश्री करते है । तो आचार्यश्री ने अपने पैर पीछे खींच लिये, और सामने कोने में एक क्षुल्लक जी बैठे थे तो राकेश को उनकी वैय्यावृति करने को इशारा किया। राकेश को लगा कि ये तो अपना अपमान हो गया मन में सोचा कि वैय्यावृति तो आचार्यश्री की ही करूँगा, चाहे कुछ भी त्यागना पड़े और राकेश ने तुरंत कहा आचार्यश्री आज से मैं आजीवन रात्रि भोजन का त्याग करता हूँ। और जैसे ही पुनः राकेश ने पैर दबाना चाहा, कि प्रकाश ने पुनः कह दिया, कि आचार्यश्री ये आलू का भी सेवन करते हैं, आचार्यश्री ने पुनः इशारे से पूछा कि क्या तुम ऐसा करते हो? राकेश ने कह दिया कि हाँ आचार्यश्री आलू का सेवन करता हूँ और आचार्यश्री ने इशारे से कहा कि चार माह के लिये आलू का त्याग कर दो राकेश का स्वाभिमान जागृत हुआ और राकेश ने कहा कि, आचार्यश्री! आज से आलू त्याग का आजीवन नियम लेता हूँ। आज से आजीवन आलू सेवन नहीं करूँगा। आचार्यश्री ने मुस्कुराते हुये अपने चरण द्वय राकेश की ओर वैय्यावृति हेतु बड़ा दिये, अपनी मधुर मुस्कान के साथ अपना वरद हस्त राकेश के सिर पर रखकर आशीर्वाद दे दिया। आचार्यश्री के इस वरद् हस्त का पारसमणी के समान, जब राकेश रूपी लोहे ने स्पर्श किया, तो राकेश की दिशा और दशा दोनों ही बदल गई, और लोहे के अंदर भी अपनी स्वर्ण पर्याय प्रगट करने की प्रबल भावना जागृत हो गई।

जितनी प्रसन्नता युवक नरेन्द्र (स्वामी विवेकानंद) को उनके गुरू
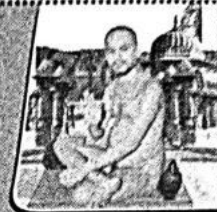
स्वामी रामकृष्ण परमहंस के चरणों में पहुँचने पर हुई थी। उतनी प्रसन्नता और आत्म शांति का अनुभव आज राकेश को आचार्यश्री के चरण सानिध्य में हो रहा था।

जिस प्रकार गुरूपूर्णिमा इन्द्रभूति गौतम के लिये अंतिम तीर्थेश महावीर के चरणों में समर्पण का दिन बना था । उसी प्रकार ८ फरवरी १९९५, बुधवार का दिन भैया राकेश के लिये परम पूज्य आचार्य गुरुवर विरागसागर जी के चरणों में समर्पण का दिवस बना। वह वैय्यावृति की घड़ी मानों उनके जीवन में वैय्यावृति नाम का तप बनकर फलित हुई। जिसके ताप में जीवन के सभी विकार झुलस गये और अमृतमयी गुणों को ग्रहण करने के लिये जैसे राकेश का मन पूर्णतः खाली और स्वच्छ हो गया।

जिस प्रकार भगवान महावीर का प्रथम दर्शन करके, इन्द्रभूति गौतम उनके पहले गणधर बने थे और बालक नरेन्द्र, स्वामी रामकृष्ण परमहंस का दर्शन करके उनके प्रभावी शिष्य स्वामी विवेकानंद बने थे। उसी प्रकार किसको मालूम था कि आ. श्री विरागसागर जी की प्रथम बार वैय्यावृत्ति करनेवाला यह तरूण नौजवान राकेश उनका प्रियाग्र और अत्यंत प्रभावी शिष्य प.पू. आचार्यश्री विमर्शसागर बनेगा ।

आचार्यश्री का जादूई स्पर्श करने मात्र से ही राकेश को संसार, शरीर और भोग नश्वर प्रतीत होने लगे थे। राकेश भैया वैय्यावृत्ति करके वापिस जाने लगे, मित्रों ने कहा यार राकेश ! चलो अब तास खेलेंगे लेकिन राकेश तो अपना सब कुछ आचार्यश्री के चरणों में हार चुके थे। अब मन तास में नहीं आचार्यश्री के पास में लग रहा था। वैय्यावृति समाप्त होते ही राकेश सीधे घर आ गये, रात भर चिंतन चलता रहा कि मैंने आचार्यश्री के चरणों में नियम तो ले लिया लेकिन अब इन नियमों का निर्वाह कैसे होगा, घर में रहकर में शायद इन नियमों का पालन नहीं कर पाऊँगा।

चैतन्य के धरातल पर वैराग्य के अंकुर प्रस्फुटित होने लगे थे जीवन के दरवाजे पर वैराग्य दस्तक दे रहा था। निष्कर्ष यह निकला कि राकेश मन ही मन में संकल्पित हो गये कि, अब में घर पर नहीं रहूँगा। अब मैं आचार्यश्री के संघ में ही जाऊँगा।

भोर हुई, पक्षियों का कलरव सुनाई देने लगा । सूर्य क्षितिज पर रश्मियाँ बिखेरने लगा था । और भगवान जिनेन्द्र के पंचकल्याणक का शुभारम्भ हो चुका था। लगता था, मानो रात के साथ भैया राकेश का पुराना जीवन कहीं खो गया हो और इस नई प्रभात के साथ जीवन की नई शुरूआत हो रही हो। सुबह का सुप्रभात देवदर्शन और गुरू वंदना से हुआ और फिर बस जैसे एक ही काम भैया राकेश को, अच्छा लग रहा था आचार्यश्री के संघ की व्यवस्था, उनकी सेवा, आदि।

नियम के प्रति आस्था :-

शाम के समय भैया राकेश घर से पंचकल्याणक स्थल की ओर जा रहे थे। समय था ७ - ८ बजे का और बस स्टेण्ड चौराहे पर पूर्व के संस्कार वश भैया राकेश ने पेड़े खरीदे और खा लिये, खाते ही याद आ गया, आचार्यश्री से लिया गया रात्रि भोजन त्याग का नियम। मन ग्लानि से भर गया, नियम टूटने से मन दुःखी हो गया । और पुनः इस चिंतन को बल मिला कि शायद में अब इन नियमों का पालन घर में रहकर नहीं कर पाऊँगा। कल सुबह जाकर आचार्यश्री से प्रायश्चित्त लूँगा। रात जैसे तैसे गुजरी और सुबह होते ही स्नान आदि से निवृत्त होकर आचार्यश्री के चरणो में पहुँच गये। और सारा वृतांत सुना दिया, आचार्य महाराज ने वात्सल्यमय मुस्कान बिखेरते हुये यथा योग्य प्रायश्चित दिया। आचार्यश्री से प्रायश्चित्त पाकर मन को कुछ सुकून सा मिला। और फिर पुनः आचार्यश्री को नमोऽस्तु करके संघ की व्यवस्थाओं में जुट गये, सुबह से मुनिसंघ की शौच क्रिया, आहारचर्या और

स्वाध्याय आदि में बैठना, अपने पुत्र की धार्मिक क्षेत्र में इस प्रकार रूचि लेना माँ भगवती और पिता सनतकुमार जी को आह्लाद का कारण बना हुआ था। अपने पुत्र की धर्म से विमुखता को लेकर नाराज रहनेवाले कुटुम्बीजन आज मन ही मन मैं फूले नहीं समा रहे थे।नगर जतारा में पंचकल्याणक की पीयूष बेला का पदार्पण हो चुका था। नगर के कुण्ड पहाड़ी का वह विशाल प्रांगण, मानों भगवान के पाँचों कल्याणकों की अमृत वर्षा से पावन हो गया हो, जैन और जैनेत्तर बंधुओं में महोत्सव के दौरान जो उमंग और उत्साह देखा जा रहा था, वह जतारा के इतिहास में पहले कभी भी नहीं देखा गया था। परम पूज्य आचार्यश्री का सानिध्य और महोत्सव संबंधी प्रत्येक विषय का अति सूक्ष्म और सार गर्भित मांगलिक प्रवचन सबको नई ऊर्जा और चिन्मयता प्रदान कर रहा था।

अब राकेश का मन घर में कम और आचार्यश्री के चरणों में ज्यादा आनंदानुभूति कर रहा था। इन छः सात दिनों में आचार्यश्री के पावन चरणों में राकेश के नवीन जीवन की भूमिका तैयार हो रही थी। आचार्यश्री के प्रति भैया राकेश के मन में अगाध श्रद्धा का सागर हिलोरें ले रहा था। स्वाध्याय के माध्यम से अब राकेश के अंदर वैराग्य दिनों दिन दृढ़ हो रहा था।

महोत्सव के अंतिम दिन त्रय गजरथ का भव्य आयोजन था, ऐसा प्रतीत हो रहा था मानों मनुष्यों का महासागर उस समय जतारा की गोद में समाया हो । त्रय गजरथ की सप्त फेरियों के साथ जतारा के कुण्ड पहाड़ी के विशाल प्रांगण में सातिशय और ऐतिहासिक पंचकल्याणक महोत्सव निर्विघ्न और सानंद सम्पन्न हुआ । और आचार्यश्री का जतारा से दिनांक १४ फरवरी ९५ को विहार तय हुआ।

शुरू में मिले गुरू :-

दिनाँक १४ फरवरी जिस दिन परमपूज्य आचार्यश्री का मंगल विहार

होना था। समयानुसार आचार्यश्री ससंघ आहारचर्या के लिये निकले। भैया राकेश श्री मोतीलाल सगरवारा (पिता के मामाजी) के घर पर अपने पिताश्री सनतकुमार जी के साथ पडगाहन के लिये खड़े हो गये। देवयोग से आचार्यश्री का पड़गाहन भैया राकेश द्वारा ही हो गया। आचार्यश्री का निर्विघ्न आहार सम्पन्न हुआ। राकेश मन ही मन फूले नही समां रहे थे, मानो ऐसा लगता था जैसे उन्हें आज कोई अमूल्य निधी प्राप्त हो गई हो।

आचार्यश्री की आहारचर्या के बाद भैया राकेश हाथ में कमण्डल लेकर पहुँचाने जाते हैं । और अपने भाग्य को बार-बार सराहते हुये आचार्यश्री के चरणों में बैठकर उनके पग दबाने लगे। सामायिक का समय हो गया, आचार्यश्री ने संकेत किया कि जाओ भोजन करो, और हम अब सामायिक करेगें।

आचार्यश्री के कहने पर भैया राकेश ने सगरवारा वालों के यहाँ आकर चौके में शुद्ध भोजन ग्रहण किया।

भैया राकेश के मन में वैरागी विचारों की अविरल धारा प्रवाहित हो रही थी। वैराग्य मन के दरवाजे पर दस्तक पर दस्तक दिये जा रहा था। और शायद अब तक राकेश के मन में यह निश्चय भी हो चुका था, कि अब में घर पर नहीं रहूँगा । और अपना सारा जीवन आचार्यश्री के चरणों में ही बिताऊँगा।

भोजन करके भैया राकेश, नीरज (मोतीलाल सगरवारा के छोटे पुत्र) को साथ में लेकर अपने घर पहुँचे। माँ भगवती भोजन के लिये राकेश का इंतजार ही कर रही थी।

घर पर पिता जी थे नहीं, राकेश को आता देख माँ भगवती ने कहा, बेटा ! आज तो तुमने दूध भी नहीं पिया, दोपहर होने को आई क्या अभी भी भूख नहीं लग रही है। राकेश को आचार्यश्री के चरणों में जो आनंदानुभूति हुई

थी उसको अपनी माँ के सन्मुख वो शब्दो से प्रगट नहीं कर पा रहे थे। कहते है अम्मा आज मैने मँझले मामा के चौके में पूज्य आचार्यश्री का पड़गाहन किया और उन्हें अपने हाथों से आहारदान देने का सौभाग्य प्राप्त किया है। और वहीं मामा के चौके में मैने भोजन भी कर लिया है। प.पू. आचार्यश्री के आहार के बाद उसी चौके में आचार्यश्री के प्रसाद के रूप में किये गये भोजन में मुझे जो आनंद आया जो आत्म शांति का अनुभव हुआ, उसे में शब्दों में व्यक्त नहीं कर सकता यह कहकर मंद मंद मुसकुराने लगे। और कहते हैं, अम्मा जल्दी भोजन बनालो और करलो, क्योंकि आज आचार्यश्री (संसघ) का दोपहर २ बजे गमन होने की संभावना है। मैं मंदिर जा रहा हूँ, क्योंकि अभी आचार्यश्री के संघ की व्यवस्था बनाना है। तुम काम से निर्वत्त होकर शीघ्र मंदिर जी में आ जाना।

जन्म भूमि को अंतिम प्रणाम :-

माँ भगवती भी अपने कार्य में संलग्न हो गई, माँ तो यह समझ ही नहीं पाई कि उनके मझले बेटे राकेश के साथ बेटे के रूप में यह अंतिम वार्तालाप हो रहा था। और आगे वो अपने बेटे को बेटे के रूप में नहीं एक ब्रह्मचारी भैया के रूप में देखेंगी। राकेश भैया ने आचार्यश्री के सात दिन के प्रवास में निरंतर अपने अंतरंग में वैराग्य की भावना को बलबती किया। जिसे आचार्य विरागसागर जी जैसा वात्सल्य का महासागर मिल गया हो उसे अपनी माँ की कहाँ याद आयेंगी, और जिसे आचार्यश्री जैसी धैर्य और गम्भीरता की छत्रछाया मिल जाये उसका मन पिता की छाया में कहाँ लगेगा। बस यही राकेश के साथ हुआ, अब आचार्य श्री को पाकर राकेश के मन में न माता-पिता के प्रति मोह रह गया था, और न ही परिवार जनों के प्रति स्नेह। इन सात दिनों में अपने अंतरंग से मोह को, भैया राकेश ने वैराग्य चिंतन के जल से धो डाला था। भैया राकेश माँ से बात करके अपने

कमरे में गये, और कुछ आवश्यक सामान लेकर घर से बाहर आकर घर के मुख्य दरवाजे की दहलीज को तीन बार स्पर्श कर माथे पर लगाया, जैसे उन्होंने अपनी जन्म भूमि को अंतिम तीन बार प्रणाम किया हो। उनकी यह क्रिया पड़ोस में ही रहने वाली श्री दयाराम सोनी की धर्मपत्नी श्री मति शांतिदेवी सोनी अपने छत पर खडी देख रही थी । किन्तु वह समझ नहीं पा रही थी कि राकेश यह सब क्या कर रहे हैं । इसलिये उन्होनें यह घटना तत्काल राकेश के परिवार जनों को नहीं बताई, अन्यथा उसी समय रहस्योदघाटन हो जाता।

मंगल विहार :-

वह थी १४ फरवरी ९५ के दिन की अपराण्ह बेला, आचार्यश्री एवं समस्त संघस्थ साधुओं की सामायिक क्रिया हो चुकी थी आपराण्हिक ३ बजे विदाई सभा का आयोजन रखा गया था। आचार्यश्री संघ सहित प्रवचन हेतु सभागार में पहुँचते उससे पहले ही विहार की खबर सुनकर नगर जतारा के सभी श्रावक-श्राविकायें एवं बालक बालिकायें प्रवचन हाल में एकत्रित हो चुके थे। मंदिर जी प्रांगण में जन सैलाब एकत्रित था। सभी की मुखाकृति पर वियोग की रेखायें स्पष्ट नजर आ रही थी क्योंकि थोड़े ही समय में परम पूज्य आचार्यश्री का जतारा से बिहार होने वाला था । निर्धारित समय पर आचार्यश्री अपने संघ के साथ प्रवचन प्रांगण में प्रवेश करते हैं । आचार्यश्री का ३ से ४ बजे तक मंगलमय प्रवचन हुआ। सभी की आँखें अश्रुपूरित थी प्रवचन चल रहा था । और जन समुदाय से उठने वाली सिसकियों से सारा हॉल गुंजायमान हो रहा था । सभी श्रावक-श्राविकाये, अपने आँखों से बहने वाली अश्रुधारा को रोक नहीं पा रहे थे। आचार्यश्री के प्रवचन के उपरान्त समाज के लोगों के द्वारा संघ से क्षमायाचना की गई विनयांजलि समर्पित की गई और फिर आचार्यश्री ससंघ अंतिम दर्शन हेतु मंदिर जी में गये, और

दर्शन के उपरान्त संघ का विहार हो गया।

अपार जन समुदाय आचार्यश्री के जयकारों से आकाश को गुंजायमान करता हुआ साथ चल रहा था। "आचार्यश्री दूर न जाना, हम बच्चों कों भूल न जाना" के नारों से सारा माहौल गमगीन हो रहा था। जगह-जगह रंगोलियाँ, घर घर पर आचार्यश्री के पाद प्रक्षालन हेतु इंतजार करती आँखें, जगह - जगह आचार्य महाराज की मंगल आरती करने श्रावकों की टोलियाँ खड़ी थीं।

जैन नवयुवक संघ के सदस्य दिव्य घोष, बैनर और ध्वज लेकर आगे आगे चल रहे थे। भैया राकेश भी प्रसन्नता के साथ आचार्यश्री के चरणों में पूर्ण समर्पित भाव से साथ साथ विहार कर रहे थे। विहार करते हुये संघ, जतारा से ६ कि.मी. दूर स्थित माँची ग्राम में शाम ५.३० बजे पहुँचा। बहुत ही धर्म प्रभावना के साथ माँची में आचार्यश्री का पदार्पण हुआ। रात्री विश्राम माँची ग्राम में हुआ, सुबह १० बजे नवधा भक्तिपूर्वक माँची में आचार्य संघ की निरन्तराय आहार चर्या सम्पन्न हुई। सामायिक के उपरान्त दोपहर २ बजे माँची से आचार्यश्री ने विहार किया। भैया राकेश वैराग के पथ पर अपने साथी नीरज सगरवारा एवं संजीव माँची के साथ प्रसन्नता पूर्वक बड़े जा रहे थे।

शाम को ४.३० बजे ग्राम मंजना पहुँचे, और उसी तरह जगह-जगह दीपों के सजे थाल, पाद प्रक्षालन आदि के साथ भव्यता से जयकारों के गूँजते स्वरों के बीच, आचार्यश्री का पदार्पण हुआ। रात्री विश्राम भी मन्दिर जी में किया।

अगले दिन १६-२-९५ को श्रावकों के घर मैं नवधा भक्तिपूर्वक चौके आदि की व्यवस्था की गई और आचार्यश्री एवं उनके विशाल संघ का निर्विघ्न आहार हुआ। राकेश भी एक श्रावक के घर पड़गाहन करने के लिये

खड़े हो गये और ऐलक विश्वजीत सागर जी भैया राकेश से पड़ग गये, ऐलक जी को भैया राकेश चौके के भीतर ले गये, लेकिन उस समय चौके में कोई दूसरा व्यक्ति था ही नहीं और भैया राकेश भी - आहारचर्या की सम्पूर्ण विधि से अपरिचित थे, चौके तक तो ऐलक जी को भैया राकेश ले गये, और उतना जितना सीखा था, अन्य लोगों को देखकर उतना बोल दिया," हे स्वामी मन शुद्धि, वचन शुद्धि, काय शुद्धि " लेकिन नवधा भक्ति में उच्चासन के लिये भी बोला जाता है। यह भैया राकेश भूल गये, दोनों हाथ जुड़े हुये है। और ऐलक महाराज को देख रहे है, और सोच रहे है। कि ये ऐलक महाराज बैठते क्यों नहीं और ऐलक महाराज भी भैया राकेश की और देख रहे है, कि ये उच्चासन ग्रहण के लिये बोले तो में उच्चासन ग्रहण करूँ, राकेश ने कहा- बैठिये महाराज। ऐलक जी ने सोचा शायद नया लड़का है अतः इतना सुनकर भी शांति से मुस्कुराते हुये पाटे पर बैठ गये। देखने वाले लोग भी प्रसन्नता से ताली बजाने लगे। तभी ब्रह्मचारी अजय भैया क्षुल्लक विपुलसागर जी को लेकर उसी चौके में आ गये, उनको देखकर भैया राकेश को साहस आया,और सबके सहयोग से महाराजों का निरन्तराय आहार सम्पन्न हुआ। उसी दिन आचार्यश्री ससंघ का शाम ४ बजे लगभग मंजना से ७-८ किलामीटर दूर, ग्राम मवई के लिये विहार हुआ, रात्री विश्राम मवई में हुआ।

रात्री को राकेश भैया के पिता श्री सनतकुमार जी ने राकेश से कहा, कि भैया आचार्य महाराज के साथ तुम्हें दो दिन हो गये, और पंचकल्याणक में भी विद्यालय से अवकाश लिये थे, अब घर चलो वापिस, राकेश भैया ने हल्के स्वर में उत्तर देते हुये कहा दादा हम अहार जी तक आचार्यश्री के साथ ही जायेगें, पुत्र का आश्वासन प्राप्त कर, पिता,भविष्य से अनविज्ञ अपने घर जतारा लौट आते हैं सोचा कि ३-४ दिन में भैया राकेश आहार जी से निश्चित ही लौट आयेगें, मगर दूसरी तरफ जो राकेश के अंदर संसार शरीर और भोगों से विरक्ति की कोंध उठ रही थी, उससे वह पिता अनविज्ञ थे,

अतिक्षय क्षेत्र पर पदार्पण :-

आचार्यश्री संघ सहित ग्राम मवई से विहार कर १८ फरवरी को अतिशय क्षेत्र अहार जी पहुँचे । अहार जी बुन्देलखण्ड की धरा का एक अनुपम और अद्वितीय अतिशय और सिद्ध क्षेत्र है, जहाँ २१ फीट उतंग एक अखण्ड देशी पाषाण से निर्मित्त भगवान शांतीनाथ की मनोज्ञ और अतिशयकारी प्रतिमा स्थापित है। जिसकी स्थापना वि.सं.१२२७ में श्रेष्ठी गल्हण के पुत्र जाहड एवं उदयचन्द्र ने मूर्ति निर्माता, वास्तु पर अधिकार रखने वाले ब्राह्मणपुत्र, पापट से बनवाकर करवाई थी, भगवान शांतिनाथ के निकट दोनों ओर खड़गासन श्री अरनाथ और कुंथुनाथ भगवान की ११ फुट उतंग प्रतिमायें विराजमान हैं। आचार्यश्री ने संघ सहित भक्तिभाव पूर्वक इस पवित्र वसुधा की वंदना की और रात्री को यहीं विश्राम किया।

अतिशय की नजर :-

१. इस क्षेत्र पर पाणाशाह नामक प्रसिद्ध श्रेष्ठी के पास जितना राँगा था वो सब राँगा से चाँदी हो गई थी इस, कारण यह क्षेत्र अतिशय क्षेत्र कहलाया जिसका उपयोग पाणाशाह ने पूरे भारत वर्ष में अनेक विशाल मूर्तियाँ तथा भव्य जिनालय बनाने में किया।

२. मासोपवासी एक परमपूज्य मुनिराज का यक्षणी कृत उपसर्ग दूर होकर यहाँ उनका निरन्तराय आहार सम्पन्न हुआ था, इस कारण इस क्षेत्र का अहारजी नाम पड़ा।

३. इस क्षेत्र पर भगवान शांतिनाथ का ऐसा अतिशय है। कि जो भी मन में इच्छायें लेकर आता है। उसकी सभी इच्छाओं की पूर्ति उसके पुण्य से हो जाया करती है।

सिद्ध भूमि के आइने में :- भगवान मल्लिनाथ के मोक्ष हो जाने के उपरान्त, सत्रहवें कामदेव श्री मदनकुमार(नलराजा) तथा महावीर स्वामी के

तीर्थकाल में आठवें विष्कम्बल केवली मुनिराज इसी आहारजी के समीप एक पहाड़ी से मोक्ष पधारे थे। जो वर्तमान में पंच पहाड़ियों के नाम से विख्यात है। जहाँ आज इन महाराजों के अलावा ४ जैन तीर्थंकर श्री शांतिनाथ, मल्लिनाथ, आदिनाथ और महावीर स्वामी की चरण पादुकायें बनी हुई हैं।

४. सिद्धों की टोरिया, सिद्धों की गुफा, सिद्धों की मडिया, झालर की टोरिया आदि अनेक स्थान हैं । जो आहारजी को प्राचीनता के साथ साथ सिद्ध क्षेत्र की पहचान दिलाता है। इस क्षेत्र पर भगवान शांतिनाथ के नाम से अनेक योजनायें संचालित है। श्री शांतिनाथ विद्यालय, श्री शांतिनाथ त्यागीव्रती आश्रम, श्री शांतिनाथ सरस्वती सदन, श्री शांतिनाथ जैन वाचनालय, प्राचीन जिन प्रतिमाओं के संग्रह हेतु श्री शांतिनाथ जैन संग्रहालय, श्री शांतिनाथ औषधालय, श्री शांतिनाथ छात्रावास के साथ सर्व सुविधा युक्त २०० कमरों वाली एक धर्मशाला भी है। क्षेत्र पर वर्तमान में अगहन शुक्ला त्रयोदशी से पूर्णमासी तक प्रति वर्ष अनेक धार्मिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों के साथ वार्षिक मेला भी आयोजित किया जाता है। जिसमें जैन समाज के साथ साथ जैनेत्तर समाज भी इकट्ठी होती है।

कभी-कभी छोटी घटनायें भी जीवन को रहस्यमयी ढंग से परिवर्तित कर जाती हैं । अब पूज्य मुनिवर से किसी ने प्रश्न किया कि आप अपने अतीत के उन अनछुयें पहलुओं के बारे में कुछ बतायें जब आपके अंदर दिगम्बरत्व करवट ले रहा था। वह कौन सी घटना थी, जिससे वैराग्य के प्रति आपके विचारों को दृढ़ता मिली, तब पूज्य श्री ने बताया कि दो घटनायें मेरे जीवन को परिवर्तित करने में कारण बनी थी। पहली जब (१) जतारा पंचकल्याणक महोत्सव का प्रारंभ होने वाला था। दो दिन पूर्व की यह घटना है।

जतारा का ध्रुव तारा

संयम के पथ पर समय का गमन
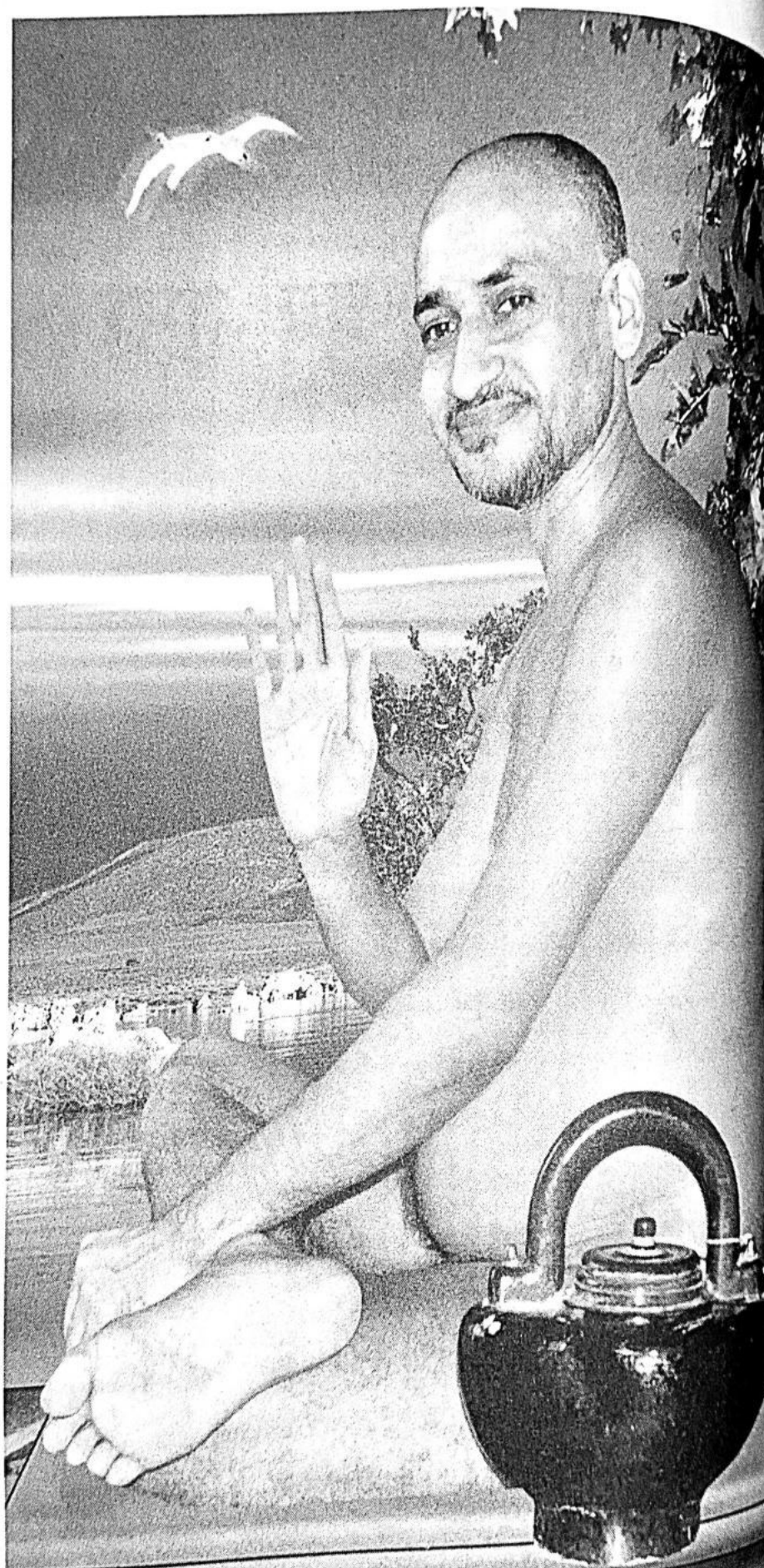
"जीवन है पानी की बूँद" गीत के मूल रचयिता एवं "विमर्श लिपि" के सृजेता
परम पूज्य राष्ट्रयोगी श्रमणाचार्य 108 श्री विमर्शसागर जी महाराज

नामाकर्षण

आचार्य संघ आहार के लिए निकला। किसी कारणवश क्षुल्लक विमुक्तसागर लौट आये। नगर में चर्चा का विषय बन गया। आचार्य श्री ने पुनः निकलने की आज्ञा दी। तब क्षुल्लक जी आहार सुखनंदन माँची के यहां हुआ। मेरे मन में विचार आया कि महाराज को मंदिर तक छोड़ने चलते है, रास्ते में क्षुल्लक जी ने हाथ पकड़ लिया और पूछने लगे कि "तुम्हारा नाम क्या है।" मैने कहा " राकेश " ! ओह ! यही तो गृहस्थ अवस्था में मेरा नाम था। उन्होंने पूछा क्या पूजन करते हो? राकेश भैया ने कहा- नहीं महाराज। उन्होंने पुनः पूछ लिया क्यो नहीं करते ?आज से पूजन करने का नियम लो ! राकेश भैया ने कहा महाराज हमें पूजन करना नहीं आता । पहले सीख लें उसके बाद फिर नियम ले लेगें। उन्होंने कहा- नियम ले लो, जब सीख जाओ तब करना। पूजन के लिये प्रेरणा और उनका वात्सल्य, हृदय को छू गया। घर आ गये।

विचार किया, मैनें रात्री भोजन, आलू त्याग, पूजन आदि के नियम तो ले लिये लेकिन अब घर में इनका पालन करना संभव नजर नहीं आता। अतः अंतरंग आचार्यश्री के चरण सानिध्य की मांग करने लगा।

इधर अहार जी में दिनाँक २६ फरवरी ९५ को सात ब्रह्मचारिणी बहिनों की आर्यिका दीक्षा का कार्यक्रम आचार्यश्री ने निश्चित कर दिया ।

आचार्य श्री विरागसागर जी ससंघ के साथ सिद्ध क्षेत्र अहारजी में प्रवेशः-

सिद्ध भूमि अहारजी में प.पू. आचार्य श्री विरागसागर जी महाराज ससंघ ने दिनाँक १८/२/१९९५ को मंगल प्रवेश किया। राकेश भैया के लिये अहारजी सिद्धक्षेत्र का सुखद संयोग दूसरी बार प्राप्त हुआ। प्रथम तो जब आचार्य विद्यासागर जी ससंघ सिद्ध भूमि पर आये थे, तब एक मुनिराज की समाधि का प्रसंग बना था। दूसरी बार अब, जबकि आचार्य विरागसागर जी ससंघ सिद्ध भूमि की वंदना करने आये हैं। साथ ही प्रसंग है सात ब्रह्मचारिणी बहिनों की संघ में प्रथम बार आर्यिका दीक्षा।

सिद्धभूमि पर सिद्ध बनने की रखी आधारशिला, लिया ब्रह्मचर्य व्रत :-

अहारजी पहुँचते ही राकेश भैया, नीरज सगरवारा, संजीव माँची सभी ने मिलकर एक कमरा ले लिया, और आगामी योजना पर विचार मंथन किया। एक दिन नीरज सगरवारा के परिवारजन को जब पता चला कि ये ब्र.व्रत लेना चाहते हैं तो अचानक ही वह अहारजी आ गये, और नीरज को डांट-डपटकर जतारा ले गये। फिर एक दिन संजीव के परिवारजन आये, उन्होंने भी संजीव को ले जाने का प्रयास किया, किन्तु सफल न हुये, अतः वापिस लौट गये। संजीव ने सोचा अभी ब्र.व्रत लिये बिना ही आचार्य श्री के साथ रहेंगे। अब राकेश भैया ने विचार किया कि मुझे ब्र.व्रत के विषय में प.पू. आचार्य श्री विरागसागर जी महाराज से बात करना चाहिए। तभी मन में विचार आया कि यदि आचार्य श्री ने पूछा-तुम्हें जैनधर्म का क्या-क्या आता है तो मैं। निरूत्तर रह जाऊँगा अतः मुझे कुछ सीखना चाहिए, फिर आचार्यश्री से निवेदन करना चाहिए।

राकेश भैया ने बुक स्टॉल से दो पुस्तकें खरीदीं, एक तो छहढाला, दूसरी आचार्य श्री विद्यासागर जी की प्रवचन पुस्तक, "ब्रह्मचर्य चेतन का भोग" रात्रि में छहढाला की प्रथम ढ़ाल याद कर ली और सोचा कल सुबह आचार्य श्री से ब्र.व्रत लेने की प्रार्थना करूँगा, यदि आचार्य श्री ने पूछा- जैन धर्म का तुम्हें क्या आता है तो कह दूँगा- छहढाला। आचार्य श्री यदि सुनेंगे तो पहली ढाल सुना दूँगा। फिर आचार्य श्री के पास इतना समय तो होगा नहीं कि पूरी छहढाल सुनें, वो पहली ढाल सुनते ही समझ जायेंगे, कि हाँ इस वैराग्य पथ के राही को छहढाला याद है।

दिनाँक २२/२/१९८५ को राकेश भैया ने आचार्य श्री से ब्र.व्रत के लिये निवेदन किया। आचार्य श्री ने कहा- व्रत लेने के लिए अपने माता-पिता को लाना आवश्यक है उनकी स्वीकृति होते ही आशीर्वाद दूँगा। राकेश भैया नमोऽस्तु करके वापिस आ जाते हैं। सोचा अब क्या करें? तभी मुकेश जैन

(मवई वाले) जतारा जा रहे थे, उन्होंने कहा- राकेश जतारा चल रहे हो क्या? मैं जा रहा हूँ। राकेश भैया ने कहा- अब जतारा जाने का विचार नहीं हैं, हाँ घर पर पिताजी से बोल देना की राकेश ने ब्रह्मचर्य व्रत ले लिया है। बड़े ने सुना, तो वह भी आश्चर्य चकित हो गये, लेकिन वह और कर भी क्या सकते थे, उन्होंने कहा- ठीक है मैं बोल दूँगा।

दिनाँक २३/२/१९९५ को श्री सनतकुमार जी माता भगवती को जैसे हीं यह बात पता चली तो विश्वास न हुआ। माता की ममता उमड़ पड़ी। और राकेश भैया को अहारजी से समझाकर लाने की तैयारी प्रारम्भ हो गई। २४/२/१९९५ को सनतकुमार जी सपरिवार माँ भगवती देवी, दादी बैनीबाई, बड़े भैया राजेश, अनुज चक्रेश, बहिन कमला, प्रियंका आदि अहारजी पहुँच गये। सभी ने राकेश को समझाना प्रारम्भ किया।

पिता सनत कुमार बोले – काय भैया जौ का सुन रय, तुम ब्रह्मचर्य व्रत ले रय।

राकेश – हाँ अब आप लोग आ गये हैं तो आचार्य श्री के पास चलना।

पिताजी – भैया हम आचार्यश्री के पास जावे खों नइँ आय हैं हम सब जनें तो तुमें लेने खो आय हैं।

राकेश – अब मैं घर नहीं जाऊँगा।, संघ में ही रहूँगा।

सनत – ऐसे कैसे नइँ जायेंगे, अबै घरे चलो फिर बाद में आ जइयो।

माँ भगवती – बेटा ! अबै तुमें जैनधर्म को का आउत है कछु दिना घरै रैकें सीख लो, फिर आ जइओ।

राकेश – मैंने तो आप सबको बता दिया है मैं तो व्रत लूँगा। (इतना कहकर कमरे से बाहर निकल गये)

दोपहर में फिर इसी तरह का वार्तालाप होता रहा। राकेश भैया ने अधिकांश समय मौन रहना ही उचित समझा और उचित समय उचित उत्तर भी दिया।

रात को फिर ११ बजे तक सभी लोग राकेश भैया को समझाते रहे। लेकिन राकेश ने अपने दृढ़ इरादे को जरा भी नहीं छोड़ा।

दिनाँक २५/२/१९९५ को दोपहर में राकेश भैया को सभी ने समझाया। पिता सनतकुमार जी ने तो यहाँ तक कह दिया, कि मैं आचार्य श्री विरागसागर जी महाराज से कहूँगा कि तुम हमारे लड़के को भगाकर लाये हो। राकेश ने भी विनम्रता से कह दिया-आप कह देना।

तभी दादी अचानक बोलीं - बल्लू! अगर तुम घरे नइँ चले, तो हम इतइँ जान दे देंगे।

राकेश - सब जीव अकेले आते हैं अकेले जाते है। मोह नहीं करना चाहिए, मैं गलत मार्ग पर नहीं जा रहा हूँ। मुझे अपनी आत्मा का हित करने दो। फिर यह तो सिद्धक्षेत्र है सभी मुक्ति प्राप्त करें।

(इतना कहकर राकेश वहाँ से चले गये)

शाम को जतारा से सुभाष कोठादार का आना हुआ। राकेश ने सुभाष को सारी बात बता दी। सुभाष ने कहा- यदि आप में दृढ़ता है तो जरूर इस मार्ग पर जायें मैं सहयोग करूँगा, साथ ही परिवार वालों को भी समझाऊँगा।

२६/०२/१९९५ को अहार जी में सुबह से ही काफी चहल-पहल हो रही थी। क्यों न हो, आखिर आचार्य श्री के द्वारा प्रथम बार ७ बहिनों की आर्यिका दीक्षा का अवसर जो था। राकेश भैया के कॉलेज समय के मित्रगण भी समझाने को आये हुये थे। लोकेश खरे, कमलेश बसंल, पवन जैन।

दोपहर में एक ओर आर्यिका दीक्षा का आयोजन चल रहा था। दूसरी ओर राकेश के मित्रगण राकेश को इस मार्ग से रोकने के लिए पुराने कॉलेज समय की बातें कर रहे थे।
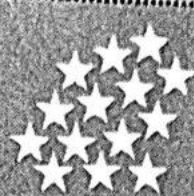
. चूँकि राकेश को पिक्चर जाने का बहुत शौक था। तो सभी मित्रगण बोल रहे थे, राकेश टीकमगढ़ में इस-इस टॉकिज में यह-यह पिक्चर चल रही है देखने नहीं चलना! अपन सभी लोग एक साथ चलेंगे। राकेश ने कहा- अब हमारा लक्ष्य दूसरा है, वह समय दूसरा था। अब आप लोगों को ऐसी बातें नहीं करना चाहिए।

कमलेश ने कहा- राकेश! तुम और इस मार्ग पर, भैया सोच लो।

लोकेश ने कहा- राकेश हमारा बचपन का मित्र है वह हमारी हर बात मानता है। वह आज पिक्चर देखने जरूर चलेगा।

पवन ने कहा- लगता है राकेश का मन हो गया है पिक्चर देखने का।

क्योंकि राकेश तो लगातार चार-चार शो तक देखता था। राकेश को किसी की भी बात अच्छी नहीं लग रही थी। उसका ध्यान तो अपने आत्महित की ओर था।

तभी राकेश ने लघुशंका का बहाना बनाया और मित्रों को उसी स्थान पर रोककर धीरे से पंचपहाड़ी चले गये और शांतिनाथ का ध्यान करने लगे।

जब काफी देर हो गई, तो मित्रों ने सोचा, भैया राकेश तो चुपके से कहीं चला गया। उन्होंने पांडाल में एवं अन्य जगह खोजा। जब कहीं राकेश नहीं मिला तो पंचपहाड़ी आये। वहाँ देखा तो आँख बंद किये ध्यान मुद्रा लगाये राकेश आनन्दमग्न थे। मित्रों ने उन्हें देखा तो पुनः कॉलेज की बातें प्रारंभ कर दी। राकेश मौन होकर सबकी बातें सुनते हुये पंचपहाड़ी से वापिस लौट आये।

शाम का समय था, राकेश ने सोचा- एक ओर परिवारीजन, दूसरी ओर मित्रगण, रात पता नहीं कैसी गुजरेगी। अतः मुनि विशुद्धसागर जी के पास जाकर सारी बात बता दी। मुनि विशुद्धसागर ने मुस्कुराते हुये कहा-रात को हमारे तखत के नीचे सो जाना। राकेश प्रसन्न हुये। नमोऽस्तु करके सीधे शांतिनाथ जिनालय में पहुँचे। और भगवान को नमोऽस्तु करके हाथ जोड़कर भगवान से बोले-

हे भगवन्! मेरे हृदय में आप सदा निवास करते हैं। मैंने मोक्षमार्ग को दृढ़ता से पाने का निर्णय किया है। मैं अपनी ओर से दृढ़ हूँ लेकिन परिवार के लोग तैयार नहीं है। फिर भी मैं अपने कदम पीछे नहीं हटाऊँगा।

हे भगवन्! मुझे जो करना था सो मैंने दृढ़ता से किया है। अब आगे का कार्य आपका है, सो आप जानें।

इतना कहकर जब राकेश कमरे पर गये, तो इस विषय में फिर किसी ने कोई बात नहीं की। २७/२/१६६५ की सुबह स्वयं पिताजी ने राकेश भैया से कहा- ठीक है भैया यदि तुम ब्र.व्रत लेना चाहते हो तो लें लो।

राकेश भैया पिताजी की बात सुनकर आश्चर्यचकित हुये और इसे भगवान शांतिनाथ का चमत्कार हीं मानने लगे। मन ही मन भगवान शांतिनाथ को नमस्कार करके प्रातः ८:३० बजे आचार्य श्री के कक्ष में पहुँचे।

सविनय नमोऽस्तु करके आचार्य श्री से निवेदन किया। गुरूदेव! हम ब्र.व्रत लेकर संघ में रहना चाहते है ये हमारे पिताजी है। परिवार में सभी की अनुमति है।

आचार्य श्री ने मुस्कुराते हुये कहा- कितने समय का व्रत लेना है?

राकेश ने कहा- आचार्य श्री ! अभी तक सभी नियम आजीवन लिये हैं अतः ब्रह्मचारी व्रत आजीवन लेना है।

आचार्य श्री- अभी उम्र कितनी है?

राकेश- इक्कीस में चल रहा हूँ।

आचार्यश्री- अभी आजीवन व्रत नहीं देंगे।

राकेश- तो दस वर्ष का दें दीजिये।

आचार्यश्री- नहीं, दस वर्ष का नहीं देंगे।

राकेश- पाँच वर्ष का दे दीजिये।

आचार्यश्री- पाँच वर्ष का भी अभी नहीं देंगे।

राकेश- फिर आप जितना उचित समझे?

आचार्य श्री- दो वर्ष का व्रत लें लो।

राकेश भैया ने परिवार की अनुमति पूर्वक प्रसन्नता के साथ दो वर्ष का व्रत ले लिया।

आचार्य श्री- घर पर रहोगे या संघ में?

राकेश- संघ में रहूँगा। धोती, दुपट्टा पहनूँगा।

आचार्य श्री ने कहा- अभी तो शायद वस्त्र नहीं होंगे। तभी क्षुल्लक विहितसागर जी ने एक ड्रेस लाकर दे दी। और दूसरी ब्र. अरूण भैया से मंगाकर दें दी।

राकेश भैया ने तुरंत आचार्य श्री के कमरे में ही ड्रेस बदल ली, और पेन्ट-शर्ट एक तरफ रख दिये। पिता सनत जी ने पेंट-शर्ट धरोहर के रूप में उठा लिए और बेटे को आचार्य संघ में सौंप दिया।

संघ में एक और वैरागी का पदार्पण :-

इस प्रकार २७ फरवरी १६६५ के दिन भैया राकेश ने परम पूज्य आचार्यश्री विरागसागर जी के लघु शिष्य के रूप में संघ में पदार्पण किया, मन में दृढ़ संकल्प की शक्ति के साथ, मोक्षमार्ग की कठिन डगर पर साधना के प्रथम सोपान पर भैया राकेश धीरे-धीरे चलने का प्रयास करने लगे।

ये वीरों का मार्ग है :-

'अब राकेश अपना नहीं रहा, अब किसे बल्लु कहकर पुकारेंगे' 'कौन चक्रेश को सहारा देगा' आदि नाना प्रकार की चर्चाओं के मध्य दो-तीन दिन घर परिवार के लोग आहार जी रूके, और अब भारी मन से, खाली हाथ और रोता हुआ दिल लेकर जतारा वापसी की तैयारी होने लगी। भैया राकेश भी अब दुनिया की रंगीनी के साथ, उन रंगीन कपड़ों को छोड़ शुक्ल लेश्या के प्रतीक धवल वस्त्र अंगीकार करके संघ की दैनिक चर्याओं से जुड़ने का प्रयास करने लगे।

माँ की सीख :-

कहते माँ, बालक की प्रथम पाठशाला हुआ करती है, लेकिन मेरी दृष्टि में जीवन के हर कदम पर हितकारी माँ पाठशाला की भूमिका अदा किया करती है।

माँ की प्रेरणा ही बालक के भविष्य का निर्माण किया करती है। अगर माँ की प्रेरणा समीचीन और हितकारी है, तो बालक का भविष्य साधु की महानता को स्पर्श कर लिया करता है और यदि माँ की प्रेरणा गलत है तो बालक डाकू बनकर भी कुल को कलंकित कर सकता है। जब माँ की ममता, पुत्र के दृढ़ संकल्प और वैराग्य के सन्मुख बौनी प्रतीत होने लगी, तो माँ भगवती भी अपने ममत्व की इति श्री करते हुये पुत्र की झोली में कुछ निर्देशों के उज्ज्वल मोती डालना चाह रही थी । लेकिन उनकी आँखों में आँसु बनकर बहता हुआ मोह का निर्झर बार-बार रोक लेता था । आखिरकार माँ ने जैसे-तैसे अपने आपको सम्हाला और पुत्र को अंतिम आशीष के रूप में कुछ अपनी सरल भाषा में निर्देश दिये। जो जीवन में उन्हें सम्बल बन सकें।

भैया राकेश तुम सन्मार्ग पर जा रहे हो यह अच्छी बात है। लेकिन मैं एक माँ हूँ और अपनी ममत्व की अनुभूति को रोक नहीं पा रही हूँ। जाते समय तुमसे चार बातें कहे जाती हूँ। इसी को बेटा हमारा आखिरी उपदेश, निर्देश या समझाइस समझना क्योंकि बेटा "तुमरे वैराग्य की ओर इतनी दृढ़ता से बढ़ते कदम देखकर मुझे नहीं लगता कि आगे हम और तुम माँ और बेटे के रूप में मिल पायेंगे।"

(१) बेटा! आज से आचार्यश्री विरागसागर जी महाराज ही तुम्हारे माता-पिता और गुरू सब कुछ है। इसीलिये अब तुम माता-पिता और घर परिवार के बारे में कभी "चिन्ता मत करना न ही उनको ध्यान करना।"

(२) बेटा! तुम जिस मार्ग पर निकले हो, उस मार्ग पर धीरे-धीरे आगे बढ़ना और इस प्रकार आगे बढ़ना कि पीछे मुड़कर न देखना पड़े। साधना में एकाएक आगे न बढ़ना, शरीर एवं समय के अनुसार साधना पथ पर आगे बढ़ना।

(३) जिस पथ पर तुम बढ़ रहे हो, उस पथ पर सावधानी से चलना। उस पथ पर ऐसा कोई काम न करना जिससे गुरूजी एवं तुम्हारे परिवार को बुरा लगे और साधना पर आँच आये।

(४) सदैव गुरूजी के आदेशों का पालन भलीप्रकार करना और उन्हीं के आदेशानुसार आगे कदम बढ़ाना। प्रत्येक कदम पर देव, शास्त्र और गुरूजी का ध्यान रखना। आगम सम्मत कार्य करना और आत्मा का कल्याण करना।

भैया इन बातों को सदैव याद रखना, यदि साधनापथ पर बढ़ने में अथवा हमारी इन बातों की भली प्रकार पालन करने में कुछ परेशानी समझते हो तो अभी कुछ नहीं बिगड़ा है। आचार्यश्री से अनुमति लेकर घर वापस चल सकते हो। घर पर रहकर साधना करना और जब दृढ़ता आ जाये तो गृहत्याग कर देना। यह मार्ग तलवार की धार के समान है।

वैरागी का वैराग्य भरा आश्वासन :-

माँ की सारी बातें ध्यान से सुनने के बाद उन्हें आश्वासन देते हुये भैया राकेश के वचन मुखरित हुये।

मैंने आपकी चारों बातों को हृदयंगम कर लिया है। मैं आप सब को आश्वस्त करता हूँ कि मोक्षमार्ग पर बढ़ते हुये भविष्य में ऐसा कोई भी कार्य नहीं करूँगा, जिससे गुरूवर का स्वाभिमान और आप सब लोगों का मान सम्मान आहत हो, धीरे-धीरे ही साधना के पथ पर आगे बढ़ूंगा और अपनी आत्मा का हित करूँगा।

माँ एक बात और ध्यान से सुनों घर जाकर रोना मत और मेरे बारे में किंचित मात्र भी चिन्ता मत करना और न ही मुझे याद करना।

छोटे भैया चक्रेश और छोटी बहिन महिमा का ध्यान रखना और अपना भी ख्याल रखना। देवशास्त्र गुरू के प्रति सच्ची श्रद्धा रखकर सानंद जीवन यापन करना, यही मेरा आप से अंतिम निवेदन है। इतना कहकर माँ, बेटे ने एक-दूसरे को अंतिम बार माँ ने बेटे के रूप में देखा और वैय्यावृति का समय हो जाने के कारण जहाँ ब्र. राकेश भैया आचार्यश्री के चरणों में चले गये वही उनकी माँ और परिवारी जन दुःखी मन से जीप में बैठकर जतारा चले गये।

जतारा में सारा परिवार पूरी रात दुःखी रहा। माँ की ममता, अनुज का स्नेह और बहिना का प्यार पूरी रात सिसकियाँ भरता रहा अंततः माँ भगवती ने खुद को सम्हाला, और सभी को सांत्वना दी और कहा हमारा बेटा अपनी आत्मा के कल्याण के मार्ग पर अग्रसर हुआ हम सबको रोना नहीं बल्कि उस पर गौरव होना चाहिये कि वह हमारे घर का सदस्य है।

उधर संघ में ब्र. राकेश अब विधिवत संघ की चर्याओं से जुड़ चुके थे। वे संघ की शैक्षणिक कक्षाओं में जो भी पढ़ाया-लिखाया जाता उसे पूरी तन्मयता से याद करते और आचार्य महाराज को अपना प्रतिदिन याद किया हुआ पाठ सुनाते। मेधावी तो राकेश शुरू से ही थे अतः अपनी प्रखर प्रज्ञा से संघ के सभी ब्र. भैया से आगे निकलने लगे।

पुनः पुत्र को देखने और आचार्यश्री के दर्शनार्थ सनतकुमार जी सपत्नि आहार जी पहुँच गये। आचार्य महाराज के सन्मुख जाकर खड़े हुये, जैसे ही आचार्यश्री ने राकेश की बुद्धिमता और लगनशीलता की बहुत प्रशंसा की। आचार्य के मुख से अपने सुयोग्य पुत्र की प्रशंसा सुनकर माँ, बाप का सीना गर्व से चौड़ा हो गया।

आचार्यश्री ने कहा- देखना राकेश शीघ्र ही अपनी योग्यता और एकाग्र साधना के बल से चारित्र के उच्च शिखर पर पहुँचेगा। जौहरी ही जानता है हीरे की पहचान, उसी प्रकार आचार्यश्री ने अपने होनहार शिष्य को कुछ ही दिनों में भलीभाँति परख लिया था।

राकेश भैया के अंदर एक और व्यक्तित्व छुपा था। वो था कवि का । भैया राकेश शुरू से ही कविहृदय रहे हैं। आचार्य गुरूदेव के प्रथम दर्शन, प्रथम चरण सानिध्य भैया राकेश को उस समय प्राप्त हुआ । जब वह प्रथम बार आचार्यश्री की वैय्यावृति करने गये और उस समय क्या हृदय के भाव थे। उन भावों को उस कवि हृदय ने शब्दों में संजोया, में उस रचना को यहाँ देना उचित समझता हूँ।

तुम्हें क्या बतायें, वहाँ रात थी।
नई जिंदगी से मुलाकात थी।।

1) खड़ा था बडा काफिला दर्श को
हुआ दर्श कैसे कहें हर्ष को।
नजाकत से पहली सजी रात थी
नई जिंदगी से मुलाकात थी।।
तुम्हें क्या.....

2) थी मुस्कान होंठों पे कुछ मंद सी
मेरी जीस्त शायद यहीं बंद थी।
हिले होंठ ना प्रेम सौगात थी
नई जिंदगी से मुलाकात थी।।
तुम्हें क्या......

3) था स्नेह नजरों में कुछ जादुई
जो देखा तो बस आरजू मिल गयी
नजर ने नजर से ही कुछ बात की
नई जिंदगी से मुलाकात थी।।
तुम्हें क्या......

4) घड़ी भर मिले घर को जाने लगे
वो यादों में आकर बुलाने लगे ।
वो यादें समर्पण की बरसात थी
नई जिंदगी से मुलाकात थी।।

तुम्हें क्या......
5) हमें जो दिया वो कहीं ना मिला
रखा हाथ सर पे जो या रब मिला।
मैं नाचीज क्या मेरी औकात थी
नई जिंदगी से मुलाकात थी।।
तुम्हें क्या......

गुरू सेवा :-

शिष्य का हृदय सदैव गुरू चरणों की सेवा में तत्पर रहा करता है। गुरू सेवा, गुरू भक्ति ही शिष्यत्व की पहचान है। संघ में प्रवेश मिलने के बाद सभी महाराजों की नियमित सेवा उनकी चर्या का अंग बन चुका था। संघ के साधुओं द्वारा पढ़ाई जाने वाली कक्षाओं में अध्ययन करना, दैनिक चर्यानुसार साधना और शेष समय गुरू चरणों की सेवा सदैव आचार्यश्री के साथ रहना, कमण्डल भरना, आहार चर्या में साथ जाना, सभी कार्य आचार्यश्री की आज्ञानुसार करना देर रात तक गुरू चरणों की सेवा आदि के कारण भैया राकेश आचार्यश्री के विशेष कृपापात्र बन गये। जब भी आचार्य महाराज का थोड़ा सा भी स्वास्थ्य प्रतिकूल होता, तो भैया राकेश के अंदर का शिष्यत्व कराह उठता और दिन-रात का भेद भूल वे आचार्य महाराज की वैय्यावृति किया करते थे ।

टीकमगढ़ ग्रीष्मकालीन वाचना :- आचार्य महाराज की ग्रीष्मकालीन वाचना टीकमगढ़ में होना तय था। अतः आचार्यश्री ससंघ आहार से पपौरा जी के दर्शन करते हुये टीकमगढ़ पहुँचे। टीकमगढ़ की पुण्य वसुन्धरा पर आचार्यश्री विरागसागर जी का पहुँचना सोने पर सुहागा जैसा था। आचार्य महाराज के सानिध्य में अनूठे कार्यक्रमों का सिलसिला चल पड़ा। जिसकी एक कड़ी थी नदीश्वर महामण्डल विधान। अभूतपूर्व धर्म प्रभावना के साथ सम्पन्न हुये इस विधान के पश्चात आचार्यश्री ससंघ की ग्रीष्मकालीन बाचना की स्थापना हो गई। जिसमें ग्रंथराज षट्खण्डागम के पंचम वर्गणाखण्ड

की वाचना आदरणीय पंडित श्री मूलचंद जी शास्त्री के कुलपतित्त्व में संचालित रही। साथ ही पं. श्री दयाचंद जी शास्त्री अजयगढ़, पं. दयाचंद जी साहित्याचार्य, पं. कमलकुमार जी शास्त्री टीकमगढ़, पं. श्री बाबूलाल जी पठा, पं. सुखानंद शास्त्री बड़माडई, पं. रतनचन्द्र शास्त्री टीकमगढ़ आदि विद्वानों का उक्त वाचना में पूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ। राकेश भैया ने टीकमगढ़ में गुरूदेव से निवेदन किया-मैं केशलोंच करना चाहता हूँ। आचार्यश्री ने दृढ़ता देख आशीर्वाद दे दिया। ऐलक विशदसागर जी महाराज बाल-ब्रह्मचारी राकेश भैया का प्रथम कैशलोंच मझार मन्दिर टीकमगढ़ में हुआ।

मातृभूमि से ममत्व का त्याग :-

जतारा के कुछ श्रावक और राकेश भैया के पिता श्री सनत कुमार जी आचार्यश्री के पास एक दिन टीकमगढ़ पहुँचे। और ब्र. राकेश भैया जतारा में दो-तीन दिन के लिये भेजने हेतु निवेदन प्रस्तुत किया।

आचार्यश्री ने कहा कि पहले राकेश से पूछ लो ?किन्तु किसी ने भी उनसे पूछने की हिम्मत नहीं की। तभी संयोग से किसी आवश्यक कार्य हेतु आचार्य महाराज के कक्ष में ब्र. राकेश पहुँचते है। तभी आचार्य महाराज ने ब्र. राकेश भैया से पूछा कि तुम्हारे पिताजी एवं जतारा के कुछ श्रावक तुम्हें जतारा ले जाने के लिये निवेदन कर रहे है? तुम्हारा क्या विचार है, आचार्यश्री के प्रश्न पर नम्रता पूर्वक नमोऽस्तु के साथ ब्र. राकेश भैया कहने लगे आचार्यश्री मैं जतारा नहीं जाना चाहता हूँ। फलतः सभी निराश हो गये।

ललितपुर का वर्षायोग 1995 :-

टीकमगढ़ से आचार्यश्री ने (ससंघ) ललितपुर की ओर विहार किया, ललितपुर में आचार्य संघ की भव्य अगवानी हुई वर्षायोग २००५, ललितपुर में सम्पन्न हो, ऐसा ललितपुर समाज का काफी समय से प्रयास चल रहा था। नगर वासियों की श्रद्धा और भक्ति ने आचार्यश्री को स्वीकृति देने पर विवश कर दिया। फलस्वरूप ललितपुर नगर के क्षेत्रपाल जी मंदिर में वर्ष १९९५ का

वर्षायोग स्थापित हो गया। ब्र. राकेश भैया का प्रथम अवसर था। प्रथमतः ही साधु चर्या से जुड़ने का अवसर था। अतः फिर भी अपनी प्रज्ञता और समर्पण से कुछ ही दिनों में उन्होंने संघ में अपना विशेष स्थान बना लिया था। वर्षायोग में भैया राकेश साधु चर्या को समझते हुये, साधना से परिचित हुये थे, वर्षायोग कालीन सभी कार्यक्रमों में सजगता से सक्रिय भूमिका में भाग लेते रहे। अत्यंत धार्मिक एवं मांगलिक आयोजनों के साथ वर्षायोग १९९५ सम्पन्न हुआ।

पुत्र के अनुगामी माता पिता :-

अवसर था, वर्षायोग १९९५ (ललितपुर) समापन का, चातुर्मास निष्ठापन के साथ एक और प्रसंग जुड़ा था पिच्छिका परिवर्तन समारोह का। इसी आयोजन मे सहभागी बनने पधारे थे जतारा से ब्र. राकेश भैया के माता एवं पिता जी,। संयम का वह उत्सव देखकर, और पुत्र के संयम मार्ग पर बढ़ने की मौन प्रेरणा से प्रेरित होकर पिताश्री सनत जी एवं माता श्री मति भगवती जी दोनों ने संयम के साथ जीने का मन बना लिया। और पहुँच गये हाथों में श्रीफल लेकर पू. आचार्यश्री के चरणों में। आचार्य श्री ने मुस्कुराते हुये पूछा कि क्या दीक्षा के लिये श्रीफल भेंट किये जा रहे है। दोनों ने एक स्वर में कहा हाँ आचार्यश्री ! उसी मार्ग का अनुशरण करने के लिये हम दो प्रतिमा के व्रत अंगीकार करना चाहते है। आचार्यश्री ने मुस्कुराते हुये उन्हें मंगल आशीष प्रदान किया। और माता एवं पिता दोंनो ही अब दो-दो प्रतिमा के व्रत लेकर व्रती बन गये।

जतारा आगमन :-

आचार्य महाराज का जब वर्षायोग १९९५ ललितपुर सम्पन्नता की ओर था। तभी पुनः जतारा के श्रावक बन्धु और पिता श्री सनतकुमार जी ने आचार्य महाराज के सन्मुख पहुँचकर भैया राकेश को जतारा ले जाने का निवेदन किया। आचार्यश्री ने सहर्ष स्वीकृति प्रदान कर दी और ब्र. राकेश एवं

ब्र. विनोद भैया को कुछ दिन के लिये जतारा जाने को आदेशित किया। अतः ब्र. द्वय ४ दिन के लिये नगर जतारा पधारे। दोनों ही भैया, मंदिर मे रहे और अपनी चर्या के माध्यम से धर्म प्रभावना करते रहे। उधर ललितपुर से आचार्यश्री का विहार होना था। अतः दोनों ही ब्र. भैया विहार के पूर्व ही जतारा से चलकर ललितपुर पहुँच गये। आचार्यश्री अपने विशाल संघ के साथ ललितपुर से विहार कर अतिशय क्षेत्र देवगढ़, चाँदपुर,जहाजपुर आदि क्षेत्रों की वंदना करते हुये पुनः ललितपुर पधारे, यहाँ से पुनः विहार कर टीकमगढ़, बड़ागाँव, धुवारा, भगवाँ आदि स्थानों पर विहार करता हुआ संघ श्री सिद्धक्षेत्र द्रोणगिरि पहुँचा।

द्रोणगिरी में महोत्सव :-

यह क्षेत्र मध्यप्रदेश का गौरव और छत्रपुर जिले का सम्मान है। यह क्षेत्र परम पूज्य मुनिराज श्री गुरूदत्त की साधना एवं निवार्ण स्थली है। यहाँ की सुरम्य एवं प्राकृतिक छटा से युक्त एक पहाड़ी पर २८ भव्य जिनालय स्थित हैं। तलहटी में भी दो जिनालय स्थापित हैं। क्षेत्र पर श्री गुरूदत्त तीर्थ क्षेत्र प्रबन्धन प्रशिक्षक संस्थान, आचार्य देवनंदी औषधालय, निःशुल्क भोजनालय, विशाल आचार्य विरागसागर प्रवचन सभागार, विशाल धर्मशाला, आदि संस्थायें संचालित हैं।

इसी क्षेत्र के चौबीसी जिनालय के विशाल प्रांगण में प.पू. आचार्यश्री विरागसागर जी महाराज (संसघ) के मंगल सानिध्य में दिनांक ०४/०२/९६ से १०/०२/९६ तक श्री मज्जिनेन्द्र पंच कल्याणक महोत्सव एवं गजरथ महोत्सव अनेकानेक भव्य आयोजनों एवं महती धर्म प्रभावना के साथ सम्पन्न हुआ। इसी दौरान दिनाँक ०८/०२/९६ को जन समूह से खचाखच भरे विशाल पाण्डाल में आचार्यश्री विरागसागर जी महाराज के कर कमलों से पूज्य ऐलक विश्वजीत सागर जी, पूज्य ऐलक विशद सागर जी एवं ब्र. मेरूचंद जी (भिण्ड) को भव्य मुनिदीक्षा प्रदान की गई। नाम रखे गये मुनि विश्वजीत सागर जी, मुनि विशद सागर जी एवं मुनि विश्वकीर्ती सागर जी महाराज, यह समय का उत्सव भैया
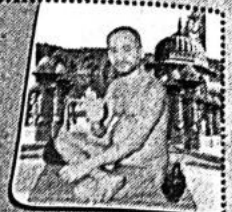
राकेश के हृदय में भी उथल-पुथल मचा रहा था। कि वो पावन दिन मेरी जिंदगी में कब आयेगा जब में भी इसी तरह भव्य जैनेश्वरी दीक्षा धारण करूँगा। भावना जब सच्चे हृदय से भाई जाती है तो निश्चित रूप से पूर्ण होती है। आखिरकार वो दिन भी आ ही गया, जिसका इंतजार ब्र. राकेश जी को था।

जतारा में विनौली :-

जतारा समाज को यह ज्ञात हुआ कि नगर जतारा के गौरव ब्र. राकेश भैया, देवेन्द्रनगर पंचकल्याणक के शुभावसर पर दीक्षा लेने वाले हैं । तो सकल जैन समाज जतारा ने देवेन्द्रनगर में दीक्षा लेने वाले सभी ब्र. भैयाओं की जतारा में विनौली निकले। ऐसी भावना से आचार्यश्री से निवेदन किया कि हमारे नगर का गौरव है कि हमारी माटी में जन्मा एक बेटा दीक्षा लेने जा रहा है। हमारी भावना है कि सभी ब्र. भैयाओं की विनौली जतारा में निकलें उसके लिये हमने १३ फरवरी १९९६ का दिन तय कर लिया है। क्योंकि उसी दिन पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव का समापन हुआ था। अतः सभी भैया लोगों को जतारा ले जाने की स्वीकृति प्रदान करें। आचार्यश्री ने सहर्ष स्वीकृति प्रदान कर दी। फलतः सभी ब्र. भैयाओं को जतारा लाया गया, और आसपास के अंचलों में इसकी सूचना करवा दी गई कि १३ फरवरी को विनौली का भव्य आयोजन होने जा रहा है। १३ फरवरी का दिन भी आ गया, उस दिन नगर में सुबह से ही बड़ा उल्लास दिखाई दे रहा था। सुबह होते ही सभी ब्र. भैयाओं ने दैनिक नित्य क्रियाओं से निवृत होकर जिनालय में भगवान जिनेन्द्र का सामूहिक अभिषेक और पूजन आदि किया। तत्पश्चात राकेश भैया के घर पर सभी ब्र. भैयाओं का निरंतराय भोजन हुआ।

भैया राकेश का ब्र. अवस्था में अंतिम भोजन श्री कपूरचंद जी बंसल (जो इस पुस्तक के लेखक हैं) के घर पर सम्पन्न हुआ, और विनौली का कार्यक्रम दोपहर १२ बजे से रखा गया। उसके पूर्व सभी ब्र. भैयाओं (१० भैया) का हाथों में मेहंदी, पावों में माहर, सिर पर सहरा लगाकर राजकुमारों

की तरह श्रृंगार किया गया था। दोपहर १२ बजे सभी ब्र. भैयाओं को सुसज्जित घोड़ों पर बैठाकर विनोली (शोभायात्रा) नगर के मुख्य मार्गो से निकाली गई जिसमें नगर के सभी महिला, पुरूष, जैन, अजैन एवं आसपास के अंचल से हजारों लोग इस कार्यक्रम के साक्षी बने। ब्र. राकेश भैया के सभी सहपाठी, शिक्षक, मित्रवर्ग और परिवारी जन आदि सभी ने उत्साह से सजल नेत्रों द्वारा उनके संयमित जीवन के मंगल की कामना की। विनौली नगर के मुख्य मार्गों से होती हुई दोपहर चार बजे पांडुक शिला पहुंची। रात्रि आठ बजे बाजार प्रांगण में एक विशाल धर्म सभा रखी गई जहाँ स्टेज पर सभी ब्र. भैयाओं की गोद भराई की रस्म अदा की गई। इस अवसर पर कपूरचंद जी बंसल ने सभी ब्र. भैयाओं के जीवन पर संक्षिप्त प्रकाश डाला और नगर के गणमान्य लोगों ने अपने-अपने विचार इस अवसर पर व्यक्त किये। सभी ने जतारा के लाड़ले सपूत ब्र. राकेश भैया के कुछ सुंदर संस्मरण सुनाये और उनसे क्षमा याचना की और फिर इसी क्रम में भैया राकेश जी ने भी अपने २० वर्षीय जीवन काल के कुछ रोचक संस्मरण सुनाते हुये, अपने गुरूजनों, अपने माता-पिता, परिवार, मित्रों, सहपाठियों, नगरवासियों एवं प्राणीमात्र से सहृदयतापूर्वक विनम्रता से दोनों हाथ जोड़कर गत वर्षो में हुई प्रत्यक्ष, अप्रत्यक्ष, त्रुटियों के लिये क्षमा याचना मांगते हुये अपनी ओर से सभी को क्षमा प्रदान की। सभी ब्र. भैयाओं ने भी अपने-अपने मनोभाव प्रगट किये। जब भैया राकेश अपने मनोभाव प्रगट कर रहे थे तो उनके सहपाठियों, रिश्तेदारों, एवं परिवारी जनों के साथ-साथ उस सभा में उपस्थित सभी जन, सजल नेत्रों से भाव-विभोर हुये जा रहे थे।

महिलाओं और पुरूषों की सिसकियों की आवाज से पूरा वातावरण अनुगुंजित हो रहा था। सभी को एक ओर प्रसन्नता इस बात की थी कि हमारे नगर का एक सपूत आत्मकल्याण के पथ पर अग्रसर हो रहा है। यह हमारा और हमारे नगर का नाम रोशन करेगा। वही दूसरी ओर हृदय दुःख से

व्याकुल भी था कि हमारे घर का हमारे नगर का एक बेटा हमसे बिछुड़ रहा है। उपस्थित सभी जन समुदाय नगर के वृद्ध लोग महिलायें, भैया राकेश और अन्य भैयाओं को मन ही मन आत्म कल्याण के पथ पर बढ़ने के लिये, साधना पथ की सफलता के लिये हृदय से शुभाशीष और बधाईयाँ दे रहे थे। सभी ब्र. भैया सभी लोगों का विनम्रता पूर्वक दोनों हाथ जोड़कर अभिवादन स्वीकार कर रहे थे। धर्म सभा में ब्र. राकेश भैया के साथ-साथ ब्र. विनोद भैया (बन्टी भैया),(बीना), ब्र. अरूण भैया (पथरिया), ब्र. अरविन्द भैया बहरौल (सागर), ब्र. वीरेन्द्र भैया (टीकमगढ़), ब्र. विनीत भैया (हरदुआ,पन्ना), ब्र. अरूण भैया (टीकमगढ़), ब्र. लक्ष्मीचंद जी (घुवारा), ब्र. विवेक भैया (सुनवाहा, छतरपुर) एवं ब्र. संदीप भैया (तिगौड़ा, सागर) का भी अभिवादन एवं उद्बोधन हुआ।

शाम को सभी ब्र. भैयाओं का जलपान श्री सनतकुमार जी के यहाँ रखा गया था, सभी भैयाओं ने अपनी-अपनी इच्छानुसार जलपान आदि किया। किन्तु भैया राकेश ने कहा कि आज सुबह का भोजन इतना ज्यादा हो गया कि अब शाम को कुछ लेने की इच्छा हीं नहीं है। जलपान कर चुकने के बाद आगन्तुक महानुभावों से सभी भैया भावपूर्वक आत्मीयता से मिले।

ब्र. भैया राकेश के मित्रगणों का तो यह हाल था, कि वो रात्रि में भी घण्टों बैठे रहे और वार्ता करते रहे। सभी ग्वाल अपने कन्हाई का वियोग सहन करने में असमर्थ से नजर आ रहे थे । सभी लोग भाव विहवल हुये जा रहे थे।

चूँकि ब्र. भैयाओं को शीघ्र ही आचार्यश्री के चरणों में पहुँचना था अतः सभी ब्र. भैया दिनाँक १४/२/१९९६ को जतारा से देवेन्द्रनगर के लिये रवाना हुये। नगर के सभी निवासियों ने दिव्य घोष और सजल नेत्रों से सभी भैयाओं को भावभीनी विदाई दी। विनौली कार्यक्रम एवं विदाई का अवसर बहुत ही भावनात्मक था। वह जतारा के हर जनमानस को चिरस्मरणीय रहेगा।

जतारा का ध्रुव तारा

समय (आत्मा) को पाने संयम की यात्रा
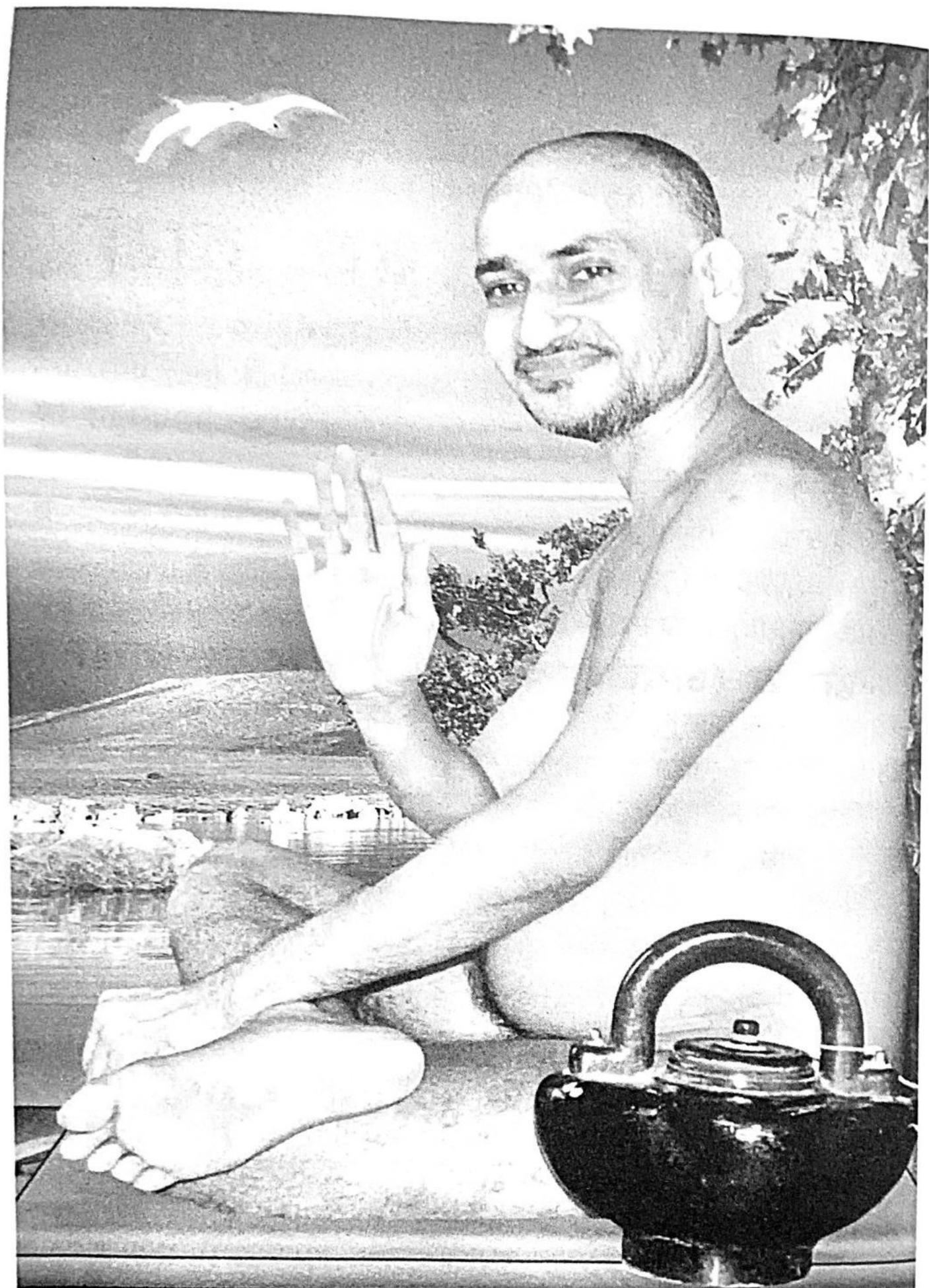
"जीवन है पानी की बूँद" गीत के मूल रचयिता एवं "विमर्श लिपि" के सृजेता
परम पूज्य राष्ट्रयोगी श्रमणाचार्य 108 श्री विमर्शसागर जी महाराज

बने ऐलक विमर्शसागर

सभी दीक्षार्थियों के दीक्षा का समाचार उनके गृह नगरों में पहुँचा दिया गया था। फलतः सभी दीक्षार्थियों के परिवार के लोग, मित्रजन, रिश्तेदार, साथी सभी लोग समय से पूर्व ही वहाँ उपस्थित हो चुके थे। साथ ही जतारा से ब्र. राकेश भैया के पिता श्री सनतकुमार जी एवं माता श्रीमती भगवती जी एवं सभी परिवारी जन भी वहाँ उपस्थित थे। इस आयोजन की शोभा बढ़ाने के लिये जतारा से दिव्यघोष भी देवेन्द्र नगर पहुँचा था। जिसमें शामिल थे, ब्र. राकेश भैया के कई मित्र और सहपाठी। श्री अदिनाथ भगवान के पंचकल्याणक का आयोजन वहाँ किया जा रहा था। तप कल्याणक का दिन (दिनाँक २३ फरवरी १९९६) दीक्षा समारोह के लिये पूर्व से नियत किया गया था। उस दिन वह मंच भी उन राजकुमारों की तरह सजाया गया था। वह मंच भी इतने सारे वैरागियों से युक्त होकर खुद वैरागी सा दिखाई दे रहा था। मंच के बीचों-बीच आचार्य महाराज का तखत के ऊपर सिंहासन लगाया गया था। दूसरी और श्रेष्ठी वर्ग विराजमान था। आचार्य महाराज के दोनों ओर संघस्थ साधुजनों, आर्यिका माताओं के बैठने के यथायोग्य आसन लगे हुये थे। आचार्यश्री के ठीक सामने दीक्षार्थियों का समूह मंच की गरिमा और शोभा को वृद्धिगत करता नजर आ रहा था।

मंच के नीचे अग्रिम पंक्ति में सभी दीक्षार्थी भैयाओं के परिवारी जन, इष्ट मित्र और रिश्तेदारों को बैठाया गया था। और उनके पीछे हजारों की संख्या में इस आयोजन में सहभागी बनने आये श्रृद्धालुओं की भीड़ ही भीड़ नजर आ रही थी। सर्वप्रथम दीक्षा के पूर्व प्रातःकाल में ही सभी दीक्षार्थियों ने अपने-अपने हाथों से अथवा महाराज लोगों के सहयोग से केशलोंच की क्रिया सम्पन्न कर ली थी। केवल पाँच जगह सिर में बालों को छोड़ा गया था। जिनका लोचन दीक्षा के समय आचार्यश्री के कर कमलों द्वारा होना था।

दीक्षा के पूर्व सभी दीक्षार्थियों को सुसज्जित हाथियों पर बैठाकर भव्य शोभायात्रा के रूप में आयोजन स्थल तक लाया गया था।

दीक्षा की आयोजना मंगलाचरण के माध्यम से प्रारंभ की गई, सर्वप्रथम आचार्यश्री ने अपने अनुभव से दीक्षा के बाद आने वाली कठनाईयों से दीक्षार्थियों को अवगत कराया। तथा दीक्षा के बाद उनके योग्य क्या-क्या कर्त्तव्य है इस पर भी आचार्यश्री का उद्‌बोधन हुआ। जिसे सभी मोक्षमार्ग के नवीन पथिकों ने दृढ़ता से स्वीकार किया। इसके बाद आचार्यश्री ने दीक्षार्थियों के परिजनों, रिश्तेदारों, माता-पिता, संघस्थ साधुओं, आर्यिकामाताओं, मंचासीन विद्वत वर्ग श्रेष्ठी वर्ग और उपस्थित अपार जन समुदाय से सभी दीक्षार्थियों को दीक्षा देने की अनुमोदना चाही तो सभी लोगों ने अपने-अपने हाथ ऊपर उठाकर हर्ष ध्वनी के साथ दीक्षा देने की अनुमोदना की।

तत्पश्चात आचार्यश्री की आज्ञानुसार सभी दीक्षार्थी भैयाओं की, सौभाग्यवती माताओं और बहिनों ने मंच पर मंगल सामग्री से चौक पूरे, और उन मंगल भावों से बनाये गये चौक के ऊपर एक-एक सफेद वस्त्र बिछाया गया था जिस पर केशर से एक स्वस्तिक बनाया गया था, इसी पर बैठकर सभी ब्र. भैयाओं की दीक्षा की क्रियाऐं सम्पन्न होनी थी।

दीक्षा के पूर्व सभी दीक्षार्थियों द्वारा आचार्यश्री के चरणों में श्रीफल अर्पित कर विनम्र भावों से दीक्षा प्रदान करने की प्रार्थना की एवं अपने-अपने मनोभावों को व्यक्त किया। सर्वप्रथम ब्र. राकेश भैया (जतारा) ने अपने विचार व्यक्त करते हुये कहा कि -

वैरागी के विरागता का नर्तन :-

सन्यास मुक्ति का शिलान्यास है, सन्यास असंयम का नाश और संयम का विकास है सचमुच सन्यास एक सहज और आकस्मिक घटना है जो कभी भी, किसी भी समय, किसी भी स्थान पर, किसी भी निमित्त से, जीवन में घट सकती है।

सन्यास का अर्थ है (स + न्यास) सन्यास शब्द अपने आप में संयम की पूर्ण परिभाषा है स + न्यास कहता है कि अपने जीवन का सरिता की तरह

न्यास करना। जैसे सरिता सतत गतिशील रहती है अपने लक्ष्य की ओर उसी तरह मोक्ष का लक्ष्य बनाकर निरन्तर अपने लक्ष्य की ओर बढ़ते रहना इसीका नाम है सन्यास। जैसे नदी बहती है वह किसी का विरोध भी नहीं करती और न किसी से प्रेम ही करती है वह विरोध करने वाले के पास से भी गुजर जाती है ओर प्रेम करने वालों के पास भी वह कभी नहीं ठहरती। इसी तरह का जीवन सन्यासी का हुआ करता है। सन्यास का तात्पर्य समत्व का न्यास। समता में जीना ही सन्यास की प्रथम शर्त है और यह सन्यास की घड़ी भी कितना रोमांचित करती है, अंतःकरण में आल्हाद की लहरे पैदा करती है, यह बात सन्यासी होने वाले के अलावा कोई दूसरा नहीं जान सकता । और न हीं उस अद्‌भुत आनंद की अनुभूति कर सकता है।

अभी-अभी कितना मनोरम और अंतःकरण को वैराग्य की ओर अग्रसर करने वाला दृश्य देखने को मिला। जो सम्राट ऋषभदेव नीलांजना के नृत्य में सराबोर थे । उन्हें क्या पता था कि बाहर का यह नर्तन हमें अंतरंग में नर्तन करने की प्रेरणा देने आया है। हमें बाह्य नृत्य से अंतरंग नृत्य की ओर चलने की प्रेरणा देकर जगाने आया है। देखते ही देखते ऋषभदेव का अंतःबोध जाग गया। स्वयं पर स्वयं की शक्ति का बोध जागृत हो गया। स्वयं की नियति का और संसार की संगति को त्याग करने को अंतरंग बार-बार प्रेरित करने लगा। ख्याल आया भुक्ति से नाता तोड़ने का और मुक्ति से नाता जोड़ने का।

ब्रह्म स्वर्ग के लौकान्तिक देवों ने भी उनके विचारों की अनुमोदना की । और देखते ही देखते वह आदी तीर्थेश पालकी में बैठकर (सवार होकर) वन की ओर चले गये। पालकी उठाने के लिये सभी आतुर थे, क्योंकि पालकी का अर्थ है। पा का अर्थ पाना और लकी का अर्थ भाग्यशाली, जिसे पाकर लोग अपने आपको भाग्यशाली या लकी समझें उसी का नाम है पालकी।

में परम पूज्य आचार्य गुरूवर श्री विरागसागर जी को पाकर अपने आप को लकी (भाग्यशाली) समझता हूँ। और उनके चरणों में प्रार्थना करता हूँ कि हे गुरूवर रत्नत्रय की जिस पालकी पर आप सवार है वह रत्नत्रय की पालकी मुझे भी प्रदान करें।

हे गुरूवर प्रार्थना है, पालकी दो बोधि की।
पाऊँ न निर्वाण जब तक, हो कृपा सम्बोधि की।
तब चरण का दास बनकर, में रहूँगा उम्रभर।
बस तू ही है जिंदगी में, एक मेरा हमसफर।

और अन्त में मैं सर्वप्रथम आचार्यश्री से क्षमा की प्रार्थना करता हूँ, हे गुरुवर हमसे जो भी भूलें, जो भी गलतियाँ हुई हों, जाने-अनजाने में तो अज्ञानी समझकर हमें क्षमा प्रदान करें। संघस्थ समस्त परम पूज्य मुनिराजों, ऐलक, क्षुल्लक महाराजों तथा आर्यिका माताजियों से भी क्षमा याचना करता हूँ। इस शरीर को जन्म देने वाले माता एवं पिता से, परिवार जनों, रिश्तेदारों, सभी साधर्मी भाईयों, माताओं बहिनों मित्रों, शुभ चिंतकों, एवं साथियों से भी क्षमा याचना करता हूँ, तथा समस्त प्राणीमात्र से क्षमायाचना करता हूँ और अपनी ओर से सभी को क्षमा प्रदान करता हूँ। अंत में मैं पुनः आचार्यश्री के पावन चरणों में प्रार्थना करता हूँ कि हे गुरूदेव मुझे दीक्षा प्रदान करने की अनुकम्पा करें। नमोऽस्तु आचार्यश्री

खम्मामि सव्व जीवाणं, सव्वे जीवा खमंतु में।
मित्ती में सव्व भूदेषु, बैरं मज्झं ण केण वि।।

ब्र. राकेश भैया के उक्त विचारों के पश्चात सभी दीक्षार्थी भाईयों ने भी अपने-अपने विचार व्यक्त किये और सभी से क्षमा याचना की एवं अपनी ओर से सभी को क्षमा प्रदान की।

सभी दीक्षार्थी भाइयों के उद्‌बोधन के पश्चात परम पूज्य आचार्यश्री ने दीक्षाओं की विधिवत प्रक्रिया शुरू की। आज का दिन किसी अपेक्षा से दीक्षार्थी के लिये खुशी की मनुहार लेकर आया था तो किसी अपेक्षा से परिजन एवं पुरजनों को दुख का उपहार लेकर। आज का दिन जहाँ पारिवारिक संबंधों के विछोह का दिन था। वहीं दूसरी ओर संयम की दुर्लभ सम्पदा प्राप्त करने का अवसर भी था।

आज से न तो ये किसी के बेटा रहेंगें, न किसी के पोता न किसी के

देवर रहेंगे, न किसी के भ्राता चाचा आदि पारिवारिक-जन आज से उन्हें पारिवारिक सम्बन्ध सूचक शब्द न कहकर महाराज शब्द से सम्बोधित करेंगें।

कितना कठिन यह अनुभव माँ भगवती और पिता सनतजी के लिये था कि अभी तक जिसे बल्लु भैया कहकर पुकारा करते थे, आज के बाद ही उन्हें महाराज कहकर पुकारना होगा। आज के बाद उनके बिल्कुल समीप, स्नेह, प्रेम और वात्सल्य से न जाकर दूर से ही " इच्छामि" शब्द से संबोधित करना होगा। आज के बाद उनसे अपनी पारिवारिक सुख-दुख की भी बातें नहीं कर सकेंगें। अब तो उनके पास जाकर सिर्फ धार्मिक चर्चा ही होगी। उसी प्रकार दीक्षा के आभूषण से आभूषित दीक्षार्थीयों के लिये भी आज का दिन रागी परिणति को तोड़ने का और वीतरागी चोले को ओढ़ने का अवसर लेकर आया था ।

चिदानंद की अनुभूतियों से सरावोर, भैया राकेश सहित सभी दीक्षार्थियों के चिंतन पटल पर बस एक ही बात उभरकर आ रही थी, कि ये देह के माँ बाप, और संगी साथी बस इस देह के साथी हैं। ये मेरे नहीं है। और न ही ये संसार की राहें मेरी हैं। जो मेरी इस आत्मा को परमात्मा की अलौकिक धारा से जोड़ने में कारण है। ऐसे में परम हितैषी गुरुदेव आचार्यश्री विरागसागर जी ही आज से हमारी माता है और वो ही हमारे पिता। उन्हीं से हमारा हर रिश्ता आज से शुरू होगा और उन्हीं पर जाकर समाप्त। सभी दीक्षार्थी वैराग्य के चिंतन में लवलीन हैं। तभी मंच से पूज्य गुरूदेव के शब्द सुनाई देते हैं, कि सभी दीक्षार्थी अपने बदन से सभी आभूषण और वस्त्र पृथक करें। जिस घड़ी का सभी मोक्षार्थी जीवों को इंतजार था, वो सामने उपस्थित थी । दीक्षार्थियों ने अपने बदन के आभूषण और वस्त्र उसी प्रकार अलग करना शुरू कर दिये, जिस प्रकार कोई पुराने वस्त्रों को तन से अलग करता है। और फिर पूज्य आचार्यश्री ने संकेत दिया कि सभी दीक्षार्थी जो सामने चौक पूरे गये है उन पर आकर बैठ जाइये। तो अन्य दीक्षार्थीयों की तरह भैया राकेश भी माँ भगवती और बहिन श्रीमति कमला जी द्वारा पूरे गये

चौक पर बड़ी प्रसन्नता से जाकर बैठ गये। तत्पश्चात् सभी औपचारिकताओं को विराम देते हुये परम पूज्य आचार्यश्री विरागसागर जी महाराज अपने सिंहासन से उठे। अपने नवीन शिष्यों को वात्सल्य भरी निगाह से देखकर मंद-मंद मुस्कुराये। गुरू की मुस्कान से शिष्यों की खुशी और अधिक वृद्धिंगत हो गई। और फिर सभी शिष्यों के सिर पर अपना वात्सल्य और आशीष का वरदहस्त रखकर पूज्य आचार्यश्री ने शास्त्रोक्त विधि से दीक्षा का कार्य शुरू किया। आचार्यश्री ने सर्वप्रथम सभी दीक्षार्थियों के पंचमुष्ठी केशलोंच किये। और केशर से सिर पर स्वास्तिक अंकन कर मंत्रोच्चार के साथ विधि-विधान पूर्वक दीक्षा के संस्कार करना प्रांरम्भ कर दिये। जिस क्रम से सभी दीक्षार्थीयों को बैठाया गया था। उसी क्रम से आचार्यश्री द्वारा धीरे-धीरे सभी दीक्षार्थीयों की दीक्षा संस्कार की क्रिया सम्पन्न की गई।

दीक्षार्थियों के परिवारीजन अपने अश्रुपुरित एवं अपलक नयनों से जहाँ दीक्षोत्सव का प्रसन्नता और विषाद मिश्रित अनुभूतियों के मध्य अवलोकन कर रहे थे। वहीं दीक्षार्थियों के चेहरों पर अपूर्व आल्हाद की छठा झलक रही थी। परिवारीजन और सभी संबधीजनों की आँखों से बहती अविरल अश्रुधारा शायद इसलिये नहीं रुक पा रहीं थी, क्योंकि वो अश्रु भी बाहर आकर अपने प्रियजन को मोक्षमार्ग पर कदम रखते हुये देखना चाहते थे।

अपार जनसमूह से खचाखच भरे पाण्डाल से उठते ''जय जय गुरूदेव'' के गगनभेदी नारों और मंच से झरते अविरल मंत्रों की पवित्र ध्वनियों के मध्य भव्य दीक्षायें सम्पन्न हुई।

दीक्षा संस्कार के बाद सभी जनों के हृदयों में उन नवोदित मोक्षमार्गियों के नवीन नाम क्या रखे जायेंगें इस बात को लेकर बड़ा उल्लास दिखाई दे रहा था और सभी की नजरें कभी उन नवीन दीक्षार्थियों पर तो कभी परम पूज्य आचार्यश्री के मुखमण्डल पर बड़ी एकाग्रता से टिकी हुई थी।

दीक्षा संस्कार करके आचार्य महाराज मचासीन अपने सिंहासन पर जाकर विराजमान हो गये। और सभी दीक्षार्थियों के नामों की क्रमशः घोषणा

करना शुरू किया।

आचार्यश्री के मुख से जैसे ही नवीन दीक्षार्थियों के नवीन नाम बोले जाते थे वैसे ही पूरा आकाश आचार्यश्री और नवदीक्षित महाराज के गगनभेदी जयकारों से गूंज उठता था।

दीक्षा के उपरान्त उन मोक्षमार्गियों द्वारा त्यागे गये वस्त्र आभूषण आदि उनके पूर्व परिवारीजनों को स्मृति स्वरूप भेंट कर दिये गये।

ब्र. राकेश भैया जी अब मंच पर ऐलक विर्मशसागर जी के रूप में विराजमान थे। उनके वस्त्र और आभूषण उनके गृहस्थ जीवन के पिता श्री सनतकुमारजी को भेंट किये गये। लाडले पुत्र के पुराने वस्त्र हाथों में आते ही सनतकुमारजी के हृदय पटल पर पुरानी स्मृतियाँ उभरने लगी जिनका संकेत आँखों से बहती अविरल अश्रुधारा दे रही थी । तत्पश्चात् सभी नवदीक्षित महाराजों का शुद्धि का उपकरण कमण्डलु, और संयम का उपकरण मयूर पंख से निर्मित नवीन पिच्छि परम पूज्य आचार्य महाराज के कर कमलों से प्रदान किये गये, और उसके बाद नवदीक्षित क्षुल्लक महाराजों को चादर, लंगोटी, शास्त्र, और कटोरा, ऐलक महाराजों को कोपीन, और शास्त्र प्रदान करने का सौभाग्य उनके परिवारीजनों को दिया गया।

सभी की तरह ऐलक विमर्शसागर जी को भी कोपीन उनके जनक सनतकुमार जी द्वारा, शास्त्र गृहस्थावस्था के बड़े मामा सुंदरलाल जी द्वारा भेंट किये गये।

जिस प्रकार सभी दीक्षार्थियों को एक शोभायात्रा के रूप में पाण्डाल में लाया गया था। उसी तरह की शोभायाात्रा दीक्षा के बाद भी निकाली गई पर उस शोभायात्रा में और इस शोभायात्रा, में बस इतना अंतर था कि वहाँ कुछ पाने के लिये हर्षित चित्त होकर जा रहे थे। और इसमें वो पाकर हर्षित चित्त होकर वापिस आ रहे थे। अब ब्रह्मचारी से संघस्थ साधु (महाराज) बन चुके थे।

२३ फरवरी १९९६ का वह दिन देवेन्द्र नगर का नाम इतिहास के

पन्नों पर अमिट स्याही से लिखा गया।

दीक्षाओं का संक्षिप्त विवरण

क्र.	दीक्षार्थी	नवीन नाम
१.	पू. क्षुल्लक विमुक्तसागर	पू. ऐलक विमुक्तसागर जी
२.	पू. क्षुल्लक विशल्यसागर	पू. ऐलक विशल्यसागर जी
३.	पू. क्षुल्लक विभवसागर	पू. ऐलक विभवसागर जी
४.	बा. ब्र. राकेश भैया (जतारा)	पू. ऐलक विमर्शसागर जी
५.	बा. ब्र. विनोद भैया (बीना)	पू. ऐलक विहर्षसागर जी
६.	बा. ब्र. अरूण भैया (पथरिया)	पू. ऐलक विनिश्चयसागर जी
७.	बा. ब्र. अरविन्द भैया (वहरोल)	पू. क्षुल्लक विलोचनसागर जी
८.	बा. ब्र. वीरेन्द्र जी (टीकमगढ़)	पू. क्षुल्लक विभद्रसागर जी
९.	बा. ब्र. विनीत भैया (हरदुआ)	पू. क्षुल्लक विनिश्चल सागर जी
१०.	बा. ब्र. अरूण भैया (बीना)	पू. क्षुल्लक विजयसागर जी
११.	बा. ब्र. लक्ष्मीचन्द्र जी (घुवारा)	पू. क्षुल्लक विमार्गणसागर जी
१२.	बा. ब्र. विनय भैया (सुनवाहा)	पू. क्षुल्लक विनयसागर जी
१३.	बा. ब्र. संदीप भैया (तिगोड़ा)	पू. क्षुल्लक विनिर्भयसागर जी

उक्त दीक्षायें होने के बाद आचार्य महाराज का संघ और विशाल हो गया और अब संघ में कुल पिच्छी हो गई।

आचार्य महाराज – १
मुनिराज – ५
आर्यिकायें – ७
ऐलक – ६
क्षुल्लक – १२

कुल ३४ पिच्छी अब आचार्य संघ में हो गई थी।

दीक्षाओं का कार्यक्रम पूरी भव्यता और गरिमा के साथ सम्पन्न हो गया, लेकिन उस कार्यक्रम के प्रशंसा की चर्चायें अभी-भी अविराम रूप से चल रही थी। समय की गति के अगले कदम में २४ फरवरी को पंचकल्याणक

स्थल पर तीन गजरथों की भव्य फेरी (परिक्रमा) हुई, यह पंचकल्याणक देवेन्द्रनगर की झोली में कई अविस्मरणीय पल डाल गया था। जिन्हें देवेन्द्रनगर का मानस पटल कभी विस्मृत नहीं कर पायेगा। इसकी शोभा में चार चांद लगाने आया था जतारा से नवयुवक संघ का दिव्यघोष, जिसकी मधुर ध्वनियों ने जनमानस को आल्हाद से भर दिया था।

इस तरह एक महान व्यक्तित्व कहिये, या इस कथा का कथा नायक, जिसे वर्तमान की कलम ने पू. ऐलक विमर्शसागर नाम दिया था। उस महानायक की गौरव गाथा का एक स्वर्णिम अध्याय पूर्ण हुआ। अब वह अपने अगले पड़ाव की ओर गुरूवर विरागसागर के चरणों का अनुशरण करते हुये बढ़ने लगा।

गुरू की चरण छाया में गुरूवर का प्रथम बिहार :-

देवेन्द्रनगर के भव्यों की पिपासा को धर्म प्रभावना के मेघों के माध्यम से तृप्त कर प. पू. आचार्यश्री विरागसागर जी अपने विशाल संघ के साथ देवेन्द्रनगर से अतिशय क्षेत्र श्रेयांसगिरी की ओर मंगल बिहार कर दिया।

शहर की भागदौड़, चकाचौंध से दूर वन्य प्रदेश के शांत एवं सुरम्य आवरणों को ओड़े हुये अतिशय क्षेत्र श्रेयांसगिरी की गोद में गुरुवर संघ सहित पधारे, सानंद उस अनुपम क्षेत्र की वंदना पूज्य गुरुवर के ससंघ सानिध्य में अन्य अनेक भव्यात्माओं ने की । साधु का जीवन बहते हुये पानी की तरह हुआ करता है। कहा भी जाता है कि "बहता पानी रमता जोगी" कभी रूकता नहीं है। उसी सूक्ति को आचार्य महाराज के बिहार ने बल दिया। और संघ श्रेयांसगिरी से बिहार कर सलेहा, गुनौर, पवई होते हुये कटनी पहुँचा। यह वही कटनी है जिसे चूना, स्लेट आदि के पत्थर के रूप में सम्पूर्ण भारतवर्ष में जाना जाता है।

ऐलक विमर्शसागर जी भी आचार्यश्री के चरण सानिध्य में बड़े प्रसन्न थे। कटनी समाज ने पूरे आचार्य संघ की भव्य अगवानी की और आचार्य संघ की ग्रीष्मकालीन बाचना कटनी में हो ऐसी भावना रखी । पिपासुओं की प्यास

और भव्यों के पुण्य ने आचार्यश्री को स्वीकृति देने पर विवश कर दिया। फलतः कटनी में आचार्यश्री ने विधिवत ग्रीष्मकालीन वाचना की स्थापना की। कटनी वही नगर था, जिसे आचार्यश्री को बाल्यावस्था में (अर्थात् जब वो विद्यार्थी अरविन्द थे। तब इसी नगर में शिक्षा ग्रहण की थी) एक गुरूकुल का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। आचार्यश्री ने वाचना के लिये विषय चुना, धवला जी ग्रंथ पंचमखण्ड वर्गणाखण्ड, जो एक महान और मूल ग्रंथ है। कटनी में प्रवास के दौरान सम्यग्ज्ञान शिक्षण शिविर आदि का भी आयोजन किया गया। इन सभी कार्यक्रमों में पू. ऐलक विमर्शसागर जी का भी सक्रिय योगदान रहा।

योगी के चरणों में प्रथमयोग :-

जबलपुर वासियों के अथक प्रयासों और सच्ची भक्ति ने आचार्यश्री को वर्षायोग की स्वीकृति देने के लिये विवश कर दिया। ऐलक जी जो कि मोक्ष डगर के नये नये पथिक बने थे, संघ के साथ कटनी से विहार कर अतिशय क्षेत्र बहोरीबंध पहुँच गये। जहाँ भगवान शांतिनाथ की मनमोहक, मनोज्ञ प्रतिमा का दर्शन करते ही मार्ग का सारा श्रम समाप्त हो गया, सभी साधक भगवान शांतिनाथ के चरणों में आकर अपनी थकान भूलकर प्रभु की भक्ति में संलग्न हो गये। बहोरीबंध से विहार कर अन्य अनेक स्थानों के धर्म पिपासुओं की प्यास को शमन करता हुआ संघ दिनॉक ७ जुलाई ९६ को जबलपुर की गरिमामय भूमि पर पहुँचा। जहाँ आचार्य संघ को पाकर भव्यों को ऐसा प्रतीत हो रहा था। मानो "सीप को मोती" और "दीपक को ज्योति" का समागम प्राप्त हो गया हो। भव्य अगवानी के साथ, वाद्य यंत्रों की मंगल ध्वनियों के मध्य आचार्यश्री ने अपने युवा साधकों के साथ अतिशय क्षेत्र मढिया जी में पदार्पण किया। २९ जुलाई को मढिया में वर्षायोग स्थापना की क्रियायें सम्पन्न की गई।

यह वर्षायोग एक हार की तरह शोभायमान हो रहा था। जिसमें अनेकानेक धर्म प्रभावना की चमक से ओतप्रोत कार्यक्रमों के मोती दृष्टिगोचर हो रहे थे। पूज्य ऐलक विमर्शसागरजी अपने प्रथम वर्षायोग में साधना से जुड़ने का और अध्ययन के माध्यम से जिनशासन को समझने का गुरू चरणों में पुरूषार्थ कर रहे थे आइये मैं आपको संक्षिप्त रूप से जबलपुर की मढिया

जो अतिशय से सुशोभित है उसका परिचय कराता हूँ। यह मढिया जी, जबलपुर से नागपुर की ओर ५ k.m पर स्थित है। यहाँ विशाल मानस्तम्भ के सामने श्री महावीर मंदिर, गुरूकुल मंदिर, महावीर जिनालय के निकट से बनी सीढ़ियों से चढ़कर एक पहाड़ी पर ३४ भव्य जिनालयों के दर्शन होते है। जिनमें पिसनहारी का मंदिर वि. सम्वत् ६५६ का निर्मित माना जाता है। यहाँ २४ तीर्थेश भगवन्तों के चरण (टोकों) के भी दर्शन होते हैं।

यहाँ एक किवदंती है कि एक वृद्धा माँ ने पडोस के घरों में अनाज पीस-पीस कर प्राप्त थोड़ी-थोड़ी राशी को एकत्रित कर यहाँ एक जैन मंदिर का निर्माण कराया था, जिसे कालान्तर में मढिया जी नाम से जाना जाने लगा। उसने धनाभाव में कलश के स्थान पर चक्की के दो पाट ही शिखर पर चढ़वा दिये थे। उसके पास धन का अभाव तो था लेकिन श्रद्धा का अभाव नहीं। यहीं एक गुरूकुल छात्रावास, उदासीन आश्रम एवं ग्रन्थागार भी संचलित है।

मढ़िया जी से विहार :- आचार्यश्री के साथ पूज्य ऐलक विमर्शसागर जी मढिया चार्तुमास निष्ठापन करके, वहाँ से विहार कर कटंगी, कुण्डलपुर, नैनागिरी जी पपौरा जी होते हुये आचार्य संघ करगुँआ जी (झांसी) जा पहुँचा।

उस समय परमपूज्य आचार्यश्री विरागसागर जी सहित ६ आचार्य महाराजों सहित ५५ साधु महाराज विराजमान थे, पूज्य ऐलक विमर्शसागर जी महाराज को पूज्य आचार्य सन्मति सागर जी सहित ५५ पिच्छियों के विशाल संघ का दर्शन एक ऐसी सुखद अनुभूति थी जो वचन अगोचर है भक्तों के स्नेह, और श्रद्धा ने कहा " अंतरायसागर" :- अवसर था टीकमगढ़ नगर में श्री पार्श्वनाथ मंदिर प्रांगण में चल रही,पूज्य आचार्यश्री विरागसागर जी महाराज के सानिध्य में श्री समयसार जी ग्रंथ पर ग्रीष्मकालीन वाचना का। यहीं ऐलक विमर्शसागर जी को निरंतर कई दिनों तक अंतराय आये। लगता था मानो सारे कर्म उदय में आकर खिरने को बेकरार हों।

कई दिनों तक निरंतर अंतराय के कारण ऐलकजी का शरीर अत्यंत कमजोर और कृश हो गया। शरीर इतना दुर्बल हो गया था, कि आहार आदि

चर्याओं में भी स्वयं प्रवृत्त होने में वह अपने आप को असमर्थ महसूस करते थे। फलतः आचार्यश्री के आदेशानुसार संघस्थ ब्रह्मचारी भैया पूज्य ऐलक जी के साथ आहार चर्या के लिये जाया करते थे।

आये दिन अंतराय का सिलसिला जारी था। अतः नगर के नर नारी और वृद्ध महिलायें पूज्य ऐलक जी को विमर्शसागरजी के नाम से नहीं अपितु 'अंतराय सागर' के नाम से जानने लगे। और संबोधन में भी इस नवीन नामकरण की मीठी सहानुभूति की लहर हर दिल में उतर गई थी।

आत्मबल :-

अपने कर्तव्यों के प्रति सच्ची आस्था और निष्ठा ऐलकजी का महत्वपूर्ण गुण था। तभी तो मई - जून की भीषण गर्मी में कई दिनों तक अंतराय आने से शरीर में दुर्बलता आने के बावजूद भी ऐलकजी की वो कर्तव्यों के प्रति निष्ठा आत्मबल का सम्बल पाकर ही थी । जिसके द्वारा वो शारीरिक असमर्थता के बाद भी उनकी दैनिक चर्या संघ के साथ पूर्ववत ही चला करती थी। अपने मनोबल से वह हर बाधा को मुस्कुराते हुये भूल जाते थे।

टीकमगढ़ से विदाई की बेला थी अन्तिम प्रवचन सभा का आयोजन था, उस दिन पूज्य आचार्यश्री ने ऐलकजी के सम्मुख माइक लगवा दिया और कहा ऐलक जी प्रवचन कीजिए। ऐलकजी की तो हालत उस समय ठीक वैसी थी जैसी वृद्ध के हाथ में लकड़ी की होती है, टूटू फूटे शब्दों में लड़खड़ाती जिव्हा ने कुछ गुरु भक्ति के उदगार प्रस्तुत किये। आचार्य श्री मुस्कुरा रहे थे, और कहने लगे "विमर्शसागर तुम्हारे ये टूटे फूटे शब्द एक दिन जिनवाणी को बहुत बड़ा सम्बल प्रदान करेंगे"

ऐलक विमर्शसागर जी आचार्य जी श्री के साथ बावरी, दिगोड़ा, मडिया, पृथ्वीपुर, झॉसी, करगुवाँ जी दतियाँ, आदि स्थानों से गुजरते हुये सिद्ध क्षेत्र सोनागिर जी पहुँचे।

सिद्धक्षेत्र सोनागिर की प्राकृत्तिक छठा का मनमोहना लालित्य स्वतः ही मन को भक्ति की अविरल धारा से जोड़ता है। मूलनायक भगवान श्री

चन्द्रप्रभु के नायकत्व में ७७ जिनालय उस पर्वत की शोभा को वृद्धिंगत करते नजर आते है। ऐसी किंवदती है। कि आठवें तीर्थंकर भगवान श्री चन्द्रप्रभु का समवशरण विहार करते हुये यहाँ आया था। एवं नंग, अनंग कुमार सहित साढ़े पाँच करोड़ मुनिराजों ने यहाँ से मुक्तिवधु को परिणाया था। इसलिये इसे सिद्धभूमि के नाम से भी जाना जाता है। सिद्ध क्षेत्र की वंदना कर आचार्य संघ डवरा होते हुये ग्वालियर और फिर भिण्ड की ओर बड चला ।

कालजयी महाकाव्य "जीवन है पानी की बूँद" का प्रसव :-

जिस प्रकार तीर्थंकर का जन्म होता है और क्रमशः वह तीर्थेश बालक वृद्धि को प्राप्त होता हुआ सारे लोक में अपने यश का ध्वज फहराता है, उसी प्रकार ऐलक श्री विमर्शसागर जी महाराज के उन्नत चिन्तन की असीम गहराईयों से एक महाकाव्य ने जन्म लिया जिसका नाम है "जीवन है पानी की बूँद" जो आज हर कण्ठ का हार बना हुआ है। इसका प्रसव भिण्ड नगर में हुआ। घटना है १९९७ के वर्षायोग की पूज्य आचार्य श्री अपने विशाल संघ के साथ भिण्ड नगर में वर्षायोग कर रहे थे । सुवह सुवह संघ जंगल के लिए नसियाँ जी की ओर जाता था। आज संघ प्रतिदिन की भांति जंगल के लिए रवाना हुआ, आचार्य श्री आगे-आगे, शेष साधक गुरू के अनुगामी बन चल रहे थे । तभी काव्य साधना के सशक्त साधक पूज्य ऐलक श्री विमर्श सागर जी महाराज के चिन्तन की गर्भस्थली से एक पंक्ति ने जन्म लिया "जीवन है पानी की बूँद कव मिट जाये रे" इस अपूर्व पंक्ति के प्रसव ने पूज्य ऐलक जी को भावविभोर कर दिया और उस पंक्ति का स्मरण करते हुए ऐलक जी जब जंगल से लौट रहे थे तभी पूर्व की स्मृति अचानक मानस पटल पर उभर कर आयी जब ऐलक जी ने गृहस्थ अवस्था में कभी एक सीरियल देखा था "होनी अनहोनी" ओर बस उसी अतीत की स्मृति के धारातल से दूसरी जुडवाँ पंक्ति का जन्म हो गया "होनी अनहोनी कव क्या घट जाये रे" और इस प्रकार से जन्म हुआ "जीवन है पानी की बूँद" महाकाव्य का, जब यह रचना पूज्य आचार्यश्री ने सुनी तो प्रसन्नता से आशीर्वाद दिया । जिससे आज यह इस

सदी का सबसे बड़ा महाकाव्य बन चुका है।

पूजन प्रशिक्षण शिविर, आध्यात्मिक वाचना, पिच्छिका परिवर्तन आध्यात्मिक शिक्षण शिविर आदि अनेक धार्मिक आयोजनों के साथ वर्षायोग १९९७ सम्पन्न हुआ।

पूज्य ऐलक विमर्शसागर जी भी अपनी योग्यता और गुरू के प्रति समर्पण से संघ में विशेष स्थान रखते थे। संघ में जब भी कोई महत्वपूर्ण निर्णय लिये जाते, पूज्य ऐलकजी को भी उसमें शामिल किया जाता था । जब भी धर्म सभाओं का आयोजन हुआ करता था । तब उनके संचालन उनके निर्देशन की सारी जिम्मेदारी पूज्य ऐलक विमर्शसागर जी को सौंपी जाती थी। रोज आचार्य महाराज के प्रवचनों का सभी को लाभ मिलता था। साथ ही कभी-कभी गुरूआज्ञा से ऐलकजी का उद्‌बोधन हुआ करता था।

पुनः भिण्ड आगमन :-

शौरीपुर बटेश्वर से विहार होना था। भिण्ड की भक्ति लगन और समर्पण ने आचार्य महाराज के कदम पुनः भिण्ड की तरफ मोड़ लिये। कहा भी जाता कि तीर्थंकरों (अरिहंत) और संतों के विहार मन से नहीं भव्यात्माओं के पुण्य से हुआ करते हैं। फलतः आचार्य महाराज विभिन्न स्थानों पर धर्म प्रभावना के बीज बोते हुए दिनाँक १ जुलाई को पुनः भिण्ड की धर्म पिपासु धरती पर पहुँचे। दरवाजों पर बनी रंगोलियाँ आपस में बतिया रही थी। कि गुरूवर मुझे देखकर प्रसन्न होंगे दूसरी कह रही थी मुझे देखकर खुश होंगे। घरों के बाहर लगे तोरणद्वार गुरू आगमन से हर्षित थे । फिर आचार्य संघ को गाजे बाजे के साथ स्थानीय चन्द्रप्रभु दि. जैन परेड मंदिर की ओर लेकर चले सभी लोग युवा साधुओं को देख देख हर्षित हो रहे थे। पूज्य ऐलक विमर्श सागर जी आचार्यश्री के साथ पीछे-पीछे चल रहे थे, गौरवर्ण और इकहरा बदन का यह युवा साधक सबकी नजरों को स्वतः ही अपनी ओर आकर्षित कर रहा था।

वर्षायोग पुनः भिण्ड में :-

'भावना भव नाशिनी' अर्थात् भावना भाई जावे तो कोई भी कार्य असम्भव नहीं रह जाता। भिण्ड की हर गली, हर मोहल्ला, हर चौराहा और प्रकृति भी अपनी अप्रगट भाषा मे मानों यही कह रही थी। कि पू. आचार्यश्री का वर्षायोग पुनः भिण्ड में ही होना चाहिये। आखिरकार भक्तों की भक्ति रंग लाई और आचार्यश्री ने वर्षायोग १९९८ की स्वीकृति भिण्ड बाले श्रावकों को प्रदान कर दी।

दिनाँक ८ जुलाई को वर्षायोग प्रतिष्ठापन की सभी क्रियाऐं आचार्य संघ में जिस प्रकार चलती हैं। उसी प्रकार आचार्यश्री द्वारा संपादित की गई।

वर्षायोग के सभी कार्यक्रमों का संचालन पूज्य ऐलक विमर्शसागर जी द्वारा किया जाता था। अपनी मधुर वाणी से जब ऐलक जी गाते थे तो, वृद्ध लोग भी कान लगाकर ध्यान से सुनने का प्रयास करने लग जाते थे।

वर्षायोग में धर्म का प्राण कहे जानेवाले पर्यूषण पर्व उपस्थित हो गये, वर्षायोग में साधक तो साधना के मर्म को जानें। ऐसी परोपकार की भावना से ही आचार्यश्री ने पर्यूषण पर्व के दिनों में श्रावक संस्कार साधना शिविर का आयोजन किया जिसमें ३५० शिविरार्थियों ने श्रावक के योग्य संस्कारों को जीवन में आत्मसात किया। इस शिविर का संचालन आचार्यश्री की आज्ञानुसार पूज्य ऐलक विमर्शसागर जी ने बड़ी कुशलता से संपादित किया। जिसमें दिन भर सारे शिविरार्थियों की साधना का निरीक्षण ऐलक विमर्श जी द्वारा किया जाता था।

इस प्रकार अनेकानेक आत्मानुभुति पूर्ण और धर्म पिपासुओं को तृप्त करते आयोजनों के साथ ९८ का वर्षायोग भिण्ड निवासियों के हृदय पटल पर अमिट छाप छोड़ गया।

भव्य कलशारोहण :-

१९-२० नवम्बर को चैत्यालय मंदिर वताशा बाजार के प्रांगण में

सम्यग्ज्ञान दि. जैन विराग विघा पीठ भिण्ड का दशाब्दी समारोह कई आयोजनों में ऐलक विमर्श सागर जी का निर्देशन एवं संचालन बहुत प्रभावी हुआ करता था।

बरासों की ओर प्रस्थान :-

मेहगाँव से फिर संघ बरासों की ओर बढ़ चला । और १ दिसम्बर को आचार्यश्री अपने विशाल संघ के साथ मूलनायक भगवान महावीर स्वामी के उस पवित्र क्षेत्र पर पहुँचे। जहाँ क्षेत्राध्यक्ष उग्रसेन जैन, मंत्री प्रेमचंद तथा श्रावक श्राविकाओं द्वारा आचार्यश्री के चरणों में श्रीफल अर्पित कर श्री दि. जैन अति. क्षेत्र बरासों पर पधारकर और क्षेत्र पर भव्य जैनेश्वरी दीक्षा का निवेदन किया। चूंकि क्षेत्र पर स्थान छोटा था और धर्मशाला आदि की भी समुचित व्यवस्था न होने के कारण आचार्यश्री मन ही मन चितंन करने लगे कि इतना बड़ा आयोजन कैसे सफल होगा। तभी ग्राम बरासों के मुखिया लम्बरदार तथा सभी ग्राम के प्रतिष्ठित महानुभाव आचार्यश्री के चरणों में उपस्थित हुये ।और अपना निवेदन श्री चरणों में रखते हुये बोले आचार्यश्री आप अपने संघ के साथ क्षेत्र बरासों पर पधारें ये हमारा सौभाग्य है और हमारी प्रार्थना है कि दीक्षाओं का आयोजन भी आप यहीं सम्पन्न करें दीक्षा समारोह की सम्पूर्ण व्यवस्था एवं आचार्यसंघ की व्यवस्था और आगन्तुक अतिथियों की समुचित व्यवस्था हम सभी लोग करेंगे।

बरासों के ग्रामवासी और क्षेत्र बरासों के पदाधिकारियों के विशेष आग्रह करने पर आचार्यश्री ने दीक्षाओं की आयोजना बरासों में करने की स्वीकृति प्रदान कर दी। यह क्षेत्र अत्यंत प्राचीन माना जाता है। इतिहास की गहन ऊँचाइयों को स्पर्श करते इस बरासों क्षेत्र की भौगोलिक देहयष्ठी पर प्रकाश डालना लेखक उचित समझता है।

क्षेत्र का पूरा नाम "श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र पुर पट्टन वरनेर बरासों जी है।" जो श्रमणत्व की खान कहलाने वाले म.प्र. के भिण्ड नगर से १८ कि.मी. की दूरी पर स्थित है।

भिण्ड-ग्वालियर मार्ग के मध्य खण्ड रोड़ से १४ कि.मी. चम्बल की

विस्तृत मनोरम वसुंधरा पर वेसली नदी के किनारे पर अपनी प्राकृतिक छटा बिखेरता यह क्षेत्र खुद बोलता है कि अंतिम तीर्थेश वर्तमान शासन नायक भगवान महावीर स्वामी का समवशरण उस समय यहाँ आया था। क्षेत्र पर दो भव्य जिनालय, एक गर्भ गृह और मंदिर प्रांगण में एक भव्य मान-स्तम्भ भी उस क्षेत्र की शोभा में चार चाँद लगाता है। मूल मंदिर ग्राम से कुछ ऊँचाई पर किलेनुमा है, जिसमें ऊँची-ऊँची अट्टालिकायें बड़े-बड़े आँगन एवं विशाल दरवाजे है। यह मंदिर ऊँचाई पर होने के कारण इसके दूर से ही दर्शन होने लगते हैं। इस मंदिर जी में अनेक भव्य प्रतिमाओं के साथ-साथ मूलनायक के रूप में ११ वीं शताब्दी में प्रतिष्ठित भगवान महावीर स्वामी जी की भव्य प्रतिमा के भी दर्शन होते है। यहाँ कलात्मक पाषाण के तोरण द्वार भी क्षेत्र को भव्यता प्रदान करते है। दूसरा मंदिर एक समतल पहाड़ी पर स्थित है। जिसमें भी अंतिम तीर्थेश भगवान महावीर की मनोज्ञ प्रतिमा विराजमान है।

किवदंती है कि इन मंदिरों का निर्माण लगभग १७५० वर्ष पूर्व ईंट और चूने से क्वांर कृष्णा दोज को देवताओं ने बनाया था । इसीलिये यहाँ प्रतिवर्ष क्वांर कृष्णा दोज को वार्षिक मेला का आयोजन किया जाता है। जिसमें हजारों यात्री जिनालयों के दर्शन कर धर्म लाभ प्राप्त करते हैं।

बरासों में भव्य 13 मुनि दीक्षायें :-

बरासों ग्राम के बाशिंदों एवं समाज के प्रमुख कर्णधारों के पुनः निवेदन करने पर, आचार्यश्री ने भी उनकी विनती को स्वीकार कर लिया और १४ दिसम्बर १९९८ को अति. क्षेत्र बरासों जी में मुनि दीक्षायें सम्पन्न कराने की स्वीकृति प्रदान कर दी।

फलतः आचार्य महाराज का संकेत मिलते ही क्षेत्रीय कमेटी और ग्रामीण पदाधिकारियों ने मिलजुल कर कुछ ही समय में इस भव्य आयोजन की समुचित एवं सुव्यवस्थित, व्यवस्था बना ली, किसी भी यात्री को कोई परेशानी न हो ऐसी 'अतिथी देवो भवः' की भारतीय संस्कृति से सराबोर चंबल अंचल के उस नन्हें से ग्राम वरासों में रहने वाले हर बाशिन्दे ने अपने-अपने घरों के

एक-एक कमरे यात्रियों के ठहरने के लिये रिक्त कर दिये। सभी यात्रियों की आवभगत में पलके बिछाने लगे और वह दिन भी आ गया।

श्रमणत्व का जन्म :-

दि. जैन अति. क्षेत्र बरासों जी के प्रांगण से दूर सड़क किनारे बहुत ही सुंदर और विशाल पाण्डाल का निर्माण कराया गया था। मंच के ठीक बीचों-बीच एक तखत के ऊपर आचार्यश्री विरागसागर जी महाराज का सिंहासन लगाया गया । आचार्य महाराज के एक ओर मुनिराज ऐलक और क्षुल्लक महाराज विराजमान थे ओर दूसरी और आर्यिका माता जी मंच की गरिमा को गुरूता प्रदान कर रहीं थी। आचार्यश्री के ठीक सामने मंच पर १३ स्थानों पर चौक पूरे गये थे और उनके ऊपर एक धवल श्वेत वस्त्र बिछाया गया था । जिस पर दीक्षार्थियों को बैठाया गया । उनके सन्मुख मंच के दोनों ओर एक मंच बनी थी, जो अतिथी महानुभाव, और आमंत्रित विद्वतजन से रिक्त नहीं थी और मुख्य मंच के सन्मुख इस भव्य आयोजन में अपनी नैनों के माध्यम से सहभागी बनने पहुँचे लगभग २०-२५ हजार दर्शकों से खचाखच भरा पाण्डाल था।

इस वैराग्य और संयम के महाकुम्भ में सभी नरनारी खो जाने को आतुर थे। सभा का शुभारंभ संघस्थ ब्रह्मचारिणी बहिनों ने सामूहिक रूप से एक सुंदर मंगलगीत के माध्यम से किया, शिष्यो की उन्नति में गुरू एक रहस्यमयी अदृश्य शक्ति हुआ करते हैं। अतः मंगलाचरण के उपरान्त परम पूज्य वात्सल्य रत्नाकर आचार्यश्री विमलसागर जी महाराज के चित्र का अनावरण किया गया। उसके बाद दीप प्रज्ज्वलन और आगन्तुक, विद्वत वर्ग का संक्षिप्त उद्बोधन हुआ। समारोह में उस समय देश के मूर्धन्य विद्वान मंचासीन थे। जिनमें प्रमुख थे, प्राचार्य नरेन्द्र प्रकाश जी (फिरोजाबाद), पं. नीरज जी (सतना) पं. नरेन्द्र कुमार जी (खरगापुर), ब्र. जयकुमार जी निशांत (टीकमगढ़), पं. महेन्द्र जी (मुरैना), पं. हरिश्चन्द्र जी, एवं पं. सुमतिचन्द्र जी (मुरैना) इसके उपरान्त आयोजन अपने और पायदान चढ़ा और दीक्षार्थियों ने अपने मेहंदी रचे हाथों में सुसज्जित श्रीफल लेकर आचार्यश्री के श्री चरणों में जैनेश्वरी मुनिदीक्षा प्रदान करने के लिये प्रार्थना की। सभी दीक्षार्थियों ने भावों को विशुद्ध करते हुये प्राणीमात्र से बार-बार क्षमा

याचना की, ऐलक विमर्शसागर जी सहित सभी १३ दीक्षार्थियों ने अपने वैराग्य की, अपने उद्‌बोधन के माध्यम से मंच से पुष्टी की और पूज्य आचार्यश्री से पुनः दीक्षा हेतु निवेदन किया। भव्यों को सन्मार्ग पर लगाना और दीक्षा देकर उन्हें आत्मोत्यान के पथ पर अग्रसर करना आचार्य का परम कर्त्तव्य हुआ करता है। अपने कर्त्तव्य का निर्वाह करते हुये परम पूज्य आचार्यश्री विरागसागर जी महाराज ने मंचासीन श्रमण संघ और आर्यिका माताओं से, त्यागी व्रतियों से, मंच के दूसरी ओर बैठे हुये माँ जिनवाणी के उपासक विद्वत वर्ग से एवं उस धर्मसभा में उपस्थित अपार जनसैलाब से पूछा कि ये दीक्षार्थी मोक्षमार्ग पर आगे बढ़ने के लिये निरंतर प्रयासरत हैं और आज जिनलिंग अर्थात् भगवान अर्हंत की मुद्रा को अंगीकार करना चाहते हैं। क्या इनको दीक्षा दी जानी चाहिये, आचार्यश्री के शब्द सुनकर अपार जनसमुदाय के हाथ अनुमोदना करने के लिये हवा में लहराने लगे, और आचार्य विरागसागर जी महाराज की जय हो, जय जय गुरूदेव के गगन भेदी नारों से सारा वातावरण गुंजायमान होने लगा।

अनुमोदना और प्रार्थना के उपरान्त आचार्यश्री ने शास्त्रोक्त विधि से क्रमानुसार दीक्षार्थियों को दीक्षा देना प्रारंभ किया। और देखते ही देखते सारे दीक्षार्थी वस्त्रों के अम्बर उतार कर आकाश की तरह दिगम्बर हो गये। और गुरूकृपा से जो नाम उनके मुख से नवीन साधकों का निकलता सारा वातावरण उस नाम के जय जयकारों से गुंजायमान होने लगता।

13 दीक्षार्थियों के नाम निम्न प्रकार थे।

दीक्षार्थी नाम	दीक्षा के बाद नाम
१. पू. ऐलक विशल्यसागर जी	– पू. मुनिश्री विशल्यसागर जी
२. पू. ऐलक विभवसागर जी	– पू. मुनिश्री विभवसागर जी
३. पू. ऐलक विमर्शसागर जी	– पू. मुनिश्री विमर्शसागर जी
४. पू. ऐलक विहर्षसागर जी	– पू. मुनिश्री विहर्षसागर जी
५. पू. ऐलक विनिश्चयसागर जी	– पू. मुनिश्री विनिश्चयसागर जी
६. पू. ऐलक विश्वशीलसागर जी	– पू. मुनिश्री विश्वशीलसागर जी

७. पू. ऐलक विमदसागर जी	- पू. मुनिश्री विमदसागर जी
८. पू. ऐलक विहितसागर जी	- पू. मुनिश्री विहितसागर जी
९. पू. ऐलक विश्वलोचनसागर जी	- पू. मुनिश्री विश्वलोचनसागर जी
१०. पू. ऐलक विश्वयससागर जी	- पू. मुनिश्री विश्वयससागर जी
११. पू. ऐलक विश्वभूतिसागर जी	- पू. मुनिश्री विश्वभूतिसागर जी
१२. पू. क्षुल्लक सयमसागर जी	- पू. मुनिश्री विश्वधर्मसागर जी
१३. ब्र. रमेश जी (दमोह)	- पू. मुनिश्री विश्ववीरसागर जी

दीक्षा के उपरान्त पूज्य ऐलक विमर्शसागर जी के वस्त्र जतारा से पधारे उनके गृहस्थ जीवन के माता-पिता को सौंप दिये गये। अन्य दीक्षार्थियों के भी वस्त्राभूषण उनके परिवारजनों को सौंप दिये गये। दीक्षा के शुभ अवसर पर जतारा के लाड़ले सपूत ऐलक विमर्शसागर को मुनि विमर्शसागर बनते हुये देखने, उन क्षणों की अविस्मरणीय अनुभूतियों को अपने नेत्रों के कैमरे से हृदय में उतारकर सुरक्षित करने के लिये जतारा से पिता सनत जी, माँ भगवती और लघुभ्राता चक्रेश एवं अग्रज राजेश जी के साथ बहिनें श्रीमति कमला एवं कु. महिमा, बहनोई श्री बालचंद जी दिगौड़ा, दादी बैनीबाई और मित्रमण्डली जतारा से आये हुये थे।

समस्त कार्यक्रम में पं. नीरज जी सतना का मंच संचालन विद्वता के धरातल पर काफी प्रभावी था। दीक्षा के उपरान्त इस कथा के नायक जो अब ऐलक विमर्शसागर जी नहीं बल्कि मुनि विमर्शसागर जी बनकर मंच पर विराजित थे जब उनका क्रम आया तो उद्‌बोधनार्थ अपने विचारों को चैतन्य के धरातल से उठने वाली भावी काव्यत्व की मौन सम्भावनाओं से कुछ पंक्तियों ने जन्म लिया जो उन्होंने वहाँ व्यक्त की।

भक्तों की भक्ति को अब शरण दीजिये।
गुरूवर अपने जैसा आचरण दीजिये।
ज्ञान वैराग्य की किरण दीजिये।
गुरूवर अपने जैसा आचरण दीजिये।

जतारा का ध्रुव तारा

समय (आत्मा) को पाने
समय की साधना

"जीवन है पानी की बूँद" गीत के मूल रचयिता एवं "विमर्श लिपि" के सृजेता
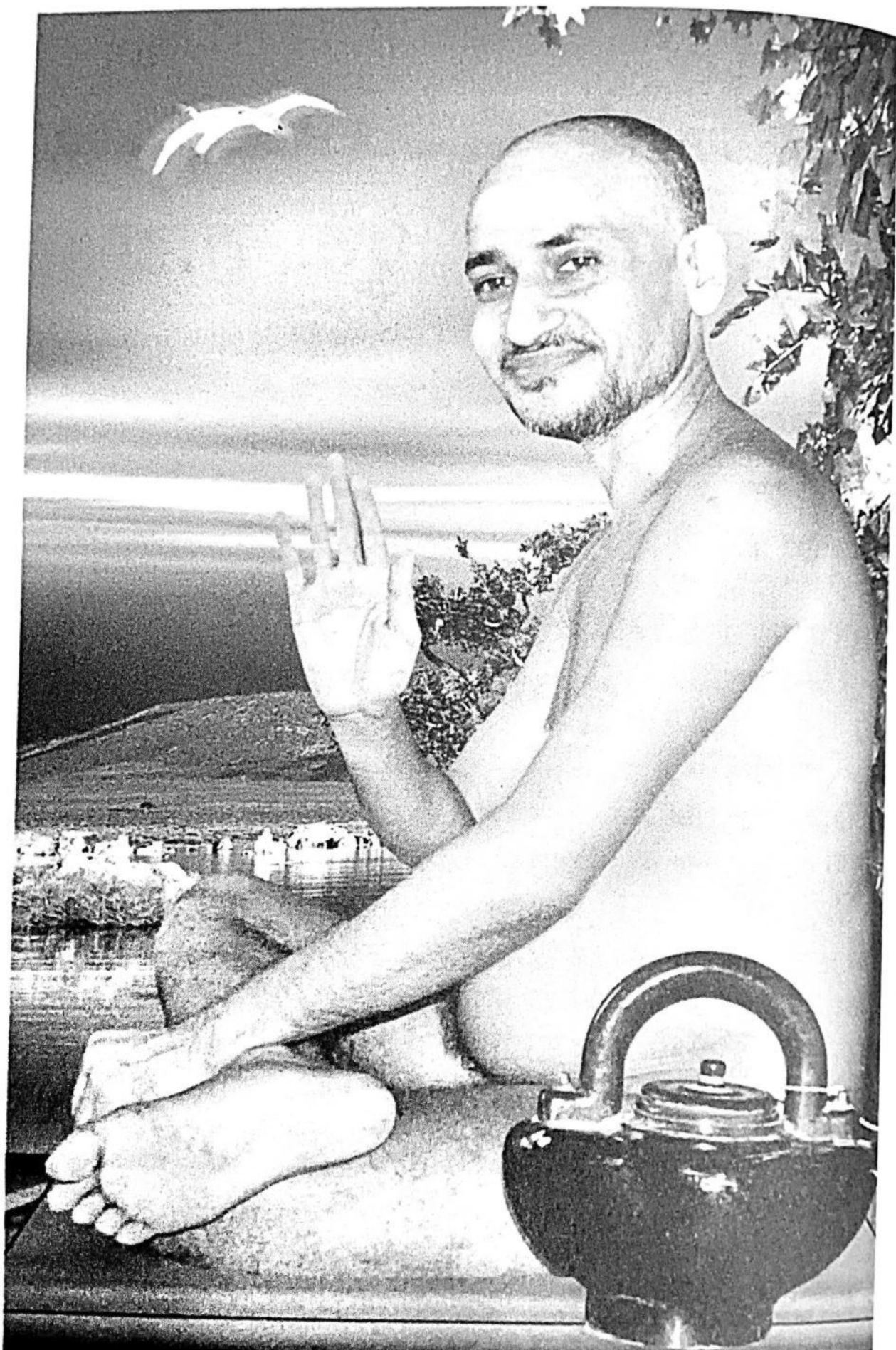
परम पूज्य राष्ट्रयोगी श्रमणाचार्य 108 श्री विमर्शसागर जी महाराज

!! दीक्षा होते ही परीक्षा !!

दीक्षा के उपरान्त सभी नवदीक्षित मुनिराज वसतिका की ओर चल पडे, क्षेत्र पर स्थान ठहरने का बहुत कम था, एक छोटे से कक्ष में २, ३ मुनिराजों को रात्रि विश्राम करना पड़ता था, हुआ ये कि मुनि विमर्शसागर और दो अन्य मुनिराजों को एक छोटा सा तलघर था। जिसमें रात्रि विश्राम करना था। उसमें दरवाजा था नहीं और हवा इतनी ठण्डी थी कि दाँत आपस में कटकटा रहे थे। तभी मंदिर का पुजारी सामने से गुजरा। एक मुनिराज ने कहा भैया एक फर्श लगा दो दरवाजे पर । वह पुजारी हास्य में एक शिक्षाप्रद बात कहता हुआ आगे निकल गया। उसने कहा कि अब आप मुनि महाराज बन गये हैं, परिषहों को सहने की आदत डाल लीजिए । सभी मुनिराज मुस्कुराने लगे, और दिगम्बरत्व, की अनुभूति में लीन हो गये।

दीक्षामहोत्सव के अगले दिन १५ दिसम्बर को आचार्यश्री विरागसागर जी महाराज के ही (ससंघ) सानिध्य में बरासों में गुरूणांगुरू आचार्य विमलसागर जी महाराज की ५ वीं पुण्यतिथी विविध आयोजनों के साथ मनाई गई, विशाल धर्मसभा आचार्यश्री विमलसागर जी के नाम आयोजित की गई, फिर आचार्य संघ का पुनः भिण्ड की धरती पर मंगल आगमन हुआ।

द्वय गुरू भाइयों का अद्भुत मिलन :-

लगभग १८ वर्ष बाद एक पिता के दो लाड़ले बेटों का अद्भूत समागम का दृश्य देखने लोगों का हुजूम उमड़ा पड़ा। एक तरफ से आचार्य विमलसागर की एक भुजा आचार्य विरागसागर और दूसरी ओर थी दूसरी भुजा आचार्य पुष्पदंत सागर जी । जब महान गुरू के दो महान शिष्यों का मिलन हुआ, तब अदृश्य रूप से आचार्य विमलसागर जी का भी हृदय अपने बेटों को मिलता देखकर गदगद् हो गया होगा। आचार्यश्री विरागसागर जी अपने विशाल संघ को लेकर अपने ज्येष्ठ भ्राता आचार्य पुष्पदंतसागर जी की

अगवानी करने नगर के बाहर २ k.m तक गये और जब वहाँ एक दूसरे को देखकर दो महान संत वात्सल्य भाव से गले लगे, तो दृश्य इतना भावुक हो गया, कि देखने वालों की आंखों से अविरल अश्रुधार बहने लगी, लेकिन ये अश्रु जैनत्व की अखण्डता की खुशी के थे।

भिण्ड नगर धन्य हो गया, लोगों ने खुशी की पराकाष्ठा तक आनंदित होकर इन श्रमण जगत के दो जगमग करते सूर्यो का स्वागत किया। भिण्ड में आ पुष्पदंत सागर जी का २० वां दीक्षा दिवस महोत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया गया।

९७,९८,९९ के लगातार तीन वर्षायोग के उपरान्त आचार्यश्री ने (ससंघ) बुन्देलखण्ड की ओर विहार किया। नवदीक्षित मुनिराज विमर्शसागर जी भी अपने गुरू के चरणों के अनुगामी बनकर उनके पीछे - पीछे विहार करते थे। और अपनी चर्या एवं साधना को निरन्तर दृढ़ता के सांचे में ढालकर लक्ष्य की ओर सतत गतिशील थे।

मूलसंघ से निकले उपसंघ :-

जब तक घड़ा पूरा नहीं पक जाता तब तक उसे 'अबे' से बाहर नहीं निकालते। उसी तरह एक गुरू अपने शिष्यों के अंदर योग्यता को परखते हैं। कि वो अकेले रहकर धर्म प्रभावना कर सकते हैं या नहीं। आचार्यश्री ने भी जब यह अनुभव किया कि अब मेरे शिष्य अपने आप में इतने सक्षम हो गये, कि वो स्वतंत्र विहार कर आगमानुसार धर्म प्रभावना कर सकते हैं। और संघस्थ साधुओं का भलीप्रकार निर्वहन कर सकते हैं, तो आचार्यश्री ने संघस्थ साधुओं के निम्न पृथक संघ बनाये। - मुनिश्री विशद्सागर जी तथा दूसरा मुनि विश्वशीलसागर जी, मुनिश्री विमर्शसागर जी मुनिश्री विश्वपूज्यसागर जी, तीसरा मुनिश्री विहर्षसागर जी ऐलक विकर्षसागर जी, चौथा मुनि विनिश्चयसागर जी मुनिश्री विश्वलोचन, विश्वशांतिसागर जी को, एवं मुनि विमदसागर जी के साथ क्षुल्लक कुंदकुंदसागर जी को रखा, आचार्यश्री का आदेश और आर्शीवाद से सभी नव उपसंघ विभिन्न स्थानों पर विहार करने लगे।

नायक ने संघनायक बनाया :-

"गुरू आज्ञा सिर माथे पर" पूज्य गुरुवर की आज्ञा से और आशीर्वाद से मुनिश्री विमर्शसागर जी ने अपने संघ मुनिश्री विश्वपूज्यसागर जी को लेकर करगुँवा से तालवेहट की ओर २६ मार्च को विहार कर दिया। ५ अप्रैल को मुनिश्री तालवेहट पहँचे, जहाँ के श्रावकों का उत्साह बस देखते ही बनता था। दिव्यघोष की ध्वनि सब नगरवासियों को सचेत कर रही थी, कि जागो और देखो हमारे नगर में तीर्थ चलकर आये हैं। पूरे हर्षोल्लास के साथ मुनि संघ को नगर में प्रवेश कराया गया घरों के आगे बनी रंगोलियां उस नवोदित साधक के चरण का स्पर्श पाने को बैचेन होकर हवा के साथ उड़ना चाहती थीं। हाथों में लिये गये जल से पूरित कलशों को देखकर सागर अपने आप को तुच्छ समझ रहा था। आरती की थाली में जलते कपूर की सुगंध वातावरण को सुहावना बना रही थी। जगह - जगह पूज्य मुनिश्री का पादप्रक्षालन और आरती की गई। और नगर के मुख्यमार्गों से मुनिसंघ को मंदिर में लाया गया।

अमृत देशना की वर्षा :-

महाराजा मर्दनसिंह की ऐतिहासिक नगरी,एवं धार्मिक संस्कारों में पली पुसी जैन संस्कृति से गौरवान्वित नगरी तालवेहट जिला झांसी (उ.प्र) में परम पूज्य आचार्य भगवन् गुरुवर विरागसागरजी महाराज के आशीर्वादानुसार पृथक संघ के रूप में मुनिश्री विमर्शसागर जी महाराज (ससंघ) सानिध्य में उस तालवेहट नगर को पूज्यश्री की अमृत देशना का उपहार मिल गया, और विधिवत तरीके से दिनॉक ०५-०४-२००० से २६-०४-२००० तक ग्रीष्मकालीन वाचना की स्थापना हुई।

इन २० दिनों में मुनिश्री द्वारा आचार्य मानतुंग स्वामी कृत श्री भक्तामर जी स्तोत्र पर अपने उद्‌बोधन के माध्यम से जो उसमें छुपे हुये रहस्यों की सुंदरतम व्याख्या की गई, वह अद्वितीय थी। वह भक्तामर कक्षा हर दिल पर एक अमिट छाप छोड़ गई।

समीपस्थ क्षेत्र सेरोन जी की वंदनार्थ विहार :-

मुनिराजों के विहार, गुरूवंदना और तीर्थवन्दना के लिये ही हुआ करते हैं। समीपस्थ क्षेत्र सेरोन जी की वंदना का लक्ष्य लेकर नवोदित मुनिश्री विमर्शसागर जी ने तालवेहट से सेरोन जी की ओर विहार किया, और तीन दिन में विहार कर भगवान शांतीनाथ के दरबार में पहुँच गये, यह क्षेत्र ललितपुर से ३२ k.m की दूरी पर सथित है। यहाँ ७ जिनालय हैं। क्षेत्र पर मूलनायक के रूप में भगवान शांतिनाथ की १८ फिट उतंग अतिशयकारी प्रतिमा विराजमान है। भावविशुद्धि के जल से भगवान श्री शांतिनाथ के चरणों का प्रक्षालन कर मुनिसंघ पुनः तालवेहट की ओर वापिस लौट चला और पुनः तालवेहट नगर में पदार्पण किया।

सिद्धचक्र महामण्डल विधान में सिद्धों की आराधना :-

श्री पार्श्वनाथ जिनालय के नाम से जाने जानेवाले भव्य जिनालय में मुनिश्री विमर्शसागर जी के सानिध्य में ८-६-२००० से १७-०६-२००० तक श्री १००८ सिद्धचक्र महामण्डल विधान का आयोजन पं. नरेन्द्र कुमार खरगापुर के आचार्यत्व में सम्पन्न हुआ। जहाँ प्रतिदिन मुनिश्री द्वारा सिद्धों के गुणों के गुणाराधन के माध्यम से निज आत्मा को सिद्ध बनानेवाले सूत्रों का प्रतिपादन सुन भव्यों की प्यास शमन हो गई।

दिनाँक १४-०६-२००० को अचानक ही कुछ संतों का समागम उस तालवेहट की धरा को प्राप्त हुआ, जहाँ संतों से संतों का मिलन होता है। वहाँ बसंत स्वतः ही आ जाया करता है। ऐसा ही कुछ तब हुआ जब आचार्यश्री पद्मनंदी जी के शिष्य मुनि श्रुतसागर, मुनि मार्दवसागर जी, श्री वीरसम्राट सागर जी का शुभागमन तालवेहट में चल रहे विधान के अवसर पर हुआ। सभी संतो के वात्सल्य पूर्ण आत्मीय मिलन ने श्रावकों के हृदयों में एकता का नया बीजारोपण किया।

जखौरा में प्रभावना का जखीरा :-

तालवेहट में अभूतपूर्व धर्म प्रभावना से जनमानस को प्रभावित करते हुये, मुनिश्री विमर्शसागर जी के कदम अब जखौरा की ओर बढ़ गये। जहाँ एक ओर धर्म की प्रभावना तालवेहट के निवासियों की आँखों के आंसू बनकर बोल रही थी। वहीं दूसरी और जखौरा के बाशिंदों की आँखों की चमक मुनिश्री के प्रभाव का बखान कर रही थी। १८ जून को चलकर वेलई होते हुये, १९ जून को मुनिसंघ जखौरा पहुँचा। मुनिसंघ की अगवानी में जखौरा के निवासियों ने कोई कसर न छोड़ी । जैन श्रावक मुनि से प्रभावित हों ये तो कुछ समझ में आता है लेकिन अजैन लोगों द्वारा मुनिश्री को जखौरा में चौमासा करने हेतु श्री फल अर्पित करना मुनिश्री के चुम्बकीय व्यक्तित्व का ही परिचायक है। भावना की विशुद्धि ने मुनिश्री को सोचने पर विवश कर दिया। और भक्ति के प्रगाढ बंधन में बंधकर मुनिश्री ने जखौरा में २० से २६-०६-२००० तक श्री सम्यग्ज्ञान धर्म एवं नैतिक शिक्षण शिविर लगाने की स्वीकृति प्रदान कर दी। स्थान चुना गया समीपस्थ जैन धर्मशाला का प्रांगण।

जिस शिविर में आवाल वृद्धों ने धर्म के संस्कार, धार्मिक अध्ययन से और नैतिक संस्कार मुनिश्री की अमृत देशना से प्राप्त कर शिविर की सार्थकता को अंजाम दिया। शिविर के दौरान पूज्य मुनिश्री विमर्शसागर जी की वाणी से खिरते सूत्रों ने जनमानस को अपनी जीवन शैली पर ''विमर्श'' करने पर विवश कर दिया था।

जखौरा को एक और सौभाग्य :-

परमपूज्य आचार्यश्री विरागसागर जी गुरूवर के परम शिष्य मुनिश्री विश्वकीर्तिसागर जी, ऐलक विनम्रसागर जी,क्षुल्लक विनिश्चलसागर जी अपनी ग्रीष्मकालीन वाचना चंदेरी में समाप्त कर जखौरा पहुँचे, तो मुनिश्री विमर्शसागर जी चल पड़े अपने गुरू भाईयों की अगवानी के लिये। १ k.m

आगे जाकर आगन्तुक साधुओं को भावभीना सत्कार और आत्मीयता का कलश छलकाते हुये मुनिश्री विमर्शसागर जी मुनिश्री विश्वपूज्य सागर जी बैंड बाजों के साथ मंदिर जी तक लाये।

सम्यक्ज्ञान की प्रेरणा –

नदी की अविरल धारा सा जगत को निरंतर बड़ते रहने का मौन संदेश प्रसारित करता हुआ संघ बाँसी पहुँचा। जहाँ दो दिन के अल्प प्रवास में पूज्य मुनिश्री विमर्शसागर जी के ऊर्जावान प्रवचनों से प्रेरणा लेकर स्थानीय समाज ने वहाँ एक पाठशाला का शुभारंभ किया। जिसका नाम रखा गया। ''आचार्य विरागसागर सम्यक्ज्ञान पाठशाला'' बाँसी से आगे बड़ता हुआ मुनिसंघ महरौनी आदि स्थानों से होता हुआ अतिशय क्षेत्र गिरार पहुँचा।

जून के महिने की कड़क धूप में भी लगातार विहार का आलम बना हुआ था। जहाँ से भी संघ गुजरा बस दिलों में एक अलख जगा गया कि ऐसे ही साधुसंघ का वर्षायोग हमारे नगर में होना चाहिये।उसी का प्रतिफल था कि गिरार जी में महरौनी, मढ़ावरा आदि तालवेहट, जखौरा, अनेक स्थानों के श्रद्धालु अपनी श्रद्धा का श्री फल लेकर गुरूचरणों में वर्षायोग के लिये निवेदन रत थे। लेकिन वो लोग भाग्यशाली है जो संतों के समागम का संयोग जुटा पाते हैं। और उनमें भी वो परम सौभाग्यशाली है जो संतों का वर्षायोग करा पाते हैं। भवि जीवों के पुण्य आस्था और आत्मविश्वास से लबालब भरा हुआ महरौनी समाज के निवासियों का दिल गुरूवर से तोड़ा न गया। उनकी आंखों से बहने वाले आंसु उनकी भक्ति की मौन अभिव्यक्ति को जता रहे थे। महरौनी वालों की भक्ति रंग लाई, और मुनिश्री विमर्शसागर जी ने मूल संघ से पृथक प्रथम वर्षायोग की स्वीकृति महरौनी वालों को प्रदान कर दी।

जब कई प्रयासों के बाद सफलता हाथ आती है। तो उस सफलता की कीमत दोगुनी हो जाया करती है। वैसी ही सफलता का उपहार पूज्यश्री के वर्षायोग के रूप में महरौनी वालों को प्राप्त हो गया।

वर्षायोग 2000 महरौनी :-

जब से चातुर्मास की स्वीकृति प्राप्त हुई तभी से नगर का वातावरण कुछ बदला सा नजर आने लगा था। घरों के ऊपर पंच वर्ण के ध्वज, दरवाजों पर रंगोलियां द्वारों पर हाथों में कलशा और दीपक की थाली लिये भक्तों को देखकर अजैन लोग भी कहते हुये पाये गये, कि ऐसा स्वागत तो कभी देखा ही नहीं गया। नगर के इतिहास में यह पहला अवसर था, जब कि मुनिसंघ के आगमन पर इतना ज्यादा जैन समुदाय उपस्थित था । उनकी अगवानी के लिये। विशाल शोभायात्रा, हवा में उड़ती गुलाल, और नगाड़े की ताल पर नृत्य कर अपनी खुशी का इजहार करती युवाओं की टोलियों के मध्य मुनिश्री ससंघ कों मंदिर जी तक लाया गया।

१५ जुलाई को श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर के विशाल प्रांगण में भव्य सुसज्जित पांडाल के मध्य वर्षायोग २००० की स्थापना का आयोजन रखा गया था।

जिसमें दोपहर २ बजे तपती दोपहरी में भी जैन और अजैन बंधुओं का जनसमूह कार्यक्रम स्थल पर पूर्व से ही आ चुका था। मुनिश्री के मुखमण्डल की आभा सहसा ही लोगों को आनंद के सागर में सराबोर करने के लिये प्रेरित कर रही थी। उनकी देह की दमक तपस्या की अतुलनीय अदृश्य शक्ति को अभिव्यक्त कर रही थी। कार्यक्रम शुरू हुआ, मंगलाचरण, दीपप्रज्जवलन, आदि सभी औपचारिकताओं से गुजरता हुआ आयोजन, कलश स्थापना के मुख्य बिन्दु तक जा पहुँचा। विधिवत तरीके से समाज द्वारा पूज्यश्री से वर्षायोग हेतु निवेदन किया गया। उपरान्त पूज्यश्री ने भक्ति आदि करके कलश स्थापना का कार्य सम्पन्न किया। श्री शिखरचन्द कठरया परिवार को चातुर्मास मंगल कलश स्थापना का सौभाग्य प्राप्त हुआ। कलश स्थापना के उपरान्त अपने प्रवचनों में मुनिश्री ने कहा कि संत का हृदय दयाधर्म से छलकता हुआ होता है। वह महाव्रती होते हैं। और अहिंसा महाव्रत की रक्षार्थ साधुजन मुख्यतः चार महीने एक स्थान

पर ठहरकर आत्मसाधना किया करते हैं। बरसात के दिनों में सूक्ष्मजीवों की उत्पत्ति अत्यधिक हो जाती है। उनकी विराधना से बचने के लिये संतगण विहार न करके एक स्थान पर रूक जाते है। संतो का सानिध्य श्रावकों को धर्म के संस्कारों से जोड़ता है। चातुर्मास में श्रावक भी साधक की साधना के अनछुये पहलुओं से परिचित होता है। और उनके जैसी आत्मोत्थान की साधना अपने जीवन में धारण करने की भावना रखता है।

महरौनी में जैन साधु का प्रथमवार वर्षायोग हो रहा था, इसलिये पूरी जैन समाज का उत्साह बस देखते ही बनता था।

वर्षायोग 2000 की कुछ झलकियाँ- गुरूपूर्णिमा पर्व :-

१६ जुलाई को गुरूपूर्णिमा पर्व पूज्यश्री के सानिध्य में हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। इस दिन भगवान महावीर को शिष्य के रूप में इन्द्रभूति गौतम गणधर की प्राप्ति हुई थी, और गुरू की पूर्णतः हुई थी इसलिये यह गुरूपूर्णिमा पर्व जैन सम्प्रदाय में मनाया जाता है।

वीर शासन जयन्ति :-

मुनिश्री के विशेष उद्‌बोधन के द्वारा वीर शासनजयन्ति पर प्रकाश डाला गया । शेष कार्यक्रम यथावत सम्पन्न हुये।

भक्तामर जी की मानतुंग सम व्याख्या :- ७ अगस्त २००० सोमवार को विधिवत श्री भक्तामर जी शिक्षण शिविर की स्थापना हुई, मुनिश्री द्वारा एक एक अक्षर के शुद्धोच्चारण की जब सुंदर व्याख्या की गई। तो लोगों को यह कहते हुये पाया गया कि हमने अपनी पूरी जिंदगी भक्तामर जी पढ़ते-पढ़ते गुजार दी, लेकिन ऐसी भक्तामर जी की व्याख्या न कभी कहीं देखी, और न कभी किसी से सुनी। भक्तामर जी के उन ४८ काव्यों में पूज्य आचार्य मानतुंग स्वामी ने क्या पिरौया है। क्या क्या रहस्य उन ४८ काव्यों में छिपे हुये हैं इन सब विषयों की मुनिश्री विमर्शसागर जी महाराज ने विस्तृत व्याख्या कर सबको भक्तामर मय कर दिया।

श्रमण संस्कृति रक्षा पर्व :-

१५ अगस्त का दिन सुबह से ही लोग अपने गृहकार्यों से निवृत्त होकर पूजनादि को सम्पन्न कर मंदिर जी प्रांगण में एकत्रित होने लगे थे। क्योंकि आज मुनिश्री द्वारा रक्षाबंधन पर्व पर विशेष प्रवचन होना था। निर्धारित समय पर नित्य कार्यक्रमानुसार मुनिश्री ससंघ मंच पर पधारे, तों जयकारों के नारों से सारा वातावरण हर्षमय हो गया। मुनिश्री के मार्मिक प्रवचनों ने श्रोताओं के समक्ष वो दृश्य साक्षात उपस्थित कर दिया। जब आचार्य अकम्पन्न आदि ७०० मुनिराजों पर घोर उपसर्ग हुआ था। श्रमण संघ पर उपसर्ग का दिल दहलाने वाला मार्मिक उद्‌बोधन सुनकर लोग सम्यकतया रक्षाबंधन पर्व को समझ सके। सभी ने श्रमण संघ, देवशास्त्र गुरू की रक्षा के लिये संकल्प किया। विकृत संस्कृति के कारण घटते हुए मानव मूल्यों के प्रति एक अद्‌भुत उर्जा पूज्य मुनिश्री का प्रवचन प्रसारित कर गया।

चातुर्मास की बेला में अगला चरण आया पर्वराज पर्यूषण का । मुनिश्री का दसधर्मो पर सारगर्भित व्याख्यान, तत्वार्थसूत्र ग्रंथ के एक एक अध्याय का प्रतिदिन गवेषणात्मक उद्‌बोधन, सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से युवा पीढ़ी को संस्कारों के प्रति जागरूक करने का प्रयास आदि अनेक कार्यक्रमों के साथ पर्वराज आया और जीवन में धर्म की खुशबु छोड़कर विदा हो गया। पयूर्षण के बाद क्षमावाणी पर्व ने दस्तक दी ।

पूज्यश्री का विशेष प्रवचन था क्षमावाणी पर्व पर, क्षमावाणी पर्व का प्रवचन सुनने के बाद जब कई वर्षो से वैरभाव में जीते आये लोग एक दूसरे के गले मिले, तो लगा कि जैसे भगवान महावीर के सन्मुख सिंह गाय एक घाट पर पानी पी रहे हो। क्षमावाणी का रूप ऐसा महरौनी की धरती पर पहली बार देखा गया था।

अहिंसा की अलख जगाई :-

गांधी जयन्ति पर : - २ अक्टूबर के दिन स्थानीय समाज ने सभी वर्गो के लोगों की बात पर विचारकर निर्णय किया कि पूज्यश्री का प्रवचन एक विशाल

सार्वजनिक प्रांगण में रखा जाये। सभी लोग मिलकर पूज्य मुनिश्री के पास स्वीकृति लेने पहुँचे। मुनिश्री तो अहिंसा के पुजारी है ही, स्वतः ही उस शाकाहार सर्मथक रैली को अपना सानिध्य प्रदान करने की अनुमति प्रदान कर दी। एक विशाल रैली निकाली गई जिसका मुख्य उद्देश्य था 'अहिंसा का पल्लवन और हिंसा का निर्सन'। रैली एक विराट धर्मसभा में जाकर परिवर्तित हो गई। मुनिश्री ने शाकाहार पर जोर देते हुये कहा कि हमारी संस्कृति से दो चीज सुधर जायें एक तो खानपान, दूसरा परिधान तो ९०% हिंसा के कार्य स्वतः ही खत्म हो जायेगें। मुनिश्री के सन्मुख हजारों लोगों ने हाथ उठाकर शाकाहार का संकल्प लिया।

डायमंड जुबली –

महरौनी में पूज्य मुनिश्री विमर्शसागर जी महाराज (ससंघ) के वर्षायोग के १०० दिवस अभूतपूर्व धर्मप्रभावना के साथ सम्पन्न होने पर जैनसमाज महरौनी, युवावर्गों, महिलावर्गों ने उस दिन को डायमण्ड जुबली महोत्सव के रूप में बड़े ही उत्साह से मनाया।, महोत्सव और भी मूल्यवान प्रतीत होने लगा जब सतीश सिंघई के द्वारा पूज्यश्री के गृहस्थावस्था के पूर्व जीवन पर प्रकाश डाला गया। वर्षायोग के १०० दिन के अंदर हमने क्या खोया और क्या पाया। इन विषयों पर अन्य वक्ताओं ने सुंदर भाव व्यक्त किये ।

आचार्यश्री पदमनंदी जी २००० का वर्षायोग ललितपुर में सम्पन्न कर महरौनी पधारे। जब मुनिश्री विमर्शसागर जी को समाचार मिला तो नगर के बाहर एक कि.मी. जाकर उन्होने आचार्यसंघ की अगवानी की, मंदिर में विशाल धर्मसभा का आयोजन हुआ। आचार्य पदमनंदी के पूर्व मुनिश्री विमर्शसागर जी का मंगल प्रवचन हुआ, मुनिश्री के प्रवचनों में आध्यात्म का पुट अवश्य रहता है।

यही वहाँ उस प्रवचन में हुआ, आ. पद्मनंदी जी को इस नवोदित साधक के मंजे हुये ज्ञान ने खूब प्रभावित किया, ततूपश्चात आ. पद्मनंदी जी का मंगल उद्बोधन हुआ उन्होने कहा मुनिश्री "आध्यात्मिक पुत्र" हैं। तीर्थंकरो को और संघ को मंगल आशीष दिया, दोनों संघों के वात्सल्य पूर्ण मिलन ने समाज को एकता के नये सूत्र दिये।

वेदी शिलान्यास :-

मुनिश्री के सानिध्य में ६ नवम्बर को महरौनी के शिक्षक कालोनी स्थित मंदिर मे वेदी के दोनों ओर दो वेदी प्रस्तावित थीं । उनका शिलान्यास समारोह किया गया।

पूजन प्रशिक्षण शिविर की लहर :-

पूज्य मुनिश्री विमर्शसागर जी और ऐलक विनम्रसागर जी दोनों के संयोग निर्देशन में श्री मज्जिनेन्द्र पूजन प्रशिक्षण शिविर का आयोजन कुछ विशेषता लिये हुये था। मुनिश्री की मधुर आवाज के साथ ऐलक जी की लयबद्ध गायन शैली जब दोनों मिल गये तो लगता था, स्वर और छंद खुद इन साधकों का भेष बनकर उपस्थित हुये हों, सारे नगर में हर गली चौराहे पर उन दिनों बस पूजन शिविर की ही चर्चा आम थी। जब मुनिश्री के भजनों को उनके मुख से लोग सुनते थे, तो फिल्मी गाने फिर उनको रास नहीं आते थे, छोटे बच्चों से लेकर वृद्ध लोगों की जुबान पर बस एक ही बात रहती थी। कितना प्यारा तेरा द्वारा । अपूर्व धर्मप्रभावना से श्रावकों को भक्ति में सराबोर कर दिया था मुनिश्री की वाणी ने।

पिच्छिका परिवर्तन समारोह :-

दिनांक १४ दिसम्बर का दिन था। मुनिश्री विमर्शसागर जी महाराज के दीक्षा दिवस की मंगल बेला थी। और इस आयोजन के साथ एक और सौभाग्य के क्षण जुड़े हुये थे, वो थे मुनिश्री (ससंघ) का भव्य पिच्छिका परिवर्तन समारोह के।

मुनिश्री के साथ उस समय मुनिश्री विश्वकीर्तिसागर जी महाराज मुनिश्री विश्वपूज्यसागर जी महाराज, ऐलक विनम्रसागर जी क्षुल्लक विनिश्चलसागर एवं क्षुल्लक पदमसागर जी भी उस दिन मंचासीन थे।

सभी साधकों की संयमसाधना दर्शकों को भाव विभोर कर रही थी। संयम का उपकरण जिसके द्वारा मुनिराजों ने साल भर अपने अहिंसा महाव्रत

की रक्षा की थी। वो संयमोपकरण पिच्छि किस सौभाग्यशाली भव्य जीवात्मा को प्राप्त होगी इसका सभी लोगों को बेसब्री से इंतजार था। मंगलाचरण की मधुर ध्वनियों से कार्यक्रम का आगाज किया गया। दीप प्रज्वलन, चित्र अनावरण, शास्त्र भेंट आदि कार्यक्रमों के साथ आयोजन रोचकता की ओर अग्रसर होता चला गया। मुनिश्री ने अपनी पुरानी पिच्छिकायें श्रेष्ठ नियम संयम वाले भव्य जीवों को प्रदान की और श्रावकों द्वारा नवीन पिच्छिकायें मुनिसंघ को भेंट की गई । अंत में मुनिश्री द्वारा संयम और संयमोपकरण के ऊपर सुंदर व्याख्या सुनकर लोगों के मन प्रफुल्लित हो गये।

महरौनी से मंगल विहार :-

अचानक ही २० जनवरी के दिन मुनिसंघ की आहार चर्या के पश्चात् एक समाचार हवाओं में फैल गया। कि मुनिश्री (ससंघ) का आज के दिन दोपहर में महरौनी से मंगल विहार होने जा रहा है। यह समाचार सुनकर सभी लोग भोजन पान को भूल भगवान पार्श्वनाथ के जिनालय में एकत्रित हो गये सभी के हृदय में चातुर्मास के सुनहरे पल यादें बनकर घुमड़ रहे थे। जिससे सभी के नेत्र सजल दिखाई दे रहे थे।

मुनिश्री सामायिक के पश्चात् मंच पर पधारे और मंदिर में उपस्थित भीड़ ने धर्मसभा का रूप ले लिया। लोगों ने अपने रूंधे हुये कंठों से अपने श्रद्धालोक के देवता का अभिवादन किया। समाज के गणमान्य श्रावकों द्वारा विगत कालीन प्रवास में मुनि संघ के प्रति हुई त्रुटियों के लिये क्षमायाचना की गई। महिलाओं के समूह से उठनेवाली रोने की सिसकियाँ पाण्डाल को करुणता में सराबोर किये जा रहीं थीं। उपरान्त पूज्य मुनिश्री का मंगल उद्‌बोधन हुआ, जिसमें मुनिश्री ने जब अपने दोनों हाथ जोड़कर विगत समय में जाने अनजाने में हुई त्रुटियों के लियें क्षमायाचना, की तो लोग अपनी अश्रुधारा को रोक नहीं पाये। हर तरफ बस वियोग के बादल छाये हुये थे, और अश्रुओं की बरसात थमने का नाम नहीं ले रही थी। लेकिन जिसका आगमन हुआ है। उसका गमन सुनिश्चित है। आगमन शब्द ही अपने अंदर गमन को समेटे हुये है।

जिनेन्द्र शासन की उस अक्षुण्ण परम्परा का निर्वाह करते हुये मुनिश्री विमर्शसागर जी महाराज ने अंतिम बार भगवान जिनेन्द्र के दर्शन कर विहार कर दिया। उस विहार के दृश्य को, उन वियोग के क्षणों को, उस भक्त और भगवान के विछोह को शब्दों में भरने में मेरी कलम अपने आपको असमर्थ महसूस कर रही है।

सीरोन की धरती पर मुनिसंघ :-

महरौनी से विहार कर मुनिश्री संघ सहित मढावरा आदि स्थानों से होते हुये अतिशय क्षेत्र सीरोन जी पहुँचे। वार्षिक मेला का आयोजन वहाँ चल रहा था, पूज्य मुनिश्री का मंगल प्रवचन वहाँ पर रखा गया। जिसे सुनकर अनेकानेक भव्य जीवों ने मांस मदिरा का त्याग करने का संकल्प मुनिश्री के समक्ष किया। यह सानिध्य उन ग्रामवासियों के लिये अनुपम उपहार लेकर आया था।

धुवारा में मुनिश्री विमदसागर जी से मिलन :-

मुनिश्री विमर्शसागर जी संघ सहित मढ़ावरा, सीरोन जी बड़ागाँव धसान आदि क्षेत्रों की वंदना करते हुये घुवारा पहुँचे। विशाल जनसमुदाय ने मुनिश्री की मंगल भावों के साथ अगवानी की।

तभी धुवारा वासियों को एक और समाचार मिला कि मुनिश्री के ही गुरूभाई मुनि विमदसागर जी महाराज, भी धुवारा आ रहे हैं। तो धुवारा वासियों के आनंद का पारावार न रहा। दोनों संघों का मिलन होगा। ऐसी कल्पना मात्र से लोग रोमांचित हो रहे थे।

मुनिश्री ससंघ आगन्तुक मुनिश्री विमदसागर जी की अगवानी करने पहुँचे, जिन-जिन आँखों ने वों दोनों गुरू भाईयों का मिलन देखा था, अपने आल्हाद के कारण आँख से आँसु की छलक रोक नहीं पायें। भव्य अगवानी के साथ मुनि संघ को मंदिर जी लाया गया। २ मार्च से ११ मार्च तक श्री १००८ सिद्ध चक्र महामण्डल विधान का आयोजन समाज में धर्म प्रभावना की अनूठी मिसाल कायम कर गया।

शाहगढ़ में महावीर जयन्ति और गुरुभाईयों से मिलान :-

शाहगढ़, जिसकी माटी ने अनेक श्रमणों और श्रमणीओं कों अपनी कोख से जन्म देने का सौभाग्य प्राप्त किया। जहाँ की आबोहवा ने श्रमण संस्कृति को हष्ट पुष्ट किया है। आचार्य देवनंदी, आचार्य कुमुदनंदी, आचार्यश्री विमदसागर, आचार्यश्री विभवसागर, आर्यिका गुणमति, आ. जिनमति, आ. धारणामति आदि अनेक तपोधन जिस धरा की गोद में खेलकर मोक्षमार्ग को गौरवान्वित कर रहे हैं। ऐसे ही शाहगढ़ की पुण्यधरा पर मुनिश्री विमर्शसागर जी का ससंघ भव्य पदार्पण हुआ, अति हर्षोल्लास उस दिन शाहगढ़ निवासियों के चेहरों पर देखने को मिल रहा था। क्योंकि मुनिश्री को कई दिन पूर्व से निवेदन कर रहे थे, शाहगढ़ पधारने के लिये। शाहगढ़ में आचार्य विरागसागर जी के एक और लाडले शिष्य मुनिश्री विशुद्धसागर अपने अनुजों मुनि विशल्यसागर, मुनि विश्ववीरसागर जी के साथ शााहगढ़ में विराजमान थे। पधारे, अपने अनुज भ्राता के आगमन का समाचार मुनिश्री विशुद्धसागर ससंघ को आल्हादित कर गया। और श्रावकों को साथ ले नगर के बाहर मुनि श्री विमर्शसागर जी की अगवानी करने पहुँच गये। दोनों का मिलन ऐसा प्रतीत हो रहा था। मानों एक ही स्रोत से पैदा हुई दो नदियाँ विभिन्न मार्गों से होती हुई पुनः किसी एक स्थान पर मिलने को आई हुई हों। दोनों के मिलन ने शाहगढ़ के उत्साह को चार गुना अधिक कर दिया था। यहाँ महावीर जयन्ती का प्रभावक आयोजन हुआ।

वरायठा में ग्रीष्मकालीन वाचना :-

मुनिश्री विमर्शसागर जी महाराज (ससंघ) शाहगढ़ से विहार कर नरवां रामटोरिया आदि स्थानों पर विहार करते हुये वरायठा पहुँचे, जहाँ स्थान तो छोटा है, लेकिन भक्तों के दिल छोटे नहीं हैं, ऐसे ही वरायठा नगर की जब भक्ति देखी तो ग्रीष्मकाल वाचना की स्वीकृति मुनिश्री को देनी ही पड़ी। एक माह तक मुनिसंघ के सानिध्य में मां जिनवाणी का रसास्वादन भक्तों ने किया उपरान्त मुनिश्री ने वरायठा से कदम सागर की ओर बड़ा दिये।

मुनिश्री संघ सहित जब सागर के समीप पहुँचे और श्रद्धालुओं को खबर लगी। कि मुनिश्री सागर की ओर बढ़ रहे है। समाज के प्रतिनिधियों ने मुनिश्री के सन्मुख उपस्थित होकर निवदेन किया कि आप मकरोनियाँ पधारिये। मुनिश्री को हर्षोल्लास के साथ सागर के उपनगर मकरोनिया में प्रवेश कराया गया। चातुर्मास का समय निकट था। श्रावकों ने अपनी भावनाओं का श्रीफल मुनिश्री के चरणों में समर्पित कर अनुरोध किया। कहते हैं कि भक्ति में बहुत शक्ति होती है, वही वहाँ हुआ। श्रद्धा और भक्ति का सैलाब देख पूज्यश्री ने स्वीकृति दे दी, स्वीकृति मिलते ही मकरोनिया में हर्ष की लहर दौड़ गई।

परम पूज्य आचार्यश्री विरागसागर जी के मंगल आशीर्वाद से सन् २००१ का मंगल वर्षायोग सागर की धरती पर स्थापित हो गया। और सुमतिसागर जी के शिष्यमुनिश्री बाहुबली सागरजी ने भी मुनिश्री के साथ वहां वर्षायोग किया ।

एक नवयुवक का मुक्ति पथ पर प्रयाण :-

मुनिश्री के निस्पृहता और निर्दोष श्रमण चर्या स्वतः ही भव्यों को मोक्ष मार्ग पर चलने के लिये प्रेरित करती है। हुआ यूँ कि वर्षायोग में पूज्य श्री की आगमनाकूल चर्या से वरायठा का एक नवयुवक प्रभावित हो गया इतना प्रभावित हुआ कि आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत लेने का भाव बना लिया। वह युवक था आशीष जैन जिन्होने ७ जुलाई को पूज्य मुनिश्री विमर्शसागर जी महाराज के श्री चरणों में विधिवत श्री फल अर्पित कर आजीवन ब्रह्मचर्य का व्रत लेकर पूज्य श्री के चरणों में अपने आप को समर्पित कर दिया।

मानस पटल पर अंकित वर्षायोग 2001 :-

अनेकानेक आयोजन जो धर्मप्रभावना से ओतप्रोत थे। समय समय पर मुनिश्री के निर्देशन एवं पावन प्रेरणा से सम्पन्न हुये। संयोग के साथ वियोग की कहानी जीवन के पृष्ठ पर पूर्व से अंकित रहा करती है। वह २००१ के वर्षायोग

का सुहाना समय कब व्यतीत हो गया पता ही नहीं चला। और आ गया समय विदाई का। नदी का और साधु का एक स्थान पर अधिक समय रूकना उनके ही अस्तित्व का घातक बन जाया करता है। पूर्वाचार्यों की आज्ञा - और जिनशासन की प्रभावना के लियें मुनिश्री ने ३ दिसम्बर को सागर से विहार करने का निश्चय कर लिया, सुबह से ही मौसम में कुछ वियोग की हवा घुली- घुली सी लग रही थी, आहारचर्या के उपरान्त विहार होना था, मुनिश्री आहारचर्या के उपरान्त सामायिक पर बैठ गये और सामायिक होने के पूर्व ही श्रद्धालुओं से मंदिर परिसर खचाखच भर गया, मुनिश्री सामायिक के पश्चात् प्रवचन सभागार में पधारे। पूज्य मुनिश्री विमर्शसागर जी ने अपने प्रवचनों में वर्षायोग में जो उपलब्धि हुई उसको हृदयंगम करने को सबको प्रेरित किया। और धर्मवृद्धि का शुभाशीष दिया। मुनिश्री के प्रवचन के दौरान सारा परिसर रोने की सिसकियों से गुंजायमान हो रहा था। बालवृद्ध सभी भाव विभोर हुये जा रहे।

प्रवचन के उपरान्त मुनिश्री के कदम जिनालय की ओर बढ़े भगवान जिनेन्द्र का अंतिम दर्शन कर, मुनिश्री सागर को छोड़ आगे बढ़ गये उस समय श्रद्धालुओं की ऑखों से निकलने वाले आंसुओं से उस नगर का नाम सागर सार्थक सा दिख रहा था। दूर तक गुरूचरणों के संग श्रावकों का सैलाब चला जा रहा था, दूर जाकर कुछ श्रावकों के कदम ठहर गये, और सजल नेत्र दूर तक अपने गुरूवर की छवि को निहारते रह गये।

पटना बुजुर्ग में शीतकालीन वाचना :-

मुनिश्री ससंघ अंकुर कॉलोनी में वर्षायोग २००१ समाप्त कर पटनाबुजुर्ग पहुँचे। विशेष अनुरोध और निवेदन पर पटनाबुजुर्ग में शीतकालीन वाचना का प्रारंभ हुआ। धर्म की गंगा में सराबोर पटनाबुजुर्ग नगरी को एक और सौभाग्य प्राप्त हुआ। मुनिश्री विमर्शसागर जी का तीसरा मुनिदीक्षा दिवस मनाने का। संयम का दिवस, अनेकानेक भव्य आत्माओं ने संयम स्वीकार कर मनाया। - १४ दिसम्बर २००१ शीतकालीन वाचना के पश्चात् मुनिश्री अगले गन्तव्य की ओर

बढ़ गये। चूंकि रजवांस वालों का बार बार निवेदन चल रहा था, पूज्यश्री से पंचकल्याणक महोत्सव के लिये। अतः पूज्य श्री ने स्वीकृति देकर उसी ओर अपने कदम बढ़ाये। (२८-०१-०२ को विहार)

रजवांस में भव्य पंचकल्याणक :-

रजवांस २ जनवरी २००२ मुनिश्री (ससंघ) का आगमन हुआ जहाँ मुनिश्री के सानिध्य में दिनॉक १० फरवरी से १६ फरवरी तक श्री नेमिनाथ पंचकल्याणक प्रतिष्ठा एवं गजरथ महोत्सव सम्पन्न होना था। बीच के दिन कब तैयारी में व्यतीत हुये पता ही नहीं चला और आ गया दिन ध्वजारोहण का । ध्वजारोहण के साथ उस भव्य पंचकल्याणक आयोजन का शुभारम्भ हुआ। जहाँ कुशल प्रतिष्ठाचार्य श्री पं. गुलाबचंद पुष्प, और जय निशांत, सह प्रतिष्ठाचार्य श्री पं. सनतकुमार विनोदकुमार रजवांस के प्रतिष्ठाचार्यत्व में यह विशाल आयोजन सम्पन्न हो रहा था। वहीं मुनिश्री विमर्शसागर जी जैसे विशुद्ध साधक का सानिध्य पाकर वह आयोजन अतिशय को प्राप्त हो रहा था। निर्विघ्न और महती धर्मप्रभावना का पर्याय बन चुका वह पंचकल्याणक आज भी जिन नेत्रों ने उसे देखा था। उनके मानस पटल पर पत्थर की लकीर के समान अमिट रूप से स्थित है। मुनिश्री के सारगर्भित प्रवचन ने उस आयोजन को और अधिक जीवन्तता प्रदान कर दी थी।

बरौदिया कलाँ में पंचकल्याणक प्रतिष्ठा :-

रजवांस में पंचकल्याणक की सानंद सम्पन्नता के पश्चात् मुनिसंघ पहुँचा वरौदिया कलां पहुँचे जहाँ मुनिश्री विशदसागर जी पूर्व से ही विराजमान थे। मुनिश्री विशद्सागर ने अपने अनुज गुरूभाइयों की भव्य अगवानी की और चारों मुनिराजों के सानिध्य मे वहाँ पर भगवान जिनेन्द्र के भव्य पंचकल्याणक महोत्सव का आयोजन शुरू हुआ और कब वह आयोजन निर्विघ्नता के साथ समाप्त हो गया पता ही नहीं चला । जब साधकों की विशुद्ध साधना और आयोजन की शुद्धता दोनों मिल जाती हैं, तो आयोजन स्वतः ही स्मरणीय बन जाया करते हैं।

गुरूचरणों में मुनिश्री :-

मुनिश्री रजवांस आये फिर ईसुरवारा होते हुये, दिनाँक २८ मार्च २००२ को गुरूवर परमपूज्य आचार्यश्री विरागसागर जी महाराज के चरणों में नगर सिलवानी पधारे। जैसे बालक माँ की गोद को पाकर एक नदी, सागर को पाकर, पपीहा स्वाति नक्षत्र की बूँदों को पाकर, तृप्ती का अनुभव करता है। उसी प्रकार की अनुभूतियों का मंजर मुनि श्री विमर्शसागर जी के चेहरे पर स्पष्ट दिखाई दे रहा था। आचार्यमहाराज का वात्सल्य तो अपने आप में अनूठा है ही आचार्यश्री खुद पहुँच जाते हैं अपने बेटे को लेने । जैसे ही मिलन हुआ, मुनिश्री ने त्रय भक्ति और परिक्रमा पूर्वक आचार्यश्री के चरणों में नमोऽस्तु किया । आचार्यश्री ने भी अपने लाडले बेटे को उठाकर अपने सीने से लगा लिया । गुरू शिष्य का यह मिलन सिलवानी की धरती का सौभाग्य था।

आचार्य श्री विरागसागर जी के साथ मुनिश्री विमर्शसागर जी ४ अप्रैल ०२ को सिलवानी से विहार कर १२ अप्रैल को अतिशय क्षेत्र बीना बारहा पहुँचे। सागर से देवरी कलाँ मार्ग पर स्थित यह क्षेत्र अपने आप में प्राकृतिक सम्पदा से परिपूर्ण है। भगवान शांतिनाथ जहाँ मूलनायक के रूप में १५ फिट उतंग विराजमान है ऐसे पवित्र क्षेत्र की संघ के साथ आचार्यश्री ने उस पवित्र भूमि की वंदना की। भगवान शांतिनाथ के चरणों में विराजमान आचार्य गुरूवर श्री विरागसागर जी को देखकर लोग स्वतः ही कह उठे जहाँ विराग होता है वहीं शांति है।

अंकुर कॉलोनी (सागर) में वेदीप्रतिष्ठा एवं कलशारोहण :-

कहते हैं योग्य निमित्त के बिना कार्य की सिद्धि नहीं होती है। कई दिनों से जो कार्य प्रगति पर था पूज्य आचार्यश्री विरागसागर जी महाराज का प्रवल निमित्त पाकर वेदी प्रतिष्ठा कलशारोहण के रूप में साकार हुआ। विधि विधान के साथ त्रिदिवसीय वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव बहुत ही हर्षोल्लास और प्रभावना के साथ सम्पन्न हुआ। मुनिश्री भी संघ का सिपाही होने के नाते यथासंभव गुरू के चरणों में प्रभावना से पीछे नहीं हटते थे।

मुनिश्री विमर्शसागर जी का (ससंघ) सागर से पृथक विहार :-

आचार्य श्री के आदेशानुसार मुनिश्री विमर्शसागर जी के साथ युवा मुनिश्री विनर्घ्य सागर जी ने आचार्यश्री की चरण वंदना कर और सजल नेत्रों से गुरु सानिध्य से दूर नैनागिर के लिये विहार कर दिया। २८ मई को वहाँ पहुँच गये जहाँ कभी भगवान पार्श्वनाथ का समाशरण चलकर आया था। जहाँ एक ओर उस पावन क्षेत्र नैनागिर जी की भूमि उन दो युवा साधकों को पाकर प्रसन्न हुई जा रही थी। वहीं उस पुण्यास्रव के महान केन्द्र का दर्शन कर दोनों साधक मन में अत्यंत हर्ष को प्राप्त हो रहे थे।

सतना नगरी में मुनिश्री का पदार्पण :-

अतिशय क्षेत्र नैनागिर जी के दर्शन कर मुनिश्री द्रोणागिरी, छतरपुर, पन्ना, गुनौर अतिशय क्षेत्र श्रेयांसगिरी होते हुये सतना के निकट पहुँचे। ज्योंही सतना जैन समाज को यह ज्ञात हुआ की बुंदेलखण्ड के प्रथम जैनाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज के दो युवा शिष्य सतना की ओर बढ़ रहे हैं सारे सतना नगर में खुशी की लहर दौड़ गई। मुनि संघ की अगवानी करने नगर के प्रतिष्ठित लोगों की अगुवाई में सारा जैन समाज दोनों तरूण तपस्वियों को लाने नगर से बाहर बैण्ड बाजों, और जुलूस के साथ उपस्थित हो चुका था। मुनि संघ को बड़े ही हर्षोल्लास के साथ नगर में प्रवेश कराया गया। नगर के मुख्य मार्गों से होते हुये मुनिद्वय को महावीर जिनालय तक लाया गया।

मुनिश्री की आगमोक्त चर्या, और हृदय को छू लेनेवाली प्रवचन शैली हर दिल में घर कर गई। और सतना जैन समाज ने मानस बना लिया। कि २००२ का वर्षायोग मुनिश्री का सतना में ही होना चाहिये। कई बार मुनिश्री के चरणों में अपनी प्रार्थना रखी, समाज की भक्ति भावना, और वर्षायोग का काल समय निकट जान मुनिश्री ने वर्षायोग २००२ सतना में ही करने की घोषणा कर दी।

वर्षायोग की घोषणा सुनते ही सभी के चेहरे प्रसन्नता से खिल उठे और सभी प्रसन्न होकर नाचने लगे।

सतना में वषायोग 2002 स्थापना :-

२३ जुलाई २००२ का वह दिन सतना नगर के लिये एक अपूर्व प्रसन्नता का दिवस था। उस दिन सभी में अपार उत्साह दिखाई दे रहा था। जैन मंदिर को झालरों बैनरों, ध्वजों एवं चित्रों से सुसज्जित किया गया था। न केवल सतना अपितु समीपस्थ स्थानों, अमरपाटन, नागोद, पन्ना के साथ अनेकानेक स्थानों से हजारों श्रावक प्रसन्नता से सतना जैन मंदिर में उपस्थित थे। सभी की प्रसन्नता का एक मात्र कारण था, कि आज नगर में बुन्देलखण्ड के प्रथमाचार्य प. पू. आचार्यश्री विरागसागर जी महाराज के दो युवा साधकों का वर्षायोग स्थापित होने जा रहा था।

अहिंसा चौक में बने पाण्डाल में एक विशाल मंच पर दोनों युवा साधकों का दोपहर २ बजे पदार्पण हुआ। सारा पाण्डाल जय जयकारों से अनुगूनित होने लगा। यह वर्षायोग मुनिश्री विमर्शसागरजी का अपने गुरूवर से पृथक तीसरा वर्षायोग था।

साधु जब भी कहीं वर्षायोग करता है। तो पहले समाज को अच्छी तरह परख लेता है। जो मुनिश्री की शुरू से ही आदत रही है।

वर्षायोग स्थापना का कार्य प्रारंभ करने हेतु सकल समाज के पदाधिकारियों सहित समस्त समाज ने प्रार्थना की तो मुनिश्री ने कहा कि में जिस दिन सतना में वर्षायोग करने की घोषणा कर चुका था। उस दिन मैंने ९९ प्रतिशत स्वीकृति प्रदान की थी, अभी भी १ प्रतिशत मेरे पास शेष है। मैं आपके नगर में वर्षायोग करने आया हूँ, मैं आप लोगों से पूछता हूँ कि क्या में सतना में वर्षायोग स्थापित करूँ ?तो सभी ने अपने हाथ ऊपर उठाकर स्वीकृति प्रदान की, और मुनिश्री ने बचा हुआ १% भी सतना की झोली में डाल कर स्थापना की क्रिया शुरू कर दी। और शास्त्रोक्त विधी से मुनिश्री ने वर्षायोग स्थापना की विधि सम्पन्न की।

समय समय पर पूज्यश्री के व्यक्तित्व को मुखरित करते हुये धर्म

प्रभावना से ओतप्रोत अनेकानेक कार्यक्रम आयोजित हुये। जिनमें भक्तामर शिविर में भक्तामर पढाने की मुनिश्री की अनूठी शैली, क्षमावाणी पर्व पर मन की कलुषतायें धोकर क्षमा के शीतल जल से स्नान कराने वाली पीयूष देशना, पूजन शिविर के माध्यम से युवाओं में अर्हत भक्ति की गूंज पैदा करती मुनिश्री की सुमधुर वाणी, श्रमण संस्कृति रक्षापर्व का सही दिग्दर्शन करती देशना,दीपावली क्यों और कैसे मनाना चाहिये इसका अद्वितीय चित्रण पूज्यश्री द्वारा और भी अनेकानेक कार्यक्रमों के साथ सतना जैन समाज में नई ऊर्जा बच्चों में संस्कारो का बीजारोपण, युवाओं में धर्म के प्रति आस्था का प्रादुर्भाव, वृद्धों में धर्म से जुड़कर आत्मकल्याण की भावना को लिये वह वर्षायोग २००२ आज दिवाली के दिन भगवान महावीर के निवार्ण उत्सव के साथ निर्विघ्न और सानंद सम्पन्न हुआ।

अमरपाटन में शीतकालीन वाचना :-

अमरपाटन सतना के नजदीक ही है। अतः पूज्यश्री की चर्या उनका व्यक्तित्व, उनकी ज्ञान की प्रोढता ने स्वतः ही लोगों को आकर्षित कर लिया था । कई बार वर्षायोग के दौरान शीतकालीन प्रवास अमरपाटन में कराने हेतु निवेदन किया गया था। जिसके फलस्वरूप मुनिश्री ने अमरपाटन शीतकालीन प्रवास की स्वीकृति प्रदान कर दी।

मुनिश्री का अमरपाटन जाना तय हो चुका था। अतः मुनिश्री विमर्शसागर जी एवं संघस्थ मुनि विनर्ध सागर जी दोनों युवा मुनिराज सतना से मुनि विनर्घ्यसागर जी के गृहनगर अमरपाटन की ओर विहार कर गये । २५ नवम्बर २००२ से शीतकालीन वाचना प्रांरभ हुई जिसमें सामूहिक प्रवचन के रूप मैं श्री आचार्य कुंदकुंदस्वामी द्वारा प्रणीत श्री प्रवचनसार जी की वाचना की । शाम ३.३० बजे से सामूहिक रूप से श्रीअमृतचन्द्राचार्य विरचित पुरूषार्थ सिद्धयुपाय ग्रंथ के ऊपर पूज्य मुनिश्री की गहन व्याख्या सुन लगता था साक्षात भगवान जिनेन्द्र का समोशरण ही विराजमान हो।

शीतकालीन वाचना के समय में अनेकाअनेक भव्य आयोजन हुये जो अमरपाटन के इतिहास में अमिट बनकर रह गये। पिच्छिका परिवर्तन समारोह का आयोजन था। किसी सज्जन ने कहा होगा गुरूवर विमर्शसागर जी में तो अचार्यविरागसागर जी के स्वच्छ और कठोर अनुशासन की झलक दिखाई देती है। मुनिश्री का मंगल उद्‌बोधन हुआ। जिसमें मुनिश्री ने अपने गुरूवर के उपकारों को स्मरण में लाते हुये कहा कि अनुशासित शिष्य के द्वारा ही गुरु का अनुशासन प्रभावी होता है अतः शिष्य को सदैव अनुशासनबद्ध होकर गुरू की गरिमा का ध्यान रखना चाहिये । जो शिष्य गुरू के अनुशासन में नहीं रहता, वह स्वच्छंद होकर एक मात्र संसार का ही वर्धन करता है, और जिनशासन की अप्रभावना में कारण बनता है।

अमरपाटन अमर हो गया :-

जिस माटी से अरिहंतों और संतों का जीवन जुड़ा होता है, वह नगर, ग्राम, प्रदेश स्वतः ही अमरत्व को प्राप्त हो जाया करते है। ऐसा ही सौभाग्य जुड़ा था इस अमरपाटन की पवित्र भूमि से जहाँ की धूल में खेला एक नन्हा पंकज आज खुद मोक्षमार्ग बन चुका था । जी हाँ इस धरती को पवित्र मैं इसलिये कह रहा हूँ क्योंकि ब्र. पंकज भैया इसी धरती के सपूत थे। जो आज आचार्यश्री विरागसागर जी का वरदहस्त पाकर मुनिविनर्घ्यसागर जी बन गये हैं। पिताश्री राजेन्द्र कुमार एवं माता श्री मति सरोजरानी जैन के घर जन्म लेनेवाले इस श्रमण के साथ यह धरा भी अमर हो गई।

श्रेयांसगिरी में आचार्यश्री से मिलन एवं पंचकल्याणक त्रय गजरथ महोत्सव :-

आचार्य महाराज का विशाल संघ श्री श्रेयांसगिरी क्षेत्र पर रूका हुआ था। आचार्यश्री के सानिध्य में यहाँ भव्य पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव का आयोजन होना था। मुनिश्री विमर्शसागर जी ने अपने लघुभ्राता विनर्घ्यसागर जी को साथ लेकर आचार्य महाराज के दर्शनार्थ अमरपाटन से श्रेयांसगिरी की ओर विहार कर दिया ।

२० दिसम्बर को अमरपाटन से विहार कर मुनि संघ २३ दिसम्बर को श्रेयांसगिरी गुरु चरणों में पहुँच गये। आचार्य महाराज से मिलते ही दोनों शिष्य सजल नेत्रों से गुरूचरणों से लिपट गये, गुरू का हृदय वात्सल्य और ममता से भरा हुआ होता है। शीघ्र ही आचार्यश्री ने अपने दोनों लाडलों को चरणों से उठाकर सीने से लगा लिया। गुरू शिष्य का यह मिलन देखने वालोंके नेत्र स्वतः ही सजल हो गये। दोनों ही शिष्य अब मूल संघ में प्रविष्ट हो गये।

मुनिश्री विमर्शसागर जी का पृथक विहार :-

पंचकल्याणक प्रतिष्ठा की समाप्ति के पश्चात् परम पूज्य गुरूवर आचार्यश्री विरागसागर जी महाराज से अनुमति लेकर पूज्य मुनिश्री विमर्शसागर जी महाराज ने अनुज मुनि विनर्घ्यसागर जी को साथ लेकर दिनाँक २३ जनवरी को आचार्यश्री की चरण वंदना कर विहार किया। अनेकानेक स्थानों से गुजरते हुये। तीर्थों की वंदना करते हुये ५ फरवरी २००३ को मुनिसंघ महरौनी (ललितपुर) पहुँचा।

ललितपुर में इन्द्रध्वज महामण्डल विधान :-

जब यह बात ललितपुर समाज को ज्ञात हुई कि मुनिश्री विमर्शसागर जी (ससंघ) महरौनी पधार चुके है। तो ललितपुर समाज के प्रतिनिधियों द्वारा महरौनी आकर निवेदन किया गया कि हे गुरूवर ! ललितपुर में श्री इन्द्रध्वज महामण्डल विधान होने जा रहा है। आप अपना मंगल आशीर्वाद और पावन सानिध्य हमें प्रदान करने की कृपा करें। ललितपुर समाज का आग्रह मुनिश्री श्रेयांस गिरी में स्वीकार कर चुके थे, अतः स्वीकृति प्रदान कर दी । ५ फरवरी २००३ को मुनिश्री इन्द्रध्वज विधान में सानिध्य प्रदान करने महरौनी से विहार कर ७ फरवरी २००३ को ललितपुर नगर पहुँचे, भव्यता के साथ पूज्य श्री का ललितपुर में मंगल प्रवेश हुआ। पं. नरेन्द्र खरगापुर के आचार्यत्व में तथा पुज्य श्री के मंगल आर्शीवाद एवं सानिध्य में दिनाँक १६ फरवरी तक यहाँ वृहद स्तर पर श्री इन्द्रध्वज महामण्डल विधान का भव्य आयोजन सम्पन्न हुआ ।

महरौनी में पंचकल्याणक प्रतिष्ठा एवं गजरथ महोत्सव :-

भगवान जिनेन्द्र की प्राणप्रतिष्ठा का आयोजन, और आशीष था गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज का एवं पावन सानिध्य जहाँ मुनि विमर्शसागर जी महाराज जैसे विशुद्ध साधक का हो वहाँ भव्यता और निर्विघ्नता स्वयं आकर आयोजन को सजाती हैं। ललितपुर जिले की धर्मप्राण नगरी महरौनी में भगवान शांतीनाथ जिनालय में नवीन प्रतिमाओं की प्राण प्रतिष्ठा के लिये श्री मज्जिनेन्द्र पंचकल्याणक प्रतिष्ठा एवं गजरथ महोत्सव का भव्य आयोजन दिनाँक १९ फरवरी से २५ फरवरी तक, मुनिश्री विमर्श सागर जी महाराज मुनिश्री विनर्घ्य सागर जी महाराज के पावन सानिध्य में सानन्द एवं अपूर्व धर्मप्रभावना की पर्याय वन सम्पन्न हुआ । पं. विमलकुमार जी सौंरया का कुशल प्रतिष्ठाचार्यत्व इस आयोजन को प्राप्त हुआ था। ४० वर्षों की बड़ी अवधि के बाद महरौनी नगर में यह पंचकल्याणक हुआ था। इसलिये समाज में अभूतपूर्व उत्साह दिखाई दे रहा था।

पुनः मुनिश्री विमर्शसागर गुरू चरणों में :-

जिस प्रकार सुबह गाय अपने बछड़े को छोड़कर जंगल में घास खाने चली जाती है। तब जंगल में रहते हुये भी उसे प्रतिक्षण अपने बछड़े का ध्यान बना रहता है। उसी तरह वह बछड़ा भी बार बार उन राहों को निहारता रहता हैं जिससे उसकी मां आती है। ऐसा ही अद्भुत वात्सल्य गुरू और शिष्यों के मध्य हुआ करता है। जब से गुरू चरणों सें विलग हुये थे तभी से प्रतिक्षण बस गुरू मिलन की बेला का इंतजार आचार्य विरागसागरजी के ये दोनों शिष्य कर रहे थे, ज्यों ही मौका मिला खुले पिंजड़े से उड़नेवाले पंछी की तरह सीधा महरौनी से अपने गुरूदेव के चरण कमलों की तरफ विहार कर दिया। और जिस प्रकार पथिक अपनी मंजिल पर जाकर ही रुकता है। मार्ग का प्रलोभन उसे नहीं रोक पाता उसी तरह दोनों मुनिराजों को ग्रीष्म कालीन वाचना के लिये अनेकानेक स्थानों पर निवेदन किया गया लेकिन वो रुके नहीं । क्योंकि उन्हें मंजिल के रूप में अपने गुरू के चरण दिखाई दे रहे थे। अंततः मुनिश्री

महरौनी क्षेत्रपाल से २६ फरवरी को विहार कर पाली, बालवेहट, खिमलासा आदि अनेक स्थानों के दर्शन करते हुये सीधे ७ मार्च को अपने गुरूवर श्री विरागसागर जी के श्री चरणों में बीना में उपस्थित हो गये। वो दृश्य मन को आल्हाद् की सौगातों से भावविभोर कर रहा था। जब दो शिष्य अपने गुरू के श्री चरणों में अपना नम्रीभूत माथा रख रहे थे। और गुरू ने अपने दोनों बेटों को उठाकर अपने सीने से लगा लिया था । और पुनः एक नदी सागर में समाहित हो गई। बीना में आचार्यश्री पूर्व से ही विराजमान थे।

करीब १ महीना ११ दिन गुरूचरणों को शुभाशीष तले बिताकर मुनिद्वय आचार्यश्री की आज्ञानुसार नगर बीना से मुँगावाली की ओर बढ़ गये। १६ मार्च को संघ आगासोद हिनौदा होता हुआ मुँगावली पहुँचा। भव्य अगवानी के साथ मुनिश्री का मुँगावली में प्रवेश हुआ।

मुनिश्री की चर्या और प्रवचन की रोचक शैली ने थोड़े ही समय में लोगों को अपनी ओर आकर्षित कर लिया बस अब तो मुँगावली में ये आलम था कि किसी भी तरह मुनिश्री को मुँगावली में रोका जाये। कई बार अनुनय विनय और निवेदन के प्रतिफल करीब एक हफ्ते का प्रवास ही उस कस्बे की झोली में आ पाया। और मुनिश्री विमर्शसागर जी के कदम आगे की ओर बड़ गये। चूँकि आचार्यश्री के संकेत प्राप्त हो चुके थे कि आप शीघ्र ही ललितपुर पहुँचे। शिष्य का हृदय क्या चाहेगा गुरू चरणों का सानिध्य, फलतः मुनिश्री अपने अनुज मुनिश्री विनर्घ्यसागर जी को साथ ले ललितपुर का लक्ष्य ले आगे बड़ने लगे। मार्ग में कुरवाई, मण्डीवामौरा होते हुये मुनिश्री ६ जून २००३ को बुंदेलखण्ड की धर्मप्राण नगरी, ललितपुर सीमा पर पहुँचे। जैसे पता चला कि मुनि विमर्शसागर जी ससंघ ललितपुर पधार चुके हैं। आचार्यश्री तो पूर्व से वहाँ विराजमान थे ही । इसी दिन पूज्य आर्यिका विशाश्री माताजी भी (ससंघ) ललितपुर पहुँची थी तो सभी लोगों ने नवागन्तुक मुनि एवं आर्यिका संघ की भव्य अगवानी की, एवं अपने गुरूभाइयों एवं बहिनों को साथ लेकर सभी लोग मंदिर जी पहुँचे जहाँ आचार्यश्री अपने शिष्यों की प्रतीक्षा कर रहे थे आचार्यश्री की छवि देखते ही मुनिश्री विमर्शसागर जी, मुनिश्री विश्वपूज्यसागर जी, मुनिश्री विनर्घ्यसागर जी तीनों की ही आँखों में

अपार हर्ष के कारण अश्क छलकने लगे। और तीनों ही अपने गुरू के समीप पहुँच कर चरणों से लिपट गये। और वात्सल्य मई गुरू के कर पल्लवों ने अपने लाडलों को उठाकर अपने सीने से लगा लिया।

चंदेरी की ओर वंदनार्थ विहार :-

ललितपुर में २१ दीक्षा के उपरान्त आचार्यश्री की आज्ञानुसार सभी उपसंघों का अलग-अलग दिशाओं में विहार हुआ। मुनिश्री विमर्शसागर जी महाराज मुनि विश्वपूज्यसागर और मुनिश्री विनर्घ्यसागर जी महाराज को साथ ले दिनाँक १७ जून २००३ को ललितपुर से सैरोन जी होते हुये, चंदेलों की ऐतिहासिक नगरी चंदेरी की ओर बढ़ गये। जहाँ की चौवीसी पूरे भारतवर्ष में विख्यात है। इन प्रतिमाओं की प्रतिष्ठा १८६३ में महाराज हरिश्चन्द्र के निर्देशन में सम्पन्न हुई थी। यह आकार में छोटी और भावनाओं एवं प्राकृतिक धरोहर से वड़ी नगरी चंदेरी, बैतवा और उर्वसी नदी के सामीप्य को प्राप्त है। ऐसे सुरम्य क्षेत्रों की वंदना करने से तो मन स्वतः ही शांत हो जाता है। और फिर वंदना संत के सानिध्य में हो तो हजार गुना फल देने वाली हो जाया करती है । ऐसे ही पवित्र भावना के साथ मुनिश्री को विहार करानेवाले युवाओं की टोली चंदेरी पहुँची, और संत के सानिध्य में वंदनाकर अपने पुण्यकोष में वृद्धि की।

थूवौन जी में मुनिसंघ :-

यह अतिशय क्षेत्र थूवौन जी उर्वशी और लीलावती नदियों की गोद में खेलता और अपने लालित्य से सबके मन को हरण करने वाला एक नटखट शिशु के समान जान पड़ता है। यहाँ का कण-कण यहाँ की प्राचीनता और खूबसूरती की कहानी कहता सा जान पड़ता है।

२६ जून को इस अतिशय क्षेत्र की पावन धरती पर मुनिश्री का पर्दापण हुआ, आते ही क्षेत्र का लालित्य और सुदंरता मुनिसंघ को कुछ इस तरह से भा गई कि मानस तो एक दिन रुकने का था, लेकिन तीन दिन उस क्षेत्र पर मुनिश्री रूके और २२ जून को थूवौन जी से अशोकनगर की और बढ़े ।

थूवोन से अशोकनगर की ओर मंगल विहार :-

जैसे ही यह समाचार अशोकनगर की गलियों और वाजारों में फैला कि आचार्यविरागसागर जी महाराज के सुयोग्य युवा शिष्य अशोकनगर की ओर बढ़ रहे हैं तो तुंरत अशोकनगर जैन समाज उमड़ पड़ा। उन निर्ग्रंथों की अगवानी के लिये। हमारे पूवाचार्यो ने कहा है कि -

किमनर्घ्य सतां लोके रत्नत्रयनिषेवनम्।
जिनधर्मः सदाचारः सदगुरोः पर्युपासनम्॥

लोक में सद्श्रावकों के लिये अमूल्य वस्तु क्या है। तो कहा कि रत्नत्रय की सेवा करना, जिनधर्म,समाचार, और सद्गुरूओं की उपासना ही अमूल्य है।

अतः देखते ही देखते नगर के वाहर मुनिश्री की अगवानी को विशाल जनसमूह एकत्रित हो गया। सभी निगाहें उन युवा साधकों के दर्शनार्थ ठीक उसी तरह व्याकुल सी हो रही थी, जिस तरह चन्द्रमा को पाने चकोर पक्षी। २५ जून के दिन मुनिश्री का अशोकनगर में आगमन हुआ। बड़े ही हर्षोल्लास से अशोकनगर की परम्परानुसार संतो की अगवानी की, दिव्यघोष, ध्वज आदि से सुसज्जित भव्य शोभायात्रा के रूप में मुनि संघ को स्थानीय जैन मंदिर जी में लाया गया। मार्ग का श्रम दूर कर अगले दिन मुनिश्री को प्रवचन के लिये सभागार में लाया गया। तब तक समुची समाज की भावना वन चुकी थी कि कुछ दिनों के पश्चात् वर्षायोग शुरु होने वाला है अतः हम हाथ में आया हुआ अवसर नहीं जाने देगें। प्रवचनसभा में ही सकल दि. जैन समाज ने पूज्य मुनिश्री को वर्षायोग २००३ अशोकनगर में करने का विनम्र निवेदन किया। लेकिन जिस शिष्य के हृदय में गुरू का वहुमान ही निरन्तर प्रवाहमान होता हैं। वह कोई भी कार्य गुरू आज्ञा के विना नही करता, चाहे छोटा हो या बड़ा अतः मुनिश्री ने कहा कि हमारे गुरूदेव से आज्ञा लेकर आइये तभी कुछ हो सकता है। अंधे को क्या चाहिये आँखें। वस उसी प्रकार श्रावक को क्या चाहिये- गुरू आज्ञा।

बस एक प्रतिनिधि मण्डल आचार्यश्री के पास तुरंत भेज दिया गया। तब तक इधर समीपस्थ क्षेत्र बजरंगगढ़ की वंदना करने मुनिश्री आगे बढ गये।

आचार्यश्री के पास जब अशोकनगर के श्रावक पहुँचे तो आचार्यश्री ने सहर्ष स्वीकृति प्रदान कर दी। मुनिश्री भी बजरंगगढ़ से पुनः अशोकनगर की ओर मानस बना चुके थे। संतों का सानिध्य सिर्फ मनुष्य नहीं तिर्यंच भी पाना चाहते है। कहते है सद्संगति निम्न लोगों में भी सद्संस्कारों का बीजारोपण कर जाया करती है। घटना उस समय की है जब अशोकनगर से संघ बजरंगगढ़ जा रहा था, जैसे ही शाढौरा पार किये कि एक जाति से तिर्यंच श्वान मुनिश्री के आगे हो लिया, साथ चलनेवालो को राश नहीं आया। उन्होनें उसे भगा दिया, वह कुछ देर बाद पुनः आ गया। साथ चल रहे श्रावकों ने पुनः भगा दिया। और देखते ही देखते वह पुनः आ गया। यह सब घटना पूज्यश्री अपनी आंखों से देख रहे थे। मुनिश्री ने साथ में चलनेवालों को हाथ के इशारे से रोककर कहा उसे साथ में चलने दो, सभी ने गुरूआज्ञा शिरोधार्य की और संघ आगे बड़ता गया, वह श्वान भी संघ के साथ निरंतर पैदल विहार करता जा रहा था।

जहाँ भी रास्ते में रात्री विश्राम होता तो वह भी रूक जाता और जब संघ आगे चलता तो वह भी संघ के साथ चलने लगता था। मुनिश्री से किसी ने पूछा महाराज श्री ये श्वान हमारे साथ ४५ k.m से लगातार साथ चल रहा है ऐसा क्यों?तो मुनिश्री ने बड़ी ही सहजता से मुस्कुराते हुये उन सज्जन से कहा-भैया! ये सब पूर्व के संयोग और संस्कार हैं जो इस पर्याय में भी उसे संतों के प्रति आकर्षित कर रहे हैं।

संघ जिस लक्ष्य को लेकर चल रहा था। वहाँ कुशलता के साथ पहुँच गया, भगवान शांतिनाथ, कुंथुनाथ और अरहनाथ का वह भव्य दरबार भव्यों के मनरूपी कमलों को विकसित करनेवाला था। अशोकनगर की धर्म पिपासु आत्माओं को आध्यात्म की बूँदों से अभिसिचिंत करने मुनिश्री ने

भगवान शांतिनाथ के दरबार से प्रथम तीर्थेश भगवान आदिनाथ स्वामी के दरबार की ओर विहार कर दिया। ६ जुलाई को बजरंगगढ़ से विहारकर संघ गुना पहुँचा। चौधरी मोहल्ला स्थित बड़े जैन मंदिर में रात्रि विश्राम और गुना समाज द्वारा संतों को रोकने का प्रयास जोरों पर।

महाराज चले गये :-

सारे समाज ने एक आनन फानन में मीटिंग की और निर्णय लिया कि अशोकनगर की ओर बड़ते मुनिश्री के कदमों में भक्ति की जंजीर डालकर वर्षायोग २००३, गुना में ही करवाना है। सुबह प्रवचनों में श्रीफल भेंट करना था। सुबह मुनिश्री अपने संघ के साथ हाथ में कंमडल लिये आगे बड़े तो देखनेवालों को लग रहा था कि पूज्यश्री शौच क्रिया हेतु जंगल की ओर जा रहे है इसलिये किसी ने ध्यान नहीं दिया। और जो साथ में एक युवक गुना का था जब उसने देखा कि मुनिश्री के कदम तो जंगल की और नहीं अपितु अशोकनगर को मंगल करने की तरफ बढ़ रहे हैं, वह दौड़ा दौड़ा वापिस मंदिर आया और बोला, करते रहो सब पूजा महाराज तो चले गये। संतों के चरण रोकने के लिये भक्ति, समर्पण के साथ झोली में पुण्य भी बहुत जरूरी है।

अशोक नगर आगमन :-

इस प्रकार संघ बीच की दूरी तय करके दिनाँक ८ जुलाई को अशोकनगर के बाहर 5 k.m दूर रात्रि विश्राम हेतु रूक गया।

सुबह होते ही भक्तों की नींद संत आगमन के उत्साह के साथ खुली, और चल दिये अपने मार्गदर्शक को लाने। सुबह-सुबह ही हजारों लोगों की भीड़ शहर के बाहर जमा हो गई। जिनके पास वाहन थे वो वाहनों से और जो पैदल चल सकते थे वो पैदल पहुँच रहे थे गुरू की अगवानी को। और जो पैदल भी नही चल सकते थे उनकी निगाहें उस काली रोड को दूर तक निहार रही थीं, जहाँ से मुनिश्री का आगमन होना था।

मुनिश्री देखते ही देखते उस मार्ग से नयन पथगामी बन गये। संघ को देखते ही जो विशाल जनसमुदाय अगवानी हेतु खड़ा था जोरदार जयकारों की ध्वनियाँ गूँजने लगी। यह प्रथम अवसर था जब आचार्यश्री विरागसागर जी महाराज के किसी शिष्य का वर्षायोग अथवा सानिध्य अशोकनगर को मिल रहा था। उस युवा साधक के मुख पर खेलती निश्छल मुस्कान और शरीर से टपकती त्याग की अद्भुत आभा को हर कोई अपने नयनों के कटोरों में समेटने में लगा था। जैसे-जैसे मुनिश्री निकट आते जा रहे थे, वैसे-वैसे लोगों का उत्साह वृद्धि को प्राप्त हो रहा था। कई कलशों का जल पाद प्रक्षाल के लिये, कई थाली के दीपक उस मुखमण्डल की आरती उतारने के लिये और कई तोरणद्वार मुनिश्री के नगर प्रवेश की वाट जोह रहे थे।

नगर की वृद्ध महिलायें पूर्व से ही प्रवचन पाण्डाल में अपनी जगह निश्चित कर बैठ चुकी थी। और बार-बार पीछे मुड़कर देखतीं कि कहीं गुरूवर आ न जायें। विशाल शोभायात्रा के मध्य तीन दिगम्बर साधुओं का दर्शन करने को हर निगाह व्याकुलित सी हुई जा रही थी।

मुनिसंघ कों भारी उत्साह के साथ स्थानीय श्री चन्द्रप्रभु जिनालय लाया गया, जहाँ मुनिराजों का वर्षायोग होना तय हुआ था। समाज के अध्यक्ष श्री रमेश जी चौधरी व्यवस्थाओं में व्यस्त नजर आ रहे थे क्योंकि अब उनकी जिम्मेदारियाँ पहले से कुछ ज्यादा बड़ गयी थी।

अशोक नगर वासियों के दोनों हाथों में लडडु :-

इस वर्षायोग के साथ एक और सौगात अशोकनगर की झोली में आ पड़ी, जहाँ एक ओर अशोकनगर धर्म से समृद्ध होने जा रहा था, वहीं दूसरी ओर प्रशासनिक ढांचा भी अशोकनगर का मजबूत हो गया। कई सालों से प्रशासन अशोकनगर को जिला बनाने की तलाश में था । एक साथ दो दो गिफ्ट अशोकनगर वासियों की झोली में प्राप्त हुई । मुनिश्री का एक ओर नगर आगमन दूसरी ओर अशोकनगर को नवीन जिला प्रशासन की घोषणा, अब

क्या था अब तो अशोकनगर वासियों के दोनों हाथों में लडडु थे एक हाथ में जिनशासन का और दूसरे हाथ में प्रशासन का। मुनिश्री का वर्षायोग नवीन जिले का प्रथम वर्षायोग के रूप में आज भी याद किया जाता है। सभी आवश्यक कार्यक्रमों को आधार बना वर्षायोग की स्थापना श्री दि. जैन मंदिर के बाहर विशाल मण्डप में सम्पन्न हुई। ब्र. त्रिलोक जी ने उस समय मंच संचालन किया।

संतों की समता :-

मुनिश्री विहार करते हुये अशोकनगर पहुँचे थे। मौसम में गर्मी थी, आहारचर्या का समय हुआ, सभी श्रावकों के चेहरों पर हर्ष की लहर थी, क्योंकि संतों को पाकर श्रावकों का हृदय खिलता है। सभी श्रावक स्थानीय सुभाषगंज मैदान में उपस्थित थे, चौके वाले कतारबद्ध तरीके से पडगाहन के लिये और अन्य लोग पड़गाहन देखने के लिये। मंदिर के अंदर से घंटे की ध्वनि सुनाई दी जो इस बात की सूचक थी कि सब सावधान हो जाओ मुनिश्री चर्या के लिये निकल चुके हैं। सारा प्रांगण, हे स्वामी! नमोऽस्तु! नमोऽस्तु! अत्र! अत्र! तिष्ठ! तिष्ठ! आहार जल शुद्ध है, आदि पड़गाहन की ध्वनियों से गूँजने लगा। सभी की निगाहें मुनिश्री पर थी। किनके यहाँ आज पड़गाहन होगा। मुनिश्री ने पूरे प्रांगण का एक चक्कर लगाया, पर विधि नहीं बनी। दूसरा चक्कर लगाया पर फिर भी विधी नहीं मिली, लोगों में हलचल मच गई। आखिर विधि क्यों नहीं मिल रही है। मुनिश्री ने तीसरा चक्कर लगाया, चौथा चक्कर लगाया पर विधि नहीं मिल सकी। सभी के चेहरों पर पसीना झलक रहा था, और मुनिश्री के मुखमण्डल पर मुस्कान अठखेलियाँ कर रही थी। मुस्कुराते हुये मुनिश्री मंदिर में पहुँचे और भगवान के सन्मुख कायोत्सर्ग कर पुनः कक्ष में आकर अपने पाटे पर विराजमान हो गये। सभी चौकेवाले भी मुनिश्री के साथ आकर कक्ष में बैठ गये। सभी के चेहरे उदास थे। पर मुनिवर मंद-मंद मुस्कुरा रहे थे कक्ष में बैठे एक श्रावक ने पूज्यश्री से पूछा महाराज श्री! आज आपका आहार नहीं हो पाया हम सभी लोग दुःखी हैं, लेकिन आप मुस्कुरा रहे हैं। मुनिश्री ने मंद-मंद मुस्कान के साथ उत्तर दिया। भैया यही

तो श्रावक और साधक में अंतर है। कि श्रावक विपरीत/प्रतिकूल परिस्थिति के आने पर खेद खिन्न होता है और साधक प्रतिकूल परिस्थिति के आने पर भी प्रसन्न होता है। यही तो साधक की समता परखी जाती है। कर्मोदय से साधक सहजता से स्वीकार कर लेता हैं और खुशी हो या गम हर हाल में मुस्कुरा लेता है।

उपसर्ग विजेता पर उपसर्ग :-

घटना है भिलाई की मैं कहुँ कि ये श्रमण संस्कृति का वर्तमान में सबसे काला दिन था। तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। वो दिन था १८ अगस्त २००३ का जब इस भारत के प्रभावी आचार्य बुन्देलखण्ड के प्रथमाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज अपने विशाल संघ के साथ त्रिवेणी तीर्थ भिलाई में सेक्टर ६ में वर्षायोग कर रहे थे। १८ अगस्त की रात्रि को असामाजिक तत्वों के द्वारा परमपूज्य आचार्य भगवन् को अपहृत कर लिया गया था। ज्योंही यह समाचार दूर संचार सेवा के माध्यम से अशोकनगर में विराजित मुनि संघ तक पहुँचा, तो शिष्यों का हृदय विलख उठा।

सम्पूर्ण अशोकनगर शोक में डूब गया। मंदिर जी में आचार्य महाराज के उपसर्ग निवारण की भावना से शांति विधान और णमोकार महामंत्र का अखण्ड पाठ शुरू किया गया। बाजार सारा बंद रखा गया और सम्पूर्ण जैन समाज ने इस घ्रणित कार्य के विरोध में मौन जूलूस निकालकर अपराधियों का शीघ्र हिरासत में लिया जाये ऐसी भावना से छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री के नाम एक ज्ञापन भेजा। मुनिसंघ ने उपवास रखा। जहाँ-जहाँ भी आचार्यश्री के शिष्य विराजमान थे। सभी संघ उपवास पर बैठ गये तब तक आहार के लिये नहीं उठेगें, जब तक आचार्यश्री का उपसर्ग दूर नहीं होगा।

अगले ही दिन समाचार वायु की पीठ पर सवार होकर भारत के हर कोने में फैल गया। कि आचार्य भगवन सुरक्षित हैं और उनका पता लग चुका है। ३६ घंटे तक उपसर्ग से संघर्ष कर परमपूज्य आचार्य भगवन ने उपसर्ग को

भी पराजित कर दिया और इस अवसर पर छत्तीसगढ़ समाज और सम्पूर्ण भारत की जैन समाज ने परमपूज्य आचार्य भगवन को "उपसर्ग विजेता" की पदवी से अलंकृत कर अपना सौभाग्य सराहा।

गुरू कृपा से विश्वतीर्थ बन गये :-

जब मुनिश्री अशोकनगर पहुँचे थे। तभी दो कंपकपाते हाथों ने मुनिश्री के चरण पकड़ लिये और सहसा ही मुख से शब्द निःसृत होने लगे कि भगवन मेरी समाधि करवा देना । मुनिश्री भी शायद उस भव्यजीव की ऐसी ही भवितव्यता को जान मुस्कुराकर कहने लगे कि आप चिन्ता मत कीजिये आपकी समाधि बहुत अच्छी तरह होगी। इतना कह कर मुनिश्री अपने कक्ष की और बढ़ गये। तभी किन्ही सज्जन ने बताया कि महाराज! ये बाबा छौगालाल जी है। ब्र. बह्मचारी हैं, और दो प्रतिमाधारी हैं, तथा सारी जिदंगी इनकी अच्छे से मोक्षमार्ग की साधना में व्यतीत हुई है। मुनिश्री ने कहा - जब उम्रभर साधना की है तो अब साधना का फल भी प्राप्त होगा। मुनिश्री के निर्देशानुसार सल्लेखना का क्रम शुरू हो गया। २६ सितम्बर को मुनिश्री ने आचार्यश्री की परोक्ष रूप से अनुमति और आशीर्वाद पाकर बाबा छौगालाल को विधिवत मुनि दीक्षा के संस्कार कर दिये और नवीन नाम रख दिया, विश्वतीर्थसागर जी महाराज। उनके हाथों में नवीन पिच्छि देकर मुनिश्री ने कहा कि पिच्छिका वापिस दे दीजिये। तो कहने लगे नहीं महाराज ये तो जहाज मुझको तारनेवाली है। कुछ समय उपरान्त ही पूज्य श्री के सम्बोधन के साथ पंच नमस्कार महामंत्र का जाप करते हुये मुनिश्री विश्वतीर्थसागरजी की समाधि हो गई। मुनिश्री के पार्थिव शरीर को सुसज्जित विमान में संजोकर नगर में विशाल शोभायात्रा निकाली जिसमें हजारों लोग उपस्थित हुये, और वह यात्रा पहुँची गौशाला, जहाँ उनके शरीर को शास्त्रोक्त विधि से अंतिम संस्कार किया गया। आज भी अशोकनगर में समाधि स्थल बना हुआ है।

अविस्मरणीय हो गया यह वर्षायोग :-

मुनिश्री का आगमन अशोकनगर के लिये वरदान बन गया और यह वर्षायोग २००३ निर्विवाद प्रभावना की पहिचान बन गया। श्री भक्तामर शिविर का आयोजन अपने आप में अनूठा था, लोग यही कहते पाये जाते थे कि इस प्रकार से भक्तामर जी का अध्ययन न तो कभी किया है। और न ही किसी ने कराया है। ८ साल के बच्चों से लेकर ८० साल के बुजुर्गों तक इस शिविर में बैठने की होड़ लगी हुई थी।

समय व्यतीत हुआ आया । पूजन प्रशिक्षण शिविर, जो अशोकनगर वासियों को मुनिश्री के और करीब ले गया। इस शिविर के बाद मंदिरों में युवा पुजारी तो बढ़े ही साथ ही साथ मुनिश्री के भक्तों की भीड़ भी बढ़ गई। अब लोग जब भी मुनिश्री के बारे में किसी से भी बात करते तो मुनिश्री को "महाराज" नहीं "हमारे महाराज" कहकर संबोधित किया करते हैं। मुनिश्री अशोकनगर वासियों के हृदय में वैसे ही समा गये जैसे फूलों में सुगंध बसा करती है।

समय और आगे बढ़ा, पता ही नहीं लगा कब स्थापना हुई थी और कब चातुर्मास समाप्त हो गया। निष्ठापन का दिन था। लोग बस यही कह रहे थे। "कि भैया ऐसो लग रहो है जैसे कल ही स्थापना हुई थी और आज निष्ठापन हो रहो है" चार महीने चार दिन बनकर कब निकल गये पता नहीं चला । चातुर्मास का निष्ठापन तो हो चुका था । लेकिन मुनिश्री लोगों के दिल में कुछ इस प्रकार से प्रतिष्ठापित हो चुके थे कि लोगों को निष्ठापन, निष्ठापन जैसा ही नहीं लग रहा था।

कलशारोहण :-

मुनिश्री कहीं अशोकनगर से विहार न करदें। तो उन्हें रोकने के लिये एक कार्यक्रम तैयार किया गया। जो कई सालों से बिना कलश के शिखर बनी हुई थी उन पर कलशारोहण का।

११ नवम्बर से १४ नवम्बर तक मुनिश्री के सानिध्य में वेदिका के शिखर पर चौधरी परिवार ने कलशारोहण करने का सौभाग्य अर्जित किया।

विनम्र आगमन और पिच्छिका परिवर्तन :-

आचार्य विरागसागर माला के एक मोती मुनि विमर्शसागर जी जहाँ अशोकनगर में वर्षायोग कर रहे थे वही समीपस्थ विख्यात नगरी चंदेरी में उसी माला का दूसरा मोती वर्षायोग कर अशोकनगर आ रहा था। मुनिश्री विमर्शसागर जी के अनुज मुनिश्री विनम्रसागर जी चंदेरी वर्षायोग समाप्त कर अपने बड़े भ्राता के पास चलकर आ रहे थे जब मुनिश्री को पता चला कि विनम्र सागर जी आ रहे है तो स्वयं उठकर चल दिये अपने अनुज को लाने सैकड़ों आँखे इस दृश्य की साक्षी बनने को लालायित थीं, नगर बाहर मुनिश्री पहुँचे देखा कि सामने से विनम्रसागर ससंघ विदेहसागर जी को लिये चले आ रहे हैं। दोनों निर्ग्रंथ ज्यों ही करीब आते जा रहे थे श्रावकों के हृदय में खुशी और आल्हाद उतना ही बड़ता जा रहा था। आगमानुसार मुनि विनम्रसागर जी ने अपने बड़े भ्राता को नमोऽस्तु किया और मुनिश्री ने प्रति नमोऽस्तु के द्वारा जवाब दिया दोनों संघ गले मिले। फिर हाथ से हाथ थामा और मंदिर जी में पधारे। १५ नवम्बर को धूमधाम से पिच्छिका परिवर्तन सम्पन्न हुआ।

जिंदगी नहीं कटती ताकत की दवाओं से :-

मुनिश्री ससंघ शौच क्रिया हेतु, नगर के बाहर जाया करते थे। बीच में रेल्वे स्टेशन का प्लेटफार्म पड़ता था। सुबह सुबह ट्रेनों का आना और मुनि संघ का वहाँ से गुजरना, एक साथ हुआ करता था। उस निर्ग्रंथ मुद्रा को देख हजारों यात्रियों की यात्रा शुभ हो जाया करती थी। सुबह सुबह ही उस प्लेटफार्म पर नगर के वृद्ध व्यक्ति, मोटे व्यक्ति, घूमने आया करते थे। मुनिश्री ने पूछा ये लोग इतनी सुबह यहाँ कैसे। साथ चलने वाले युवकों ने बताया - महाराज श्री आजकल वातावरण बहुत प्रदुषित हो गया है।

इसीलिये डॉ. सुबह सुबह टहलने की सलाह देते हैं। ताकि जीवन में

शांति बनी रहे। उस युवक के शब्दों को सुनकर मुनिश्री का कवि हृदय तुरंत बोला। और प्रफुल्लित हुई एक हास्य मिश्रित एवं जीवन को नई दिशा बोध देने वाली चार पंक्तियां:-

अमन चाहते हो तुम सुबह की हवाओं से।
जिंदगी नही कटती ताकत की दवाओं से।।
पुण्य के बिना जीवन बस दुखों का रेला है।
कल भी तू अकेला था आज भी अकेला है।

और फिर शौच क्रिया से आकर प्रवचन सभा में उस दिन इन्हीं चार पक्तियों पर पूरा प्रवचन हुआ।

शीतकालीन वाचना :-

अशोकनगर वासी मुनिश्री के तप ज्ञान से अत्यंत प्रभावित थे। समाज ने मिलकर शीतकालीन वाचना करने की प्रार्थना की। पुण्ययोग से शीतकालीन वाचना का आशीष मिल गया, और धूमधाम से मंगल कलश स्थापना २५ दिसम्बर को सम्पन्न हो गई।

मुनिश्री विनम्रसागर जी का अशोकनगर आकर स्वास्थ्य प्रतिकूल हो गया। मुनिश्री विमर्शसागर जी ने भी मुनिश्री विनम्रसागर जी के स्वास्थ की प्रतिकूलता को देखकर अशोकनगर में शीतकालीन वाचना की अवधि तो एक मास थी और बढ़ा दी, अभी तक तीन पिच्छी अशोकनगर में विराजमान थीं लेकिन अब संख्या बढ़कर पाँच हो गई थी। ग्रंथराज श्री कार्तिकेयानुप्रेक्षा के ऊपर दोनों विद्वान मुनियों के द्वारा गम्भीर व्याख्या सुन ऐसा लगता था मानों आध्यात्म का अमृत ही बरस रहा हो और श्रोता निमग्न हो स्नान कर रहे हों। सभी पक्ष के लोग चाहे निश्चय की मान्यता वाले हों या फिर व्यवहारी। मुनिश्री की अनेकांत और स्याद्वाद की शैली से ओतप्रोत देशना सबको अपनी ओर आकर्षित करती थी। यही कारण था कि उपदेश शुरू होने के पूर्व ही सभास्थल खचाखच भर जाया करता था।

दीक्षा दिवस महोत्सव :-

अशोकनगर की माटी से अनेक पुष्पों ने जन्म लिया है। जो आज अपनी खुश्बू से वर्तमान के महान् आचार्यों के संघ की शोभा बढ़ा रहे है। इसी अशोकनगर जहाँ २५०० जैन समाज के घर हैं। एक युवक मुनिश्री की सरलता, सहजता, निष्पक्षता और श्रेष्ठचर्या से प्रभावित हो गया। जब मुनिश्री का नगर आगमन हुआ था, तब ही इस युवक के हृदय में मुनिश्री की वीतरागता वैराग्य का बीजारोपण कर चुकी थी जो अंकुरित होने के समय का इंतजार कर रहा था। तभी एक आयोजन निमित्त बनकर उस उपादान में कार्य की निष्पत्ति के लिये उपस्थित हो गया। दिन आया १४ दिसम्बर का, जो मुनिश्री विमर्शसागर जी महाराज का ५ वां मुनिदीक्षा दिवस था। मुनिश्री विनम्रसागर जी के निर्देशन में उस दिन का सारा कार्यक्रम सेट किया गया था। सुबह ८ बजे से प्रवचन सभा में पिच्छिका परिवर्तन का कार्यक्रम मुनिश्री के दीक्षा दिवस पर आयोजित था । सुबह ७.४८ पर कक्ष के अंदर मुनिश्री विनम्रसागर, मुनिश्री विमर्शसागर से विमर्श कर रहे थे कि पिच्छी किसको दी जाय, क्योंकि लिस्ट काफी लम्बी थी। तभी एक युवक आया उसने अपने नाम की छोटी पर्ची लिखकर मुनिश्री के सन्मुख रख दी, और कहने लगा- महाराज श्री! आपकी पिच्छी मुझे प्राप्त हो ऐसी मेरी प्रवल भावना है। मुनिद्वय मुस्कुराये और मुनिश्री विमर्शसागर जी ने पूछा क्या तुम जानते हो इसके लिये ब्रह्मचर्य व्रत लेना होता है? युवक ने तुरंत उत्तर दिया-हां भगवन मुझे ज्ञात है। इतना कहकर युवक बाहर आ गया। कुछ समय पश्चात् मुनि संघ स्टेज पर पहुँचा। कार्यक्रम शुरू हुआ। मुनि विनम्रसागर जी संचालन का कार्यभार बखूबी निभा रहे थे। और मुनिश्री की पिच्छी प्राप्त करने का सौभाग्य उसी युवक को प्राप्त हुआ। श्री पदमकुमार जी जैन के सुपुत्र राजीव जैन जो अब संघ में आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत की साधना कर गुरू चरणों में समर्पित हैं। अशोकनगर वर्षायोग की यह उपलब्धि सामने आई। मुनिश्री का सहज तेजस्वी व्यक्तित्व ही कुछ ऐसा है कि वो जहाँ भी प्रवास करते हैं। मन की भूमि पर

उगी हुई कषायों की खरपतवार स्वयमेव ही नष्ट हो जाया करती है। इसका उदाहरण अशोकनगर में भी देखने को मिला। जब कोई वर्षो से चले आ रहे विवाद, पूज्य श्री के चरणों में आकर समाधान को प्राप्त हो गये।

मुनिश्री के प्रवास को यादगार बनाने के लिये और मुनिश्री का काव्य रसास्वादन करने के उददे्श्य से एक आध्यात्मिक कवि सम्मेलन का आयोजन भी किया गया। जो अशोकनगर के स्थानीय कवियों के संयोजकत्व में संजोया गया था।

उस कवि सम्मेलन को लोगों ने कैसेट में रिकार्डकर यादगार बना लिया। जो आज भी उन काव्य लहरियों की याद दिलाता रहता है। किसी व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति ने कहा कि ऐसा कोई शब्द बताओ जिससे खुशी हो। उस व्यक्ति का उत्तर था कि "ये वक्त गुजर जायेगा" अर्थात् कोई भी समय हो गुजर जाता है। वही हुआ अशोकनगर निवासियों की झोली का पुण्य कुछ कम हुआ। यकायक एक स्वर सारे नगर की हवा में घुल गया कि मुनिश्री का १४ मार्च को अशोकनगर से विहार होने वाला है। यह स्वर सुनकर लोगों की खुशियां उसी क्षण विहार कर गई। नौ महिनों से धर्मपिपासुओं के चेहरों पर खेलने वाली मुस्कान एक ही क्षण में कहॉ काफुर हो गई पता ही नहीं चला। वह खबर जो अभी तक खबर बनी हुई थी हकीकत बन गई। और हजारों ऑखों में आँसु छोड़कर निर्मोही साधक आगे की विहार कर गये।

भगवान आदिनाथ के चरणों में पूज्य मुनिश्री :-

संघ अशोकनगर से विहार कर चाँदखेड़ी पहुंचा। छोटे कद के बड़े साधक के साथ भगवान आदिनाथ की चरणवंदना के साक्षी जो भी बने उन पलों को लेखनी से कागज पर शब्दाकार नहीं दिया जा सकता।

अशोकनगर से मन में वैराग्य का संबल लिये एक नवयुवक राजीव जैन भी भक्तों की भीड़ में मुनिश्री से कदमताल करता हुआ चल रहा था। संघ मध्यप्रदेश की सीमा लांघकर अब राजस्थान की धरा पर पहुँच चुका था।, चाँदखेड़ी पहुँच कर संघ १२ दिन वहाँ रूका, प्रथम तीर्थेश भगवान महावीर

स्वामी की जन्म जयन्ति का अवसर था। साथ चल रहे युवक राजीव ने श्री चरणों में प्रार्थना की, हे भगवान मेरी यह सांसारिक परिवेप हटाकर मोक्षमार्ग का भेष मुझे प्रदान कीजिये,अर्थात हे गुरूदेव मेरी यह रंगबिरंगी पोशाक अव मुझे रंग हीन लगने लगी है। मुझे धवल बनना है।, इसीलिये श्वेत धवल वस्त्र प्रदान कीजिये। पूज्य श्री मुस्कुराते हुये बोले, ठीक है। जाओ पूजन करके आओ, भगवान श्री आदिनाथ की मंगल आराधना करके वापिस वह मुमुक्षु मुनिश्री के कक्ष में पहुँचा ।

मुनिश्री ने एक बार फिर पूछा कि एक बार और सोच लो बाद में लौटना न पड़ें ? वह श्री चरणों में समर्पित कर बोला,भगवान लौटना तो है मुझे लेकिन घर और संसार की तरफ नहीं अपने स्वभाव की तरफ लौटूँगा। आप मुझे संबल दें,आशीष दें,

मुनिश्री ने मुस्कुराते हुये स्वीकृति के पुष्पों सें उस युवक का अभिषेक कर दिया। वस्त्रधारी श्रावकों से वस्त्र मंगवाये और उस शिविरार्थी को प्रदान कर दियें। वह नवयुवक उन धवल वस्त्रों में गुरू का आशीष पा मानों कृत्यकृत्य सा हो गया और कुछ समय में वह युवक संघ में एक नवीन ब्रह्मचारी भैया के रूप में प्रवेश पा गया। और सदैव के लिये गुरू चरणों की सेवा में समर्पित हो गया।

"जा चाँदखेड़ी म्हाने तो उजारी लागे है" - यह चन्दा और आदि का दरबार चाँदखेड़ी दिल्ली-मुम्बई रेलमार्ग पर कोटा से ११५ किमी. झालावाड़ से ३४ किमी. रूपहली नदी के तट पर स्थित है।

इस मनोहारी क्षेत्र पर भगवान आदिनाथ की मनोहारी पद्मासन में भव्य चमत्कारी प्रतिमा विराजमान है। ऐसा कहते हैं - कि यह प्रतिमा कोटा राज्य के दीवान श्रेष्ठी श्री किशनदास जी के प्रयत्नों से सम्वत् १७४६ में यहाँ प्रतिष्ठित की गई थी।

श्रुति परम्परा से श्रेष्ठी किशनदास जी को एक दिन रात्री को स्वप्न में किसी ने प्रेरणा दी कि शेरगढ़ के वारापाटी के घने वन में स्थित भगवान श्री

आदिनाथ जी की प्रतिमा को बिना पीछे मुड़े ले जाकर उचित स्थान पर विराजमान करो। साधन तो उस समय आधुनिक थे नहीं एक बैलगाडी में भगवान को विराजमान करके अपने गाँव ले जाते हुये रास्ते में दीवान जी द्वारा पीछे मुड़कर देखने पर वह गाड़ी वहीं स्थित हो गई। रूपहली नदी का तट भगवान को भा गया। प्रथमतः सम्वत १७३६ में यह प्रतिमा तलघर में विराजमान की गई, समय गुजरा और १७४६ में आमेर गद्दी के भट्टारक श्री जगतकीर्ति जी महाराज महाराज के निर्देशन में इस प्रतिमा को प्रतिष्ठित किया गया। इस प्रतिमा का निर्माण काल सम्वत् ५१२ बताया जाता है। ऐसी श्रुति है कि यहाँ के जिनालय की रचना रहस्यमयी है वह तिलिस्म और वास्तुकला का अद्वितीय उदाहरण है।

शैक्षणिक नगरी कोटा फिर बूंदी में प्रवेश :-

पूज्य मुनिश्री विमर्शसागर जी अपने साथ पांच पिच्छिओं को लेकर राज. की शैक्षणिक नगरी कोटा पहुँचे एक माह तक छावनी मंदिर में प्रवास के दौरान अनेक आयोजन सम्पन्न किये गये।

बूंदी का एक देवपुरा उपनगर है वहाँ से क्षुल्लक विशुद्धसागर जी के नेतृत्व में एकप्रतिनिधी मण्डल कोटा पधारा। हाथों में श्रीफल लेकर भावों में पंचकल्याणक के लिये स्वीकृति प्राप्त करने की इच्छा लेकर प्रगट हुआ। मुनि संघ की स्वीकृति और बूँदी की तरफ मंगल विहार प्रारंभ हो गया।

विहार में भगवान मुनिसुव्रतनाथ का धाम केशवरायपाटन रास्ते में था। संघ सहित मुनिश्री वहाँ के दर्शन कर गन्तव्य की और निकल गये।

३० मई २००४ को मुनिसंघ देवपुरा पहुँचा और उसी दिन से पंचकल्याणक का आयोजन प्रारंभ हुआ।

पं. सुरेश जी निवाई के प्रतिष्ठाचार्यत्व में एवं मुनिश्री विमर्शसागर जी महाराज के सानिध्य में यह आयोजन सफलता के सोपान चढता हुआ महती धर्मप्रभावना के साथ सम्पन्न हुआ।

बूँदी प्रवेश :-

नगरी का नाम बूँदी है यह हाडौती अंचल की छोटा सी धर्मनगरी है। नगरी का नाम सुनते ही मुँह में मिठास का आभास हो जाता है तो उस नगर के श्रावकों में कितना मीठा श्रावकत्व होगा, ये अनुभव गम्य है। जिनशासन की प्रभावना में सदैव अग्रणी रहने वाले युवाओं का हुजूम पूज्य मुनिसंघ को विहार कराके बूँदी लेकर आया।

उस समय युवाओं का जोश भक्ति के रस में सराबोर हो रहा था। १५ दिन का प्रवास बूँदी के दामन में आया। चातुर्मास का समय निकट था। जगह-जगह के लोग वर्षायोग हमारे नगर में हो ऐसी पवित्र भावनाओं के साथ श्री फल से भरे हाथ लेकर मुनि संघ के चरणों में उपस्थित हो रहे थे। रामगंजमण्डी, केकड़ी निवाई, मालपुरा, टोंक, कोटा, अलोद, बूँदी आदि अनेक स्थानों के श्रावक श्री फल अर्पित कर भावना कर रहे थे।

वर्षायोग 2004 रामगंजमण्डी में :-

रामगंजमण्डी वालों का पुण्य सब पर भारी पडा और पूज्य गुरूदेव श्री विरागसागर जी महाराज ने मुनिश्री विमर्शसागर जी का वर्षायोग रामगंजमण्डी के नाम लिख दिया। स्वीकृति मिलते ही रामगंजमण्डी के श्रावक आवश्यक सामग्री लेकर फौरन बूँदी जा पहुँचे।

बूँदी से १६ जून को विहार कर संघ कोटा होते हुये २६ जून को प्रातः ८ बजे रामगंजमण्डी पँहुचा। जहाँ पूरे भक्ति,शक्ति और समर्पण के साथ नगर वासियों ने श्रमण संघ का अभिवादन स्वागत किया।

भारी हर्षोल्लास के साथ पावन चातुर्मास कलश की स्थापना का आयोजन सम्पन्न हुआ। विविध आयोजनों के साथ धर्मप्रभावना के नये नये सोपान चढता हुआ। यह वर्षायोग कब ऐतिहासिक बन गया। पता ही नहीं चला, और मुनिश्री रामगंजमण्डी वासियों के दिलों की भूमि पर संस्कारों की लहलहाती फसल उगाकर आगे बढ़ गये। पूजन शिविर, भक्तामर शिविर, कल्पद्रुम महामण्डल विधान आदि अनेक आयोजनों नगरी से सराबोर हो गई।

भानपुरा प्रवास :-

भानपुरा में वेदी प्रतिष्ठा का पावन अवसर था, अतः मुनिश्री के कदम भानपुरा की ओर बढ़े। १०-१२ दिन का प्रवास भानपुरा के लिए था। लेकिन भानपुरा वासियों को यह भान भी नहीं था कि १ माह का प्रवास हमारी झोली में आ जायेगा।

मुनिश्री भगवान आदिनाथ की छत्र छाया में एक माह तक भानपुरा में रूके। यहाँ "जाहिद की गजलें" प्रभु भक्ति की गहराइयों से एक-एक शब्द रूपी मोतियों को निकालकर मुनिश्री ने यह गजलों का हार तैयार किया है। - वेदी प्रतिष्ठा का आयोजन पूजन शिविर का भव्य आयोजन और भी अन्य छोटे बड़े आयोजनों के मध्य वह प्रवास कब समाप्त हो गया, कोई समझ नहीं पाया।

तीर्थंकर सम वाणी :-

मुनिश्री संघ सहित भानपुरा से विहार कर रावतभाटा पहुँचे। दिन का प्रवचन था। एक सज्जन जो स्वाध्यायी थे अपनी जेब में १० प्रश्नों की लिस्ट बनाकर लाये थे। सोच रहे थे बीच सभा में ही प्रश्न खड़े करूँगा। लेकिन जब देशना पूज्य श्री के अधरों से खिरी तो ऐसा लगा जैसे भव्यों का स्नान कराते कराते साक्षात जिनेन्द्रवाणी रूपी मेघ उन्हें स्नान करा रहे हों । और देखते-देखते उनके सारे प्रश्न समाधान को प्राप्त हो गये। प्रश्न करने के लिये वह खड़े ही नहीं हो पाये। बैठे बैठे ही समाधान को प्राप्त हो गये।

प्रवचन पूर्ण हुआ । मुनिश्री भक्तों की भीड़ से घिरे हुये कक्ष की ओर निकल गये। पीछे से वह सज्जन पहुँच गये। आँखों से अश्रुओं की अविरल धारा प्रवाहित हो रही थी। बस भक्ति से भरे हृदय से शब्द प्रफुल्लित हो रहे थे। उन्होनें दोनों हाथों से अपने सर की पगड़ी उतारकर श्री चरणों में रख दी। कहने लगे- महाराज श्री! मुझे आज ऐसा लग रहा था मानों साक्षात अरिहंत देशना मुखरित हो रही हो में धन्य हो गया। स्वामिन! मैं धन्य हो गया।मुझे

आज वह मिल गया जिसका वर्षों से इन्तजार था। आज मुझे सच्चा गुरू मिल गया। उनके नाम फूलचन्द था। समय आगे बढ़ा, संघ कुछ दिन रूककर रावतभाटा से भैसरोडगढ़ पहुँच गया। जो सज्जन रावतभाटा में गुरूवर से प्रश्न पूछने आए थे ये उनका ही गांव था छोटा सा गांव छोटी सी समाज और भगवान जिनेन्द्र का प्राचीन जिनालय है।

पधारो म्हारे आंगना :-

जब पूज्य श्री भैंसरोडगंढ ग्राम में पहुँचे तो फूलचन्द जी के यहाँ पहली बार चौका लगा । सभी आश्चर्य में थे, कि ४० साल से जिनके यहां कभी आहार दान नहीं दिया गया आज उनके यहाँ चौका लगा है हर तरफ एक ही चर्चा थी, कि ये तो पूज्य गुरूवर की चर्या और ज्ञान का ही प्रभाव है। उस दिन संयोग से पूज्य श्री का पडगाहन भी वहीं हो गया, अब तो वो सज्जन खुशी से झूमने लगे, लगा जैसे कोई खोई हुई सम्पदा मिल गयी। आहार निरन्तराय हुआ और अब से उस घर के द्वार निर्ग्रंथों के लिए हमेशा के लिए खुल चुके थे । संघ श्रीपुरा बौराव होते हुए सिंगोली पहुँचा। सिंगोली अभी ५-६ किमी दूर था लेकिन छोटे-छोटे बच्चे, महिलायें, गुरू आगमन के लिए उपस्थित होते जा रहे थे। उन बच्चों का उत्साह देखकर ऐसा लगता था, मानो जिनशासन समृद्ध हो रहा हो । भव्य अगवानी के साथ संघ का नगर प्रवेश कराया गया।पूज्य श्री का प्रवचन हुआ। प्रवचन ने सिंगोली निवासियों को इतना प्रभावित किया कि सभी ने निर्णय कर लिया कि पूज्य गुरूदेव का चातुर्मास सिंगोली में ही करायेंगे।

पंचपरमेष्ठी विधान :-

विधान में पूज्य गुरूवर का सानिध्य पाकर सभी के हर्ष का पारावार न था। युवा साथी तो सारे काम छोड़ अब गुरूवर की चर्या में ही सहयोगी बनते थे। अद्वितिय प्रभाव के साथ विधान सम्पन्न हुआ और गुरूवर आगे प्रस्थान कर गये। संघ चेची पहुँचा। जहाँ विजयनगर (राज०) से समाज का प्रतिनिधी मण्डल पूज्य गुरूवर के पास आया और निवेदन किया कि हमारे नगर में नवीन वेदिका पर जिनेन्द्र देव की स्थापना वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव होना है,

आपका ही सानिघ्य प्राप्त हो ऐसी प्रार्थना लेकर आये हैं हमें भरोसा है कि आप हमारे निवेदन को अस्वीकार नहीं करेंगे । गुरूवर तो करूणा के भण्डार हैं ही, आशीर्वाद दे दिया। २६ मई २००५ से २८ मई २००५ तक भव्य वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव की तारीख तय हुई, और गुरूवर ने विहार कर दिया विजयनगर की ओर । बीच में भगवान पार्श्वनाथ के अतिशय क्षेत्र बिजौलियां एवं चंवलेश्वर जी के भव्य दर्शन कर कुछ दिन उसी पहाड़ पर रूककर फिर विहार हुआ। विहार करके संघ पहुँचा शाहपुरा। जहाँ पूज्य गुरूवर को ऐसी भीषण गर्मी के दिनों में जहाँ तापमान ५० डिग्री सेल्सियस को छू रहा था ४ दिन तक लगातार अंतराय हुआ । लेकिन फिर भी मुनिश्री को कभी अपनी दैनिक चर्या में शिथिलता अथवा आवश्यक पालन में प्रमाद करते नहीं देखा वह हमेशा ही अपने कर्तव्य पालन में तत्पर रहते हैं चाहे कैसी भी स्थिति बन जाये । ५ वें दिन निरंतराय आहार हुआ और १२ दिन के प्रवास के उपरान्त मुनिश्री विजय नगर की ओर बढ़ गये।

चन्दा सबके दिल में बसा है :-

पूज्यश्री जब विजय नगर पहुँचे तो प्रथम बार दर्शन करने जिनालय गये। जाकर दर्शन किये, मुनिश्री ने कहा कि छोटे से भगवान कितने सुन्दर हैं चन्दा से चमकते हैं श्रावकों ने एक स्वर में कहा महाराज सा यह छोटा सा चन्दा सबके दिल में बसा है । एक माह के प्रवास के दौरान पूज्य गुरूवर के चातुर्मास के लिए जगह-जगह से लोग पहुँचने लगे। कोटा, सिंगोली, मालपुरा, भीलवाड़ा, विजयनगर, भानपुरा आदि अनेक स्थानों के लोग प्रयासरत थे सौभाग्य मिला छोटे से नगर सिंगोली को । चातुर्मास निश्चित होने के बाद विहार कर मुनिश्री ससंघ भीलवाड़ा पहुँचे। भीलवाड़ा पूरे भारत में वस्त्र नगरी के नाम से जाना जाता है । भीलवाड़ा में ६ दिन तक एक-एक दिन एक-एक कॉलोनी में प्रवचन हुआ। और सारा भीलवाड़ा विमर्शमय हो गया।

३ जुलाई को इस वस्त्र नगरी में प्रवेश हुआ। पूज्यश्री की अगवानी के लिए सारा भीलवाड़ा एक जुट होकर उमड़ पड़ा । सुभाष नगर कॉलोनी में

सामुदायिक भवन में प्रवचन रखा गया था । जव प्रथम प्रवचन लोगों ने सुना तो अगले ही दिन वह स्थान जो आज तक बहुत बड़ा लग रहा था बहुत छोटा लगने लगा । यही क्रम तीन से सात दिन तक चला आठ का प्रवचन आर के कॉलोनी में तरणताल प्रांगण में रखा गया ९ को आमलियो की वाड़ी में १० जुलाई को शास्त्री नगर में और ११ जुलाई को अरिहंत नगर से सिंगोली की ओर मंगल विहार कर दिया ।

40 साल में पहली बार :-

सारे भीलवाड़ा में एक ही चर्चा थी कि ४० साल के इतिहास में ऐसा पहली बार हुआ है कि सारा भीलवाड़ा एकसाथ एक स्वर में वोल रहा है आमलियों की वाड़ी में प्रवचन था। प्रवचन के पूर्व समाज के वयोवृद्धअध्यक्ष श्री बसंती लाल जी चौधरी ने अपने भाव सभा में रखे। उन्होंने कहा महाराज ४० साल के इतिहास में यह प्रथम वार हो रहा है कि भीलवाड़ा की प्रत्येक कॉलोनी में आपको एक साथ चातुर्मास हेतु निवेदन किया है अभी तक हमारे यहाँ सभी कॉलोनी स्वतंत्र चातुर्मास कराती है ऐसा कहते कहते उनकी आंखों से पूज्यश्री के प्रति श्रद्धा के अश्क छ्लक उठे । हे मुनिश्री! मैने पहली बार भीलवाड़ा में ऐसे किसी संत के प्रति समाज में एकता देखी है आप हमारी भावनाओं को अपने आशीष के जल से अभिसंचित करें। और हमें इस वर्ष का चातुर्मास प्रदान करने की अनुकम्पा करें । लेकिन पूज्य गुरूवर ने चातुर्मास का आशीर्वाद सिंगोली के लिए दे दिया था । अतः पूज्यश्री ने उनसे कहा कि आप हमारे गुरू भाई मुनिश्री विनम्रसागर जी का वर्षायोग इस वर्ष करवा लीजिए फिर कभी अवसर मिलेगा तो देखूँगा। मुनिश्री का भीलवाड़ा में ९ दिन का प्रवास और प्रत्येक दिन अलग अलग कॉलोनी में प्रवचन। हर तरफ एक ही चर्चा थी कि संत तो बहुत आये पर संतों के आने पर ऐसी वसंत बहार पहली वार आई है। उधर मुनिश्री विनम्रसागर जी के पास निवेदन किया गया अतः मुनिश्री भीलवाड़ा की ओर बढ़ चले। इधर पूज्य गुरूवर भी भीलवाड़ा से सिंगोली के लिए रवाना हुए । दोनो का रास्ता एक ही था।

नंदनवन में भातृ मिलन :-

मुनिश्री विनम्रसागर जी का चातुर्मास हेतु नगर आगमन और मुनि विमर्शसागर का चातुर्मास हेतु नगर से गमन। वस्त्र नगरी से ४ किमी दूर एक स्थान है नंदनवन। वहाँ दोनों गुरू भाईयों का अदभुत मिलन हुआ। दिन भर साथ रहे फिर अपने - २ गन्तव्य की ओर दोनों संघ विहार कर गये। विमर्शसागर का विहार चल रहा था तभी रास्ते में जोगणियाँ घाटे पर उपाघ्याय आत्मासागर जी से बिना किसी समाचार के अनायास ही मिलना हो गया। आपस में गले लगकर अपने वात्सल्य अंग का परिचय दोनों संतों द्वारा दिया गया, जो स्वतः ही प्रभावना का कारण बना। दोनों ही साधकों ने एक-दूजे की कुशलक्षेम पूछी ओर आगे बढ़ गये।

अभूतपूर्व नगर प्रवेश, सिंगोली-2005 :-

चातुर्मास क्या मिल गया मानों सब कुछ मिल गया।

ये मत पूछो कि इन्हें पाने के लिये क्या खोना पड़ा।

ये पूछो कि इन्हें पाने के बाद क्या नहीं मिला ।।

हर दिल की धड़कन से बस 'जय विमर्श' की ध्वनि गूंजायमान हो रही थी। पूज्यश्री नगर से १० किमी दूर थे तभी से लगातार श्रावकों की टोलियां अपने गुरूवर की अगवानी के लिए पहुँच रहीं थीं। सारा नगर 'विमर्शमय' हो गया था। हर घर के द्वारे पर सजी रंगोली इन्तजार कर रही थी कि कब गुरूवर के चरण स्पर्श कर पायेंगे। कलशों में भरा प्रासुक जल मानो छलक-२ कर कलश से बाहर निकलकर शायद यही देख रहा था कि अभी गुरूवर कितनी दूर और हैं। थाली में सजे हुए दीपक गुरूवर की राह निहार रहे थे कि हमें आरती का सौभाग्य कब प्राप्त होगा। सभी का इन्तजार खत्म हुआ और गुरूवर का ८:३० बजे नगर प्रवेश हो गया। गुरूवर बड़ी भव्यता के साथ, नगर प्रवेश और सारे नगर का भ्रमण करते हुए पार्श्वनाथ भगवान के श्री चरणों में, जिनालय पहुँचे। सिंगोली में यह एक ही जिनालय है। मूल नायक भगवान पार्श्वनाथ की प्रतिमा अतिशयकारी

मानी जाती है । जिनालय एक होने से सारे श्रावक दिन में एक बार तो अवश्य ही मिलते हैं जिससे आपसी व्यवहार, आत्मीयता का व्यवहार बना रहता है मुनिसंघ को दर्शन के उपरान्त वहां ले जाया गया, जहाँ चातुर्मास होना था। अव पूर्व की तरह वहाँ पुरानी धर्मशाला नहीं थी, अपितु वह स्थान एक सुन्दर "मुनि विमर्शसागर सन्त भवन" का रूप ले चुका था जिसे अभी तक सब लोग नोहरा कहते थे अब वो विमर्शसागर सन्त भवन के नाम से जाना जाने लगा। हर्षोल्लास के साथ स्थानीय पण्डित शैलेन्द्र जी शास्त्री, पंडित संजीव जी रावतभाटा, पंडित धरणेन्द्र जी शास्त्री आदि के निर्देशन में चातुर्मास कलश की स्थापना सम्पन्न हुई । चातुर्मास में प्रथम चरण- श्री भक्तामर जी शिक्षण शिविर के साथ ज्ञान गंगा का प्रवाह शुरू हुआ । मुनिश्री द्वारा शुद्धउच्चारण सिखाया गया, तो हर कोई यही कहता कि भक्तामर पढ़ते - २ सारी जिंदगी बीत गयी लेकिन अभी तक हमें भक्तामर पढ़ना ही नही आया । जब इन्ही काव्यों के उपर मुनि विमर्शसागर जी का प्रवचन होता तो निश्चय और व्यवहार की अपेक्षाओं से संतुलित कथन सुनकर लोग कहने लगते, लगता है आचार्य मानतुंग स्वामी खुद भक्तामर का विवेचन कर रहे हैं । समय समय पर विभिन्न आयोजनों के साथ चातुर्मास में एक भव्य आयोजन रखा गया जो चातुर्मास का मुख्य अनुष्ठान होता है।

साधना का चमत्कार :-

जिस स्थान पर पूजन प्रशिक्षण शिविर चल रहा था वह ढ़लान वाली सड़क थी। एक दिन शाम को भगवान जिनेन्द्र की आरती चल रही थी । तभी तेज बारिश के कारण नीचे भी पानी बह रहा था। पानी भर जाने के कारण पांडाल का पाईप टूट गया, और सारा पाण्डाल नीचे आने लगा। लोग घबरा गये, मुनिसंघ भी मंचासीन था। जब मुनिश्री ने यह देखा तो तुरंत नेत्र बन्द करके बैठ गये कुछ ही समय पश्चात सब कुछ ठीक हो गया बारिश भी बन्द हो गयी । सभी लोग मुनिश्री को लेकर कक्ष में पहुँचे और बोले-महाराजश्री! ये आपकी साधना का ही चमत्कार है कि लाईट के तार सारे पाण्डाल में बिछे हुये थे गर एक भी तार टूट जाता तो सारी जमीन में करंट फैल जाता और न जाने क्या होता ।

मुनिश्री ने मुस्कुरा कर कहा - भगवान जिनेन्द्र का समोशरण जहाँ विराजमान हो वहाँ दुर्घटनाऐं नहीं घटती। सब श्रद्धा से नम्रीभूत हो। गुरूवर के प्रति और अधिक आस्था से भर गये । तभी गुरूवर के हृदय से कविता ने जन्म लिया।

(अरहनाथ स्तुति)

नाथ आज जब संकट आया।
तुमने धीरज हमें बंधाया।।

सांझ आज की थी अलबेली,
बनकर आई नाथ ! पहेली।
मैं निर्बल सुलझा न पाया,
अरहनाथ ने बाधा झेली।

लखकर मूरत अरहनाथ की।
स्वामिन ! संकट भी पछताया।।

उत्सव था प्रभु की भक्ति का,
भक्त भक्त की अभिव्यक्ति का ।
कमठ कोई पानी ले आया,
किया प्रदर्शन निज शक्ति का ।।

पाण्डाल में आकर उसने ।
अपना ताण्डव खूब दिखाया।।

अरहनाथ की प्रतिमा प्यारी,
मनभावन है अतिशय कारी।
पाण्डुक शिला पर शोभित होती,
अरहनाथ आतम हितकारी।।

क्षमा मांगता अरहनाथ से ।
गर कर्तव्य निभा न पाया ।।

ऐसी आत्मीयता न देखी :-

सिंगोली नगर छोटा सा है लेकिन अतिथि सम्मान के लिए वहाँ के लोगों का दिल बहुत बड़ा है । कोई भी बाहर से अतिथी आते तो बस स्टेण्ड पर ही उनके हाथो से सामान ले लेना । उन्हे मुनि वसतिका तक पहुँचाना, सुबह से ही अतिथियों को अपने घरों पर ले जाकर जलपान, दोपहर में हाथ जोड़कर विनम्रतापूर्वक भोजन के लिए ले जाना आदि अनेक बातें थी, जो बाहर से आनेवालों को सुकून देती थी । तभी तो भी आता यही कहता सिंगोली जैसी आत्मीयता कहीं नहीं देखी।

हर रोज रविवार है :-

चातुर्मास के दौरान जो भी यात्री आते बहुत खुश होकर जाते थे । तीनों टाईम सुबह की क्लास (प्रवचन) हो, चाहे दोपहर में समयसार का स्वाध्याय या फिर शाम को गुरूभक्ति । हर समय प्रवचन स्थल फुल रहता था, एक दिन शाम ६ बजे अशोकनगर (म.प्र.) से एक परिवार आया और बस से उतरे तो देखा सारा मार्केट बन्द है।

एक अजैन बन्धु की दुकान खुली थी । उससे पूछा-भैया ये बाजार सारा बंद क्यों है क्या आज रविवार है। उसने कहा-भाई साहब ! यहाँ अधिकांश दुकाने जैनियों की हैं और इसनगर में एक "जीवन है पानी की बूंद" वाले महाराज आये हैं विमर्शसागर । जी सो शाम को वहां गुरूभक्ति होती है इसलिये सब वहाँ गये हैं । जव से महाराज आये हैं तब से तो यहाँ हर रोज रविवार लगता है। उन सज्जन ने जाकर देखा तो सारी सभा खचाखच भरी हुई थी। सारे लोग वहाँ उपस्थित थे।

आचार्य पद की घोषणा :-

जब पूज्य मुनिश्री चातुर्मास कर रहे थे तभी गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज ने २००५ में कुन्धुगिरी पर गणधराचार्य श्री कुंथुसागर जी सहित २०० पिच्छी के मध्य आचार्य पद घोषित किया। जब यह खबर सिंगोली के श्रावकों को पता चली तो उनके हर्ष का ठिकाना न रहा। श्रद्धालुभक्त मुनि श्री को आचार्यश्री कहकर पुकारने लगे। तब मुनि श्री ने उनको ऐसा करने से रोक दिया और कहा आचार्य श्री के द्वारा जब तक संस्कारित नहीं होते तब तक मुझे मुनि के ही संबोधन से संबोधित करें। ऐसी निस्पृहता, देख श्रावक अपने आप को धन्य मान रहे थे कि ऐसे संत का चातुर्मास हमें प्राप्त हुआ। चातुर्मास समापन की घड़ी आ गयी और मुनिसंघ का मंगल विहार सिंगोली से रावतभाटा की ओर हुआ।

रावतभाटा में कल्पद्रुम महामण्डल विधान :-

रावतभाटा में श्री कल्पद्रुम महामण्डल विधान का आयोजन श्री बाबूलाल जी सेठिया परिवार के द्वारा कराया गया। जिसमें प्रतिष्ठाचार्य पं. पवनकुमार जी दीवान थे।

जहाँ भी देखता हूँ भगवान आत्मा दिखता है :-

विधान चल रहा था विधान के मध्य में ही मुनिश्री की अमृत देशना का क्रम था, आध्यात्म पिपासु एक टक निगाह से गुरूवर की ओर निहार रहे थे। अमृत देशना का श्रवण कर अपने कर्मों की निर्जरा कर रहे थे। भगवान आत्मा की बात चल रही थी, स्वभाव और पर्याय की चर्चा चल रही थी। तभी अचानक एक सूअर का छोटा सा बच्चा दौड़ लगाता हुआ पाण्डाल में प्रवेश कर गया। अब क्या था सफेद कपड़े वाले तुरन्त डण्डे हाथ में लिये उस नन्हीं सी जान को मारने दौड़े। मुनिश्री ने तुरन्त रोक दिया और कहा-सब अपने स्थान पर बैठ जाओ। जब सभी बैठ गये तब गुरूवर ने कहा-भैया यहाँ भगवान का समोशरण लगा हुआ है। क्या समोशरण पर सिर्फ मनुष्य का हक है ? नहीं चारों गति के जीव समोशरण में बैठते हैं। फिर आप तो अभी सुन

रहे थे कि स्वभाव से प्रत्येक जीव भगवान आत्मा है। तभी एक सज्जन ने कहा महाराजश्री पर पर्याय से ये अशुद्धहै पूज्यश्री मुस्कुराते हुए बोले जरा अपने शरीर के अन्दर झांक कर तो देखो भैया। अगर एक बार भी स्वभाव के प्रति लगन लग गयी न तो सब ओर सब ठोर एक मात्र भगवान आत्मा ही दिखाई देगा। फिर ये पर्यायों का भेद अन्तर को उद्वेलित नहीं कर पायेगा । मैं तो जहां भी देखता हूँ भगवान आत्मा ही दिखता है।

बूँदी में वेदी प्रतिष्ठा :-

रावतभाटा से विहार कर बोराव, सिंगोली, बिजोलिया होता हुआ मुनिसंघ बूँदी पहुँचा। जहाँ रजत गृह कॉलोनी में नवनिर्मित जिनालय में भगवान को स्थापित किया गया। पं. उदय चन्द शास्त्री (सागर) के निर्देशन में सारा आयोजन भव्यता के साथ सम्पन्न हुआ ।

आलोद में सिद्धचक्र विधान, आवां विहार :-

उपरान्त संघ विहार करके अलोद पहुँचा जहां श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान का आयोजन समाज द्वारा पूज्यश्री के सानिध्य में वृहद स्तर पर किया था जिसका प्रतिष्ठाचार्यत्व पं० पवन कुमार दीवान (मुरैना) ने किया था, अलोद से संघ विहार कर धोबड़ा ग्राम पहुँचा २३ मार्च को विहार कर २४ मार्च को गोथड़ा में अहार और २५ मार्च को अतिशय क्षेत्र आंवाँ पहुँच गये । सुबह भव्य अगवानी आंवाँ के श्रावकों के द्वारा की गयी । शोभायात्रा के साथ संघ को भगवान शांतिनाथ जिनालय लाया गया । श्वेत पाषाण से निर्मित ६ फिट पदमासन में विराजमान भगवान शांतिनाथ का अतिशय यही था कि उनको देखकर वहां से नजरें हटाने को मन ही नहीं कर रहा था । प्रभु की मूरत ने पूज्य गुरूवर को रोक लिया । गुरूवर ने कहा अब तो कुछ दिन यहीं विश्राम करेंगे । ४ दिन का सौभाग्य आवाँ वासियों को मिला । २६ मार्च को आवाँ से विहार हुआ और दूनी, वनस्थली, पोल्याड़ा होते हुए मुनिश्री ससंघ एक अप्रेल को देवली पहुंचे ।

देवली में प्रवेश :-

मुनिश्री के बारे में देवली वालों ने सुन तो पहले से रखा था। परन्तु आज साक्षात पाकर मन अत्यन्त प्रसन्न था । बड़ी ही भव्यता के साथ संतों को अगवानी करके महावीर मन्दिर में लाया गया । दो दिवसीय प्रवास के बाद मुनिश्री कोटा की ओर बढ़ गये।

भव्य संत मिलन :-

बूँदी ने एक बार फिर एक इतिहास रचा । जहाँ अनुज मुनि श्री विनम्रसागर जी से मुनिश्री विमर्शसागर जी का ऐतिहासिक मिलन हुआ । संत मिलन देखने दूर-दूर से हजारों लोग आये । जो हमेशा के लिए बूंदीवासियों के दिलों में एकता और अखण्डता का नया संदेश देकर चला गया। (५ अप्रैल को) (युगल आहार) जब कोटा के लिए चरण बढ़ रहे थे तब हिण्डोली, बड़ा नया गांव, तालेड़ा, चेतपुरा में आदि स्थान भी चरण रज से अपने को पवित्र मान रहे थे।

कोटा में महावीर जयन्ती :-

१० अप्रैल को भव्य अगवानी के साथ मुनिसंघ का नगर कोटा में मंगल प्रवेश हुआ । विशाल शोभायात्रा गीता भवन में जाकर प्रवचन सभा के रूप में परिवर्तित हो गयी । हजारों श्रावकों ने उस समय मुनिसंघ की ऐतिहासिक अगवानी की। महावीर जयन्ति का जुलूस ११ अप्रैल को मुनिसंघ के सानिध्य में रामपुरा मंदिर से शुरू हुआ। शोभायात्रा इतनी विशाल थी कि सिर्फ सिर ही सिर नजर आ रहे थे । जिसमें सुसज्जित हाथी, घोड़े, रथ आदि उस शोभायात्रा में भव्यता ला रहे थे। मुनि विमर्शसागर के सानिध्य में वह भगवान महावीर की भव्य शोभायात्रा करीब ७ किमी की यात्रा करते हुए सीएडी मैदान जाकर विशाल धर्मसभा के रूप में परिवर्तित हुई । धर्मसभा का संचालन गोपाल जी सोनी द्वारा किया गया। मुख्य अतिथी के रूप में राजस्थान सरकार के संसदीय सचिव माननीय भवानी सिंह राजावत, मुख्य अतिथी चित्तौड़गढ़ सांसद श्री चन्द्रप्रकाश कृपलानी, राजस्थान सरकार के कृषि मंत्री

श्री प्रभूलाल सैनी, विधायक ओम बिरला आदि लोग मंच की शोभा बढ़ा रहे थे। सभी मुख्य अतिथियों का संक्षिप्त उदबोधन हुआ। तदोपरान्त पूज्य मुनिश्री विमर्शसागर जी का मंगल प्रवचन हुआ। पूज्य गुरूवर ने अपने प्रवचन की शुरूआत इन पंक्तियों से की -

"हे महावीर भगवान आ जाइये।
रास्ता सत्य का फिर बता जाइये।।"

अवसर देख सकल दिगम्बर समाज के अध्यक्ष श्री राजमल जी पाटौदी के नेतृत्व में पूरे जैन समाज द्वारा श्रीफल भेंटकर एक स्वर में निवेदन किया गया हे पूज्यवर ! हम पिछले तीन वर्षो से आपके वर्षायोग के लिए लगातार प्रयासरत हैं इस वर्ष २००६ का चातुर्मास आप कोटा नगर को देकर हमपर अनुकम्पा करें। मुनिश्री मुस्कुराए और बोले-देखते हैं अभी तो समय है आपकी भक्ति दिखी तो निश्चित रूप से कोटा में २००६ का चातुर्मास हो सकता है प्रयास करते रहिये । कार्यक्रम के उपरान्त आहार चर्या निरन्तराय सम्पन्न हुई । शाम को विहार कर विज्ञाननगर पहुँच गये । सुबह दिनांक १२ अप्रेल २००६ को विज्ञाननगर में प्रवचन सभा रखी गयी। जिसमें नसियाँ जी मंदिर कमेटी द्वारा मुनिसंघ को नसियाँ पधारने हेतु श्रीफल भेंट किया गया । शाम को विहार करके एक भव्य जुलूस के साथ नसियाँ जी पहुँचे। एक सप्ताह प्रवास के पश्चात १६ अप्रैल को मुनिसंघ ने विहार कर दिया रात्रि विश्राम कुन्हाडी में चिल्ड्रन स्कूल में हुआ । संघ को कुन्हाड़ी से पुनः लौटाने के लिए समाज के वरिष्ठ लोगों ने निवेदन किया किन्तु कदम रूके नहीं और मुनिश्री विहार करके २० अप्रैल को मायजा पहुँचे। तीन दिन मायजा में विश्राम कर २३ तारीख को ग्राम अजेता पहुँचे। अजेता और मायजा में मात्र १२-१२ घर की समाज और मायजा में दो एवं अजेता में एक सुन्दर जिनालय भी है । २४ तारीख का आहार खटकड में हुआ । इसी दौरान बूँदी से कुछ श्रीमन्त चातुर्मास हेतु निवेदन करने आये । पूज्य मुनिश्री ने अपना ब्रहम वाक्य दोहराया "देखते हैं" - तभी नेनवाँ से भी श्री राजेन्द्र जी मारवाड़ा के नेतृत्व

में एक प्रतिनिधि मण्डल आया और मुनिश्री को नैनवाँ पधारने हेतु निवेदन किया, मुनिश्री ने कहा उसी और बढ़ रहे हैं । अनुकूलता रही तो देखते हैं। विहार कर संघ लुहारपुरा होते हुए पीपल्या पहुँचा । जहाँ उपाध्याय संयमसागर जी ने गुरूवर की अगवानी की और वात्सल्य पूर्वक मिलन हुआ । दिनभर साथ रहे, शाम को संघ विहारकर २७ अप्रैल को चेतपुरा होते हुए देई पहुँचे । देई में भव्य अगवानी हुई प्रवचन हुआ । देई में १०० घर एवं दो जिनालय हैं । दो दिन का प्रवास कर २९ अप्रैल को संघ नैनवाँ पहुँचा । पं० नरेन्द्र शास्त्री एवं राजेन्द्र मारवाड़ा के नेतृत्व में समाज द्वारा भव्य अगवानी कर मुनिसंघ को अग्रवाल जिनालय में लाया गया । नैनवाँ में ४०० घर जैन बन्धुओं के व ६ जिनालय विद्यमान हैं।

अक्षय तृतीया नैनवाँ में :-

अगले दिन अक्षय तृतीया पर्व हर्षोल्लास से मनाया गया, मुनिश्री का प्रवचन हुआ । प्रवचन सुन खुशी से हर श्रोता की आंख नम थी क्योंकि एक तो प्रभु आदिनाथ की पूजा और इस काल के आदिनाथ स्वरूप मुनिवर का सानिध्य अदभुत संयोग ही था। आहार चर्या पर मुनिश्री निकले, सारे नगर में लोग केसरिया वस्त्रों में नजर आ रहे थे। हर श्रावक मुनिश्री के करपात्र में आहार का एक ग्रास रखने को उत्सुक था । ऐसा नगर में धर्ममय वातावरण पहली बार देखने को मिला था। ऐसे मुनिसंघ को पाकर हर कोई चाहता था कि चातुर्मास हमारे नगर में हो । मुनिश्री ने ग्रीष्मकालीन प्रवास दिया। इसी दौरान १६ जून से १८ जून २००६ तक बड़े जैन मन्दिर में शिखर पर कलशारोहण, ध्वजारोहण, ध्वजदंड, स्थापना का त्रिदिवसीय आयोजन किया गया। कार्यक्रम स्थानीय पं० श्री नरेन्द्र कुमार द्वारा करवाया गया। पूज्य क्षुल्लक पदमसागर जी भी मुनिश्री के दर्शनार्थ पधारे नैनवाँ में अब जगह जगह के लोगों का चातुर्मास हेतु निवेदन शुरू हो गया। कोटा, देई, बूंदी, नैनवाँ, निवाई अदि जैन समाजों द्वारा लगातार प्रयास जारी था। आखिरकार कोटा, बूंदी और देई समाज के प्रतिनिधियों को मुनिश्री ने पत्र लिख दिया । सभी पूज्य आचार्यश्री विरागसागर जी के पास जाने के लिए रवाना हो गये ।

आचार्यश्री के यहाँ से पत्र आते ही मुनिश्री ने २००६ का चातुर्मास कोटा में करने की सम्भावना परक् आशीर्वाद दिया ।२५-२६ जून को दो दिवसीय आयोजन रखा गया था। श्री भक्तामर जी का विधान हुआ । इसी दौरान नैनवाँ समाज द्वारा मुनिश्री को वर्षायोग करने का निवेदन किया। उसी समय चातुर्मास के लिए कोटा, बूँदी, देई आदि अनेक स्थानों के लोग वहाँ उपस्थित थे। २८ तारीख को नैनवाँ से कोटा की ओर मंगल विहार होना था।

नान्यथा मुनि भाषणं :-

विहार की तैयारी हो चुकी थी। मुनिश्री ने बोला- ४ बजे कोटा के लिए विहार करेंगें । तभी लगभग ३ बजे से अचानक तेज हवाओं के साथ बारिश शुरू हो गई । बारिश चलती रही गुरूवर प्रवचन सभागार में आये । लोगों ने कहा अब-विहार कैसे होगा ? नैनवाँ के लोग कहने लगे-महाराज श्री ! आज तो विहार नहीं हो पायेगा। कोटा के एक सज्जन बोले-भैया महाराज श्री ने तो विहार का बोला है, हमें पूर्ण विश्वास है विहार आज ही होगा। थोड़ी देर बाद कोटा के श्रावकों ने मुनिश्री से कहा- पूज्यश्री ! ४ बज गये लगता है अब विहार नहीं हो पायेगा। मुनिश्री ने मुस्कराते हुए घड़ी की ओर देखा और कहा-भैया ! अभीं ४ बजने में ५ मिनट शेष हैं, और अगले ही ५ मिनट में जो हुआ उसे देख कर सब कहने लगे- 'नान्यथा मुनि भाषणं' देखते ही देखते पांच मिनट में सारे बादल छंट गये और बरसात रूक गयी । ठीक ४ बजे मुनिसंघ ने कोटा की ओर मंगल विहार कर दिया। जहाँ नैनवाँवासी दुखी थे वहीं कोटा के श्रावकों में अपार उत्साह दिखाई दे रहा था। ४ जुलाई को ऐतिहासिक नगरी बूँदी में मुनिसंघ का ऐतिहासिक मंगल प्रवेश हुआ। नगर में विभिन्न मार्गों से होता हुआ अपार जनसैलाब नाग्दी बाजार स्थित मांगलिक भवन पहुँचा। जहाँ पूज्य मुनिश्री का मंगल प्रवचन और आहार चर्या सम्पन्न हुई।

आर्यिका सुविश्वासमति माताजी से मिलन :-

परमपूज्य तपस्वी सम्राट आचार्यश्री सन्मतिसागर जी महाराज की परम शिष्या आर्यिका सुविश्वासमति माताजी ने पूज्य मुनिसंघ की भावभीनी

अगवानी की । माताजी ने बूँदी में चातुर्मास करने का निवेदन किया कहा कि आप यहां चातुर्मास करेंगे तो आपसे हम भी कुछ सीख पायेंगे। मुनिश्री ने कहा- माताजी आप यहां सानन्द चातुर्मास कीजिए, मैं कोटा के लिए अपनी स्वीकृति दे चुका हूँ । बूँदी वासियों को कहा- पुण्य से माताजी का सानिध्य मिला है तो सभी पूरा लाभ लेना । शाम को देवपुरा की ओर संघ का विहार हुआ । माताजी ने भावभीनी विदाई दी, शाम को संघ देवपुरा पहुँचा। ६ जुलाई को देवपुरा से विहारकर संघ तालेड़ा होते हुए कुन्हाड़ी (कोटा) पहुँचा।

7 जुलाई मंगल प्रवेश :-

शैक्षणिक नगरी के नाम से पूरे भारत में विख्यात औद्योगिक नगरी कोटा शहर पूज्य मुनिसंघ की अगवानी में पलक पावड़े बिछाये इन्तजार कर रहा था। जैसे शबरी ने कभी राम का इन्तजार किया था । अगवानी में कोटा शहर के प्रथम नागरिक, पूर्व सांसद श्री रघुवीर सिंह जी कौशल एवं ओम जी बिरला ने पहुँचकर मुनिसंघ को पूरे कोटा शहर की ओर से श्रीफल अर्पित कर चातुर्मास करने का निवेदन किया । कोटा शहर के प्रमुख मार्गों पर स्वागत द्वार, और जगह जगह आरती के थाल, पाद-प्रक्षालन के लिए प्रासुक जल से परिपूर्ण कलश, मुनिसंघ की अगवानी कर अपने आप को धन्य मान रहे थे । भव्य अगवानी का जुलूस गीता भवन पहुँचा। प्रवचन के पूर्व कोटा में कार्यरत हर संस्था ने सकल जैन समाज और उपनगरों ने एक साथ श्रीफल भेंट कर चातुर्मास की स्वीकृति प्रदान करने का निवेदन किया । मुनिश्री ने कहा- अभी मैं ९९ प्रतिशत कोटा में चातुर्मास करूंगा लेकिन एक प्रतिशत अपने पास सुरक्षित रखता हूँ । जब स्थापना हो जायेगी वह एक प्रतिशत भी तुम्हें दे दूँगा। इस प्रकार गुरूवर की पूर्ण तो नहीं लेकिन स्वीकृति मिल गयी । कोटावासियों के तो हर्ष का पारावार न था । दो दिन रामपुरा प्रवास के दौरान पीपल के पेड़ के नीचे व्यस्ततम चौराहे पर मुनिश्री ने ऐतिहासिक धर्मसभा को सम्बोधित किया । कोटा के सभी उपनगरों में चातुर्मास हेतु मुनिसंघ से निवेदन किया गया। मुनिश्री ने अतिशय क्षेत्र नसियाँ जी में वर्षायोग करने की स्वीकृति दे दी । नसियाँ समाज की तो मानो किस्मत ही खुल

गयी । ९ जुलाई को पूज्य गुरूवर को बहुत भव्यता के साथ नसियाँ जी लाया गया। सारी नसियाँ जी को दुल्हन की तरह सजाया गया । कहीं स्वागत द्वार बनाये गये तो कहीं आचार्य श्री, मुनिश्री के बड़े चित्राम खडे किये गये । घरों के बाहर संतरंगी रंगोलियाँ सजाई गई। जिसको देखो यही गुनगुना रहा था कि "गुरूवर आज मेंरी कुटिया में आये हैं" जैसे ही मुनि श्री नसियाँ के द्वार पर पहुँचें- आचार्य विद्यासागर छात्रावास में अध्ययनरत छात्रों ने आकर पूज्य मुनिसंघ की भव्य अगवानी की। आरती और पाद-प्रक्षालन करके अपने सौभाग्य को वृद्धिंगत किया। जैसे ही जिनालय में प्रवेश हुआ कि द्वार पर ही पाठशाला की दीदीयाँ, ब्र. मंजू दीदी एवं ब्र. अर्चना दीदी के साथ पूरे पाठशाला के बच्चों ने गुरूवर की तीन परिक्रमा दी और आरती करते हुए जिनालय में प्रवेश कराया । यह क्षण नसियाँ वालों के लिये तो अदभुत ही थे, क्योंकि तीन साल के लगातार भागीरथी प्रयासों के बाद पूज्य मुनिसंघ का मंगल चातुर्मास उन्हें प्राप्त हुआ था।१० जुलाई को मंगल कलश की स्थापना होनी थी जिसकी तैयारियाँ ९ ता. से ही शुरू हो गई थीं। सारे जिनालय को रोशनी से सजाया गया और एक विशाल एवं सुंदर विराग सभाग्रह का निर्माण किया गया।

वर्षायोग-2006 कोटा नसियाँ :-

१० जुलाई को प्रात-८ बजे से स्थापना का कार्यक्रम शुरू हुआ। चातुर्मास स्थापना के साथ ही मुनिश्री ने १ प्रतिशत भी कोटा समाज का सौंप दिया । चातुर्मास मंगल कलश की स्थापना का सौभाग्य श्रेष्ठी प्रेमचंद जी सर्राफ तथा चार अन्य मंगल कलश स्थापित करने का सौभाग्य श्री देवेन्द्र जी पाण्डया, प्रकाश जी बज, महावीर कोठारी और अनिल चाँदवाड़ ने अर्जित किया। चातुर्मास के दौरान वैसे तो हर साधक अपनी चर्या को नियमित कर लेता है लेकिन पूज्य गुरूवर की दिनचर्या, दर्शनीय अनुकरणीय और गृहणीय थी । प्रातः ३:३० से मुनिश्री का स्वयं का स्वाध्याय प्रतिक्रमण सामायिक । ५:३० से देव वंदना, गुरू वंदना उपरान्त प्रवचन, आहार चर्या, सामायिक साधना का क्रम रहता था । ३:०० बजे गोम्मटसार जीवकाण्ड की कक्षा ३:३० से ४:३० परमात्म प्रकाश पर मुनिश्री का प्रवचन होता

था । रात्रि १० बजे तक इतनी व्यस्त दिनचर्या कि मुनिवर से जब भी श्रावक मिलने आते तो हमेशा ज्ञान, ध्यान में ही व्यस्त पाते, और दर्शन कर धन्य हो जाते।

भक्तामर शिविर :-

१६ जुलाई के दिन श्री भक्तामर जी स्तोत्र शिक्षण शिविर का प्रारंभ हुआ। इस शिविर का मंगल कलश स्थापित करने का सोभाग्य डॉ० श्रीमति सन्तोष जैन को प्राप्त हुआ। १७ जुलाई से भक्तामर जी स्तोत्र शिक्षण विधिवत प्रारंभ हो गया। श्रीमुख से भक्तामर के एक-एक श्लोक का अर्थ, भावार्थ का विशेष रूप से शुद्धउच्चारण देखकर सभी की जुबान पर एक ही बात रहती थी कि इस प्रकार से भक्तामर जी का अध्ययन न तो कभी किया न किसी से सुना । मुनिश्री की संयमित और नियमित चर्या के साथ श्रावकों की चर्या भी संयमित और नियमित हो गई । दिनों का पता ही नहीं चला, कब पर्यूषण पर्व का पावन प्रसंग उपस्थित हो गया । पर्यूषण पर्व के पूर्व ६ अगस्त २००६ को रक्षा बन्धन पर्व अपूर्वता को लिये हुए था । श्रमण संस्कृति रक्षापर्व पर पूज्यश्री का मार्मिक प्रवचन सुन सभी की आँखे नम थीं । २७ अगस्त से ६ सितम्बर तक पर्वाधिराज पर्यूषण का आयोजन महती धर्म प्रभावना के साथ सम्पन्न हुआ। आ गया था पर्व क्षमावाणी का अवसर-सुन रखा था सभी ने मुनिवर के सानिध्य में क्षमावाणी पर्व विशेष रूप से मनाया जाता है । कोटा के इतिहास में कोटा वासियों ने ऐसा क्षमावाणी का उत्सव पहली बार देखा था । जब लोग आपस में मिल रहे थे तो उनकी आंखों में आंसू झलक रहे थे और हृदय से सच्ची क्षमा का नीर प्रवाहित हो रहा था। वह १० सितम्बर क्षमावाणी पर्व कोटा के हर दिल में अविस्मरणीय क्षण बन कर रह गया। समय अपनी अविरल गति से गतिमान था। समय के चलते-चलते ३ अक्टूबर का दिन आ गया । इस दिन से कोटा के साथ एक और ऐतिहासिक महोत्सव जुड़ गया था। यह आयोजन कोटा की धरा पर प्रथम बार होने वाला था।

आनंद महोत्सव-श्री मज्जिनेन्द्र पूजन प्रशिक्षण शिविर :-

मुनिश्री के पूजन शिविर की जितनी तारीफ की जाये कम है पूज्य

गुरूवर इस शिविर में अभिषेक से लेकर पूजन विसर्जन तक की सभी क्रियाएं इतनी अच्छी तरह समझाते थे कि उनका शब्दों में वर्णन करना संभव नहीं है। कोटा शिविर में लगभग १५०० शिविरार्थी थे । तथा महिला और पुरूषों का ग्रुप अलग-अलग था। १५०० शिविरार्थियों का एक साथ पूजन करने का दृश्य ऐसा लगता था मानो धर्मगंगा मुनि के मुख से मिश्रित हो रही हो तथा भक्तगण उसी धर्मगंगा में स्नान कर रहे हों । यह आयोजन कोटावासियों के लिए अनुपमेय उपलब्धि थी जो उन्हें कभी प्राप्त नहीं हो सकती थी। जिसमें शिविराधिपति बनने का सौभाग्य पदम बज परिवार को प्राप्त हुआ था । १२ अक्टूबर को सानंद महती धर्म प्रभावना के साथ पूजन शिविर का समापन हुआ। अब तो पूज्य मुनि श्री के प्रति लोगों की भावनाऐ और जुड़ती गयी । नजारा यह था कि जहाँ देखो, सुनों बस मुनि विमर्शसागर जी की ही चर्चा उनके गुणों की गरिमा का कीर्तन । सारा वातावरण विमर्शसागर जी के रंग में सराबोर था। अद्वितीय था कोटा का पूजन प्रशिक्षण शिविर । समय और आगे बडा और आ गया दीपावली का पावन पर्व । मुनि का वर्षावास, धर्म प्रभावना के नए आयाम देकर सानन्द सम्पन्न हुआ । प्रत्येक कोटावासी अपने को धन्य मानते हुए निष्ठापन के कार्यक्रम में सहभागिता प्रकट की । चातुर्मास निष्ठापन होते ही मुनि श्री ने कहा - अब मैं बन्धन मुक्त हो गया हूँ । साधक ४ माह के लिये, अपने अहिंसा महाव्रत के पालन के लिए, अपने आप को दिशाओं की सीमाओं में सीमित कर लेता है । चातुर्मास करना जैनदर्शन की सुव्यवस्थित और पुण्य व्यवस्था है । इन चार माहों में अपनी साधना को वृद्धिंगत करता है लेकिन चातुर्मास निष्ठापन होते ही साधक की साधक की एक स्थान पर ठहरने की मर्यादायें खुल जाती हैं और वह कहीं भी विहार करने के लिए स्वतंत्र हो जाता है । जिसका आगमन हुआ है उसका गमन तय है । यह एक शास्वत सत्य है। प्रवचन का श्रवण करते-करते ही श्रावकों का मन दुख की अनगढ तस्वीर को गढ़ने लगा था। हर मन में अब ये स्पष्ट हो चुका था कि अब मुनि हमें छोड़कर कभी भी जा सकते हैं।इसलिये सभी की आँखें एकटक मुनिवर को निहार रही थी । ये था मुनिवर की सरलता का प्रभाव । मुनिवर इतने सरल कि जो इनके पास एक बार आता है। उसका मन बार बार दौड़ता हुआ मुनिवर

के पास चला आता है। उनकी प्रशान्त मुद्रा, मंद मंद मुस्कान सभी के मन को शांति व आनन्द प्रदान करती है।

पिच्छिका परिवर्तन समारोह :-

चातुर्मास निष्ठापन के ७ दिन बाद ही भव्य संयमोपकरण परिवर्तन की पावन बेला आ गयी। २६ अप्रेल दोपहर दो बजे पिच्छिका परिर्वतन का कार्यक्रम प्रारंभ हुआ। उसके पूर्व पिच्छिका को सजाकर भव्य जुलूस निकाला गया। मुनिश्री विमर्शसागर जी की पिच्छी हेमन्त जी डूँगरवाल को प्राप्त हुई। शेष महाराजों की भी पिच्छियाँ नियम संयम से बंधने वाले श्रावकों को प्राप्त हुई इसके उपरान्त मुनिवर का प्रवचन हुआ परिवर्तन प्रकृति का नियम है, अगर परिवर्तन न हो तो सारे सृष्टि का अभाव हो जायेगा। संयमोपकरण परिवर्तन का कारण है कि एक वर्ष में साधक इस पिच्छी से अपने अहिंसा महाव्रत का पालन करते हैं। इस दौरान इसकी कोमलता नष्ट होने लगती है। जीव रक्षा में बाधा न आये इसलिये दिगम्बर साधक पिच्छिका परिवर्तन करते हैं। प्रवचन के दौरान मुनिवर ने ज्यों ही कहा- पिच्छी परिवर्तन के साथ एक और परिवर्तन है, सुनते ही सबकी आँखों में आंसू छलक पड़े। जहाँ एक ओर खुशी थी कि चातुर्मास बहुत अच्छा हुआ वहीं दूसरी ओर दुख भी था, कि मुनिवर का विहार हो रहा था।

तलवंडी कोटा की ओर विहार :-

प्रवचन के तुरन्त बाद मुनिवर ने नसियाँ से तलवंड़ी की ओर विहार कर दिया। सभी के हृदय रो पड़े। जिसका संकेत हर आंख से बह रही अश्रुधारा दे रही थी। इस प्रकार यह चातुर्मास साधना, प्रभावना का पर्याय बनकर पूरा होकर भी सभी के दिलों में एक अधूरी प्यास छोड़ गया वर्षायोग का तो समापन हो गया लेकिन अभी कोटावासियों की पिपासा शमन होने का नाम ही नहीं ले रही थी फलतः पूज्य मुनिवर का चातुर्मास नसियाँ में सम्पन्न हुआ और निवेदन का सिलसिला अन्य उपनगरों का शुरू हो चुका था। अतः पूज्यश्री उनके भक्तिमय आहवान को ठुकरा न सके और शुरू हुआ जिनशासन की प्रभावना का नया सिलसिला। पूज्य श्री चातुर्मास सम्पन्न कर संयमोपकरण के परिवर्तन के दिन ही कोटा के उपनगर तलवंडी के लिए मंगल विहार कर गये इसी क्रम में

कोटा के सभी उपनगरों में मुनिवर का मंगल विहार हुआ और हर उपनगर में धर्म प्रभावना के लिये नये आयाम प्रस्तुत हुए। समय दो माह का कब गुजर गया ये तो पता ही नहीं चला, मुनिवर छावनी में विराजमान थे तभी रामगंजमण्डी से एक श्रावकों का प्रतिनिधी मण्डल मुनिवर के चरणों में उपस्थित हुआ । भावना थी रामगंजमण्डी में नवनिर्मित श्री नसियाँ जी में विराजमान नवीन जिनविम्बों की पंचकल्याणक प्रतिष्ठा मुनिवर के कर कमलों से सम्पन्न कराने की । श्रीफलों में अपनी भावनाएं पिरोकर मुनिवर के श्री चरणों में समर्पित किये । तभी एक कोटा के उपनगर सरस्वति कॉलोनी से एक प्रतिनिधी मण्डल वर्द्धमान जी सरवाड़िया के नेतृत्व में गुरूचरणों में उपस्थित हुआ। जो भावना रामगंजमण्डी के श्रावकों की थी वही भावनाओं का दौर कोटावासियों के हृदय में चल रहा था। मुनिवर से निवेदन किया कि हमारे उपनगर में भगवान श्री पार्श्वनाथ स्वामी का नवीन जिनालय बनकर तैयार है और भगवान पार्श्वनाथ स्वामी की मनोज्ञ प्रतिमा आपके श्रीमुख से सूरिमंत्र श्रवण करने का इन्तजार कर रही है । अपना आर्शीवाद देकर हमें कृतार्थ करें। मुहूर्त निकाले गये दोनों पंचकल्याणकों की तिथी में मात्र तीन दिनों का अन्तर था। मुनिश्री ने रामगंजमण्डी और कोटा वालों से कहा- मैं एक जगह ही सानिध्य दे पाउँगा। एक जगह किन्हीं अन्य साधु महाराज से निवेदन कर प्रतिष्ठा सम्पन्न करा सकते हो। लेकिन दोनों ही जगह के समाजों का निवेदन था कि आपके ही सानिध्य में प्रतिष्ठा करायेंगे। अंततः मुनिश्री को स्वीकृति देनी ही पड़ी। पहले रामगंजमंडी पश्चात कोटा सरस्वती कॉलोनी का पंचकल्याक सानंद सम्पन्न हुआ । कोटा के उपनगरों का पुनः निवेदन प्रारंभ हो गया । मुनिवर महावीर नगर प्रथम में श्री आदिनाथ दि. जैन मन्दिर में वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव सम्पन्न करा रहे थे तभी अशोकनगर से एक प्रतिनिधि मण्डल अध्यक्ष रमेश चौधरी के नेतृत्व में मुनिवर के चरणों मे उपस्थित हुआ । श्रीफल भेंटकर अध्यक्ष रमेश चौधरी ने सभा में निवेदन किया कि भगवन आपका पुनः वर्षायोग २००७ अशोकनगर में सम्पन्न हो और आपके ही सानिध्य में हमारे नगर में नवनिर्मित श्री आदिनाथ जिनालय का भव्य पंच कल्याणक महोत्सव सम्पन्न हो। मुनिवर की मंद-मंद मुस्कान को अशोकनगर के श्रावकों ने मुनिवर की स्वीकृति मान ली । इधर कुन्हाड़ी में वेदी शिलान्यास के

पश्चात मुनि श्री विहार किया । अगले ही दिन अशोकनगर से एक टीम पूरी तैयारी के साथ गुरू चरणों में उपस्थित थी। निवेदन किया भगवन अशोकनगर नगर की तरफ मंगल विहार करें। मुनिवर ने विहार तो कर दिया लेकिन यह निश्चित नहीं किया कि वर्षायोग कहाँ होगा । मुनिवर विहार कर बारां पहुँचे । बारां समाज में भी वर्षायोग की भावना इतनी वलवती हुई कि २ दिन में ही सारा पाण्डाल और अन्य सारी व्यवस्थाएँ जुटा ली गयी। लेकिन मुनिवर के बढ़ते कदमों को रोक नहीं पाये और मुनिवर राजमार्ग ७६ से विहारकर शिवपुरी की ओर बढ़े। अशोकनगर की टीम साथ थी। मुनिवर के आगमन का समाचार जैसे ही शिवपुरी वालों को मिला तो एक प्रतिनिधी मण्डल अध्यक्ष राजकुमार जी जैन जड़ी-बूटी वालों के नेतृत्व में गुरूचरणों में उपस्थित हुआ । निवेदन किया २००७ का वर्षायोग और नवीन मानस्तम्भ तथा प्राचीन भगवान शांतिनाथ की प्रतिमा का पंचकाल्याणक महोत्सव आपके ही सानिध्य में हो । मुनिश्री ने कहा-अतिशय क्षेत्र सेसई निकट है भगवान शांतिनाथ के दर्शन करने के बाद ही कोई निर्णय लेंगे । संघ विहार कर सेसई पहुँचा। अशोकनगर से ३०० श्रावकों का दल मुनिसंघ को अपने नगर ले जाने के लिए उपस्थित था, तो शिवपुरी से भी बहुत बड़ा जनसैलाब मुनिवर के कदम शिवपुरी की ओर मोड़ने के लिए मौजूद था। आचार्य गुरूवर विरागसागर जी महाराज से अनुमति लाने के लिए दोनों नगर लोग उत्कंठित थे । मुनिश्री ने पत्र शिवपुरीवालों को दिया शिवपुरी के श्रावक खुशी से झूमने लगे और दूसरी और अशोकनगर का जनसमुदाय अश्रुओं के सागर में डूबा जा रहा था। पूज्य मुनिवर को बड़ी उमंग और उल्लास के साथ नगर में प्रवेश की तैयारी शुरू हो गई ।

चर्या से समझौता नहीं :-

चर्या के साथ मुनिश्री ने कभी समझौता नहीं किया। शिवपुरी की ओर विहार हो रहा था । रास्ते में एक गेस्ट हाउस में आहार की व्यवस्था श्रावकों द्वारा की गयी थी । गेस्ट हाउस के कमरों में प्लास्टिक की कॉरपेट चिपकी हुई थी। श्रावकों ने संघस्थ ब्र. भैया राजीव से पूछा- क्या इसमें महाराज आहार ले लेंगे ? राजीव भैया ने कह दिया- हाँ ले लेंगे। जब शुद्धि के पश्चात मुनिवर का पड़गाहन

हुआ और जैसे ही भोजनशाला की ओर कदम बढ़े कि निगाह फर्श पर पड़ते ही कदम कमरे की दहलीज पर ही थम गये । इशारा किया क्या है ये?श्रावकों ने कहा- महाराज श्री वो तो प्लास्टिक का कारपेट है और सेट किया हुआ है । सुनते ही मुनिश्री के कदम वापिस मुड़ गये और कक्ष में आकर मुद्रा खोल पाटे पर आकर बैठ गये। जब गुरू का आहार न हो तो शिष्यों का आहार कैसे हो सकता था। संघस्थ साधुओं ने भी उपवास कर लिया । श्रावकों ने बार बार अनुनय विनय की और कहा मुनिश्री विहार में इतना तो चल सकता था। मुनि श्री ने मुस्कुराते हुए उत्तर दिया जो चर्या भगवान जिनेन्द्र ने बताई है उस चर्या के साथ कोई समझौता नहीं कर सकता। धन्य हैं ऐसे चर्या शिरोमणि गुरू निर्ग्रंथ।

शिवपुरी के साधक शिवपुरी में :-

नगर प्रवेश बहुत ही भव्यता से हुआ। संघ ने श्री छत्री मंदिर जिनालय में भगवान पार्श्वनाथ की मनोज्ञ प्रतिमा का दर्शन किया। और भगवान शांतिनाथ की प्राचीन प्रतिमा जिसका पुनः पंचकल्याणक सम्पन्न होना था, मन को अपूर्व शांति देने वाली थी । चातुर्मास मंगल कलश स्थापना का सौभाग्य श्री राजकुमार जी जड़ीबूटी वालों को प्राप्त हुआ । चातुर्मास में क्रमशः श्री भक्तामर शिविर, पूजन शिविर, दसलक्षण महापर्व, रक्षाबन्धन पर्व, क्षमावाणी पर्व और अनेकानेक आयोजनों के साथ एक विद्वत संगोष्ठी का आयोजन किया गया। जिसमें देश के शीर्षस्थ विद्वानों ने पुरूषार्थ सिद्धयुपाय ग्रंथ पर अपने सारगर्भित आलेखों का वाचन किया संगोष्ठी का संयोजन डॉ. सुरेन्द्र भारती द्वारा किया गया। डॉ सुरेश जी दिल्ली, डॉ जयकुमार मुजफ्फरनगर , डॉ रमेश विजनौर, डॉ अशोक लाडनूँ, डॉ शीतलप्रसाद जयपुर, पं पंकज शास्त्री ललितपुर, डॉ महेन्द्र जी मुरैना, पं. पवन दीवान मुरैना, पं. हरीशचन्द्र मुरैना, डॉ लालचंद राकेश बासौदा, प्राचार्य निहालचंद बीना स्थानिय सुरेश मारौरा, दादा सुमतिचन्द जी कोलारस, डॉ सन्तोष सीकर आदि अनेक देश के मूर्धन्य विद्वानों ने गोष्ठी में अपने आलेखों का वाचन किया।

विद्वानों की विद्वतता पर भारी गुरू समीक्षा :-

आलेख वाचन के बाद गुरूवर द्वारा समीक्षात्मक मंगल प्रवचन सुनकर एक रोज गोष्ठी संयोजक डॉ सुरेन्द्र भारती कहने लगे गुरूवर हम सब विद्वानों के इतने लम्बे-२ खोजपूर्ण आलेखों पर भी आपका समीक्षात्मक उदबोधन प्रभावी होता है। गुरूवर आपकी प्रज्ञा बहुत पैनी है। हम कृतार्थ हैं यहाँ आकर ।

हर आयोजन गुरूवर के निर्देशन में कुछ नयापन लिये हुए था। गुरूवर द्वारा कराए गये सभी आयोजनों में उनकी ओजस्वी वाणी और कंठ का माधुर्य चार चाँद लगाने वाला होता है। वर्षायोग के दौरान पं. सुरेश मारोरा के संयोजन में आचार्य आदिसागर (अंकलीकर) परम्परा पर विशाल विद्वत संगोष्ठी का आयोजन भी एक अनूठा था।

वर्षायोग में बालक वृद्ध, युवा सभी की जुबान पर बस एक ही गीत रहता था । 'जीवन है पानी की बूँद, कब मिट जाये रे'। कब चार माह गुजर गये पता ही नहीं चला और निष्ठापन उपरान्त पंचकल्याणक महोत्सव की तैयारी शुरू हो गयी । इसी बीच अजीत जी पत्ते वालों के परिवार द्वारा सेसई में वृहद स्तर पर श्री कल्पद्रुम महामण्डल विधान का भव्य आयोजन गुरूवर के सनिध्य में किया गया । समय गुजरता गया और समय आ गया पंचकल्याणक महामहोत्सव का । गुरूवर के निर्देशन में जब प्रथम दिन जैन ध्वजारोहण परेड का आयोजन हुआ तो चाहे जैन हो या अजैन सभी की आँखे खुली की खुली रह गयी। २१ सदस्यों की रेजिमेन्ट के अलग अलग ध्वज और गुरुवर के सम्मुख रेजिमेन्टों की परेड का दृश्य हर दिल को छू गया।

हवा ने भी रूख बदल दिया :-

पंचकल्याणक महामहोत्सव का ध्वजारोहण जहाँ होना था उस अयोध्या नगरी की तरफ भव्य जुलूस का शुभारम्भ होने ही वाला था । बैंड के मधुर वाद्य हर दिल में उत्साह और जोश पैदा कर रहे थे । सजे हुए हाथी, बग्घी, रेजिमेन्ट आदि सब तैयार था । तभी गजरथ महोत्सव के कमेटी के लोग मुनि श्री के चरणो मे निवेदन कर कहने लगे मुनिश्री यहाँ सब ठीक है लेकिन पंचकल्याणक स्थल

पर बहुत तेज पश्चिम की ओर हवा चल रही है सारा पाण्डाल उड़ा जा रहा है आप कुछ कीजिए। मुनिश्री कुछ मुस्कुराए और बोले चिन्ता मत करो सब ठीक हो जाएगा। मुनिवर अपने पाटे से उठे और एक श्रावक के साथ श्रीफल लेकर मूलनायक पार्श्वनाथ भगवान के पास पहुँचे। श्रीफल भेंट किया, कायोत्सर्ग किया और कहा अब सब ठीक हो जाएगा। जुलूस को रवाना करो। जुलूस रवाना हुआ, नगर के प्रमुख मार्गों से गुजरता हुआ जब जुलूस गाँधी पार्क मैदान पर पहुँचा तो सभी लोग देखकर आश्चर्य में पड़ गये कि यह क्या हो गया । अभी कुछ समय पूर्व यहाँ इतनी तेज आंधी आ रही थी कि पाण्डाल भी उड़ा जा रहा था और अब मंद-मंद बयार चल रही है। अभी हवा का रुख पश्चिम की ओर था और अब हवा का रुख पूर्व की ओर है । ऐसा दृश्य देखकर सब मुनिवर विमर्शसागर की जय जयकार करने लगे, सच है साधना के आगे प्रकृति को भी अपना रुख बदलना ही पड़ता है । सानन्द ध्वजारोहण सम्पन्न हुआ। जैन रेजिमेंट परेड का वह विहंगम दृश्य शिवपुरी के लिए पहला और अंतिम बन चुका था। इस आयोजन में शिवपुरी क्षेत्र की सांसद श्रीमति यशोधराराजे सिंधिया, ग्वालियर सांसद श्री ज्योतिरादित्य सिंधिया, मध्यप्रदेश स्वास्थ मंत्री श्री अखण्ड प्रताप सिंह आदि अनेक जन प्रतिनिधियों ने गुरुवर के चरणों में आकर आशीष प्राप्त किया। इसी आयोजन में अखिल भारतीय तीर्थ संरक्षणी महासभा का भव्य अधिवेशन मुनिवर के सानिध्य में हुआ, जिसमें निर्मल कुमार सेठी सहित महासभा के सभी पदाधिकारियों ने मुनिश्री से आशीर्वाद और मार्गदर्शन लिया । साथ ही डॉ सुरेन्द्र भारती, डॉ जयकुमार मुज्जफरनगर, डॉ अशोक लाँडनू प्राचार्य नरेन्द्र प्रकाश फिरोजाबाद, डॉ अनूप जी फिरोजाबाद, प्राचार्य निहालचन्द बीना, जिनेश मलैया, ब्र. विश्रान्त भैया, नीरज जी सतना, निर्मल जी सतना आदि अनेक विद्वानों ने गुरूवर का आशीष और आयोजन की सराहना की।

शिवपुरी से मंगल विहार 12.02.2008 :-

नदी और साधु चलते हुए ही शुद्ध रहते हैं। शिवपुरी में अनेकानेक आयोजन सानन्द सम्पन्न होते ही मुनिसंघ के विहार की पदचाप सुनाई देनी

लगी। अविरल अश्रुओं से श्रद्धा-भक्ति का हार्दिक नाद छलक उठा, मुनिसंघ का वात्सल्यमयी सानिध्य जो अब दूर होता दिखाई दे रहा था। आबाल वृद्ध विहार में सुध-बुध खोए चले जा रहे थे। न मुनिसंघ का पता कि हमें कहाँ जाना है न साथ चलने वाले श्रद्धावान श्रावकों को । समिति के प्रतिनिधियों ने योग्य स्थान पर साधु चरणों की वन्दना की । साथ चलने वाले श्रावक गुरूभक्ति आरती का आनन्द लेने मचल उठे। मुनिश्री विमर्शसागर जी ने आशीर्वाद देकर उन्हें पुनः दर्शन की सीख दी।

मुनिसंघ विहार करते हुए परवर पहुँचा, भव्य अगवानी समाज बन्धुओं ने की । भक्तामर विधान समीपस्थ क्षेत्र पर धूमधाम से सम्पन्न हुआ। मुनिसंघ यहाँ से विहार कर अनेक स्थानों से होता हुआ सोनागिर जी पहुँचा। सानन्द तीर्थवन्दना कर डबरा होते हुए ग्वालियर में मंगल प्रवेश हुआ। हरिशंकरपूरम् में समाजबन्धुओं सहित महेश गुरू ने संघ की सेवा अवसर पाया।

मुनिसंघ ने यहाँ से विहार कर चम्पाबाग में प्रवेश किया। दर्शन, वंदन आहारचर्या उपरान्त विनयनगर पहुँचे। समाज के निवेदन पर श्री भक्तामर मण्डल विधान का आयोजन प्रभावनापूर्ण हुआ। यद्यपि विनयनगर से मुरैना के लिए विहार होना था, परन्तु फालका बाजार स्थित जिनालय की समिति अध्यक्ष कुशलचन्द जी, ललित जैन आदि श्रावकों ने वेदी प्रतिष्ठा हेतु निवेदन किया। पं. चन्द्रप्रकाश जी चंदर के प्रतिष्ठाचार्यत्व औ पूज्य श्री विमर्शसागर जी ससंघ के सानिध्य ने त्रिदिवसीय वेदी प्रतिष्ठा का अयोजन सानन्द सम्पन्न हुआ।

फालका बाजार जिनालय से विहार कर मुनिसंघ गोपाचल पर्वत पहुँचा। यहाँ आजाद जैन परिवार की ओर से मुनिश्री द्वारा रचित भक्तामर विधान का भव्य आयोजन हुआ। गोपाचल से बानमौर होते हुये संघ मुरैना पहुँचा।

मुरैना में नन्दीश्वर महामंडल विधान एवं महावीर जयन्ती :-

मुरैना में मुख्यतः जैसवाल, पल्लीवाल और बरैया जैन समाज की बहुलता है। आपस में अच्छा मेल-मिलाप है। मुनिश्री का जैसे ही मुरैना प्रवेश हुआ, सभी ने भव्य अगवानी की। पं. गोपालदास बरैया गुरूकुल के छात्रो ने

उत्साहपूर्वक गुरूसेवा का दायित्व संभाल लिया। मुरैना में तीन जिनालय है। एक बड़ा मन्दिर, दूसरा छोटा मंदिर और तीसरा बगीची मंदिर।

मुरैना प्रवास में समाज का समर्पण एवं बगीची मंदिर के भक्तों निवेदन से नन्दीश्वर महामंडल विधान का भव्य आयोजन ब्र. रवीन्द्र भैया के विधानाचार्यत्व में रख गया। विधान की सम्पन्नता के साथ ही महावीर जयन्ती का कार्यक्रम छोटे मंदिर के नेतृत्व में रखा गया था। मुनिसंघ के सानिध्य में एक विशाल शोभायात्रा महावीर जयन्ती पर रखी गई थी। पंचशील सिद्धान्तों पर प्रवचन सुन सभी अभिभूत हुये।

आगरा की ओर मंगल विहारः-

मुरैना से महावीर जयन्ती को अपरान्ह में मुनिसंघ का आगरा की ओर विहार हुआ। धौलुपर, राजाखेड़ा, शमसाबाद होते हुये मुनिसंघ राहुल विहार आगरा पहुँचा। राजकुमार जैन गुड्डू, जो श्रमण संस्कृति परिषद् के अध्यक्ष हैं अपनी समिति के साथ निवेदन कर पत्तलगली की ओर विहार कराने उपस्थित हुये। मुनिसंघ आगरा की प्रमुख-प्रमुख शैली शालीमार, कमलानगर, ट्रांसयमुना, नसियां, जयपुर हाउस, हरिपर्वत, राजामंडी, छीपीटोला, ईदगाह कॉलोनी आदि स्थानों पर तीन-चार दिन रूकते हुए श्रुतपंचमी पर्व मनाने पुनः छीपीटोला आया।

श्रुतपंचमी पर्व निर्मल सदन छीपीटोला में :-

दिगम्बर जैन समाज एवं निर्मल सेवा समिति के संयुक्त प्रयास एवं निवेदन से श्रुतपंचमी पर्व मुनिश्री के सानिध्य में मनाया गया। बड़े मंदिर से बग्घियों में क्रम से चारों अनुयोगो के शास्त्र जुलूस के माध्यम से ले जाये गये। निर्मल सदन में जिनवाणी पूजा के साथ प्राचार्य नरेन्द्र प्रकाश, डॉ. अनूपचन्द एवं विमला जैन 'विमल' फिरोजाबाद ने पर्व के विषय में विचार रखें। पश्चात् मुनिश्री विमर्शसागर जी महाराज का प्रभावी प्रवचन हुआ। छीपीटोला समाज एवं निर्मल सेवा समिति ने वर्षायोग- २००८ का श्रीफल भेंटकर निवेदन किया। मुनिश्री ने मथुरा पहुँचकर संकेत देंगे ऐसा कहकर मथुरा के लिये विहार किया।

मथुरा जब संघ पहुँचा तो आगरा के श्रावकदो बसों में सवार हो पहुँच गये। मथुरा में मुनिश्री ने भगवान अजितनाथ के पादमूल में २००८ का वर्षायोग आगरा में करने की स्वीकृती प्रदान कर दी। मैनपुरी, धौलपुर, फिरोजाबाद के श्रावक भी चातुर्मास के लिए प्रयासरत थे लेकिन सौभाग्य आगरा की धरती को मिला। मुनिवर मथुरा से विहार कर आगरा आ गये लेकिन स्थापना में अभी समय शेष था सोचा समीप ही मरसलगंज के दर्शन कर लेते हैं। विहार करके मुनिवर एत्मादपुर, टूण्डला होते हुए फिरोजाबाद पहुँचे। छदामी लाल जैन मंदिर में प्राचार्य नरेन्द्र प्रकाश, डॉ अनूप जी, डॉ विमला जी सहित श्रावकों ने पाद प्रक्षालन आरती कर मंगल प्रवेश कराया। गुरूवर के प्रवचन और चर्या को देखकर फिरोजाबाद का समाज कहाँ पीछे रहने वाला था निवेदन किया गुरूवर आप वर्षायोग फिरोजाबाद में ही करें। प्राचार्य नरेन्द्र प्रकाश जी के नेतृत्व में ही सकल समाज ने मुनिसंघ से प्रार्थना की आपका वर्षावास फिरोजाबाद में ही हो, लेकिन चातुर्मास तो आगरा का ही तय हो चुका था अतः मात्र १२ दिनों में फिरोजाबाद के श्रावकों को संतुष्ट होना पड़ा।

आगरा वर्षायोग-2008 :-

फिरोजाबाद में प्रसिद्ध बाहुबली प्रभु का दर्शनकर मुनिसंघ विभवनगर पहुँचा, वहाँ भक्तामर विधान का अयोजन एवं प्रवचनों की खूब चर्चा रही। वहाँ से संघ जैननगर खेड़ा पहुँचा। फिरोजाबाद से विहार कर टूण्डला, एत्मादपुर होते हुये १४ जुलाई को छीपीटोला में भव्य प्रवेश हुआ। श्वेताम्बर राष्ट्रसंत कमलमुनि ने मुनिश्री विमर्शसागरजी की चरणवन्दना कर अगवानी की।

चातुर्मास मंगल कलश स्थापना :-

निर्मल सेवा समिति और सकल दिगम्बर जैन समाज आगरा चातुर्मास मंगल कलश स्थापना के अवसर पर अपने सौभाग्य की सराहना कर रही थी। दूर-दूर से आये भक्तगण जयकार की ध्वनि से अपनी उपस्थिति का अहसास करा रहे थे। निर्मल सदन अन्दर-बाहर श्रद्धालुओं भक्तों से पटा पड़ा था। चातुर्मास स्थापना का ध्वजारोहण प्रदीप जैन पी. एन. सी. के द्वारा

सम्पन्न हो चुका था। आगरा के प्रमुख समाज सेवी एवं उद्योगपति स्वरूपचन्द जी मार्सन्स, भोलानाथ जी, मदनलाल जी बैनाड़ा, मनोज जैन, जितेन्द्र जी, राकेश परदा, सुबोध जी, राजकुमार गुड्डू आदि उपस्थित थे। पं. वीरेन्द्र जी शास्त्री, महेश मांगरोल, विमल अंकल, विशम्बर दयाल, मुकेश लले, रमेश जैन, अनिल जैनबन्धु, प्रवीण वकील, मुकेश नेता, अशोक गोदाम, राजकुमार गोदाम, नरेन्द्र झाँसी, प्रवेश जैन आदि समाज बन्धुओं ने श्रीफल भेंटकर चातुर्मास स्थापना का निवेदन किया। स्थानीय समितियों में भक्तामर मंडल समिति की ओर से सभी समितियों द्वारा एक साथ श्रीफल भेंट किया गया। इस अवसर पर चातुर्मास मंगलकलश स्थापना का सौभाग्य मुन्नालाल मनोजकुमार बॉवी परिवार ने प्राप्त किया। सम्यग्दर्शन, ज्ञान, चारित्र, तप आराधना कलश का क्रमश ऋषभचन्दजी, रूपेशकुमारजी जैन, सुभाषचन्दजी जैन एवं डॉ. सुगनचन्दजी जैन, अशोकनगर वालों ने सौभाग्य पाया।

भक्तामर शिक्षण शिविर :-

२० जुलाई २००८ से भक्ति की अद्भूत बयार छीपीटोला से सम्पूर्ण आगरा में प्रवाहित होने लगी। टोपी सहित सफेद परिधान में पुरूष और केशरिया परिधान में श्राविकाएँ, खचाखच निर्मल सदन, प्रभावना का आदर्श दिखा रहे थे।

विरागभवन का शिलान्यास :-

पूजन प्रशिक्षण शिविर के अवसर पर एक विशाल विराग भवन का शिलान्यास पं० पवन जी दीवान द्वारा कराया गया, यह भवन संत वसतिका के रूप में तैयार होगा, जिसमें छात्रावास , औषधालय और सर्वसुविधा युक्त प्रवचन सभागार का निर्माण प्रस्तावित हैं। मुनिवर के सानिध्य में एवं निर्मल सेवा समिती के तत्वाधान में एक सुन्दर और विशालकाय ''विराग भवन'' का शिलान्यास आगरा के लिये अनुपमेय उपलब्धी है। चातुर्मास कब आरंभ हुआ और कब समापन हो गया पता ही नहीं चला।

मुनिश्री का 11 वाँ दीक्षा दिवस :-

अवसर आ गया १४ दिसम्बर २००८ का जब मुनिवर का दीक्षा दिवस था। सारे नगर को दुल्हन की तरह सजाया गया था। साथ ही था संघ का पिच्छिका परिवर्तन समारोह। आयोजन का स्थल बंगाली कॉलेज का विशाल प्रांगण रखा गया था।

108 के चरणों में 1008 :-

आगरा शहर में तब हलचल मच गयी जब आगरा के मुख्य मार्गों से १००८ मुनिवर के भक्त जो कोटा से आये थे जब गुजरे तो हर सिर पर राजस्थानी पगड़ी आकर्षण का केन्द्र थी। कोटा से आया भक्तों का कारवाँ जिसने देखा यही कहा कि- "रेली नहीं ये रेला है, विमर्शसागर का मेला है"। दीक्षा दिवस का कार्यक्रम दोपहर २ बजे से रखा गया था। जनसैलाब के सम्मुख उस कॉलेज का विशाल प्रांगण भी छोटा लगने लगा। भव्यता के साथ आयोजन सम्पन्न हुआ। रात्री में मुनिवर के जीवन पर आधारित एक भव्य नाटिका का मंचन विमर्श महिला सेवा समिती द्वारा किया गया, जो अपने आप में एक अनूठा था। सुबह चातुर्मास स्थल से विहार हो गया, और संघ विहार कर जैन भवन में आ गया। मुनिश्री की शीतकालीन वाचना श्री रयणसार ग्रन्थ पर हुई।

श्री मज्जिनेन्द्र पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव आगरा :-

इसी दौरान भव्य पंचकल्याणक महोत्सव की तैयारियाँ शुरू हो गयी। पंचकल्याणक प्रतिष्ठा तथा गजरथ महोत्सव का भव्य आयोजन सम्पन्न हुआ। जिसमें आचार्य कुमुदनंदी जी का भी सानिध्य मिला। आचार्य कुमुदनदी जी प्रतिष्ठा से १५ दिन पूर्व ही पधार चुके थे वो आगरा से विहार करने वाले थे लेकिन जब उन्हें पता चला कि 'जीवन है पानी की बूँद' भजन के रचयिता मुनिश्री विमर्शसागर जी के सानिध्य में पंचकल्याणक होने जा रहा है तो मिलने की इच्छा से छीपीटोला पधारे और मुनिवर से जब वात्सल्यमयी मिलन हुआ तो उन्होंने अपना विहार करना स्थगित कर दिया, और पंचकल्याणक तक रुक गये।

मुनि अवस्था में झलकता आचार्यत्व :-

अवसर था पंचकल्याणक में ज्ञान कल्याणक का । आचार्य कुमुदनंदी और पूज्य मुनिश्री विमर्शसागर जी महाराज अपने संघ के साथ मंचासीन थे । प्रतिष्ठाचार्य ब्र. जयकुमार "निशान्त" ने प्रथमतः पूज्य मुनिश्री से गणधर के रूप में देशना देने का निवेदन किया । पूज्य श्री का प्रवचन हुआ । संचालक महोदय ने कहा- गुरुवर ! आज देशना सुनकर ऐसा लग रहा था कि जैसे साक्षात हम समोशरण में बैठकर भगवान अर्हंत की देशना का रसपान कर रहे हैं। तदुपरान्त आचार्य श्री कुमुदनंदी जी महाराज के मंगल प्रवचन हुए ।

आचार्य भी शिष्य बनने को तैयार :-

आचार्य कुमुदनंदी जी पूज्य मुनि श्री विमर्शसागर जी महाराज की चर्या, ज्ञान ओर वात्सल्य से अभिभूत थे, अतः अपना प्रवचन पूज्य मुनिश्री के ऊपर ही किया । उन्होंने कहा- मुनिश्री विमर्शसागर जी महाराज में मुनि अवस्था में ही आचार्यत्व झलकता है । पूर्ण रूप से वह आचार्य पद के योग्य हैं। अगर मुनिश्री मुझे स्वीकार करें तो "मैं अपना आचार्य पद मुनिश्री को सौंप कर उन्हें अपना गुरु बनालूँ" । ऐसा स्नेह ओर वात्सल्य मैने पहले कभी नहीं देखा । धन्य हैं ये संत ।

वात्सल्य शिरोमणि :-

आचार्य कुमुदनंदी जी महाराज ने आगरा पंचकलयाणक के अवसर पर मुनि विमर्शसागर जी के वात्सल्य से प्रभावित होकर उन्हें "वात्सल्य शिरोमणि" की उपाधि से सम्बोधन किया । पंचकल्याणक के उपरान्त कुमदनंदी जी विहार कर गये।

आगरा से विहार :-

आगरा से पूज्य मुनिश्री का ऐतिहासिक मंगल विहार हुआ अतिशय क्षेत्र शौरीपुर बटेश्वर की ओर । भगवान नेमिनाथ की जन्म स्थली पर गुरूवर का दूसरी बार आगमन हुआ था । बस अंतर इतना था कि जब पहले आये थे

तब तन पे कुछ अम्बर थे और अब तन पूर्ण दिगम्बर था। भगवान नेमिनाथ के जन्म कल्याणक से पावन हुई इस वसुधा का दर्शन करके सबका मन अपने आप में पवित्रता का अनुभव कर रहा था।

अब बुलाना तो दिगम्बर बुलाना :-

यही वो क्षेत्र था जहाँ पुज्य मुनि श्री ऐलक अवस्था में अपने गुरुवर के साथ पधारे थे। और यहीं भगवान नेमिनाथ के चरणों में ऐलक विमर्शसागर जी ने भावना भाई थी कि हे भगवान नेमिनाथ ! अब दुबारा अपने दर्शन को बुलाना तो दिगम्बर बुलाना , और गुरुवर की भावना अब पूर्ण हो चुकी थी। इस पावन भूमि का दर्शन कर मुनिवर संघ सहित बढ़ चले एटा की ओर। ज्यों ही समाचार एटावासियों को मिला कि एक युवा साधक संघ सहित एटा की ओर आ रहे हैं तो समाज के कुछ मुख्य लोग प्रदीप जैन गुड्डू के नेतृत्व में गुरुवर के चरणों में उपस्थित हुए।

एटा की धरती आपके पद रज से पावन हो ऐसी भावभीनी मन की पावन भावना सब ने मुनि संघ के चरणों में श्रीफल के रूप में समर्पित की। मुनिश्री का आशीष पाकर सभी ने नगर प्रवेश की तैयारी कर भव्य नगर प्रवेश कराया। उस दिन युवाओं का उत्साह तो देखते ही बनता था। मुनिवर के सानिध्य में नवनिर्मित शिखरों पर कलशारोहण का भव्य आयोजन तथा भगवान महावीर स्वामी की जन्म जयन्ति का ऐतिहासिक आयोजन जिसमें गुरूभक्ति की शमा दिलों में जलाये सात बसों में आगरा से सैंकड़ों श्रद्धालु विमर्श सेवा समिती के तत्वावधान में एटा में उपस्थित हुए थे। विमर्श सेवा समिती आगरा के युवा साथियों द्वारा जब दिव्य घोष का मंगल वादन किया गया तो हर मन थिरकने लगा। ऐसी भव्यता और प्रभावना के साथ महावीर जयन्ति का पर्व एटा की धरती पर प्रथम बार हुआ था। हर मन मुनिवर के प्रवचन उनकी चर्या से इतना प्रभावित था कि अब बस गुरू चरणों का सानिध्य ही पाना चाहता था।

श्री महावीर जी (राज.) की ओर विहार :-

ऐटा समाज ने निवेदन किया- गुरूवर ! आप २००६ का वर्षायोग एटा की ही धरती पर ही करें । "देखते हैं" गुरूवर ने कह दिया, अभी तो भगवान महावीर स्वामी के दर्शनार्थ हम महावीर जी पहुँचेंगे ।आपकी भक्ति श्रद्धा, समर्पण रहा तो निश्चित ही सानिध्य मिल सकता है, पुरूषार्थ कीजिए। सफलता का मिलना अथवा न मिलना आपके भाग्य पर निर्भर है । उसी समय एटावासियों ने तय कर लिया कि मुनि संघ का चातुर्मास एटा में कराके ही रहेंगे। मुनि संघ का एटा से अतिशय क्षेत्र महावीर जी की ओर विहार हुआ। ३०० किमी का लम्बा विहार आगरा होते हुये बयाना पहुँचे । मुनिसंघ की बयाना समाज के साथ मुनि युधिष्ठिरसागर जी ने भव्य अगवानी की, ओर मुनि संघ बयाना रूक गया। बयाना के धर्मात्मा श्रावकों ने मुनिसंघ की खूब सेवा वैयावृत्ति की। मौसम की अनुकूलता होते ही मुनि संघ हिंडौन होते हुए श्री महावीर जी पहुँचा। अतिशयकारी भगवान महावीर स्वामी का दर्शन कर अपूर्व शान्ति मिली। मुनि विमर्शसागर जी के साथ मुनि विश्वपूज्यसागर जी, क्षुल्लक विशुद्धसागरजी, ब्र. पवन भैया, बा. ब्र. रीना दीदी, बा. ब्र. आशा दीदी, बा. ब्र. रेणु दीदी, ब्र. मीरा दीदी ने भी तीर्थवन्दना का सौभाग्य पाया।

कोटा नसियां से मुनि भक्त तेज कुमार जी, प्रकाशचन्द जी अपने सदस्यों के साथ चौका लगाने उपस्थित हुए। आचार्य विद्यासागर जी महाराज की शिष्या आर्यिका सुनयमति माताजी ब्र. ममता दीदी के साथ पूर्व से विराजित थीं। कहीं बार साथ ही आहारचर्या का योग बना। आर्यिका सुनयमति माताजी कभी-कभी आहार कर बाहर चुपचाप खड़े होकर मुनिश्री विमर्शसागर जी महाराज का आहार देखती रहती थीं। एक दिन आर्यिका सुनयमति जी पूज्य मुनिश्री के पास धर्मचर्चा कर रही थीं, तभी अचानक बोली- महाराज श्री ! आपकी चर्या तो बुन्देलखण्ड के योग्य ही हैं। आपको यहाँ अधिक समय नहीं रहना चाहिए। पूज्य मुनिश्री ने मन्द मुस्कान बिखेर दी और मन ही मन सोचने लगे, भगवान महावीर स्वामी के दर्शन की अभिलाषा

बचपन से थीं, लेकिन प्रथम बार मैं भगवान महावीर के दिगम्बर भेष में ही भगवान महावीर के दर्शन करने आया हूँ। ब्र. ममता दीदी जब भी आहार देनी आती थीं अक्सर कहां, करती थीं, कि महाराज श्री आपको आहार देते समय ऐसा लगता है कि साक्षात् भगवान महावीर स्वामी को आहार दे रही हूँ। दस-बारह दिन दोनों संघों में खूब वात्सल्यपूर्ण व्यवहार बना रहा।

शान्ति-वीर नगर वंदनार्थ जाते समय विमलसागर जी मुनिराज स भी सौहार्दपूर्ण मिलन प्रतिदिन होता रहता था।

एटा समाज को मिला मंगलाशीष :-

महावीर जी पहुँचते ही भक्तगणों का आना शुरू हो गया। रावतभाटा, एटा, अजमेर, कोटा आदि स्थानों से चातुर्मास हेतु निवेदन किया गया। सौभाग्यशाली एटा वालों को मंगल आशीर्वाद के रूप में ९९ प्रतिशत मिला। एटा से मुनिसंघ को चातुर्मास हेतु विहार कराने युवाओं का दन आ चुका था। ग्रीष्मकाल होने के कारण विहार प्रातः होता था। भरतपुर, बयाना, मथुरा, हाथरस होते हुए मुनिसंघ ने २५ दिनों तक विहार करते हुए एटा में प्रवेश किया।

मंगल प्रवेश एटा में :-

नगर प्रवेश की भव्य तैयारियाँ शुरू हो गयीं। सारे नगर को ऐसे सजा दिया गया जैसे वनवास से राम के लौटने पर अयोध्या को सजाया गया था। निश्चित दिन मंगलवार को एटा में मंगल प्रवेश हुआ। मंगल प्रवेश में ऐसा उत्साह प्रथम बार देखने को मिला था। जब जैन ही नहीं अजैन भी हाथों में आरती की थाली और कलशों में पाद प्रक्षालन का जल लिये तथा दिलों में आस्था और विश्वास की सम्पदा लिये किसी जैन संत की अगवानी में कर-जोड़ के खड़े थे। जिनशासन की जय-जयकार से सारे नगर को गुंजायमान करते हुए भक्तों के साथ गुरूवर पार्श्वनाथ जिनालय में पहुँच गये। जिसे बड़ा मंदिर कहा जाता है। एटा की पुरानी बस्ती आज सजी-धजी नई-नवेली दुल्हन की तरह लग रही थी। जिनालय के द्वार पर सौभाग्य से शोभित महिलाओं के हाथों में मंगल कलश, सुसज्जित दीपकों से भरे थाल

और हृदय की श्रद्धा के रंगों से मांडी गई रंगोलियों के द्वारा मुनिसंघ का मंगल गानों के बीच जिनालय में प्रवेश कराया गया। भगवान पार्श्वनाथ, भगवान मुनिसुव्रत नाथ, शांतिनाथ, बड़े बाबा महावीर स्वामी की विशाल तथा मनोज्ञ प्रतिमाओं का दर्शन सच में जन्म जन्म के दुखों का नाश करने वाला है । फिर सभी की थकान दूर हो गई दर्शनों से इसमें कोई अतिशय वाली बात नहीं है। जिनेन्द्र दर्शन के उपरान्त मुनिसंघ को वर्षायोग के लिए निश्चित की गई वसतिका में ले जाया गया ।

चातुर्मास मंगल कलश स्थापना :-

मुनिश्री विमर्शसागर जी महाराज के ससंघ एटा पहुँचते ही भक्तों का संदेश एटा समाज के अध्यक्ष/मंत्री के पास पहुँचने लगा। आगंतुक भक्तों के आतिथ्य की तैयारियाँ भी शुरू हो गईं। चातुर्मास मंगल कलश की स्थापना में कोटा, सिंगोली, आगरा, अशोकनगर, शिवपुरी, ग्वालियर, फिरोजाबाद, भरतपुर, बयाना, रामगंजमण्डी आदि स्थानों से भक्तों ने उपस्थित होकर अहिंसा के आयोजन वर्षायोग की अनुमोदना की। चातुर्मास मंगल कलश की स्थापना राजीव जैन सुल्ली परिवार ने की। अन्य सम्यग्दर्शन कलश प्रदीप जैन गुड्डू, सम्यग्ज्ञान कलश भोला जैन आगरा, सम्यग्चारित्र कलश एवं सम्यग्तप आराधना कलश को स्थापित करने का सौभाग्य पाया। मंगल कलश की मंगल स्थापना के साथ, पहला आयोजन था श्री भक्तामर जी शिक्षण शिविर का। जब मुनिवर ने अपनी शैली में भक्तामर जी स्तोत्र का अध्ययन कराना शुरू किया तो लोगों को बड़ा आश्चर्य लगता था । उस बात को देखकर कि जहाँ आठ साल का बालक प्रत्येक काव्य का शुद्ध उच्चारण कर रहा है, वहीं पुरानी कैसेट अर्थात ८० साल के बुजुर्ग भी काव्यों के उच्चारण में कम नहीं हैं। मुनिश्री वृद्धों को पुरानी कैसेट कहकर जब पुकारते थे तो वृद्धों को उसमें अजीब सा अपनापन लगता था। और रोज मुनिवर के चरणों में दौड़े दौड़े चले आते थे । मुनिश्री के वात्सल्यमयी व्यक्तित्व में जहाँ बच्चों को स्नेह मिलता है वहीं वृद्धों को सम्मान और युवाओं को जीवन जीने के नए

सूत्र। यहीं कारण था कि एटा के तीनों पन (बचपन,यौवन,वृद्धापन) मुनिवर को "अपने महाराज" कहकर सम्बोधित करने लगे। क्रमानुसार रक्षाबंधन पर्व, दसलक्षण महापर्व और क्षमावाणी का पर्व तो ऐसा था कि जिसे मुनिश्री के सानिध्य में एटा वासियों ने सिर्फ मनाया ही नहीं बल्कि जैन-अजैन सभी ने पवित्र भावना के साथ जिया था।

महावीर सा आभामण्डल :-

क्षमावाणी पर्व का आयोजन स्थानीय घण्टाघर चौराहे पर आयोजित था। मुनिश्री की क्षमावाणी पर्व के मर्म को दिग्दर्शित करती देशना सुनकर न सिर्फ जैनों का बल्कि अजैनों का भी हृदय द्रवीभूत हो उठा। दो भाईयों में ४० साल से आपसी बोलचाल बंद था। जब मुनिवर की देशना दोनों भाईयों ने सुनी तो आंखों से अविरल अश्रुधार प्रवाहित होने लगी। कहने लगे ४० साल व्यतीत हो गये हम दोनों भाईयों को आपस में बात किये अब हम अपने वैर को यही समाप्त करते हैं हे गुरुवर ! आपकी देशना सुनकर आज दिल का मैल धुल गया। छोटे भाई ने बड़े भाई के चरण छू लिये और बड़े भाई ने अपने छोटे भाई को उठाकर सीने से लगा लिया। चारों ओर से तालियों की ध्वनि और मुनिवर के जयकारों से पाण्डाल गूँज उठा। इसी दिन शाम को एक माँ और एक बेटा जिनमें आपस में ३५ साल से आपसी कटुता के कारण बोलचाल बंद थी, गुरुचरणों में आकर माँ को अपना ३५ साल पुराना बेटा मिल गया और बेटे को अपनी माँ। ऐसा ही है गुरूकृपा, टूटे दिलों को जोड़कर उनमें अमृत धार प्रवाहित किया करती है। यह देखकर लोग कहने कि गुरूवर के आभामण्डल में भगवान महावीर की छवि दिखाई देती है। जैसे तीर्थेश महावीर के चरणों मे आकर जन्मजात बैरी सिंह और गाय भी एक घाट पर पर पानी पीने लग जाते थे। वैसे ही गुरूवर के आभामण्डल में आकर दिलों की घृणा, बैर, नफरत और वैमनश्यता धुल जाया करती है। ऐसा अदभुत क्षमावाणी पर्व मनाकर हर एटावासी अपने आप को धन्य मान रहे थे।

ऐतिहासिक पूजन-प्रशिक्षण शिविर :-

समय गुजरा और आ गया पूजन शिविर जिसमें हजारों इन्द्र इन्द्राणियों द्वारा भगवान जिनेन्द्र की मंगल अराधना की शुरूवात हुई थी।

आचार्यश्री विमलसागर जी की 85 वीं जन्म जयन्ति :-

जब भव्य शोभायात्रा निकाली जा रही थी तब शायद मेघों ने भी सोचा होगा कि विमल की जन्म जयन्ति है तो नगर की गलियां भी विमल होना चाहिए, इसलिये इतनी तेज बारिश हुई कि घुटनों तक नगर के मुख्य मार्गों पर पानी भर गया। शोभायात्रा में जितनी पानी की बोछार तेज थी उतनी ही तेज युवाओं में धर्म प्रभावना की भावना। जहां कार्यक्रम का विशाल पाण्डाल लगाया गया था। उस स्थल पर भी पानी भर गया था सभी गुरूवर के पास पहुँचे कि भगवन ! पाण्डाल में तो पानी भर चुका है । अब कार्यक्रम कहाँ होगा। मुनिवर मुस्कुराए और बोले आयोजन वहीं होगा। मुनिवर के मुख से यह शब्द सुने तो युवाओं का जोश दुगुना हो गया। बैंडबाजों के साथ गुरूवर को पाण्डाल में लाये। सिर्फ स्टेज पर पानी नहीं था और शेष पाण्डाल जलमग्न था। अतः सभी ने मुनिवर से निवेदन किया कि आप अपने आसन पर विराजिये और हम सभी आज का आयोजन खड़े - खड़े देखेंगे और सुनेंगे । सारे लोग पानी में खड़े हो गये और आयोजन २ घण्टों तक चला तब तक सभी लोग अपने अपने स्थान पर खड़े रहे अंत में मुनिवर ने प्रवचन में कहा - ये मेरे जीवन की पहली धर्मसभा है जिसमें सभी श्रोता खड़े होकर प्रवचन सुन रहे हैं।

देव भी गुरू चरणों में आते हैं :-

भगवान जिनेन्द्र की महामंगलकारी दिव्य अर्चना का महामहोत्सव श्री मज्जिनेन्द्र पूजन प्रशिक्षण शिविर का आयोजन चल रहा था।शाम को गुरू भक्ति का समय था। मुनिवर ने गुरूभक्ति के बाद जब "कर तू प्रभु का ध्यान" भजन अपने सुमधुर कण्ठ से बोलना शुरू किया कि एक माँ....के शरीर में एक व्यतंर प्रवेश कर गया और नाना प्रकार से उछल उछल कर नृत्य करने लगा। सारे लोग

घबरा गये। मुनिश्री ने कहा डरने की कोई बात नहीं है, क्या तुम लोग ही भगवान की आराधना कर सकते हो। क्या देवगण जिनेन्द्र अर्चना में नहीं आ सकते?अरे भैया ये कोई देव है जो भगवान की मंगल आराधना में हमारे साथ यहाँ भक्ति में सराबोर हैं। सभी लोग आश्चर्य में थे कि जो महिला बिना सहारे के चल भी नहीं पाती है। वो ३-४ फीट उछल उछल कर नृत्य कर रही है। गुरुवर ने संबोधा और सब गरुवर की जय-जयकार करने लगे। समय गुजरता गया और आ गया दीपावली पर्व।

गुरूभक्तों की दीवाली :-

दीपावली के पूर्व चतुर्दशी को संघ का चातुर्मास निष्ठापन का उपवास था। लोगों में उमंग थी कि दीपावली के दिन मुनिवर को आहारदान देकर फिर उत्साह से दीपावली पर्व मनायेंगे लेकिन ऐसा न हो सका । मुनिवर जिनालय से वृत्ति परिसंख्यान तप का आचरण करते हुए सिंह वृत्ति से निकले, तो जगह - जगह लोग हाथों में मंगल द्रव्य लेकर मुनिवर का पडगाहन कर रहे थे। सभी में उत्सुक्ता थी कि आज मुनिवर के श्रीचरणों से किसका चौका पवित्र होगा । लेकिन विधी न मिली और जिनालय में आकर मुनिवर ने मुद्रा विसर्जित कर दी लगातार मुनिवर का दूसरा उपवास हो गया । आज दीवाली का दिन जरूर था लेकिन एटा में किसी भी घर में न दीप जले न मिठाईयाँ बांटी गई । अगले दिन जब गुरूवर का निरंतराय आहार सम्पन्न हो गया तब हर घर में दीप जले और चौराहों पर मिठाईयां बांटी गयी। सभी कह रहे थे कि हमारी दीवाली तो आज ही है जब-जब हमारे गुरूवर मुस्कुराते हैं तब-तब मुझे तो दीवाली की ही अनुभूति होती है। चातुर्मास का निष्ठापन हो चुका था। और तैयारियाँ शुरू हो गयी ठंडी सड़क स्थित श्री नेमिनाथ जिनालय में पंच कल्याणक एवं गजरथ महोत्सव की ।

जितना सुना उससे ज्यादा पाया :-

शीतकालीन वाचना श्री रयणसार जी की चल रही थी। साथ ही आगामी पंचकल्याणक महोत्सव की तैयारी भी। तभी समाचार मिला, आचार्य

गुप्तीनंदी जी महाराज एटा पधार रहे हैं। मुनिश्री ने ससंघ नगर के बाहर जाकर भव्य आगवानी की। आचार्य गुप्तीनंदी जी दो दिन साथ रहे, जब जाने लगे तो विमर्शसागर जी ! आपके वात्सल्य विषय में काफी समय से सुनता आ रहा था, आपसे मिलकर आपके विषय में जो कुछ सुना था उससे ज्यादा पाया है, मन कहता है हम पुनः मिलेंगे...।

यादगार पंचकल्याणक महोत्सव :-

पंच कल्याणक के ध्वजारोहण की तैयारी शुरू हो चुकी थी। रेजिमेन्ट परेड के अभ्यास से सारे नगर में अदभुत उत्साह का माहोल था। नगर को रोशनी से सजाया गया। गजरथ महोत्सव की चर्चा हुई तो लोग आश्चर्य करने लगे - क्या हाथी भी रथ को खींचते हैं ? गजरथ को लेकर सिर्फ जैनों में ही नहीं अजैनों का उत्साह भी देखते ही बनता था। जब पंचकल्याणक महोत्सव शुरू हुआ तो जैन नसियाँ का विशाल प्रांगण भी छोटा प्रतीत होने लगा । जब नगर की गलियों चौराहों और सड़कों पर जैन ध्वजारोहण परेड का भव्य रेजीमेन्ट जुलूस निकला तो हजारों कैमरों ने उस दृश्य को कैद किया। ऐसा एटा के इतिहास में पहली बार हुआ था। एटा वासी और आसपास के लोगों ने वृषभ रथ, अश्व रथ, मानव रथ, तो बहुत देखे थे लेकिन जिस रथ को हाथी खींचते हों ऐसा गजरथ न देखा था। गुरुवर के आर्शीवाद से जब एटा की सड़कों पर भगवान जिनेन्द्र का मंगल गजरथ चला तो जयकारों से सारा नगर गुंजायमान हो रहा था। बड़े ही भव्यता के साथ यह ऐतिहासिक पंचकल्याणक महोत्सव सम्पन्न हुआ और इसके साथ ही भगवान नेमिनाथ के जिनालय में मूलनायक नेमिनाथ के दोनों ओर भगवान पार्श्वनाथ और भगवान मुनिसुव्रतनाथ की उतंग प्रतिमाएं विराजमान हुई। यह जिनालय अतिशय क्षेत्र के रूप में चारों तरफ प्रसिद्धी को प्राप्त हुआ। शनि, राहू और केतु गृहों का निवारण करने लोगों की लम्बी कतारें अब इस जिनालय में लगने लगी थीं । यह खुशी और आनंद का महोत्सव निर्विघ्न सम्पन्न हुआ तभी पूज्य आचार्यश्री विरागसागर जी महाराज के यहाँ से एक पत्र आया। जिसमें आप शीघ्र विहार कर उदयपुर पहुँचें। गुरू आदेश की पालना ही शिष्यों का सबसे बड़ा सौभाग्य है। आचार्यश्री

विरागसागर जी का आदेश पाते ही मुनिश्री ने एटा से उदयपुर की ओर मंगल विहार कर दिया । विहार करते हुए मथुरा चौरासी की वंदना कर भरतपुर, दौसा, महुआ होते हुए संघ जयपुर पहुँच गया। श्री पार्श्वनाथ भवन में १२ दिन का प्रवास रहा।

जयपुर में महावीर जयन्ति :-

मुनि विमर्शसागर की चर्या और वात्सल्य को देखकर जयपुर श्रेष्ठी श्री देवप्रकाश जी खण्डाका कहने लगे - अभी तक ऐसा वात्सल्य या तो आचार्य विमलसागर जी में देखने को मिला था या आचार्य गुरूवर सन्मति सागर जी में और अब ऐसा वात्सल्य गुरूवर विमर्शसागर जी में देखने को मिला है । मुनिश्री की चर्या और वात्सल्य देखकर आचार्य विमलसागर और सन्मतिसागर जी की छवि दिखाई देती है ।

जयपुर में महावीर जयन्ति-२०१० का आयोजन था, आचार्य भरतसागर (गुजरात केशरी) और मुनि विमर्शसागर का भी सानिध्य उस आयोजन में था । भव्यता के साथ जैनशासन की प्रभावना में एक नया अध्याय जोड़ते हुए यह महावीर जयन्ति का आयोजन सम्पन्न हुआ। सायंकाल मुनिश्री जयपुर से उदयपुर के लिए विहार कर गये। रैनवाल में एलाचार्य नवीन सागर, और मालपुरा में मुनि विजयसागर मुनिश्री इन्द्रनंदी (ससंघ) से आत्मीय मिलन करते हुए संघ बिजयनगर पहुँचा। यहाँ भवन का लोकापर्ण करके संघ भीलवाड़ा पहुँचा। भीलवाड़ा में मुनिसंघ का ऐतिहासिक भव्य अगवानी की गयी। सुभाषनगर, आर०के० कॉलोनी, सुपार्श्वमति सेवाश्रम, हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी आदि कॉलोनी में लगभग एक माह का प्रवास कर उदयपुर की ओर मंगल विहार हुआ।

नाग का जगा भाग :-

मुनि श्री उदयपुर प्रवेश के पूर्व खुले स्थान पर शुद्धि के निमित्त एकान्त स्थान की ओर निकल गये, साथ में ब्र.राजीव भैया थे। ५ फुट चौड़ा रास्ता दोनों ओर कांटों की वारी थी, जब वहाँ से निकले तो एक आवाज सुनाई दी।

मुनिश्री ने जैसे ही पलटकर अपनी निगाहें वारी पर डाली तो देखा एक करीब ७-८ फीट लम्बा काला सर्प फुफकार रहा था। मुनिश्री ने साथ में चल रहे ब्र. जी को इशारे से दिखाया और सर्प की ओर देखकर। वह भी एकटक मुनिश्री की प्रशांत मुद्रा को निहार रहा था। मुनि श्री ने अपना हाथ उठाकर जैसे ही उसे आशीर्वाद दिया वह सर्प आराम से उतरकर खेत की ओर चला गया। धन्य हैं ऐसे श्रेष्ठ साधक, जिनके विषधर भी हो जाते हैं आराधक।

उदयपुर (राज.) में प्रवेश :-

१२ जून को उदयपुर पहुंचे और १३ जून को पूज्य आचार्य गुरूवर विरागसागर जी से उदयपुर में भव्य अगवानी के साथ गुरू और शिष्य का भव्य मिलन हुआ। एक माह लगभग उदयपुर में गुरू चरणों के सानिध्य में मुनिश्री का मंगल प्रवास रहा। ४ जुलाई २०१० को पूज्य आचार्य गुरूवर विरागसागर जी महाराज ने राजस्थान की धरा पर प्रथम बार २६ जैनेश्वरी दीक्षाये देकर श्रमण संस्कृति को गौरवान्वित किया।

चातुर्मास 2010 – डूँगरपुर में :-

६ जुलाई को मुनि श्री ने संघ सहित क्षु. विश्वबंधुसागर क्षु. विश्वयोगसागर जी क्षु. अतुल्यसागर जी सहित चार पिच्छि वर्षायोग हेतु डूँगरपुर के लिए संघ से पृथक विहार किया। पूज्य आचार्य गुरूवर विरागसागर जी का वर्षायोग लोहारिया में तय हुआ । इस वर्षायोग में पूज्य आचार्य गुरूवर विरागसागर जी ने अपने प्रिय शिष्य को आचार्य पद संस्कार का मानस बना लिया और कार्यक्रम के लिए बाँसवाड़ा नगर का चयन किया गया। वर्षायोग समाप्त होते ही मूल संघ से गुरू आज्ञा डूँगरपुर मुनिश्री विमर्शसागर जी के पास पहुँची कि आपको लोहारिया की ओर विहार करना है। "गुरू आज्ञा गरीयसी" गुरू आज्ञा सबसे बड़ी होती है अतः मुनिश्री का मंगल विहार लोहारिया की ओर हो गया। कब डूँगरपुर से विहारकर लोहारिया गुरू चरणों में पहुँच गये पता ही नहीं चला । पूज्य आचार्य श्री के

सानिध्य में लोहारिया में ऐतिहासिक श्री कल्पद्रुम महामण्डल विधान एवं भव्य पंचकल्याणक महोत्सव सानन्द सम्पन्न हुआ । आचार्यश्री ने मुनि विमर्शसागर जी तथा मुनि विनम्रसागर जी को बाँसवाड़ा में १२ दिसम्बर को आचार्यपद पर प्रतिष्ठित करने का आयोजन निश्चित कर दिया। मुनि विमर्शसागर जी आचार्य संघ के साथ विहार करते हुए लोहारिया से ७ दिसम्बर को बाँसवाड़ा पहुँचे। १०१ पिच्छीधारियों के साथ पूज्य आचार्यश्री विरागसागर जी महाराज ने नगर बाँसवाड़ा में मंगल प्रवेंश किया । कार्यक्रम स्थल स्थानीय बाहुबली कॉलानी मे रखा गया था। सारे बाँसवाड़ा नगर को आयोजन के लिए पूरे दुल्हन की तरह सजाया गया ।

आचार्य पदारोहण :-

मुनि विमर्शसागर बने आचार्य विमर्शसागर :-

दिन था १२ दिसम्बर का। सुबह से ही बाँसवाड़ा की गलियों में अजब सी हलचल थी। कुछ युवा लड़के कार्यक्रम स्थल पर मंच व्यवस्थाओं को देख रहे थे, तो कुछ युवा साथी जुलूस की तैयारी में व्यस्त थे। महिलामण्डल की महिलाएं अपने विविध वर्ण की ड्रेसों में कोई वन्दनवार से कार्यक्रम स्थल को सजा रही थीं तो कोई गुरूवर की आहार व्यवस्था में व्यस्त थीं । बालिकाएं अपने अपने ग्रुप की वेशभूषा में रंग बिरंगी रंगोलियाँ सजा रही थीं । सुबह ८ बजे श्री श्रेयांसनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर से एक भव्य पिच्छिका जुलूस पूज्य गुरूवर के संघ सहित प्रारंभ हुआ, जो बाहुबली कॉलोनी की परिक्रमा करता हुआ कार्यक्रम स्थल पर ६ बजे पहुँचा। जहाँ देश के कोने-कोने से आए हजारों श्रद्धालुओं से खचाखच भरे विशाल पाण्डाल में आचार्य पद प्रतिष्ठा का श्री कस्तूरचन्द जी बावरिया, रामगंजमण्डी द्वारा ध्वजारोहरण से आयोजन प्रारंभ हुआ । फिर गणाचार्य श्री विरागसागर जी का पाद प्रक्षालन और पूजा के द्वारा आयोजन का शुभारंभ किया गया। ब्र.ऋषभ भैया (नागपुर) के आचार्यत्व में सारा विधि विधान कुशलता पूर्वक सम्पन्न कराया गया, परम पूज्य आचार्य श्री विरागसागर जी महाराज अपने सिंहासन पर मंच के मध्य में

विराजमान थे और उनके एक ओर दोनो आचार्यपद के दीक्षार्थी मुनिश्री विमर्शसागर जी और मुनिश्री विनम्रसागर जी सहित मुनिराजों का विशाल समुदाय विराजमान था दूसरी ओर आचार्य विमलसागर जी की शिष्या, आर्यिका भरतेश्वरमति, नंदीश्वरमति माताजी एवं आचार्य विद्यासागर जी की शिष्या आर्यिका सकलमति, आर्यिका सत्यमति माताजी सहित पूज्य आचार्य संघ की संघस्थ विशाल आर्यिका समूह विराजमान था। बा.ब्र.अप्पन दीदी, रीना दीदी, आशा दीदी, रेणु दीदी, प्रियंका दीदी द्वारा मंगलाष्टक के साथ कार्यक्रम का मंगल शुभारंभ किया गया। उपरान्त मुनिद्वय के धर्म के माता-पिता और गृहस्थ के माता-पिता द्वारा मंगल द्रव्यों से पूरित चौक पर एक धवल वस्त्र विछाया गया जिसपर संघस्थ ब्रह्मचारी भैया बहिनों द्वारा केशर से स्वास्तिक बनाया गया था । इसके बाद मुनिद्वय का प्रवचन हुआ। मुनिश्री विमर्शसागर जी ने गुरू के प्रति लघुता प्रकट करते हुए कहा-मैं आज जहाँ हूँ वो गुरुवर के चरणों की भक्ति का ही प्रभाव है। बालक या शिशु जन्म लेते समय न अपने माता-पिता को देखता है और न अपने आप को, लेकिन मैने अपने आप को जन्म लेते हुए भी देखा है। और अपने जन्मदात्री माता-पिता को भी देखा है मेरा जन्म १९९८ में जब मुनि दीक्षा हुई तब हुआ था, हे गुरुवर ! मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि कभी अपने गुरू की कीर्ति को धूमिल नहीं होने दूँगा, और सदैव अर्हंत के कुल की मर्यादा का पालन करूँगा । आप जो पदभार मुझे सौंपने जा रहे हैं उसका पूरी निष्ठा से निर्वाह करूँगा। पश्चात् आचार्य गुरुवर का प्रवचन हुआ । जिसमें आचार्यश्री ने आचार्य पद का महत्व बतलाया और नवोदित आचार्य पद को प्राप्त होनेवाले मुनिद्वय को प्रतिज्ञा दिलाई । उसके बाद दोनो मुनिराजों के क्रम से आचार्य पद के संस्कार पूज्य गणाचार्य गुरुवर विरागसागर जी के करकमलों से किये गये। जैसे ही संस्कार करके गुरुवर ने माईक से दोनों नवोदित आचार्यों के नाम घोषित किये तो सारा पाण्डाल आचार्यश्री विरागसागर जी, आचार्यश्री विमर्शसागर जी, आचार्यश्री विनम्रसागर जी के जयकारो से गूंज उठा नवोदित आचार्यों को पूज्य गुरूवर ने अपने करकमलों से स्वास्तिक अंकन कर नवीन पिच्छिका

और कमण्डलु भेंट किये । आचार्यश्री विमर्शसागर जी के धर्म के माता-पिता बने श्री सुरेश कुमार जैन श्रीमति रेखा जैन बावरिया, रामगंजमण्डी वालो को, गुरूवर की पुरानी पिच्छिका प्राप्त करने का सौभाग्य श्री विश्वजीत जी कोटिया को मिला । उसके उपरान्त दोनो आचार्यों ने अपने दीक्षा गुरू के पाद कमलों का सर्वोषधि से भरे स्वर्ण कलशों से प्रक्षालन किया। इस अवसर पर मुनि विमर्शसागर जी महाराज ने अपने प्रवचन के बाद आचार्यश्री विरागसागर जी महाराज को धवला पुस्तक १३ में उल्लिखित 'तिपुरीसोगणो तदुवरि गच्छो' के अनुसार चूंकि आचार्य श्री अब तीन से ऊपर आचार्यों के गुरू बन चुके थे, इसलिये उनको ''सूरिगच्छाचार्य'' की उपाधि से विभूषित किया। धवला जी में आ. वीरसेन स्वामी ने लिखा कि तीन आचार्यों के समूह को गण कहते हैं और उसके ऊपर आचार्यों का समूह गच्छ कहलाता है सूरि का अर्थ आचार्य होता है, जो गच्छ के आचार्य है वह है परम पूज्य सूरिगच्छाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज । और इसप्रकार जैनशासन को मिले नए युवाचार्य जो भगवान जिनेन्द्र की कीर्ति

को और धवल व उज्ज्वल बनाएंगे । संत समाज का दर्पण हुआ करते है संतों का हर कदम समाज के लिए दर्पण हुआ करता है जैनदर्शन में पंच महागुरू को स्वीकार किया गया है। अरिहन्त, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय और साधु। जिसमें से तीन परमेष्ठी आचार्य, उपाध्याय और साधु, संत के रूप में धरा पर विचरण करते हैं। इनमें आचार्य का पद सबसे जिम्मेदारी का पद हुआ करता है। आचार्य का काम होता है शिष्यों को शिक्षा देना और दीक्षा देना जो पंचाचारों का पालन स्वयं करते हैं और शिष्यों से कराते हैं उन्हें आचार्य कहा जाता है। जैनाचार्यों की विशाल परंपरा में वर्तमान में आचार्य आदिसागरजी महाराज की पट्ट परंपरा में आचार्य श्री विरागसागरजी महाराज के सुयोग्य शिष्य आचार्य श्री विमर्शसागरजी महाराज जैन जगत् के महान आचार्यों में से एक है।

जतारा का ध्रुव तारा

समय के विभिन्न आयाम

"जीवन है पानी की बूँद" गीत के मूल रचयिता एवं "विमर्श लिपि" के सृजेता
परम पूज्य राष्ट्रयोगी श्रमणाचार्य 108 श्री विमर्शसागर जी महाराज

परिचय के आइने में

(राष्ट्रयोगी श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागरजी महाराज)

लौकिक यात्रा

पूर्व नाम	:	श्री राकेशकुमार जैन
पिता श्री	:	श्री सनतकुमार जैन
माता श्री	:	श्रीमति भगवती जैन
जन्म स्थान	:	जतारा, जिला टीकमगढ़ म.प्र
जन्म तिथी	:	मार्गशीर्ष कृष्णा पंचमी सं.२०३०
जन्म दिनांक	:	१५ नवम्बर, १९७३, गुरूवार
शिक्षा	:	बी.एस.सी (बायलॉजी)
भ्राता	:	१. अग्रज श्री राजेशकुमार जैन २. अनुज श्री चक्रेश जैन
भगिनी	:	१. कमला २. प्रियंका
खेल	:	बैडमिंटन, शतरंज (विशेषता - दोनों खेल जिनसे सीखे उन्हीं के साथ फाइनल खेलते हुए चैंपियन कप विजेता)
सामाजिक सेवा	:	मंत्री-श्री दिगम्बर जैन नवयुवक संघ, जतारा
रुचि	:	अध्ययन, संगीत, पेन्टिंग
सांस्कृतिक रुचि	:	अनेक धार्मिक, सामाजिक नाट्य मंचन
करूणाभाव	:	बचपन में एक गरीब अंधे भिखारी को करूणा से अक्सर पैसे दान देना।

परमार्थ यात्रा

आचार्य श्री विरागसागरजी महाराज के प्रथम बार जतारा नगर में आयोजित पंचकल्याणक प्रतिष्ठा एवं त्रयगजरथ महोत्सव में समाज की ओर से निवेदन के अवसर पर दर्शन हुए । आचार्य श्री की वात्सल्यता ने अत्यन्त प्रभावित किया। सन् १९९५, स्थान - मोरा जी सागर, म.प्र.।

त्याग के संस्कार

आचार्यश्री विरागसागरजी महाराज की जतारा नगर में वैय्यावृत्ति के समय आजीवन आलू प्याज एवं रात्रिभोजन के त्याग से गृह त्याग की भावना।

ब्रह्मचर्य व्रत

आचार्यश्री विरागसागरजी महाराज (ससंघ) का विहार कराते हुए सिद्धक्षेत्र श्री आहारजी में भगवान शान्तिनाथ की चरणछाया में फाल्गुन कृष्णा त्रयोदशी सोमवार संवत् २०५१, २७ फरवरी, १९९५ को आचार्य श्री से दो वर्ष का ब्रह्मचर्य व्रत ग्रहण किया।

सामायिक प्रतिमा

आचार्यश्री विरागसागरजी महाराज से पार्श्वनाथ मोक्ष सप्तमी के अवसर पर सामायिक प्रतिमा के व्रत ग्रहण किये।; स्थान - ललितपुर क्षेत्रपाल जी, दिनाँक ३ अगस्त १९९५, दिन गुरूवार।

ऐलक दीक्षा

फाल्गुन शुक्ला पंचमी, शुक्रवार संवत २०५२, २३ फरवरी १९९६ को देवेन्द्रनगर (पन्ना) में तपकल्याणक के दिन आचार्यश्री विरागसागरजी महाराज से ऐलक दीक्षा ग्रहण की ओर नाम पाया ऐलक विमर्शसागरजी ।

मुनि दीक्षा

पौष कृष्णा ११, संवत २०५५, सोमवार दिनाँक १४ दिसम्बर १९९८ को अतिशय क्षेत्र बरासौ, भिण्ड में आचार्यश्री विरागसागर जी से मुनि दीक्षा ग्रहण की और मुनि विमर्शसागर नाम पाया।

आचार्य पद घोषित

आचार्यश्री विरागसागर जी ने सन् २००५ में कुंथुगिरि पर गणधराचार्य कुंथुसागरजी आदि १४ आचार्य एवं २०० पिच्छीधारी साधुओं के मध्य आचार्य पद घोषित किया।

आचार्य पद संस्कार

मार्गशीर्ष शुक्ला सप्तमी, संवत २०६७ रविवार दिनांक १२ दिसम्बर २०१० को बांसवाड़ा (राज.) में आचार्यश्री विरागसागरजी ने आचार्य पद के संस्कार किये, और नाम दिया आचार्य विमर्शसागरजी ।

साहित्य यात्रा

आचार्यश्री विमर्शसागर जी महाराज यूँ तो शरीर से दुबले पतले लेकिन गौरवर्ण, शुभ संस्थान, चौड़ा ललाट, दमकता मुख मण्डल, प्रशस्त मुद्रा, मधुर मुस्कान के धारी हैं, ऐसे ही आचार्यश्री की लेखनी भी जनमानस के हृदय को छून वाली है। आचार्यश्री ने अनेक विषयों पर कलम चलाते हुए साहित्य सृजन किया है।

❖ काव्य, प्रवचन, पाठ संग्रह :-

१. हे वन्दनीय गुरूवर (काव्य)
२ गूँगी चीख (प्रवचन)
२. शंका की एक रात (प्रवचन)
४. मानतुंग के मोती
५. विमर्शांजलि (पूजा पाठ संग्रह)
६ गीतांजलि (भजन)
७. विरागांजलि (श्रमण पाठ संग्रह)
८. जीवन है पानी की बूँद (भाग १)
६. जीवन है पानी की बूँद (भाग -२)
१०. जीवन है पानी की बूँद (समग्र)
११. जीवन चलती हुई घड़ी (काव्य)
१२. खूबसूरत लाइनें (काव्य)
१३. समपर्ण के स्वर (काव्य)
१४. आइना (काव्य)
१५. सोचता हूँ कभी-कभी (काव्य)
१६. मेरा प्रेम स्वीकार करो (काव्य)
१७. वाह क्या खूब कही (काव्य)
१८. कर लो गुरू गुणगान (काव्य)
१६. आओ सीखें जिनस्तोत्र (स्त्रोत संग्रह)
२०. जनवरी विमर्श
२१. चटपटे प्रश्न स्वादिष्ट उत्तर (पहेली)
२२. जैन श्रावक और दीपावली पर्व
२३. भरत जी घर में वैरागी (प्रवचन)
२४. शब्द शब्द अमृत (प्रवचन)

❖ गजल :-

गजल संग्रह-जाहिद की गजलें

❖ विधान :-

१. आचार्य विरागसागर विधान
२. श्री भक्तामर विधान
३. श्री कल्याण मन्दिर विधान

❖ **चालीसा :-**

गणधर चालीसा

❖ **टीका :-**

योगसार प्राभृत (प्राकृत/हिन्दी)

❖ **लिपि :-**

विमर्श लिपि, विमर्श अंक लिपि

❖ **पद्यानुवाद :-**

१. सुप्रभात स्तोत्र
२. महावीराष्टक स्तोत्र
३. लघुस्वयंभू स्तोत्र
४. भक्तामर स्तोत्र; त्रय पद्यानुवाद
५. गोम्मटेस स्तुति
६. द्वात्रिंशतिका ; सामायिक पाठ
७. विषापहार स्तोत्र
८. एकीभाव स्तोत्र
९. पंचमहागुरूभक्ति
१०. तीर्थंकर जिनस्तुति
११. गणधरवलय स्तोत्र
१२. कल्याणमंदिर स्तोत्र
१३. परमानंद स्तोत्र

❖ **बहुचर्चित भजन :-**

१. जीवन है पानी की बूँद (महाकाव्य)
२. कर तू प्रभू का ध्यान
३. ऋण मुक्ति का वर दीजिये

❖ **प्रेरणा से प्रकाशन :-**

१. सिर्फ दो प्रवचन; आचार्य विरागसागर जी (सम्पादक -मुनि विमर्शसागरजी)
२. हिन्दी साहित्य की सन्त परम्परा में आचार्य विरागसागर के कृतित्व काअनुशीलन ; डॉ लोकेश खरे
३. राष्ट्रीय समसामयिक - आचार विद्वत् संगोष्ठी ; कोटा (राज.)
४. पुरूषार्थ सिद्धिउपाय - राष्ट्रीय विद्वत् संगोष्ठी ; शिवपुरी (म.प्र)
५. प्रज्ञाशील महामनीषी

❖ **प्रेरणा से स्थापित :-**

आचार्य विरागसागर ग्रंथमाला (भिण्ड)

उदेश्य - मूल जिनागम का संरक्षण प्रचार - प्रसार

एवं लोकोपयोगी धार्मिक नैतिक साहित्य का निर्माण, प्रकाशन

❖ **विद्वत् संगोष्ठी :-**

१. समसामयिक - आचार विद्वत् संगोष्ठी ; कोटा - २००६
२. पुरूषार्थ सिद्धिउपाय अनुशीलन राष्ट्रीय विद्वत संगोष्ठी; शिवपुरी-२००७

संस्कार यात्रा

चातुर्मास :-

१.	मढियाजी, जबलपुर(म.प्र.)	-	1996
२.	भिण्ड, (म.प्र.)	-	1997
३.	भिण्ड, (म.प्र.)	-	1998
४.	भिण्ड, (म.प्र.)	-	1999
५.	महरौनी, (उ.प्र.)	-	2000
६.	अंकुर कॉलोनी, सागर	-	2001
७.	सतना, (म.प्र.)	-	2002
८.	अशोक नगर, (म.प्र.)	-	2003
९.	रामगंजमण्डी, राज.	-	2004
१०.	सिंगोली, (म.प्र.)	-	2005
११.	कोटा राज.	-	2006
१२.	शिवपुरी, (म.प्र.)	-	2007
१३.	आगरा, (उ.प्र.)	-	2008
१४.	एटा, (उ.प्र.)	-	2009
१५.	डूंगरपुर, (राज.)	-	2010
१५.	अशोक नगर, (म.प्र.)	-	2011
१६.	विजयनगर, (राज.)	-	2012
१७.	भिण्ड, (म.प्र.)	-	2013

ऐतिहासिक पूजन प्रशिक्षण शिविर :-

आचार्यश्री के सानिध्य एवं निर्देशन में आयोजित पूजन प्रशिक्षण शिविर एक ऐसी प्रयोगशाला है, जिसमें जैन धर्म के संस्कार एवं शिक्षा का प्रयोग करना सिखाया जाता है। यदि चेतनतीर्थ स्वरूप उपासक संस्कारित नहीं, तो अचेतनतीर्थ स्वरूप जिनमंदिरों का महत्व नहीं जाना जा सकता । आचार्यश्री जब अपने मधुर कण्ठ से शिविर का यथायोग्य संचालन करते हैं तब हर श्रावक भक्ति में ऐसा लीन हो जाता है कि ४-५ घंटे का भी पता नहीं चलता। आचार्यश्री के निर्देशन में आयोजित इस शिविर के माध्यम से आज हजारों लोग जैनत्व के संस्कारो से जुड़े हैं। अभी तक १४ पूजन शिविर आयोजित हो चुके हैं।

१.	महरौनी, (उ.प्र.)	२	वरायठा, (म.प्र.)
३.	अंकुर कॉलोनी, सागर, (म.प्र.)	४.	सतना; (म.प्र.)
५.	अशोकनगर, (म.प्र.)	६.	रामगंजमण्डी; राज.
७.	भानपुरा, (म.प्र.)	८.	सिंगोली, ; (म.प्र.)
६	कोटा, राज.	१०.	शिवपुरी, (म.प्र.)
११.	आगरा, (उ.प्र.)	१२.	एटा, (उ.प्र.)
१३.	डूंगरपुर, (राज.)	१४.	अशोकनगर (म.प्र)
१५.	विजयनगर (राज.)	१६.	भिण्ड (म.प्र)

पंचकल्याणक गजरथ महोत्सव

१. श्री नेमिनाथ पंचकल्याण एवं त्रय गजरथ महोत्सव-२००२ रजवांस-सागर (म.प्र.)
२. श्री आदिनाथ पंचकल्याण एवं त्रय गजरथ महोत्सव २००३ महरौनी, ललितपुर,(उ.प्र)
३. श्री आदिनाथ पंचकल्याणक रथ महोत्सव - २००४ बूंदी, (राज.)
४. श्री आदिनाथ पंचकल्याणक एवं गजरथ महोत्सव-२००७ रामगंजमण्डी,(राज.)
५. श्री आदिनाथ पंचकल्याणक रथोत्सव - २००७ कोटा, (राज.)
६. श्री आदिनाथ पंचकल्याणक गजरथ महोत्सव - २००८ शिवपुरी, म.प्र.
७. श्री आदिनाथ पंचकल्याणक गजरथ महोत्सव - २००६ आगरा एटा (उ.प्र.)
८. श्री आदिनाथ पंचकल्याणक गजरथ महोत्सव - २०१० आगरा एटा (उ.प्र.)
६ श्री आदिनाथ पंचकल्याणक एवं त्रय गजरथ महोत्सव - २०१२ जतारा (म.प्र.)
१० श्री आदिनाथ पंचकल्याणक रथोत्सव-२०१३ चन्देरी (म.प्र.)

वर्तमान संत संस्था में आचार्यश्री विमर्शसागर जी महाराज एक ऐसे श्रेष्ठ संत हैं जिनके पास ज्ञान संस्कार की चर्या एवं चर्चा देखने-सुनने को मिलती है। कम-बोलना, लेकिन काम का बोलना आचार्यश्री की अपनी विशिष्ट शैली है। प्रवचनों में सकारात्मक चिंतन को परोसने वाले हित-मित प्रियभाषी आचार्यश्री पंथ-संत जातिवाद की भी खूब खबर लेते हैं। सच्चे संतत्व को प्रकाशित करने वाले आचार्यश्री कहते हैं, पंथ-संत-जातिवाद को बढ़ावा देने वाले श्रमण एवं श्रावक जिनधर्म के विनाशक होंगे। आचार्यों की अपनी अपनी आचार परंपरा से श्रावक साधुओं के प्रति अश्रद्धानी होंगे, साथ ही सामाजिक समरसता, एकता नष्ट होगी। सचमुच आचार्यश्री का चिन्तन भविष्य की व्याख्या कर रहा है आचार्यश्री का सरल-सौम्य व्यक्तित्व एवं पूर्वापर चिंतन ही आचार्यश्री की अलग पहिचान है। ऐसे युगचेता संत के चरणों में हम बारम्बार नमन करते हैं।-ऐलक विचिन्त्य सागर (संघस्थ)

- श्रमण विचिन्त्य सागर (संघस्थ)

(1) चार अंगुली का आशीर्वाद

घटना अशोकनगर की है पूज्य गुरुवर शाम को अपने संघ के साथ आचार्य वंदना कर रहे थे। अन्य श्रावक भी गुरू भक्ति में शामिल थे, आचार्य वंदना पूर्ण होने के बाद सभी संघस्थ साधकों ने आचार्य श्री को नमस्कार किया आचार्य श्री का हाथ आशीर्वाद के लिये उठा। और फिर गुरूवर ने ४ अंगुलियां शिष्यों की तरफ दिखाई एक सज्जन यह सब क्रिया बड़ी गौर से देख रहे थे, आचार्य वंदना पूर्ण होने के बाद अगले दिन सुबह वह सज्जन आये और गुरू चरणों में नमोऽस्तु निवेदन कर, अपनी जिज्ञासा गुरूवर के समक्ष प्रस्तुत की आचार्य श्री कल शाम को आपने आचार्य वंदना में पहले सभी को हाथ उठाकर आर्शीवाद दिया, (फिर चार उंगलियों से महाराजों को आर्शीवाद दिया) चार उंगलियों से महाराजों को कोई विशेष आर्शीवाद दिया जाता है क्या ?

आचार्य श्री ने प्रश्न सुनामुस्कुराने लगे और फिर कहा भैया ! चार उंगली से कोई विशेष आर्शीवाद नहीं दिया जाता, वो तो हम महाराजों को दिनभर का प्रायश्चित्त देते हैं चार उंगलियों द्वारा चार कायोत्सर्ग करने का संकेत दिया जाता है, सुनकर वह सज्जन भी हँस पड़े, और श्रृद्धा से गुरू चरणों में झुक गये। ऐसा है चार उंगली का आर्शीवाद।

(2) मिट्टी के विमर्शसागर

अशोकनगर वर्षायोग निष्ठापन की ओर था रात्रि ८:४५ का समय था गुरुवर के कक्ष के किवाड़ खुल चुके थे। वैयावृत्ति का क्रम जारी था, कुछ श्रावक वैयावृत्ति कर रहे थे, और कुछ श्रावक वैयावृत्ति करने का इंतजार कर रहे थे । दिवाली का समय निकट था, निष्ठापन की चर्चायें गुप चुप गुप चुप चलने लगी थी तभी एक श्रावक बन्धु अरविन्द जैन (सिंघाड़ा वालों) ने कहा कि जिस दिन गुरुवर की वैयावृत्ति करने नहीं आ पाते उस दिन हाथ पांव में दर्द होता रहता है और जब गुरुवर चले जायेंगे तब क्या होगा ?लगता है भैया ! अब तो वैयावृत्ति करने लिये ''मिट्टी के विमर्शसागर'' बनाने पड़ेगें । सुनकर सभी लोग हँस पड़े ऐसा है हमारे गुरुवर के वात्सल्य का चुम्बकीय आकर्षण ।

(3) पुण्य वर्गणाओं का प्रभाव

गुरुवर के सानिध्य में शिवपुरी में श्री १००८ कल्पद्रुम महामण्डल विधान का भव्य आयोजन १३ नवम्बर २०११ से प्रारंभ होने जा रहा था। ध्वजारोहण की शोभायात्रा की सभी तैयारियाँ पूर्ण हो चुकी थी। गुरुवर जंगल से लौटकर आ रहे थे तभी गजरथ के लिये आये हुए हाथियों में से एक हाथी क्रोधित हो गया। जिस रास्ते से गुरुवर आ रहे थे उसी रास्ते से वह हाथी भी जोर जोर से चिंघाड़ता हुआ आ रहा था । लोग गुरूवर के पास दौड़े दौड़े आये और कहा गुरूवर हाथी क्रोधित हो गया है, उसने अपने महावत तक को घायल कर दिया है, आप कुछ करें। गुरूवर ने सामने से आते हुए हाथी को एक गहरी निगाह से देखा और कहा चिंता मत करो वह ठीक हो जायेगा। ऐसा कहकर गुरुवर जिनालय में चले गये । और इधर देखते ही देखते वह क्रोधित हाथी शांत हो गया । सब गुरुवर की जयजयकार करने लगे ऐसा है पूज्य गुरूवर की पुण्य वर्गणाओं का प्रभाव

(4) मोक्षमार्ग की शिकंजी

ग्रीष्मकालीन वाचना अशोकनगर में चल रही थी शाम के स और मय ४:०० बजे से गुरुवर छह ढ़ाला की क्लास ले रहे थे और तभी गुरुवर ने विषय को समझाते हुए कहा कि एक बार मोक्षमार्ग की शिकंजी पीकर तो देखो सारा अंतरंग संताप मिट जायेगा। एक सज्जन ने पूछ लिया गुरुवर ये मोक्षमार्ग की शिकंजी कैसी होती है तब आचार्य श्री ने कहा भैया! जब आत्मा के पानी में सम्यकदर्शन का नींबू, सम्यकज्ञान की शक्कर, और सम्यकचारित्र का नमक मिल जाता है तब तैयार होती है ''मोक्षमार्ग की शिकंजी '' लौकिक शिकंजी से तो क्षणिक सुख होता है लेकिन एक बार भी यदि मोक्षमार्ग की शिकंजी को पी लिया जाये तो आत्मा का अनादि काल का संताप भी शान्त हो जाता है ऐसी

मोक्षमार्ग की शिकंजी का कथन सुनकर सभी जन रोमांचित हो उठे धन्य हैं ऐसे गुरुवर जो लौकिक वस्तुओं को भी आध्यात्म का जामा पहना दिया करते हैं।

(5) सच्चे वेद्य

आचार्य संघ अशोकनगर में विराजमान था । आचार्यश्री अपने कक्ष में विराजमान थे। कुछ श्रावक दर्शन लाभ ले रहे थे, एक सज्जन उसी समय कक्ष में आये आचार्यश्री को नमोऽस्तु किया और कहने लगे महाराज। हमारा स्वास्थ्य बहुत खराब है तो आचार्यश्री ने कहा कि भैया आपका स्वास्थ्य खराब है तो किसी डॉ० को दिखाओ । उन सज्जन ने कहा नहीं आचार्य श्री ! आप ही बता दो ?आचार्यश्री ने प्रमोद भाव से कहा कि मैने डाक्टरी नहीं पढ़ी । भैया ! हमारे पास तो जन्म, जरा और मृत्यु के रोगों की औषधी है, वो चाहिये तो बताओ ?आचार्यश्री का जवाब सुनकर सब गदगद् हो गये, सच में ऐसे निर्ग्रंथ ही सच्चे वैद्य हैं।

(6) रत्नत्रय के तांत्रिक गुरूवर

एक सज्जन आचार्य श्री के पास आया, आचार्य गुरूवर अपने पाटे पर विराजमान थे आकर गुरूवर को नमोऽस्तु किया और बोला। आचार्यश्री मैं बहुत परेशान हूँ, कोई अच्छा सा तंत्र मंत्र बता दीजिए। जिससे सब ठीक हो जाये ?आचार्यश्री मुस्कुराये और बोले देखो भैया भ्रम में मत पड़ो, मंत्रों में महामंत्र ''णमोकार'' है और यंत्रों में महायंत्र ''रत्नत्रय'' है एवं तन्त्रों में महातंत्र श्रावक और मुनिधर्म का पालन है इन यंत्र, मंत्र और तंत्र का आश्रय कर लो तुम्हारी सिर्फ इस भव की ही नहीं भव भव की पेरशानी दूर हो जायेगी। धन्य हैं ऐसे श्रेष्ठ संत जो तंत्र मंत्र और यंत्र के प्रपंच से दूर एक मात्र रत्नत्रय के तांत्रिक हैं।

(7) आगमानुसार चर्या

घटना अशोकनगर (म.प्र.) की है चातुर्मास स्थापना का आयोजन था बाहर से बहुत सारे गुरूभक्त गुरू चरणों में उपस्थित थे, उस दिन कार्यक्रम थोड़ा लम्बा चला, तो आचार्यश्री आहार चर्या के लिए थोडा सा लेट हो गये थे अहार चर्या से लौटते ही गुरुवर सीधा सामायिक के लिए कायोत्सर्ग करने लगे और गुरुवर ने सभी से कहा कि आप लोग अब जाइये, हम सामायिक करेंगे, एक सज्जन बोले आचार्यश्री ! कभी कभी थोड़ा अपने भक्तों के लिए अपनी चर्या में परिवर्तन कर लेना चाहिए । गुरुवर मंद मंद मुस्कुराये और बोले भैया, साधु की चर्या भक्तों के अनुसार नहीं, भगवान जिनेन्द्र और गुरू के अनुसार चलती है। गुरुवर के आगमानुसार समाधान के स्वरों ने श्रावकों की बोलती बंद कर दी। धन्य हैं ये श्रमण जो अपने आवश्यकों के पालन में शिथिलता को फटकने भी नहीं देते।

(8) गुरू सेवा

ललितपुर वर्षायोग चल रहा था पूज्य श्री तब ब्रह्मचारी अवस्था में संघ में थे, पूज्य गुरूवर विराग सागर जी महाराज को गर्मी अधिक लगती थी मच्छर भी बहुत थे, भैया राकेश ने सभी ब्र. भैया जी को बुलाकर कहा कि हम रातभर बारी बारी से जागकर गुरूवर की वैयावृत्ति करेंगे, और गुरू सेवा में जुट गये पूरी रात भैया राकेश गुरूवर को हवा करते रहे। ऐसी है गुरु के प्रति सेवा समर्पण की भावना गुरुवर के जीवन में ।

(9) गुरू की शिक्षा

भिण्ड की घटना है मुनिश्री का स्वास्थ्य खराब रहता था, संघ शौच के लिये नसियाँ जी जाता था, मुनिश्री नहीं जाते थे, ३,४ दिन हो गये एक दिन गुरूवर विरागसागर जी स्वयं मुनिश्री के पास आये और बोले चलो विमर्शसागर जी, अगर बाहर नहीं जाओगे तो ठंड सहन करने की आदत कैसे पडेगी । और तभी से गुरुवर ने शीत परिषह को जीतना सीख लिया कैसी भी ठंड क्यों न हो कभी भी अपने आवश्यकों के पालन में कमी नहीं आने देते ऐसे हैं हमारे गुरुवर।

(10) प्रायश्चित का प्रायश्चित

ललितपुर में साधना शिविर पूज्य आचार्य श्री विरागसागर जी के सानिध्य में चल रहा था, शिविरार्थियों को शाम का प्रतिक्रमण कराने की जिम्मेदारी मुनिश्री विमर्शसागर जी को सौंपी गई थी शाम को मुनिश्री ने प्रतिक्रमण कराया और जैसा रोज गुरुवर को देखते थे, आचार्यश्री शाम को चार कायोत्सर्ग प्रायश्चित्त के दिया करते थे तो मुनिश्री ने भी शिविरार्थियों को चार कायोत्सर्ग प्रायश्चित के रूप में दे दिये । जब गुरुवर को पता चला कि मुनिश्री ने प्रायश्चित दिया तो, मुनिश्री को बुलाकर पूछा कि आपने प्रायश्चित दिया था। तो पूज्य मुनिश्री ने निश्छल भाव से स्वीकार कर लिया कि हाँ गुरुवर दिया था गुरुवर ने कहा कि प्रायश्चित देने का अधिकार सिर्फ आचार्यों को होता है, मुनिराजों को नहीं, मुनि श्री ने कहा गुरुवर प्रायश्चित दे दीजिए (मुझे इसका ज्ञान नहीं था) आचार्यश्री ने लघु प्रायश्चित देकर प्रिय शिष्य को बोध कराया।

तव से गुरूवर १२ साल संघ नायक मुनि अवस्था में रहे लेकिन कभी किसी को प्रायश्चित्त नहीं देते थे । धन्य हैं ऐसे शिष्य जिन्हें

हर अवस्था में ''गुरू आज्ञा गरीयसी'' होती है।

(11) पुण्य की पॉजीसन

घटना उस समय की है जब गुरुवर अशोकनगर में ग्रीष्मकालीन वाचना कर रहे थे। शांतिनाथ जिनालय में वाचना का क्रम जारी था, चौके निरंतर बड़ते जा रहे थे। साधक सिर्फ ५ थे, २०, २५ दिन में एक एक चौके में गुरुवर का आहार हो पाता था। एक सज्जन ने चौका लगाया, १५ दिन गुजर गये लेकिन गुरूवर का पडगाहन नहीं हुआ, अब तो उन सज्जन की श्रीमति जी के सब्र का बांध टूट गया और अपने श्रीमान् जी से बोली, घर में बैठे बैठे क्या कर रहे हो जरा महाराज के पास जाओ और अपनी पहिचान बढ़ाओ जरा आचार्य जी के पास अपनी पॉजीसन बनाओ, लेकिन वह शायद नहीं जानते थे कि आचार्यश्री पॉजीसन से नहीं पुण्य की पॉजीसन से आते हैं अगले दिन गुरुवर का पडगाहन उनके घर पर ही हो गया। आहार के बाद वह दम्पत्ति आये बोले, आचार्यश्री ! इतने दिन बाद हमारी पॉजीसन बन पाई है, गुरूवर ने सुना और उनसे कहा भैया महाराज पॉजीसन से नहीं पुण्य की पॉजीसन से आते हैं, इसलिये पॉजीसन अपनी नहीं अपने पुण्य की बढ़ाओ धन्य हैं गुरूवर जो पॉजीसन के अपोजीसन में रहते हैं। अर्थात् कभी छोटे बड़े का अमीर गरीब का भेद उन्हें स्पर्श भी नहीं कर पाता।

(12) कहाँ कुटिया कहाँ महल ?

घटना है मध्य प्रदेश के शिवपुरी नगर की जहाँ चातुर्मास निष्ठापन का समय था, दीपावली के एक दिन पूर्व मुनिश्री विमर्शसागरजी और संघस्थ साधुओं का उपवास था। अगले दिन आहार होना था, एक गरीब परिवार था उनकी भी भावना थी गुरुवर का आहार कराने की, लेकिन समाज के धनपती उसे ताने देते रहते थे कि क्या खिलायेगा महाराज को घर बुलाकर, महाराज यहाँ कैसे आयेंगे। वह रोता हुआ गुरु चरणों में पहुँचा और अपनी सारी दुखभरी कहानी गुरुवर से निवेदित कर दी, समता के धनी मुनिश्री ने उसे आशीर्वाद दिया और चौका लगाने के लिये प्रोत्साहित किया उसने चौका लगाया। दीपावली के दिन, उपवास की पारना, सभी की निगाहें मुनिश्री पर थी। सबको विश्वास था कि आज दीपावली है तो मुनिश्री किसी बड़े चौके में जायेंगे।

मुनिश्री की विधी आखिरकार उसी गरीब घर में बनी सभी की आंखे खुली की खुली रह गयी।धन्य हैं गुरुवर की समता, परिणति जिसमें न गरीब है न कोई अमीर है जिन्हें न कुटिया से द्वेष है और न महलों से राग।

(13) हर कौम के संत

गुरूवर अपनी जन्म स्थली जतारा में पंचकल्याणक प्रतिष्ठा हेतु विराजमान थे दोपहर की कक्षा का समय था तभी एक दैनिक भास्कर अखबार के पत्रकार मुस्लिम बन्धु सत्तार खाँन गुरुवर से आशीर्वाद लेने हेतु आये। गुरुवर से वार्ता की और कहने लगे कि आप तो सारे भेद भाव से ऊपर उठ चुके हैं जब तक वस्त्र हैं रंग हैं तब तक ही सम्प्रदायों की दीवारें है लेकिन जहाँ सारे वस्त्र उतर चुकते हैं वहाँ कौमों का भेदभाव नहीं रह जाता । आप दिगम्बर हैं, इसलिये आप सिर्फ जैनों के ही नहीं हर कौम के संत हैं। आपका दर्शन कर प्रसन्न हूँ ।

(14) प्रत्यय बनो उपसर्ग नहीं

गुरुवर के गृह नगर जतारा की घटना है पूज्य श्री, संघस्थ साधु वृन्दों को प्राकृत भाषा का अध्ययन करा रहे थे, उसमें शब्द निकला 'प्रत्यय' और 'उपसर्ग' । सुनकर ब्र. बहिन ने प्रश्न किया आचार्यश्री ! नमोऽस्तु ये प्रत्यय और उपसर्ग कौन कौन से हैं। आचार्यश्री ने प्रश्न के समाधान में कहा कि जो शब्द के आगे जुड़ते हैं उन्हें उपसर्ग कहते हैं और जो शब्द के बाद जुड़ते हैं उन्हें प्रत्यय कहते हैं। व्याकरण के इन शब्दों के माध्यम से गुरुवर ने अपने शिष्यों को शिक्षा दी कि शिष्यों को गुरू के साथ सदा प्रत्यय बनकर रहना चाहिए उपसर्ग बनकर नहीं, लेकिन यदि गुरू के ऊपर कोई उपसर्ग आ जाये तो शिष्यों को प्रत्यय नहीं उपसर्ग बन जाना चाहिए । वही सच्चा शिष्य है, धन्य हैं ऐसे गुरुवर जिनके मुख से निकले वाक्य भी माँ जिनवाणी के सूत्र बन जाया करते हैं।

(15) कांटे से हुई चींटियों की रक्षा

मुनिश्री का विहार चल रहा था रास्ते में शौच क्रिया के लिये गुरुवर रोड़ से अन्दर खेतों की ओर निकल गये काफी दूर जाकर मुड़कर देखा कि श्रावक कितने दूर हैं और आगे कदम बड़ा दिये जैसे ही पैर रखा तो एक बड़ा कांटा पैर में घुस गया कांटा चुभते ही पैर ऊपर को उठ गया और जब नीचे देखा तो उस कांटे के नीचे चींटियों का बड़ा बिल था तुरन्त गुरूवर आत्म गिलानी से भर गये और सोचने लगे कि अगर ये कांटा न होता तो कितने सारे जीवों की विराधना हो जाती। अपने प्रमाद को धिक्कारने लगे । ऐसी है गुरूवर की करूणा से छलकती आत्म प्रवृत्ति । जो प्राणीमात्र के प्रति वात्सल्य से और दया से आर्द रहती है।

आचार्य श्री द्वारा प्रदत्त दीक्षायें

क्र	स्थान	दिनांक	दीक्षार्थी का नाम	दीक्षा	दीक्षोपरांत नाम
१.	सतना (म.प्र.)	सन २००२	चन्द्रानी देवी	आर्यिका	आर्यिका विलक्ष्यश्री माताजी (समाधिस्थ)
२.	अशोकनगर (म.प्र.)	२६नवंबर २००३	ब्र. छौगालालजी जैन (२ प्रतिमां)	मुनिश्री	मुनि विश्वतीर्थसागर जी (समाधिस्थ)
३.	कोटा (राज.)	२६मार्च २०११	ब्रा. ब्र. राजीव भैया (अशोक नगर)	ऐलक दीक्षा	ऐलक विचिन्त्यसागर जी
४.	विजयनगर (राज.)	२४ अक्टू. २०१२	बा.ब्र.अजय भैया (अशोक नगर)	क्षु. दीक्षा	क्षुल्लक विजेयसागर जी
५.	विजयनगर (राज.)	२४ अक्टू. २०१२	ब्र. प्रकाश भैया जयपुर (राज.)	क्षु. दीक्षा	क्षुल्लक विश्वाभसागर जी
६.	भिण्ड (म.प्र.)	१५ नवम्बर, १३	ऐलक विचिन्त्यसागर	मुनि दीक्षा	मुनि विचन्त्यसागरजी
७.	भिण्ड (म.प्र.)	१५ नवम्बर, १३	क्षुल्लक विजेयसागर	ऐलक दीक्षा	ऐलक विजेयसागरजी
८.	भिण्ड (म.प्र.)	१५ नवम्बर, १३	ब्र. देवेन्द्र भैया (एटा)	क्षु. दीक्षा	क्षुल्लक विश्वज्ञसागरजी
९.	भिण्ड (म.प्र.)	१५ नवम्बर, १३	ब्र. देवेन्द्र भैया(भिण्ड)	क्षु. दीक्षा	क्षुल्लक विश्वभूसागरजी

संघस्थ त्यागी वृन्द

क्र.	नाम	जन्म स्थान	शिक्षा	व्रत ग्रहण स्थान
1	ब्रा.ब्र. श्वेता दीदी	आगरा (उ.प्र.)	बी.ए. फाइनल	जतारा
2.	बा.ब्र. नमिता दीदी	आगरा (उ.प्र.)	एम.ए. फाइनल	जतारा
3.	बा.ब्र. रीना दीदी	इंदार (शिवपुरी)	इन्टरमीडिएट	शिवपुरी
4.	ब्र. मीरा दीदी	ग्राम-जोरा (मुरैना)	11वीं	आगरा
5.	ब्र. विद्या दीदी	सिरसौर (शिवपुरी)	कक्षा-3	शिवपुरी
6.	बा.ब्र. रेनू दीदी	कोटा (राज.)	एम.एस.सी.	आगरा
7.	बा.ब्र. आँचल दीदी	एटा (उ.प्र.)	बी.बी.ए.	चंदेरी
8.	बा.ब्र. टिंकल दीदी	एटा (उ.प्र.)	बी.ए. फाइनल	चंदेरी
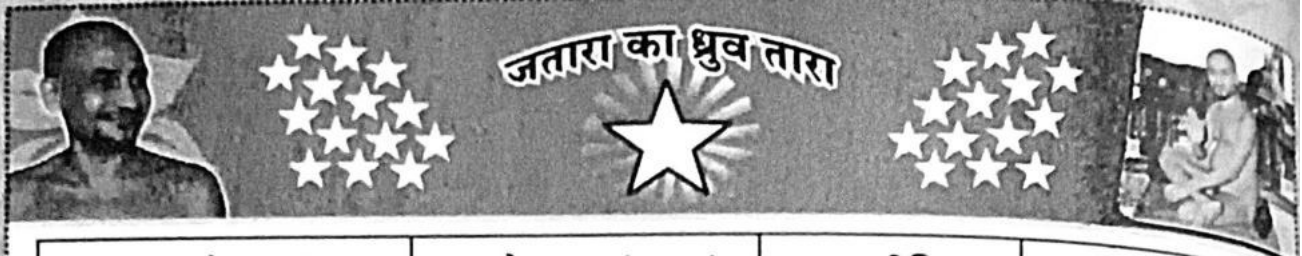
9. बा.ब्र. नेहा दीदी	अशोकनगर (म.प्र.)	इन्टरमीडिएट	अशोकनगर
10. बा.ब्र. ज्योति दीदी	दिगौड़ा (म.प्र.)	बी.ए. फाइनल	विजयनगर
11. बा.ब्र. दीपा दीदी	शिवपुरी (म.प्र.)	12वीं	शिवपुरी
12. बा.ब्र. रिया दीदी	कोलारस (म.प्र.)	10वीं	शिवपुरी
13. बा.ब्र. सृष्टि दीदी	अशोकनगर (म.प्र.)	बी.एस.सी.	अशोकनगर
14. ब्र. सुरेश भैयाजी	अशोकनगर (म.प्र.)	इन्टरमीडिएट	भिण्ड
15. ब्रा.ब्र. पारस भैया	भिण्ड	मिडिल	भिण्ड
16. बा.ब्र. अनिल भैया	भिण्ड	प्राथमिक	एटा

वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव आदि आयोजन

क्र	स्थान	दिनांक	अवस्था	आयोजन
१.	महरौनी ललितपुर	२१.१०.२०००	मुनि	अहिंसा सम्मेलन
२.	महरौनी ललितपुर		मुनि	डायमण्ड जुबली वर्षायोग
३.	महरौनी	०६.११.२०००	मुनि	वेदी शिलान्यास शिखर कलशारोहण
४.	रामटौरिया	१४.०२. से २३.०३.२००१	मुनि	श्री णमोकार महामंत्र का अखण्ड पाठ
५.	मकरोनिया (सागर)	२४.०४.२००१	मुनि	वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव (गुरुवर के संघ)
६.	अमरपाटन	१४.१२.२००२	मुनि	वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव
७.	ललितपुर	०६.०६ से ०८.०६.२००३	मुनि	विद्वत संगोष्ठी (गुरुवर के साथ)
८.	अशोकनगर	११.११ से १५.११.२००३	मुनि	शिखर कलशारोहण महोत्सव
९.	भानपुरा	१२.०१ से	मुनि	भव्य वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव

		१४.०१.२००४		जिनविम्ब स्थापना समारोह
१०.	पिड़ावा	२४.१२.२००७	मुनि	वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव
११.	भानपुरा	२८.०१. से ३०.०१.२००५	मुनि	वेदी प्रतिष्ठा ध्वज दण्ड स्थापना
१२.	रावतभाटा	२८.११.२००५	मुनि	अहिंसा सर्किल का शिलान्यास
१३.	विजयनगर	२६.०८. से २८.०८.२००५	मुनि	वेदी प्रतिष्ठा एवं रथोत्सव
१४.	बूँदी	२००५	मुनि	नवीन जिनालय की वेदी प्रतिष्ठा
१५.	कोटा	२००६	मुनि	वृहद स्तर पर महावीर जयन्ति का भव्य आयोजन
१६.	कोटा	२००६	मुनि	वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव/ध्वज दण्ड स्थापना
१७.	नेनवां	२२.०६.२००६	मुनि	बिम्ब स्थापना, कलशारोहण अक्षय तृतीया
१८.	कोटा	२०.०५.२००४	मुनि	श्रुत पंचमी का वृहद स्तर पर आयोजन
१९.	बूँदी	१८.०२ से २१.०२.२००६	मुनि	वेदी प्रतिष्ठा रथोत्सव
२०.	कोटा म.नगर	२००७	मुनि	वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव / ध्वज दण्ड स्थापना
२१.	कोटा	२००६	मुनि	अखिल भारतीय विद्वत् संगोष्ठी
२२.	शिवपुरी	२००७	मुनि	अखिल भारतीय विद्वत् संगोष्ठी
२३.	शिवपुरी	२००७	मुनि	आदि सागर (अंकलीकर) परम्परा पर वृहद विराट संगोष्ठी का आयोजन

२४.	आगरा	०१.११.२००८	मुनि	विराग भवन का शिलान्यास/व्रतीआश्रम एवं औषधालय का शुभारम्भ
२५.	एटा	२००६	मुनि	शिखर शुद्धि कलशारोहण महोत्सव
२६.	एटा	२००६	मुनि	आचार्य परम्परा पर विद्वत संगोष्ठी
२७.	डूँगरपुर	२०१०	मुनि	वेदी शुद्धि एवं पंचदिवसीय विधान आयोजन
२८.	कोटा (म.न.वि)	२०११	अचार्य	शिखर शुद्धि, ध्वज दण्ड स्थापना, कलशारोहण महोत्सव
२६.	कोटा (शा.मार्केट)	२०११	आचार्य	नवीन वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव / जिनबिम्ब स्थापना
३०.	कोटा (गढ़ पैलेस)	२०११	आचार्य	नवीन वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव नवीन शिखर शुद्धि महोत्सव
३१.	शिवपुरी	२३.११.२०११	आचार्य	शिखर शुद्धि, ध्वज दण्ड स्थापना समारोह।
३२.	शिवपुरी	२०.११.२०११	आचार्य	वेदी प्रतिष्ठा एवं चार नवीन शिखरों पर कलशारोहण
३३.	अ. क्षेत्र पनिहार(म.प्र.)	११,१२ मई २०१३	आचार्य	वेदी प्रतिष्ठा, लघु पंचकल्याणक, प्रतिमा शुद्धि
३४.	नगरा झांसी (उ.प्र.)	३० मई से १ जून १३	आचार्य	वेदी प्रतिष्ठा, जिनबिम्ब स्थापना कलशारोहण समारोह
३५.	पृथ्वीपुर (म.प्र.)	१०-११-१२ जुलाई २०१३	आचार्य	वेदी प्रतिष्ठा, जिनबिम्ब स्थापना समारोह
३६.	झांसी (उ.प्र.)	३ से ५ जुलाई २०१३	आचार्य	प्राचीन वेदिका का जीर्णोद्धार हेतु जिनबिम्ब उत्थापन समारोह

आचार्यश्री के सानिध्य में प्रशिक्षण शिविर

क्र.	स्थान	अवधि	अवस्था	विवरण
१.	तालवेहट (उ.प्र.)	२७.४ से २७.५-२०००	मुनि	सम्यक्ज्ञान शिक्षण शिविर
२.	जखौरा (उ.प्र)	२४.६ से २८.६-२०००	मुनि	सम्यक्ज्ञान शिक्षण शिविर
३.	महरौनी (उ.प्र)	०७.०८ से १०.०८-२०००	मुनि	श्री भक्तामर शिक्षण शिविर
४.	महरौनी (उ.प्र)		मुनि	श्री मज्जिनेन्द्र पूजन प्रशिक्षण शिविर
५.	वरायठा (म.प्र)	२१.०५. से ३१.०५.२००१	मुनि	श्री मज्जिनेन्द्र पूजन प्रशिक्षण शिविर
६.	सागर (म.प्र)	२०.०७ से ०७.०८.२००२	मुनि	श्री पूजन प्रशिक्षण शिविर
७.	सागर (म.प्र)	२२.१० से ०८.११.२००१	मुनि	श्री भक्तामर शिक्षण शिविर
८.	सतना (म.प्र)	१५.०७ से २३.१०.२००२	मुनि	श्री भक्तामर शिक्षण शिविर एवं पूजन प्रशिक्षण शिविर
९.	अशोक नगर (म.प्र)	१६.०७ से ०८.०८.२००३	मुनि	श्री भक्तामर शिक्षण शिविर एवं पूजन प्रशिक्षण शिविर
१०.	रामगंजमण्डी (राज.)	११.०७ से ०२.०९.२००४	मुनि	श्री भक्तामर शिक्षण शिविर एवं पूजन प्रशिक्षण शिविर
११.	भानपुरा (म.प्र.)	२००४	मुनि	पूजन प्रशिक्षण शिविर
१२.	सिंगोली (म.प्र.)	२००५	मुनि	श्री भक्तामर शिक्षण शिविर एवं पूजन प्रशिक्षण शिविर
१३.	कोटा (राज.)	२००६	मुनि	श्री भक्तामर शिक्षण शिविर एवं पूजन प्रशिक्षण शिविर
१४.	कोटा (राज.)	२६.१२ से ३१.१२ तक	मुनि	श्री सर्वोदय ज्ञान संस्कार शिविर

क्र.	स्थान	अवधि	अवस्था	विवरण
१५.	कोटा (राज.)	१०.०५ से २७.०७.०७	मुनि	श्री ज्ञान ज्योति शिविर
१६.	शिवपुरी (म.प्र)	२७.१० से ०२.११.०७	मुनि	पूजन प्रशिक्षण शिविर
१७.	शिवपुरी (म.प्र)	०६.०८.०६ से २१.१०.०७	मुनि	श्री भक्तामर शिक्षण शिविर
१८.	शिवपुरी (म.प्र)		मुनि	संस्कृत संभाषण शिविर
१६.	आगरा (उ.प्र)	२१.०७ से २१.१०.०८	मुनि	श्री भक्तामर शिक्षण शिविर
२०.	आगरा (उ.प्र)	...	मुनि	श्री पूजन शिक्षण शिविर
२१.	एटा (उ.प्र)	०७.०७.२००६	मुनि	श्री भक्तामर शिविर
२२.	एटा (उ.प्र)	११.०६.से २१.०६.०६	मुनि	पूजन प्रशिक्षण शिविर
२४.	डूँगरपुर (राज.)	..	मुनि	श्री भक्तामर शिविर, श्री पूजन प्रशिक्षण शिविर
२५.	अशोकनगर (म.प्र.)	२१.०८.११ से	आचार्य	श्री भक्तामर शिविर
२५.	अशोकनगर (म.प्र.)	२२.०८ से ३०.०८.११	आचार्य	श्री पूजन प्रशिक्षण शिविर
२६.	विजयनगर (राज.)		आचार्य	श्री पूजन प्रशिक्षण शिविर
२७.	भिण्ड (म.प्र.)	२५.०६ से ३०.१०.१३	आचार्य	श्री पूजन प्रशिक्षण शिविर

आचार्य श्री के सानिध्य में वाचनाएं

क्र	स्थान	अवधि/काल	अवस्था	विवरण
१.	टीकमगढ़ (म.प्र.)	१९९५ ग्रीष्मकाल	ब्रह्मचारी	षडखण्डागम ग्रन्थ के पंचम वर्गणाखण्ड पर
२.	ललितपुर(उ.प्र)	१९९५ वर्षायोग	ब्रह्मचारी	षडखण्डागम धवला
३.	ललितपुर(उ.प्र)	१९९५ शीतकाल	ब्रह्मचारी	पुस्तक-१५,१६
४.	कटनी(म.प्र)	१९९६ ग्रीष्मकाल	ऐलक	धवलाजी पंचमखण्ड
५.	मढ़िया जी(म.प्र.)	१९९६ वर्षायोग	ऐलक	ध्वला पुस्तक यशोधर चरित्र
६.	टीकमगढ़(म.प्र)	१९९७ ग्रीष्मकाल	ऐलक	समयसार
७.	भिण्ड (म.प्र.)	१९९७ वर्षायोग	ऐलक	आध्यात्मिक वाचना
८.	तालवेहट(उ.प्र)	२००० ग्रीष्मकाल	मुनि	परमात्म प्रकाश
९.	महरोनी(उ.प्र)	२००० शीतकाल	मुनि	समयसार
१०.	वरायठा(म.प्र)	२००१ ग्रीष्मकाल	मुनि	रत्नकरण्ड श्रावकाचार
११.	पटनाबुजुर्ग(म.प्र)	२००१ शीतकाल	मुनि	रत्नकरण्ड श्रावकाचार
१२.	सागर(मोराजी)	२००२ ग्रीष्मकाल	मुनि	गुरुवर के साथ
१३.	अमरपाटन(म.प्र)	२००२ शीतकाल	मुनि	प्रवचनसार,पुरुषार्थ सिद्धयुपाय
१४.	मुँगावली (म.प्र)	२००३ ग्रीष्मकाल	मुनि	कार्तिकेयानुप्रेक्षा
१५.	मण्डीबामौरा(म.प्र)	२००३ ग्रीष्मकाल	मुनि	कार्तिकेयानुप्रेक्षा
१६.	अशोकनगर(म.प्र)	२००३ शीतकाल	मुनि	पंचास्तिकाय
१७.	कोटा (राज.)	२००४ ग्रीष्मकाल	मुनि	परमात्म प्रकाश
१८.	रामगंजमण्डी(राज.)	२००४ वर्षायोग	मुनि	मरणकण्डिका
१९.	भानपुरा(म.प्र)	२००५ शीतकाल	मुनि	समयसार
२०.	विजयनगर(राज.)	२००५ ग्रीष्मकाल	मुनि	समयसार, जीवकाण्ड
२१.	सिंगोली (म.प्र)	२००५ वर्षायोग	मुनि	समयसार, गोम्मटसार जीवकाण्ड
२२.	रावतभाटा(राज.)	२००६ शीतकाल	मुनि	समयसार श्रावकाचार जीवकाण्ड
२३.	नेनवा (राज.)	२००६ ग्रीष्मकाल	मुनि	प्रवचनसार
२४.	कोटा (राज.)	२००६ वर्षायोग	मुनि	समयसार
२५.	कोटा (राज.)	२००६ शीतकाल	मुनि	समयसार
२६.	झालरापाटन(राज.)	२००७ ग्रीष्ममाल	मुनि	योगसार प्राभृत्

२७.	रामगंजमण्डी(राज.)	२००७ ग्रीष्मकाल	मुनि	योगसार प्राभत्
२८.	शिवपुरी(म.प्र)	२००७ वर्षायोग	मुनि	समयसार/योगसार/ पुरुषार्थ सिद्धयुपाय
२९.	शिवपुरी (म.प्र)	२००८ शीतकाल	मुनि	समयसार/योगसार पुरुषार्थ सिद्धयुपाय
३०.	आगरा(उ.प्र)	२००८ वर्षायोग	मुनि	समयसार जीवकाण्ड
३१.	आगरा(उ.प्र)	२००८ शीतकाल	मुनि	रयणसार
३२.	एटा (उ.प्र)	२००९ वर्षायोग	मुनि	योगसारटीका समयसार
३३.	एटा (उ.प्र)	२००९ शीतकाल	मुनि	रयणसार/ सर्वार्थसिद्धि
३४.	भीलवाड़ा (राज.)	२००९ ग्रीष्मकाल	मुनि	समयसार/सर्वार्थसिद्धि
३५.	उदयपुर (राज.)	२०१० ग्रीष्मकाल	मुनि	गुरुवर के साथ सर्वार्थसिद्धि
३६.	डूँगरपुर (राज.)	२०१० वर्षायोग	मुनि	भगवती आराधना/समयसार
३७.	कोटा (राज.)	२०११ शीतकाल	आचार्य	समयसार
३८.	अशोकनगर(म.प्र.)	२०११ ग्रीष्मकाल	आचार्य	समयसार/रयणसार /भगवती आराधना
३९.	अशोकनगर(म.प्र.)	२०११ वर्षायोग	आचार्य	समयसार/रयणसार / भगवती आराधना / सर्वार्थसिद्धि
४०.	जतारा (म.प्र.)	२०११-१२ शीतकाल	आचार्य	समयसार/रयणसार/सर्वार्थसिद्धि
४१.	विजयनगर(राज.)	२०१२ वर्षायोग	आचार्य	भगवती आराधना सर्वार्थसिद्धि
४२.	चंदेरी (म.प्र.)	२०१३ शीतकाल	आचार्य	भगवती मां सर्वार्थसिद्धि
४३.	शिवुपरी (म.प्र.)	२०१३ ग्रीष्मकाल	आचार्य	अष्ट पाहुड़ जी
४४.	झांसी (उ.प्र.)	२०१३ ग्रीष्मकाल	आचार्य	अष्ट पाहुड़ जी
४५.	भिण्ड (म.प्र.)	२०१३ वर्षायोग	आचार्य	रयणसार/भगवती आराधना
४६	एटा (उ.प्र.)	२०१४ शीतकाल	आचार्य	अष्ट पाहुड़ त्रिलोकसार दीपक

आचार्य श्री के सानिध्य में विधान आदि वृहद आयोजन

क्र	स्थान	अवधि	अवस्था	विवरण
१.	टीकमगढ़ (म.प्र.)	१९९५	ब्रह्मचर्य	नंदीश्वर महामण्डल विधान (गुरुवर के साथ)
२.	भिण्ड (म.प्र.)	१९९७	ऐलक	श्री कल्पद्रुम महामंडल विधान (गुरुवर के साथ)
३.	मेहगांव (म.प्र.)	१९९८	ऐलक	श्री सिद्ध चक्र महामण्डल विधान (गुरुवर के साथ)
४.	तालवेहट (म.प्र.)	२०००	मुनि	श्री सिद्ध चक्र महामण्डल विधान।
५.	घुवारा (म.प्र.)	२००१	मुनि	श्री सिद्ध चक्रमहामण्डल विधान।
६.	बरौदिया (म.प्र.)	२००२	मुनि	शांति विधान (वृहद)
७.	सागर (म.प्र.)	२००२	मुनि	श्री भक्तामर महामण्डल विधान
८.	अमरपाटन(म.प्र.)	२००४	मुनि	नवग्रह विधान
९.	ललितपुर (उ.प्र.)	२००३	मुनि	श्री इन्द्रध्वज महामण्डल विधान
१०.	ललितपुर (उ.प्र.)	२००३	मुनि	रत्नत्रय विधान गुरूवर के साथ
११.	अशोकनगर(म.प्र.)	२००३	मुनि	शांतिविधान / यागमण्डल विधान
१२.	कोटा (राज.)	२००४	मुनि	शांतिविधान
१३.	बूँदी (राज.)	२००४	मुनि	यागमण्डल/शांति विधान
१४.	भानपुरा (म.प्र.)	२००४	मुनि	१६ दिवसीय शांति विधान
१५.	बोराव (राज.)	२००५	मुनि	रत्नत्रय विधान
१६.	सिंगोली (म.प्र.)	२००५	मुनि	श्री सिद्ध चक्र महामण्डल विधान
१७.	रामगंजमण्डी(राज.)	२००५	मुनि	श्री कल्पद्रुम महामण्डल विधान
१८.	चेची (राज.)	२००५	मुनि	श्री शांति विधान

१९.	सिंगोली (म.प्र.)	२००५	मुनि	भक्तामर विधान
२०.	रावतभाटा (राज.)	२००५	मुनि	श्री कल्पद्रुम महामण्डल विधान
२१.	बोराव (राज.)	२००६	मुनि	रत्नत्रय विधान
२२.	बोराव (राज.)	२००६	मुनि	पंचपरमेष्ठी विधान
२३.	बोराव (राज.)	२००६	मुनि	शांति विधान
२४.	बूँदी (राज.)	२००६	मुनि	पंचपरमेष्ठी विधान
२५.	अलोद (राज.)	२००६	मुनि	श्री सिद्ध चक्रमहामण्डल विधान
२६.	नेनवां (राज.)	२००६	मुनि	श्री भक्तामर महामण्डल विधान
२७.	म.न विस्तार कोटा (राज.)	२००६	मुनि	श्री भक्तामर महामण्डल विधान
२८.	कोटा (राज.)	२००६	मुनि	श्री कल्याण मंदिर विधान
२९.	कोटा (राज.)	२००६	मुनि	श्री रत्नत्रय विधान
३०.	कोटा (राज.)	२००६	मुनि	श्री शांति महामण्डल विधान
३१.	शिवपुरी (म.प्र)	२००७	मुनि	श्री कल्पद्रुम महामण्डल विधान
३२.	शिवपुरी (म.प्र)	२००७	मुनि	श्री आचार्य विरागसागर विधान
३३.	शिवपुरी (म.प्र)	२००७	मुनि	श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान
३४.	सेसई (शिवपुरी)	२००७	मुनि	श्री कल्पद्रुम महामण्डल विधान
३५.	ग्वालियर (म.प्र.)	२००८	मुनि	श्री यागमण्डल विधान/ शांति विधान
३६.	मुरैना (म.प्र)	२००८	मुनि	श्री नन्दीश्वर महामण्डल विधान

३७.	आगरा (उ.प्र)	२००८	मुनि	श्री श्रमणउपसर्ग निवारण विधान
३८.	आगरा (उ.प्र)	२००८		श्रीभक्तामर महामण्डल विधान/यागमण्डल विधान/ शांति विधान
३९.	एटा (उ.प्र)	२००६	मुनि	श्री शांतिनाथ विधान/ यागमण्डल/ भक्तामर विधान
४०.	डूँगरपर (राज.)	२०१०	मुनि	श्रमणउपसर्ग निवारण विधान / भक्तामर विधान / शांति विधान
४१.	लुहारिया (राज.)	२०१०	मुनि	कल्पद्रुम महामण्डल विधान (गुरुवर के साथ)
४२.	कोटा (राज.)	२०११	आचार्य	यागमण्डल, शांतिविधान भक्तामर विधान
४३.	शिवपुरी (म.प्र.)	२०११	आचार्य	श्री कल्पद्रुम महामण्डल विधान एवं नगर गजरथ महोत्सव
४४.	जतारा (म.प्र.)	२०१२	आचार्य	श्री भक्तामर महामण्डल विधान
४५.	पृथ्वीपुर (म.प्र.)	२०१२	आचार्य	श्री सिद्ध चक्र महामण्डल विधान
४६.	आगरा (उ.प्र.)	२०१२	आचार्य	श्री भक्तामर महामण्डल विधान
४७.	जयपुर (राज.)	२०१२	आचार्य	श्री कल्पद्रुम महामण्डल विधान (गुरूवर के साथ)
४८.	मौजमाबाद	२०१२	आचार्य	श्री शांतिनाथ महामण्डल विधान

४९.	विजयनगर	२०१२	आचार्य	भक्तामर विधान/चौषठ ऋद्धि विधान/गणधर वलय विधान/शांतिविधान/आचार्य विरागसागर विधान
५०.	चंवलेश्वर (राज.)	२०१२	आचार्य	श्री भक्तामर महामण्डल विधान
५१.	महुआ (राज.)	२०१२	आचार्य	श्री भक्तामर महामण्डल विधान
५२.	सिंगोली (म.प्र.)	२०१२	आचार्य	श्री भक्तामर महामण्डल विधान
५३.	वोराव (राज.)	२०१२	आचार्य	श्री भक्तामर महामण्डल विधान
५४.	कोटा (राज.)	२०१२	आचार्य	चौषठ ऋद्धि विधान/भक्तामर महामण्डल विधान
५५.	चंदेरी (म.प्र.)	२०१३	आचार्य	श्री भक्तामर विधान/ यागमण्डल विधान/शांतिविधान
५६.	ईशागढ़ (म.प्र.)	२०१३	आचार्य	श्री भक्तामर महामण्डल विधान
५७.	खतौरा (म.प्र.)	२०१३	आचार्य	श्री शांतिनाथ महामण्डल विधान
५८.	इन्दार (म.प्र.)	२०१३	आचार्य	श्री भक्तामर महामण्डल विधान
५९.	शिवपुरी (म.प्र.)	२०१३	आचार्य	श्री सिद्ध चक्र महामण्डल विधान
६०.	नगरा झांसी(उ.प्र.)	२०१३	आचार्य	यागमण्डल विधान/शांति विधान
६१.	बड़ा मन्दिर झांसी	२०१३	आचार्य	चौषठ ऋद्धि विधान/ यागमण्डल विधान/ शांति विधान
६२.	पृथ्वीपुर (म.प्र.)	२०१३	आचार्य	यागमण्डल विधान
६३.	भिण्ड (म.प्र.)	२०१३	आचार्य	श्री सिद्ध चक्र महामण्डल विधान

आचार्य श्री के सानिध्य में पंचकल्याणक महोत्सव

क्र	स्थान	वर्ष	अवस्था	विवरण
१.	ललितपुर (उ.प्र.)	१९९५	ब्रह्मचारी	आचार्य (गुरुवर के साथ)
२.	द्रोणगिरी जी (उ.प्र.)	०४.०२ से ०८.०२.१९९६	ब्रह्मचारी	(गुरुवर के साथ)
३.	देवेन्द्रनगर (पन्ना)	१६.०२ से २६.०२.१९९६	ऐलक	त्रय गजरथ महोत्सव
४.	टीकमगढ़ म.प्र	२७.०४ से ०२.०५.१९९७	ऐलक	त्रय गजरथ महोत्सव
५.	भिण्ड (म.प्र.)	१४.०६ से २१.०६.१९९९	मुनि	पंच कल्याणक महोत्सव
६.	करगुँवा जी (उ.प्र.)	१२.०३ से १९.०३.२०००	मुनि	(गुरुवर के साथ)
७.	रजवाँस (सागर) (म.प्र.)	१०.०२ से १६.०२.२००२	मुनि	नेमीनाथ पंचकल्याणक त्रय गजरथ महोत्सव
८.	वरोदिया (सागर)	१७.०२ से २५.०२.२००२	मुनि	श्री विशदसागर जी के साथ
९.	महरौनी (उ.प्र)	१५.०२ से २१.०२.२००३	मुनि	श्री आदिनाथ पंचकल्याणक एवं गजरथ महोत्सव
१०.	बूँदी (राज.)	३०.०५ से ०४.०६.२००४	मुनि	श्री आदिनाथ पंचकल्याणक एंव रथोत्सव
११.	रामगंजमण्डी (राज.)	०२.०५ से ०७.०५.२००७	मुनि	श्री आदिनाथ पंचकल्याणक एवं गजरथ महोत्सव
१२.	कोटा (राज.)	११.०५ से १४.०५.२००७	मुनि	श्री पार्श्वनाथ पंचकल्याणक महोत्सव
१३.	शिवपुरी (म.प्र)	१९.०१ से २४.०१.२००८	मुनि	श्री आदिनाथ पंचकल्याणक एवं गजरथ महोत्सव
१४.	आगरा (उ.प्र)	०१.०३ ०७.०३.२००९	मुनि	श्री आदिनाथ पंचकल्याणक प्रतिष्ठा एवं गजरथमहोत्सव

१५.	एटा (उ.प्र)	०६.०२ से १३.०२.२०१०	मुनि	श्री आदिनाथ पंचकल्याणक प्रतिष्ठा एवं गजरथ महोत्सव
१६.	जतारा (म.प्र)	२८.०१. से ०३.०२.२०१२	आचार्य	श्री आदिनाथ पंचकल्याणक प्रतिष्ठा एवं त्रयगजरथ महोत्सव
१७.	चंदेरी (म.प्र.)	२७.०१ से ०३.०२.२०१३	आचार्य	श्री आदिनाथ पंचकल्याणक महोत्सव

पावन वर्षायोग

क्र.	वर्ष	स्थान	अवस्था	विवरण
१.	१६६५	ललितपुर (उ.प्र.)	ब्रह्मचारी	गुरुवर विरागसागर जी के साथ
२.	१६६६	जबलपुर (म.प्र.)	ऐलक	गुरुवर के साथ
३.	१६६७	भिण्ड (म.प्र.)	ऐलक	गुरुवर के साथ
४.	१६६८	भिण्ड (म.प्र.)	ऐलक	गुरुवर के साथ
५.	१६६६	भिण्ड (म.प्र.)	मुनि	गुरुवर के साथ
६.	२००० (२ पिच्छी)	महरौनी (उ.प्र.)	मुनि	विश्वपूज्यसागर जी
७.	२००१ (२ पिच्छी)	सागर (म.प्र.)	मुनि	श्री विश्वपूज्यसागर जी बालाचार्य बाहुबलीसागर जी
८.	२००२ (२पिच्छी)	सतना (म.प्र.)	मुनि	श्री विनर्ध्यसागर जी
९.	२००३ (३पिच्छी)	अशोकनगर (म.प्र.)	मुनि	श्री विश्वपूज्यसागर जी , मुनिश्री विनर्ध्यसागर जी
१०.	२००४ (३पिच्छी)	रामगंजमण्डी(राज.)	मुनि	मुनिश्री विश्वपूज्यसागर जी, क्षुल्लक श्री विशुद्धसागर जी

११.	२००५ (३ पिच्छी)	सिंगोली (म.प्र.)	मुनि	मुनिश्री विश्वपूज्यसागर जी, क्षुल्लक श्री विशुद्धसागर जी
१२.	२००६ (३ पिच्छी)	कोटा (राज.)	मुनि	मुनिश्री विश्वपूज्यसागर जी, क्षुल्लक श्री विशुद्धसागर जी
१३.	२००७ (३ पिच्छी)	शिवपुरी (म.प्र.)	मुनि	मुनिश्री विश्वपूज्यसागर जी, क्षु.श्री विशुद्धसागर जी
१४.	२००८ (३ पिच्छी)	आगरा (उ.प्र.)	मुनि	मुनिश्री विश्वपूज्यसागर जी क्षुल्लक श्री विशुद्ध सागर जी
१५.	२००९ (३ पिच्छी)	एटा (उ.प्र.)	मुनि	मुनिश्री विश्वपूज्यसागर जी, क्षुल्लक श्री विशुद्धसागर जी
१६.	२०१० (४ पिच्छी)	डूँगरपुर (राज.)	मुनि	क्षु. विश्वयोगसागर जी क्षु. विश्वबन्धुसागर जी क्षु अतुल्यसागर जी
१७.	२०११ (५ पिच्छी)	अशोक नगर(म.प्र.)	आचार्य	मुनि श्री विश्वतीर्थसागर जी ऐलक श्रीविचिन्त्यसागरजी क्षुल्लक श्री विशुद्धसागर जी क्षुल्लक श्री विश्वबन्धुसागर जी
१८.	२०१२ (६ पिच्छी)	विजयनगर (राज.)	आचार्य	ऐ.विचिन्त्यसागर क्षु. विशुद्धसागर क्षु. विश्वबंधुसागर क्षु. विजेयसागर क्षु. विश्वाभसागर
१९.	२०१३ (५पिच्छी)	भिण्ड (म.प्र.)	आचार्य	ऐ.विचिन्त्यसागर क्षु. विशुद्धसागर क्षु. विजेयसागर क्षु. विश्वाभसागर

तीर्थ वन्दना गुरूवर की गुरूवर के साथ

क्र	वर्ष	अवस्था	तीर्थ का नाम
१.	१९९५	ब्रह्मचारी	सम्मेदशिखर जी

२.	१९९५	ब्रह्मचारी	बनारस जी
३.	१९९५	ब्रह्मचारी	श्री सिद्ध क्षेत्र आहार जी
४.	१९९६	ब्रह्मचारी	अतिशय क्षेत्र पपौरा जी
५.	१९९६	ब्रह्मचारी	अतिशय क्षेत्र द्रोणगिरी जी
६.	१९९६	ब्रह्मचारी	अतिशय क्षेत्र देवगढ़ जी
७.	१९९६	ब्रह्मचारी	अतिशय क्षेत्र
८.	१९९६	ब्रह्मचारी	अतिशय क्षेत्र
९.	१९९६	ब्रह्मचारी	सिद्ध क्षेत्र बड़ा गाँव धसान
१०.	१९९६	ऐलक	अतिशय क्षेत्र श्रेयांसगिरी जी
११.	१९९६	ऐलक	अतिशय क्षेत्र बौहरी बंद
१२.	१९९६	ऐलक	अतिशय क्षेत्र मढ़िया जी
१३.	१९९६	ऐलक	सिद्धक्षेत्र कुण्डलपुर जी
१४.	१९९६	ऐलक	सिद्धक्षेत्र नैनागिर जी
१५.	१९९७	ऐलक	अतिशय क्षेत्र पपौरा जी
१६.	१९९७	ऐलक	अतिशय क्षेत्र करगुँवा जी
१७.	१९९७	ऐलक	सिद्धक्षेत्र सोनागिर जी
१८.	१९९८	मुनि	अतिशय क्षेत्र शौरीपुर वटेश्वर जी
१९.	१९९८	मुनि	अतिशय क्षेत्र फूफ (भिण्ड)
२०.	१९९८	मुनि/ऐलक	वरासौ जी (भिण्ड)
२१.	१९९८	मुनि	अतिशय क्षेत्र वरही जी
२२.	१९९८	मुनि	अतिशय क्षेत्र कोसी जी
२३.	१९९८	मुनि	अतिशय क्षेत्र पावई जी

तीर्थ वंदना संघ नायक के रूप में

क्र	वर्ष	अवस्था	तीर्थ क्षेत्र के नाम
१.	२०००	मुनि	अतिशय क्षेत्र सेरोन जी
२.	२०००	मुनि	अतिशय क्षेत्र क्षेत्रपाल जी
३.	२०००	मुनि	अतिशय क्षेत्र गिरार जी
४.	२०००	मुनि	अतिशय क्षेत्र सीरोन जी
५.	२००१	मुनि	अतिशय क्षेत्र नवागढ़ जी
६.	२००१	मुनि	सिद्ध क्षेत्र बड़ा गाँव धसान
७.	२००१	मुनि	अतिशय क्षेत्र पटनागंज

८.	२००२	मुनि	अतिशय क्षेत्र ईसुरवारा
९.	२००२	मुनि	अतिशय क्षेत्र बीना बारहा (गुरुवर के साथ)
१०.	२००२	मुनि	सिद्ध क्षेत्र नैनागिर जी (म.प्र)
११.	२००२	मुनि	सिद्ध क्षेत्र द्रोण गिरी जी (म.प्र)
१२.	२००२	मुनि	अतिशय क्षेत्र ढ़ेरा पहाड़ी छतरपुर (म.प्र)
१३.	२००२	मुनि	अतिशय क्षेत्र श्रेयांसगिरी जी
१४.	२००३	मुनि	श्रेयांसगिरी जी (म.प्र)
१५.	२००३	मुनि	बालाबेहट जी (म.प्र)
१६.	२००३	मुनि	अतिशय क्षेत्र सेरोन जी (म.प्र)
१७.	२००३	मुनि	अतिशय क्षेत्र क्षेत्रपाल जी (उ.प्र.)
१८.	२००३	मुनि	अतिशय क्षेत्र चंदेरी (अशोकनगर)
१९.	२००३	मुनि	अतिशय क्षेत्र थूवौन जी (म.प्र)
२०.	२००३	मुनि	अतिशय क्षेत्र बजरंगगढ़जी, (गुना)
२१.	२००४	मुनि	अतिशय क्षेत्र बजरंगगढ़जी, (गुना)
२२.	२००४	मुनि	अतिशय क्षेत्र चांदखेड़ी (राज.)
२३.	२००४	मुनि	अतिशय क्षेत्र केशवरायपाटन (राज.)
२४.	२००५	मुनि	अतिशय क्षेत्र केथूली (राज.)
२५.	२००५	मुनि	अतिशय क्षेत्र बिजोलियाँ जी, (राज.)
२६	२००५	मुनि	अतिशय क्षेत्र चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जी (राज.)
२७.	२००६	मुनि	अतिशय क्षेत्र आवाँ जी, (राज.)
२८.	२००७	मुनि	अतिशय क्षेत्र झालरापाटन सिटी(राज.)
२९.	२००७	मुनि	अतिशय क्षेत्र कोलारस शिवपुरी(म.प्र)
३०.	२००८	मुनि	सिद्ध क्षेत्र सोनागिरी जी (म.प्र)
३१.	२००८	मुनि	सिद्ध क्षेत्र गोपाचल जी ग्वालियर(म.प्र)
३२.	२००८	मुनि	अतिशय क्षेत्र फिरोजाबाद (उ.प्र)
३३.	२००८	मुनि	सिद्ध क्षेत्र मथुरा चौरासी (उ.प्र)
३४.	२००९	मुनि	अतिशय क्षेत्र शौरीपुर बटेश्वर
३५.	२००९	मुनि	अतिक्षय क्षेत्र फफोतु (एटा)

३६.	२००९	मुनि	अतिशय क्षेत्र नेमिनाथ जिनालय (एटा)
३७.	२००९	मुनि	अतिशय क्षेत्र महावीर जी (राज.)
३८.	२००९	मुनि	अतिशय क्षेत्र कम्पिल जी (उ.प्र)
३९.	२००९	मुनि	अतिशय क्षेत्र फफोतु (उ.प्र)
४०.	२०१०	मुनि	सिद्ध क्षेत्र मथुरा चौरासी (उ.प्र)
४१.	२०१०	मुनि	अतिशय क्षेत्र चूलगिरी जयपुर (राज.)
४२.	२०१०	मुनि	अतिशय क्षेत्र खाँनिया जी जयपुर,(राज.)
४३.	२०१०	मुनि	अतिशय क्षेत्र सांगानेर जी (राज.)
४४.	२०११	आचार्य	अतिशय क्षेत्र चांदखेड़ी (राज.)
४५.	२०११	आचार्य	अतिशय क्षेत्र बजरंगगढ़ जी (म.प्र)
४६.	२०११	आचार्य	अतिशय क्षेत्र थूबौन जी (म.प्र)
४७.	२०११	आचार्य	अतिशय क्षेत्र चंदेरी (म.प्र)
४८.	२०११	आचार्य	अतिशय क्षेत्र खंदारगिरी जी (म.प्र)
४९.	२०११	आचार्य	अतिशय क्षेत्र सिरोन जी (म.प्र)
५०.	२०११	आचार्य	अतिशय सेसई शिवपुरी (म.प्र)
५१.	२०११	आचार्य	अतिशय क्षेत्र करगुँवा जी (झांसी)
५२.	२०११	आचार्य	अतिशय क्षेत्र जतारा(टीकमगढ़) (म.प्र)
५३.	२०१२	आचार्य	अतिशय क्षेत्र करगुँवा जी (उ.प्र)
५४.	२०१२	आचार्य	अतिशय क्षेत्र गोपाचल जी (म.प्र)
५५.	२०१२	आचार्य	अतिशय क्षेत्र खानिया जी (राज.)
५६.	२०१२	आचार्य	अतिशय क्षेत्र मोजमाबाद (राज)
५७.	२०१२	आचार्य	अतिशय क्षेत्र सोनी जी की नसियां अजमेर (राज.)
५८.	२०१२	आचार्य	अतिशय क्षेत्र बीर, अजमेर (राज.)
५९.	२०१२	आचार्य	अतिशय क्षेत्र चंवलेश्वर पार्श्वनाथ (राज.)
६०.	२०१२	आचार्य	अतिशय क्षेत्र बिजौलियां पार्श्वनाथ (राज.)
६१.	२०१३	आचार्य	अतिशय क्षेत्र चाँदखेड़ी (राज.)

५२.	२०१३	आचार्य	अतिशय क्षेत्र त्रिकाल चौबीसी अशोक नगर (म.प्र.)
६३.	२०१३	आचार्य	अतिशय क्षेत्र थूवौन जी (म.प्र.)
६४.	२०१३	आचार्य	अतिशय क्षेत्र चौबीसी चंदेरी (म.प्र.)
६५.	२०१३	आचार्य	अतिशय क्षेत्र खंदारगिरी जी (म.प्र.)
६६.	२०१३	आचार्य	अतिशय क्षेत्र रामनगर (म.प्र.)
६७.	२०१३	आचार्य	अतिशय क्षेत्र प्राणपुरा (म.प्र.)
६८.	२०१३	आचार्य	अतिशय क्षेत्र सेसई (म.प्र.)
६९.	२०१३	आचार्य	अतिशय क्षेत्र छत्रीमंदिर शिवपुरी(म.प्र.)
७०.	२०१३	आचार्य	अतिशय क्षेत्र पनिहार (म.प्र.)
७१.	२०१३	आचार्य	अतिशय क्षेत्र वरई (म.प्र.)
७२.	२०१३	आचार्य	सिद्ध क्षेत्र सोनागिर जी (म.प्र.)
७३.	२०१३	आचार्य	अतिशय क्षेत्र करगुवाँ (उ.प्र.)
७४.	२०१३	आचार्य	अतिशय क्षेत्र नसियांजी भिण्ड (म.प्र.)

श्रमण साधकों से वात्सल्य मिलन

क्र	वर्ष	स्थान	अवस्था	किनसे मिले
१.	१९९९	मेहगांव	ऐलक	आर्यिका विशाश्री माताजी (गुरू के संघ)
२.	१९९९	भिण्ड	मुनि	आचार्य पुष्पदन्तसागर जी (गुरू संघ)
३.	२०००	तालवेहट	मुनि	मुनिश्री श्रुतसागर जी महाराज मुनिश्री मार्दवनन्दी जी महाराज मुनिश्री अमरनन्दी जी महाराज मुनिश्री वीरसम्राट जी महाराज
४.	२०००	जाखौरा	मुनि	मुनिश्री विश्वकीर्तिसागर जी महाराज ऐलक विनम्रसागरजी महाराज क्षुल्लक विनिश्चलसागरजी महाराज
५.	२०००	महरोनी (ललितपुर)	मुनि	आचार्य श्री पदमनन्दी जी महाराज

				मुनिश्री श्रुतनन्दी जी, मुनि मार्दवनंदी जी मुनिश्री अमरनंदी जी, मुनि विश्वकीर्तिसागर ऐलक विनम्रसागर, क्षु. विनिश्चलसागर
६.	२००१	घुवारा (म.प्र)	मुनि	मुनिश्री विमदसागर जी महाराज क्षुल्लक श्री कुन्दकुन्दसागर जी
७.	२००१	शाहगढ़ म.प्र	मुनि	श्री विशुद्धसागर जी महाराज मुनिश्री विशल्यसागर जी मुनिश्री विश्ववीरसागर जी
८.	२००१	शाहगढ़	मुनि	क्षुल्लक श्री रत्नकीर्ति जी महाराज
९	२००१	अमरपाटन	मुनि	उपाध्याय आत्मासागर जी
१०.	२००१	सागर (म.प्र)	मुनि महाराज	बालाचार्य बाहुबलिसागर जी
११.	२००२	बरौदिया	मुनि	मुनिश्री विशदसागर जी महाराज

श्रमण साधकों से वात्सल्य मिलन

क्र	वर्ष	स्थान	अवस्था	किनसे मिले
१	२००२	सिलवानी	मुनि	आचार्य गुरुवर विरागसागर जी महाराज
२.	२००३	श्रेयांसगिरी	मुनि	आचार्य गुरुवर विरागसागर जी महाराज
३.	२००३	बीना	मुनि	आचार्य गुरुवर विरागसागर जी महाराज
४.	२००३	ललितपुर	मुनि	आचार्य गुरुवर विरागसागर जी महाराज
५.	२००३	ललितपुर	मुनि	मुनि श्री विशदसागर जी

६.	२००३	ललितपुर	मुनि	मुनि श्री विहर्षसागर जी
७.	२००३	ललितपुर	मुनि	मुनि श्री विश्वरत्नसागर जी
८.	२००३	ललितपुर	मुनि	आर्यिका विभाश्री माता जी
९.	२००३	ललितपुर	मुनि	मुनि श्री विनम्रसागर जी क्षुल्लक श्री विधेयसागर जी क्षुल्लक श्री विशारदसागर जी
१०.	२००३	ललितपुर	मुनि	आर्यिका विशाश्री माता जी
११.	२००३	खुर्रई	मुनि	आर्यिका भावनामति जी (आ. विद्यासागर जी)
१२.	२००३	खुरई	मुनि	आर्यिका प्रभावनामति (आ. विद्यासागर जी)
१३.	२००३	रिदमलाशा	मुनि	आर्यिका विभाश्री माताजी
१४.	२००३	चंदेरी	मुनि	मुनि स्वभावसागर (आ. विद्यासागर जी)
१५.	२००२	शाहगढ़	मुनि	आ. देवनन्दी जी महाराज
१६.	२००२	रहली	मुनि	मुनि श्री वैराग्यनन्दी जी महाराज
१७.	२००२	रहली	मुनि	मुनि श्री तीर्थनन्दी जी महाराज
१८.	२००२	रजवांस	मुनि	आर्यिका आदर्शमति जी (आ. विद्यासागर जी)
१९.	२००२	रजवांस	मुनि	उपाध्याय विद्यासागर जी
२०.	२००२	सागर	मुनि	मुनिश्री विनिश्चयसागर जी
२१.	२००३	श्रेयांसगिरी	मुनि	मुनिश्री विनिश्चयसागर जी
२२.	२००२	सागर	मुनि	ऐलक विनम्रसागर जी महाराज
२३.	२००४	अशोकनगर	मुनि	मुनिश्री विनम्रसागर जी
२४.	२००४	अशोकनगर	मुनि	आर्यिका विज्ञानमति माताजी
२५.	२००४	कोटा	मुनि	आचार्य श्री विवेकसागर जी
२६.	२००४	कोटा	मुनि	क्षुल्लक विशुद्धसागर जी
२७.	२००४	भवानीमण्डी	मुनि	मुनि श्री स्वभावसागर जी
२८.	२००४	बूँदी	मुनि	मुनि विनम्रसागर जी
२९.	२००५	बेगू	मुनि	मुनि विप्रणसागर जी

३०.	२००५	भीलवाड़ा	मुनि	मुनिश्री विनम्रसागर जी
३१.	२००५	जोगणियाँ/घाटा	मुनि	उपाध्याय आत्मासागर जी
३२.	२००५	देई (राज.)	मुनि	आर्यिका अक्षयमति माता जी
३३.	२००६	नैनवां	मुनि	क्षुल्लक पद्मसागर जी
३४.	२००६	कोटा	मुनि	मुनि विप्रणसागर जी, ऐलक विनीतसागर जी
३५.	२००६	कोटा	मुनि	उपाध्याय संयमसागर जी
३६.	२००६	कोटा	मुनि	क्षुल्लक पद्मसागर जी
३७.	२००६	बूँदी	मुनि	आर्यिका सुविश्वासमति माताजी
३८.	२००७	शिवपुरी	मुनि	मुनिश्री प्राणतसागर जी
३६.	२००७	शिवपुरी	मुनि	आचार्य विवेकसागर जी
४०.	२००८	शिवपुरी	मुनि	क्षुल्लक प्रयागसागर जी
४१.	२००८	सोनागिर	मुनि	मुनि श्री कीर्तिसागर जी
४२.	२००८	आगरा	मुनि	आचार्य श्री कुमुदनन्दी जी
४३.	२००६	आगरा	मुनि	मुनिश्री अमरनन्दी जी
४४.	२००६	एटा उ.प्र	मुनि	आचार्य श्री गुप्तिनन्दी जी
४५.	२००६	पचौखरा	मुनि	आचार्य श्री सौभाग्यसागर जी
४६.	२००६	पचौखरा	मुनि	मुनिश्री प्राणतसागर जी
४७.	२००६	बयाना	मुनि	मुनिश्री युधिष्ठिरसागर जी
४८.	२००६	महावीरजी	मुनि	आर्यिका सुनयमति माता जी
४६.	२००६	मथुरा चौरासी	मुनि	मुनिश्री शिवसागर जी
५०.	२००६	महुआँ	मुनि	मुनिश्री युधिष्ठिरसागर जी
५१.	२०१०	जयपुर	मुनि	आचार्य श्री भरतसागर जी (गुजरात केशरी)
५२.	२०१०	रैनवाल	मुनि	ऐलाचार्य नवीनसागर जी
५३.	२०१०	मालपुरा	मुनि	मुनिश्री मार्दवनन्दी जी
५४.	२०१०	मालपुरा	मुनि	मुनि श्री इन्द्रनन्दी जी
५५.	२०१०	मालपुरा	मुनि	मुनि श्री विजयसागर जी
५६.	२०१०	मालपुरा	मुनि	मुनि श्री कंचनसागर जी

५७.	२०१०	उदयपुर	मुनि	मुनिश्री विनम्रसागर जी मुनिश्री विधेयसागर जी
५८.	२०१०	उदयपुर	मुनि	आचार्य श्री विरागसागर जी
५६.	२०१०	उदयपुर	मुनि	मुनिश्री प्रबलसागर जी
६०.	२०१०	उदयपुर	मुनि	आचार्य विपुलसागर जी
६१.	२०१०	उदयपुर	मुनि	मुनिश्री रविसागर जी
६२.	२०१०	उदयपुर	मुनि	मुनिश्री धैर्यसागर जी
६३.	२०१०	उदयपुर	मुनि	मुनिश्री निरंजनसागर जी
६४.	२०१०	डूँगरपुर	मुनि	क्षुल्लक अतुल्यसागर जी
६५.	२०१०	लुहारिया	मुनि	आचार्य गुरुवर विरागसागर जी
६६.	२०१०	लुहारिया	मुनि	आर्यिका सत्यमति जी
६७.	२०१०	लुहारिया	मुनि	आर्यिका सरलमति जी
६८.	२०१०	लुहारिया	मुनि	आर्यिका भरतेश्वरमति जी
६६.	२०१०	लुहारिया	मुनि	आर्यिका नन्दीश्वरमति जी
७०.	२०१०	लुहारिया	मुनि	आर्यिका वीरमति जी
७१.	२०१०	बाँसवाड़ा	मुनि	मुनि श्री विनम्रसागर जी
७२.	२०१०	बाँसवाड़ा	मुनि	आर्यिका सकलमति जी
७३.	२०१०	बाँसवाडा	मुनि	आर्यिका नन्दीश्वरमती जी आर्यिका भरतेश्वरमति जी
७४.	२०१०	बाँसवाडा	मुनि	आर्यिका वीरमति जी
७५.	२०१०	बाँसवाडा	मुनि	क्षुल्लक विभजनसागर जी
७६.	२०१०	बाँसवाडा	मुनि	क्षुल्लक विरंजनसागर जी

श्रमण साधकों से वात्सल्य मिलन-आचार्यपद के वाद

क्र	सन	स्थान	अवस्था	किनसे मिले
१.	२०१०	बाँसवाडा	आचार्य	प.पू. सूरिगच्छाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज
२.	२०१०	बाँसवाडा	आचार्य	आर्यिका सत्यमति जी
३.	२०१०	बाँसवाडा	आचार्य	आर्यिका सकलमति जी
४.	२०१०	बाँसवाडा	आचार्य	आर्यिका नन्दीश्वरमति जी

५.	२०१०	बाँसवाडा	आचार्य	आर्यिका भरतेश्वरमति जी
६.	२०१०	बाँसवाडा	आचार्य	आचार्य श्री विनम्रसागर जी
७.	२०१०	बाँसवाडा	आचार्य	क्षुल्लक अतुल्यसागर जी
८.	२०१०	बाँसवाड़ा	आचार्य	क्षुल्लक विरंजनसागर जी
९.	२०१०	बाँसवाडा	आचार्य	क्षुल्लक विभंजनसागर जी
१०.	२०११	नीमच	आचार्य	आर्यिका सुभूषणमति माता जी
११.	२००१	प्रतापगढ़	आचार्य	आचार्य श्री सच्चिदानन्द जी महाराज
१२.	२०११	सिंगोली	आचार्य	आर्यिका विज्ञानमति माता जी
१३.	२०११	कोटा	आचार्य	मुनिश्री विप्रणसागर जी
१४.	२०११	सांगोद	आचार्य	क्षुल्लक श्री नयसागर जी
१५.	२०११	छबड़ा	आचार्य	मुनिश्री प्रबलसागर जी
१६.	२०११	चांदखेड़ी	आचार्य	आर्यिका सृष्टिभूषण माता जी
१७.	२०११	रूठियाई	आचार्य	ऐलक सिद्धान्तसागर जी
१८.	२०११	खंदारगिरी	आचार्य	मुनि निर्वाणसागर जी
१९.	२०११	पिपरई	आचार्य	मुनि श्री सुव्रतसागर जी
२०.	२०११	अशोकनगर	आचार्य	आर्यिका सरस्वतीभूषण माताजी
२१.	२०११	अशोकनगर	आचार्य	क्षु. शांतिभूषण माताजी
२२.	२०१२	जतारा	आचार्य	आ. विशुद्धसागर जी
२३.	२०१२	जतारा	आचार्य	मुनि विश्वलोचनसागर जी
२४.	२०१२	पृथ्वीपुर	आचार्य	मुनि विश्वलोचनसागर जी मुनि विश्वरत्नसागर जी अर्थिका विशा श्री माताजी
२५.	२०१२	पृथ्वीपुर	आचार्य	आचार्य विभवसागर जी
२६.	२०१२	वरूआ सागर		आचार्य मुनि विनिश्चलसागर जी
२७.	२०१२	सोनागिरी जी	आचार्य	आचार्य गुरूवर विरागसागरजी
२८.	२०१२	सोनागिरी जी	आचार्य	मुनि विहर्षसागर जी
२९.	२०१२	सोनागिरी जी	आचार्य	मुनि अमितसागर जी
३०.	२०१२	सोनागिरी जी	आचार्य	आर्थिका ज्ञानमति माताजी
३१.	२०१२	सोनागिरी जी	आचार्य	क्षु. ज्ञानभूषण जी

३२.	२०१२	सोनागिरी जी	आचार्य	आ. विशा श्री माता जी
३३.	२०१२	सोनागिरी जी	आचार्य	आ. विभा श्री माता जी
३४.	२०१२	सोनागिरी जी	आचार्य	आ.विशाखा श्री माता जी
३५.	२०१२	सोनागिरी जी	आचार्य	मुनि विश्वयससागर जी
३६.	२०१२	सोनागिरी जी	आचार्य	आर्थिका सरलमति जी
३७.	२०१२	ग्वालियर	आचार्य	मुनि विहर्षसागर जी
३८.	२०१२	मुरैना	आचार्य	मुनि विनिश्चयसागर जी
३९.	२०१२	आगरा	आचार्य	मुनि विश्वरत्नसागर जी मुनि विश्वदृष्टासागर जी
४०.	२०१२	आगरा	आचार्य	आचार्य सुन्दरसागर जी
४१.	२०१२	महुवा	आचार्य	मुनि युधिष्ठिरसागर जी
४२.	२०१२	चूलगिरी	आचार्य	आचार्य विशुद्धसागर जी
४३.	२०१२	चूलगिरी	आचार्य	आचार्य विभवसागर जी
४४.	२०१२	चूलगिरी	आचार्य	अर्यिका विशाश्री माताजी
४५.	२०१२	चूलगिरी	आचार्य	आर्यिका विभाश्री माताजी
४६.	२०१२	जयपुर	आचार्य	आचार्य विरागसागर जी
४७.	२०१२	जयपुर	आचार्य	आर्यिका विन्ध्यश्री माताजी
४८.	२०१२	जयपुर	आचार्य	आचार्य विमदसागर जी
४९.	२०१२	जयपुर	आचार्य	मुनि विश्रुतसागर जी
५०.	२०१२	जयपुर	आचार्य	मुनि विशेषसागर जी
५१.	२०१२	जयपुर	आचार्य	आचार्य विशोकसागर जी
५२.	२०१२	जयपुर	आचार्य	आर्यिका सम्मेदशिखर जी
५३.	२०१२	जयपुर	आचार्य	आर्यिका गरिमामति,आर्यिका गम्भीर मतिजी, क्षुल्लक अतुल्यसागर जी
५४.	२०१२	मौजमाबाद	आचार्य	उपाध्याय ऊर्जयन्तसागर जी
५५.	२०१२		आचार्य	मुनि श्री देवेन्द्रसागर जी
५६.	२०१२	जयपुर	आचार्य	आर्यिका विश्राश्री माताजी
५७.	२०१२	जयपुर	आचार्य	मुनि विनर्घ्यसागर जी

५८.	२०१२	जयपुर	आचार्य	मुनि श्री विनिश्चयसागर जी
५६.	२०१२	जयपुर	आचार्य	मुनि श्री विर्ध्वसागर जी
६०.	२०१२	जयपुर	आचार्य	आर्यिका विशाखा जी माताजी
६१.	२०१२	जयपुर	आचार्य	आर्यिका विशिष्ट श्री माताजी
६२.	२०१२	जयपुर	आचार्य	आर्यिका विदूषी श्री माताजी
६३.	२०१२	केकड़ी	आचार्य	मुनि श्री देवेन्द्रसागर जी
६४.	२०१२	मौजमाबाद	आचार्य	उपाध्याय अर्जयन्तसागर जी
६५.	२०१२	अजमेर	आचार्य	मुनि श्री विज्ञानसागर जी
६६.	२०१२	अजमेर	आचार्य	मुनि श्री विशुद्धसागर जी
६७.	२०१२	महुआ	आचार्य	मुनि श्री विप्रसागर जी
६८.	२०१३	कोटा	आचार्य	आचार्य श्री विमदसागर जी ससंघ
६६.	२०१३	चाँदखेड़ी	आचार्य	मुनि श्री चिन्मयसागर जी (जंगल वाले बाबा)
७०.	२०१३	चाँदखेड़ी	आचार्य	मुनि श्री प्राप्तिसागर जी
७१.	२०१३	चाँदखेड़ी	आचार्य	अर्यिका सृष्टीभूषण माताजी ससंघ
७२.	२०१३	चंदेरी	आचार्य	मुनि श्री वृषभसागर जी
७३.	२०१३	चंदेरी	आचार्य	मुनि श्री स्वयंभुसागर जी
७४.	२०१३	चंदेरी	आचार्य	उपाध्याय उदारसागर जी ससंघ
७५.	२०१३	पनिहार	आचार्य	क्षुल्लक जी
७६.	२०१३	सोनागिर जी	आचार्य	आचार्य चन्द्रसागर जी ससंघ
७७.	२०१३	झांसी	आचार्य	आचार्य चन्द्रसागर जी ससंघ
७८.	२०१३	पृथ्वीपुर	आचार्य	मुनि श्री विनिश्चय सागरजी ससंघ
७६.	२०१३	करगुवाँ जी	आचार्य	आचार्य चन्द्रसागर जी ससंघ/ मुनि श्री विनिश्चय सागरजी ससंघ
८०.	२०१३	भिण्ड	आचार्य	मुनि श्री सुरत्नसागर जी ससंघ
८१.	२०१३	भिण्ड	आचार्य	मुनि श्री विश्वनेमीसागर जी
८२.	२०१४	एटा	आचार्य	आचार्य श्री नमिसागरजी
८३.	२०१४	एटा	आचार्य	आचार्य श्री सुंदरसागरजी
८४.	२०१४	फिरोजाबाद	आचार्य	मुनि श्री अमितसागरजी
८५.	२०१४	फिरोजाबाद	आचार्य	मुनि श्री तरूणसागर जी

शुभकामना सन्देश

आदरणीय श्री कपूरचन्द्रजी बंसल, सेवानिर्वत्त प्रधानाध्यापक द्वारा रचित नवीन कृति *"जतारा का ध्रुवतारा"* बहुत ही लोक प्रिय पारदर्शी एवं धार्मिक समरसता को लिये हुए है। कृति की भाषा मधुर है।

परम पूज्य आचार्य श्री विमर्शसागरजी महाराज नगर जतारा के इतिहास में मील का पत्थर हैं। इनके ज्ञान से पूरा राष्ट्र देदीप्यमान एवं संस्कारित होगा। ऐसी हम आशा करते हैं। जतारा के जन्में पूज्य आचार्यश्री ज्ञान एवं संस्कारों के भंडार हैं। इसका मुझे गर्व हे।

लेखक के लिए मेरी शुभकमानायें।

पं. जगदीश शरण नायक

अध्यक्ष : नगर पंचायत

जतारा, जिला–टीकमगढ़ (म.प्र.)

शुभकामना सन्देश

अत्यन्त हर्ष का विषय है कि जतारा नगर के साहित्यकार सम्मानीय श्री कपूरचन्द्रजी बंसल द्वारा आचार्य श्री विमर्शसागरजी के जीवन वृतान्त पर आधारित पुस्तक ***"जतारा का ध्रुवतारा"*** की रचना की जा रही है।

मैं गौरवान्वित महसूस करता हूँ उन क्षणों को याद कर जो मैंने आचार्य श्री राकेशजी के साथ गुजारे हैं मैं धन्य हुआ या मेरे पुण्य कर्म रहे होंगे, जिसकी वजह से मुझे सन् 1980 से 1992 तक आचार्यश्री के साथ रहने, खेलने-कूदने का लाभ मिला सन् 1992 में मैं शिक्षा के लिए सागर चला गया और आचार्यश्री टीकमगढ़ शिक्षा ग्रहण करने हेतु चले गये। उस समय तक श्री राकेशजी की रूचि शिक्षा के साथ बैडमिन्टन खेलने में भी थी। मुझे लम्बे समय तक राकेशजी के साथ खेलने का अवसर मिला।

आज आचार्यश्री की ख्याती उसकी मृदुभाषित एवं योग्यता के कारण शनैः-शनैः सम्पूर्ण देश में फैल रही है, मेरे साथ-साथ "जतारा" भी अपने आपको सौभाग्यशाली समझता है जिसने ऐसी प्रतिभा को जन्म दिया जो प्रत्येक व्यक्ति को अंधेरे से उजाले की ओर प्रेरित करती है।

मैं सादर नमन करना चाहता हूँ आदरणीय कपूरचन्द्रजी बंसल को जिन्होंने उम्र के इस पड़ाव में भी अपनी लेखनी से ***"जतारा का ध्रुवतारा"*** कृति रचकर अनुपम, अद्वितीय, अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया हैं।

शुभकामनाओं सहित...

नवीन साहू

ग्रामीण कांग्रेस जिला अध्यक्ष, जतारा

शुभकामना सन्देश

परम पूज्य आचार्य श्री विमर्शसागरजी महाराज (पूर्व नाम बा.ब्र. श्री राकेश भैयाजी) के ग्रहस्थावस्था के परिवार से मेरा निकट का संबंध होने के कारण मैं परम पूज्य महाराज श्री को बचपन से भली प्रकार जानता हूँ।

परम पूज्य महाराजश्री बचपन से ही कुशाग्र वृद्धि के एवं प्रगतिशील विचारों के रहे है। सन् 1995 के जतारा श्री पंचकल्याणक महोत्सव के शुभावसर पर परम पूज्य आचार्य श्री विरागसागरजी महाराज के प्रथम बार दर्शन करने, उनके सदुपदेश सुनने एवं उनकी दैनिकचर्या का अवलोकन करने पर उनकी दिशा और दशा दोनों ही बदल गई तथा उन्हीं परम पूज्य आचार्यश्री के सान्निध्य में साधना करते हुये आज महाराजश्री आचार्य पद पर प्रतिष्ठित हो गये हैं। जो हम सबको एवं नगर जतारा के लिए गौरव की बात है।

परम पूज्य आचार्य श्री विमर्शसागरजी महाराज के जीवन दर्शन पर ***"जतारा का ध्रुवतारा"*** पुस्तक लिखकर नगर जतारा के वरिष्ठ साहित्य एवं समाजसेवी श्री कपूरचन्दजी जैन 'बंसल' ने अपनी कलम के साथ-साथ अपने को भी कृतार्थ किया है। मेरी पुस्तक एवं लेखक के लिये हार्दिक शुभकामनायें प्रेषित है।

शुभकामनाओं सहित...

महेशचन्द्र जैन (व्या.)

पूर्व अध्यक्ष : नगरपालिका परिषद, जतारा
पूर्व उपाध्यक्ष : जिला कांग्रेस (इ.), टीकमगढ़

शुभकामनायें एवं साधुवाद

श्री कपूरचन्दजी जैन 'बंसल', अध्येता, साधक तथा अत्यंत सरलमना विभूति हैं। उनके लेखन से एवं उनकी वाणी से उनका सहज, सरल जीवन किंतु कलम की प्रखरता परिलक्षित होती है। ***"जतारा का ध्रुवतारा"*** अल्पता से दिव्यता एवं अज्ञान से आत्म-ज्ञान-पथ की गौरव-गाथा है। दृष्टि बदलती है तो सृष्टि बदल जाती है। माता-पिता के पुण्य-प्रताप से, भाई राकेशजी की दृष्टि बदली तो सृष्टि ने उन्हें आचार्य श्री विमर्शसागरजी के रूप में निर्वाण का सहचर बना दिया। आशा है, यह गौरव-गाथा हम सबको कैवल्य पथ पर अग्रसर होने की सद्प्रेरणा देती रहेगी इस दिव्य चरित्र को, सर्वसाधारण के लिये प्रकाशित करने हेतु आदरणीय 'बंसलजी' सचमुच साधुवाद के पात्र हैं। वंदना के स्वर एक मुक्तक के रूप में प्रस्तुत हैः-

मुक्तक

नगर जतारा धन्य है, है कृत-कृत्य समाज।
श्री विमर्शसागर बने, सबके प्रिय मुनि-राज।।
सबके प्रिय मुनिराज, कटेंगे अब भव-बंधन।
इस अनुपम कृति का करते शत्-शत् अभिनंदन।।
तीन 'गुप्तियाँ', पाँच समिति अरु पंच महाव्रत।
सप्त तत्व का वरण, हुये 'राकेश' अलंकृत।।

हार्दिक शुभकामनाओं एवं साधुवाद सहित...

हरिबाबू शर्मा 'प्रचण्ड'

संपादक : मानस-मंजरी एवं मानसेवी सचिव

श्री रामचरित मानस समिति, जतारा (टीकमगढ़)

समाज में व्याप्त कुसंस्कारों को मिटाने के लिए ही संत महापुरुषों का जन्म होता है। और बड़े ही हर्ष का विषय है कि परम पूज्य आचार्य श्री विमर्शसागरजी महाराज जिनकी जन्म-स्थली नगर जतारा, जिला-टीकमगढ़ है और सारे राष्ट्र में जतारा के नाम को विख्यात कर गौरवान्वित कर रहे हैं ऐसे महानतम संत के जीवन परिचय को ***"जतारा का ध्रुवतारा"*** के माध्यम से लेखक श्री कपूरचन्द्रजी बंसल, रिटायर्ड शिक्षक, जतारा द्वारा प्रशंसनीय कार्य किया है। मेरी ओर से कोटिशः शुभकामनाऐं प्रेषित हैं।

धन्यवाद !

शुभकामनाओं सहित...

सुरेश दुबे एडवोकेट 'नुनाजी'

पूर्व अध्यक्ष : अधिवक्ता संघ, जतारा

प्रमुख ट्रस्टी : गायत्री शक्तिपीठ, जतारा

परम श्रद्धेय श्री बंसलजी,

सादर प्रणाम !

ज्ञात हुआ है कि आपके द्वारा परम पूज्य आचार्य श्री 108 विर्मशसागरजी महाराज जो कि नगर जतारा के गौरव पुंज है। श्री राकेश भैयाजी के जीवन पर आधारित पुस्तक ***"जतारा का ध्रुवतारा"*** की रचना की जा रही है। मेरा ऐसा विश्वास है कि उपरोक्त पुस्तक ***"जतारा का ध्रुवतारा"*** समाज के लिए एक प्रेरणा मूलक स्रोत बनकर आध्यात्म का दर्शन बनेगी। आपके प्रयास हेतु मेरी ओर से अभूतपूर्व शुभकामनायें।

भवदीय

रमेश पाठक

एडवोकेट : सिविल कोर्ट, जतारा

पूर्व अध्यक्ष

अभिभावक संघ, जतारा

आपके द्वारा लिखित "जतारा का ध्रुवतारा" पुस्तक जतारा नगर के गौरव पुंज परम पूज्य आचार्य श्री विमर्शसागरजी महाराज के जीवन का चित्रण कवि हृदय श्री कपूरचन्दजी बंसल द्वारा लिखित पुस्तक कड़ी मेहनत एवं अत्याधिक परिश्रम से लिखि गई। श्री बंसल इसके लिये साधुवाद एवं मेरी हार्दिक शुभकामनाऐं है। वह स्वस्थ एवं दीर्घ आयु हों, यही मंगल कामना करता हूँ।

आपने परम पूज्य आचार्यश्री का पुण्य चरित लिखकर महापुण्य अर्जित किया ही है, समाज को भी पुण्यार्जन का अवसर प्रदान किया है।

शुभकामनाओं सहित...

डॉ. डी.के. जैन

चिकित्सा अधिकारी, जतारा

आदरणीय श्री कपूरचन्दजी बंसल एक अपने आप में एक प्रभावी व्यक्त्वि के साथ एक संस्था सदृश है, जिन्होंने कई प्रतिभाओं को निखारा है- सृजन किया है, तराशा है। जिसमें मैं भी उनका एक शिष्य हूँ।

परम पूज्य आचार्य श्री 108 विमर्शसागरजी महाराज के जीवन पर आधारित ***"जतारा का ध्रुवतारा"*** के लेखन के लिऐ उनको हार्दिक बधाई और शुभकामनाओं जैसे शब्दों से सम्मानित तो करूँगा ही साथ ही उनके सृजन और श्री बंसलजी के चरणों में अपना मस्तक नत भी करूँगा और सदैव करता रहूँगा।

शुभकामनाओं सहित...

सुभाष सिंघई 'पत्रकार'

पूर्व अध्यक्ष

श्री दिगम्बर जैन समाज, जतारा

परम पूज्य गुरुवर के चरण वन्दन एवं

शुभकामना सन्देश

परम पूज्य आचार्य श्री,

श्री गुरुवर विमर्शसागरजी।

तुम्हें शत्-शत् नमन,

तुम्हें शत शत नमन॥

मुझे हार्दिक ख़ुशी है। कि-

कंकर पत्थर बहुत यहाँ पर,

हीरा एक चमक पाया।

श्री विराग सागरजी ने,

इनके मन को लखपाया॥

धन्य हुई जतारा नगरी,

रत्नात्रय का द्वार रे।

रत्नात्रय का हार रे॥

आदरणीय बंसलजी ने जो ***"जतारा का ध्रुवतारा"*** पुस्तक रची है। वह आध्यात्मिक तथा शिक्षाप्रद है।

वह धर्मात्मा एवं समाज प्रेमी बन्धु हैं। 'बंसल' वंश का नाम ऊँचा करने वाले शल्य को दूर करने वाले है। सबको जय जिनेन्द्र!

निवेदक

सवाई सिंघई, प्रकाशचन्द्र जैन कोठादार

एडवोकेट, जतारा, जिला-टीकमगढ़ (म.प्र.)

अभिमत

श्री कपूरचन्द्रजी जैन बंसल, जतारा (टीकमगढ़) द्वारा परम पूज्य आचार्य श्री विमर्शसागरजी महाराज (नगर जतारा के गौरव पुंज श्री राकेश भैया) के जीवन पर आधारित पुस्तक ***"जतारा का ध्रुवतारा"*** की रचना सर्वजन हिताय सुन्दर प्रयास है।

लेखक के यशस्वी जीवन की कामना के साथ...

शुभकामनाओं सहित...

रामसहाय 'नागरिक', जतारा

एम.ए., एम.एड., स्वतंत्रता संग्राम, सैनानी एवं वरिष्ठ साहित्यकार

शुभकामना सन्देश

यह जानकार बहुत हर्ष हो रहा है कि आप जतारा में जन्में, पले, बढ़े, एवम् पढ़े सन् 1995 तक राकेश जैन आत्मज श्री सनतकुमार की पहिचान रखने वाले, आज के परम पूज्य आचार्य श्री विमर्शसागरजी महाराज की जीवन गाथा ***"जतारा का ध्रुवतारा"*** शीर्षक से प्रकाश में ला रहे हैं, इस पुनीत कृत्य के लिये बधाई देता हूँ, शुभकामनायें स्वीकारें।

शुभकामनाओं सहित...

विनोद खरे

सेवानिव्रत प्रधानाध्यापक, जतारा
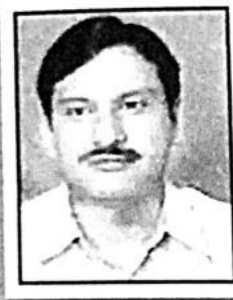
अत्यन्त हर्ष का विषय है कि नगर के वरिष्ठ साहित्यकार सम्मानीय श्री कपूरचन्द्रजी बंसल सेवानिवृत्त प्रधानाध्यापक द्वारा परम पूज्य आचार्य श्री विमर्शसागरजी महाराज के जीवन वृतान्त पर आधारित पुस्तक ***"जतारा का ध्रुवतारा"*** पर अपनी सुदृढ़ लेखनी चला रहे हैं।

यह भी हर्ष व गौरव का विषय है कि जब आचार्यवर अपने विद्यार्थी जीवन के दौरान शा. बालक उ.मा. विद्यालय, जतारा में अध्ययनरत रहे, उस समय मैं इस संस्था में व्याख्याता (भौतिकी) के रूप में अध्यापन कार्य में संलग्न रहा। उस समय श्री राकेश भैयाजी मितभाषी, सुसंस्कृत, सदाचारी सभी व्यसनों से मुक्त प्रखर छात्र के रूप में अध्ययनरत् रहे हैं। आज तो उन्होंने स्वयं भी कविता संग्रह, गजल संग्रह एवं लेख आदि से समाज को मार्गदर्शन प्रदान किया है और साधना में निरन्तर उत्कृष्ट पथ पर अग्रसर हैं।

"जतारा का ध्रुवतारा" पुस्तक का शीर्षक भी सर्वथा बहुत ही उपयुक्त एवं सटीक है। इसमें आदरणीय श्री बंसलजी द्वारा लिया गया विषय प्रशंसनीय एवं सराहनीय है। श्री बंसलजी जैसे कृतिकार द्वारा अनुपम एवं अद्वितीय प्रस्तुति हेतु मैं हार्दिक बधाई एवं शुभकामनायें देता हूँ।

एच.एस. चौहान, जतारा (म.प्र.)
प्राचार्य : शा. हाई स्कूल, देवराहा,
जिला–टीकमगढ़ (म.प्र.)

परम श्रद्धेय आचार्य श्री 108 विमर्शसागरजी महाराज को कोटि-कोटि नमन करते हुये दो शब्द

कस्बा जतारा, जिला-टीकमगढ़ में जन्म लेने वाले श्री राकेशकुमार जैन पुत्र श्री सनतकुमार जैन, मुहल्ला संजय संतजी, जतारा एक सामान्य परिवार में पले हुये है। सामान्य स्थिति से शिक्षा ग्रहण करते हुये मेरे प्रिय शिष्यों में रहे एक अद्‌भुत स्वप्न की कहानी बन गये हैं।

यह बात अलग है कि इनमें शिक्षा के प्रति लगाव, गुरुओं के प्रति सम्मान, कर्त्तव्य के प्रति जागरूकता थी एवं स्वभाव में सरलता थी।

मैं फरवरी, 1995 में बृज की तीर्थयात्रा से वापिस आया तो मुनिश्री के साथियों ने बताया कि 'सर' राकेश दीक्षित होकर चले गये और माता-पिता, भाई-बहिन, रिश्तेदारों के समझाने बुझाने से भी नहीं माने तो मुझे लगा कि जब, श्री विमर्शसागरजी प्रथम बार जतारा पधारेंगे तो मैं समझाऊँगा वह आये, लेकिन मुझ जैसे लौकिक शिक्षा के शिक्षक के सभी प्रयास बेकार हो गये और मैंने भी मान लिया कि वह जीत गये हैं।

अब मैं चिंतन करता रहा कि क्या हो गया है, राकेश जैन को, कौन-सी मानसिक ग्रंथी खुल गई कि वह एक परिवार से संसार को परिवार बना चुके हैं। धन्य है राकेश जिन्होंने इस कस्बा जतारा का मान बढ़ाया। हम सभी का मान बढ़ाया और जगत गुरु श्रद्धेय आज वह सभी के है और सभी के पथ-प्रदर्शक है। आत्मा-परमात्मा को एक रूप में बांधने वाले सूर्य को क्या दीपक दिखाऊँ सागर को दो बूँद जल अब उनकी स्मृति एवं सम्मान में है मेरे दो बूंद आँसू.....

शुभकामनाओं सहित...

ए.बी. श्रीवास्तव

से.नि. प्राचार्य, संजय संत सदन, जतारा

हार्दिक शुभकामनायें

मेरा एवं परम पूज्य आचार्य श्री विमर्श सागरजी महाराज (पूर्व नाम बा.ब्र. श्री राकेश भैयाजी) ने मेरे साथ जैन नवयुवक मण्डल, जतारा (टीकमगढ़) में रहकर सांस्कृतिक कार्यक्रमों की श्रृंखला में मैना सुन्दरी, वैराग्य की ओर सती मनोरमा, अंजन चोर आदि अनेक नाटक में केन्द्रीय पात्र के रूप में ''मैना सुन्दरी'', ''राजुल'' का जीवंत अभिनय किया है, जो चिरस्मरणीय है।

पूज्य आचार्यश्री के जीवन पर आधारित ***''जतारा का ध्रुवतारा''*** पुस्तक के लेखक मैं अपने गुरुवर वरिष्ठ साहित्यकार, समाज सेवा के माध्यम से संतोष प्राप्त करने वाले श्री कपूरचन्द्रजी बंसल को मैं हार्दिक बधाई देता हूँ।

श्री बंसलजी अथक् परिश्रम से इस पुस्तक के प्रकाशित होने पर आत्मयाधिक गौरव का अनुभव कर रहा हूँ। विश्वास है आप इसे पसंद करेंगे और आशीर्वाद देंगे।

शुभकामनाओं सहित...

स्वतंत्रकुमार जैन

जतारा (टीकमगढ़)

मुझे याद है कि श्री राकेशजी वह कक्षा 7वीं में अध्ययन कर रहे थे उसी दौरान पढ़ाने के बाद उनके अन्दर जिज्ञासा जागी और उन्होंने उत्प्रेरक शब्द को पुन: समझाने के लिये मुझसे कहा- मुझे बहुत प्रसन्नता हुई; तब मैंने उच्च कक्षा की तरह उन्हें उत्प्रेरक के प्रकार एवं प्रभाव पर विस्तृत ज्ञान दिया। मैंने मध्यान्तर में बैठकर सोचा कि ये छात्र बढ़कर उच्च शिखर पर निश्चित पहुँचेगा एवं अपने परिवार गाँव का नाम रोशन करेगा; क्योंकि उसकी अध्ययन शीलता, योग्यता, सोच अन्य छात्रों से हटकर देखी थी, आज वह दिन याद आते है जिसमें मेरी सोच को सत्यता में बदल दी।

श्री कपूरचन्दजी बंसल जैन ने उनके बारे में जो पुस्तक प्रतीक के रूप में प्रयास किया वह एक सच्चे समाज सेवक के रूप में मार्गदर्शक सिध्द होंगे।

शुभकामनाओं सहित...

रामरतन दीक्षित

शिक्षक : शा. उत्कृष्ट उ.मा. विद्यालय

जतारा, टीकमगढ़ (म.प्र.)

शत्-शत् वन्दन 'अभिनन्दन'

महाराजजी से हमारा ज्यादा मेल-मिलाप विद्या अध्ययन के समय से रहा है। वैसे तो आप हमारे अति निकट के पडोसी रहे हैं। इस कारण आप हमारे पास बहुत आया करते थे। हमारा उनका गुरु शिष्य का नाता रहा है। आप बड़ी लगन और परिश्रम से पढ़ाई किया करते थे। आप उस समय जो बात कहा करते थे, बोलने की वाणी में बड़ा मिटास था, कभी कठोर बोली न ही थी बड़ी मृदुल, उधर वाणी का प्रयोग हुआ करता था। धीरे-धीरे समय बीतता गया लेकिन मैं ऐसा नही जान सका कि भविष्य में आप इतने ऊँचे पद को प्राप्त करोगे। वर्तमान में हम आपके विषय में कुछ भी कहने योग्य नहीं है। क्योंकि आप महान है और कहने में असमर्थ है।

"जतारा का ध्रुवतारा" नामक पुस्तक का जो सृजन किया गया है। यह प्रयास उच्चकोटि का काम है। इस पुस्तक से आम लोगों को अत्यंत लाभ प्राप्त होगा। हम इसको भविष्य में उज्ज्वल कामना करते है।

इसके लेकख्र श्री कपूरचन्दजी जैन है। बंसलजी सेवानिवृत्त शिक्षक ने जो अथक् प्रयास किया है। उसके लिए हम उनको बहुत-बहुत धन्यवाद और शुभकामनाऐं प्रेषित करते हैं।

नन्दराम नामदेव, से.नि. शिक्षक,

प्रधानपुरा, जतारा, जिला-टीकमगढ़ (म.प्र.)

शुभकामना सन्देश

आदरणीय श्री कपूरचन्दजी बंसल से.नि. प्र.अ. जतारा को मुनि परिचय लिखने का व्यसन है। वे परिचय लिखने में कुशल चितेरे हैं, प्रायः इसी लेखन कार्य में व्यक्त करते हैं।

आपके द्वारा लिखित ***"जतारा का ध्रुवतारा"*** पुस्तक जतारा नगर के गौरव पुंज ऐतिहासिक पुरुष प.पू. आचार्य श्री विमर्शसागरजी महाराज का सजीव कथा चित्रण है।

श्री बंसलजी ने प.पू. आचार्यश्री का पुण्य चरित लिखकर महापुण्य अर्जित किया ही है, समाज को भी पुण्यार्जन का अवसर प्रदान किया है।

मैं, उदार हृदय, मनीषी श्री बंसलजी को प्रस्तुत कृति के लेखन के लिए मंगलकामनायें प्रेषित करता हूँ। भविष्य में उनके द्वारा इसी तरह लोकहितकारी साहित्य सृजन की कामना करता हूँ।

शुभकामनाओं सहित...

हरिश्चन्द्र जैन 'बैदपुर' शास्त्री (एम.ए.)

से.नि. शिक्षक, जतारा

सादर कृतज्ञ

नगर जतारा के लाड़ले श्री राकेश भैया जी के जीवन पर आधारित यह पुस्तक ***"जतारा का ध्रुवतारा"*** राष्ट्र के युवाओं को स्पष्ट संदेश देती है कि तप, संयम और साधना के द्वारा जिस प्रकार आज श्री राकेशजी ने अपने गुरुवर से अपने ज्ञान-कौशल के बल पर आचार्य परमेष्ठी का पद पाया है उसी प्रकार वर्तमान में आज के होनहार धार्मिक नवयुवक भी मोक्ष महल की प्रथम सीढ़ी की ओर बिना किसी शंका के अविरत कदम बढ़ा सकते हैं।

श्री राकेश भैयाजी से आचार्य परमेष्ठी बने परम पूज्य 108 श्री विमर्शसागरजी महाराज के चरणों में कोटि-कोटि नमन करते है एवं उनके जीवन पर आधारित यह बेहद लोकप्रिय पुस्तक लिखने के लिये नगर जतारा के वरिष्ठ साहित्यकार एवं समाजसेवी श्री कपूरचन्द्र जैन 'बंसल' के प्रति सादर कृतज्ञ होकर उन्हें हार्दिक शुभकामनायें देते हैं।

शुभकामनाओं सहित...

प्रकाश जैन 'रोशन' (पत्रकार)

जतारा, जिला–टीकमगढ़ (म.प्र.)

परम पूज्य आचार्य श्री विमर्शसागरजी महाराज के चरणों में शत-शत नमन्

जैन धर्म किसका, जो माने सो उसका :-

सत गुरु सगा न को सगा सोधि सभी न जात्।
हरिजी समान को सगा हरिजन समी न जात्॥

हमारे जतारा नगर में जन्मे श्रद्धेय विमर्शसागरजी के महान् विभूति के रूप में आप संसार में पधारे यह बात हम सभी नगरवासियों के लिये बहुत ही गौरव की बात है। हम कृतज्ञ हो गये है कि आप भगवान स्वरूप हमारे नगर की एक शान हैं।

विद्यार्थी जीवन में, मैं आपके लिये शिक्षक के रूप में भी आपकी सेवा की है। जेसा कि तरुणसागरजी महाराज ने कहा है कि किसी भी प्राणी में जातिगत और जन्मगत भेद तो हो सकता है; परन्तु आत्मगत भेद किसी में नहीं होता है। जैसी महान आत्माओं में आपका नाम भी जुड़ गया है। इसके बदले में मेरे पास केवल नतमस्तक ही है जिसको स्वीकार करने की कृपा करेंगे। साथ ही मैं सभी मानव प्राणीयों से निवेदन और आशा करता हूँ कि इन महान् पुरुषों के पद-चिह्नों पर चलने का प्रयास करें।

आपका चरण सेवक...

डी.पी. चाँवरिया

से.नि. शिक्षक, जतारा, जिला–टीकमगढ़ (म.प्र.)

शुभकामना सन्देश

परम पूज्य आचार्य श्री विमर्शसागरजी महाराज गृहस्थ अवस्था में बचपन में मेरे मित्र सहपाठी रहे है। उनका स्वभाव बहुत सरल मिलनसार रहा है। वह मिष्ठ भाषी भी रहे हैं तथा हर क्षेत्र में चाहे खेल, सामाजिक या धार्मिक कार्य हो सभी में आगे रहते थे। मुझे हार्दिक प्रसन्नता है कि हमारे बचपन के मित्र आज आचार्यश्री जैसे उच्च पद पर प्रतिष्ठित हैं। उनके चरणों में बारम्बार नमन।

नगर जतारा के वरिष्ट साहित्यकार, समाज एवं साहित्य सेवी आदरणीय श्री कपूरचन्दजी बंसल ने परम पूज्य आचार्यश्री के जीवन दर्शन पर जो ***"जतारा का ध्रुवतारा"*** नामक पुस्तक लिखी है उसके लिए वह बधाई एवं प्रशंसा के पात्र है।

पुस्तक सभी के लिए उपयोगी हो। ऐसी हमारी श्री बंसलजी के लिए शुभाकमनाएँ।

शुभकामनाओं सहित...

प्रेमनारायण मिश्रा

जतारा

आचार्य विरागसागर ग्रंथमाला के महत्वपूर्ण प्रकाशन

* **विरागांजलि** (श्रमण एवं श्रावक के लिये आवश्यक भक्ति पाठ संग्रह का सर्वश्रेष्ठ प्रकाशन)
* **आइना (काव्य संग्रह)** (आचार्य श्री विमर्शसागरजी द्वारा रचित कविताओं का महत्वपूर्ण संकलन)
* **ज़ाहिद की ग़ज़लें** (आचार्य श्री विमर्शसागरजी महाराज द्वारा रचित ग़ज़लों का संग्रह एवं आकर्षक सुन्दर प्रकाशन)
* **जीवन है पानी की बूँद (समग्र)** (आचार्य श्री विमर्शसागरजी महाराज द्वारा रचित बहुचर्चित भजन के 1000 छन्दों का संग्रह एवं आकर्षक सुन्दर प्रकाशन)
* **चटपटे प्रश्न-स्वादिष्ट उत्तर** (प्रश्नोत्तर रत्नमालिका एवं अपरा प्रश्नोत्तर रत्नमालिका पर आचार्य श्री विमर्शसागरजी महाराज द्वारा लिखित पहेलियाँ)
* **हिन्दी साहित्य की सन्त परम्परा में आचार्य विरागसागर के कृतित्व का अनुशीलन** (डॉ. लोकेश खरे द्वारा आचार्य श्री विरागसागरजी महाराज के व्यक्तित्व कृतित्व पर पी.एच.डी.)
* **गूँगी चीख** (गर्भपात विषय पर दिया गया आचार्य श्री विमर्शसागरजी महाराज का ऐतिहासिक प्रवचन)
* **शंका की एक रात** (नि:शंकित अंग का हृदय को छू लेने वाला विवेचन एवं सुन्दर आकर्षक प्रकाशन)
* **मानतुंग के मोती** (श्री भक्तामर स्तोत्र पर आधारित प्रश्नोत्तर सहित एवं आचार्यश्री के तीन पद्यानुवाद से सजी-सँवरी विधान एवं शिक्षण शिविरों के लिये उपयोगी कृति)

* **विर्मशांजलि** (आचार्य श्री विमर्शसागरजी द्वारा रचित पूजा, स्तोत्र पद्यानुवाद एवं पूजाओं का सर्वोपयोगी संकलन)
* **सोचता हूँ कभी-कभी** (आचार्य श्री विमर्शसागरजी महाराज द्वारा रचित सुन्दर आकर्षक काव्य संग्रह)
* **समर्पण के स्वर** (आचार्य श्री विमर्शसागरजी द्वारा रचित गुरु चरणों में समर्पित हृदय स्पर्शी काव्य संग्रह)
* **खूबसूरत लाइनें** (आचार्य श्री विमर्शसागरजी द्वारा रचित विभिन्न विषयों पर आधारित हृदय को छूनेवाला काव्य संग्रह)
* **जीवन चलती हुई घड़ी** (आचार्य श्री विमर्शसागरजी द्वारा रचित जीवन है पानी की बूँद तर्ज पर 100 छन्दों का दिल को छू लेने वाला काव्य संग्रह)
* **हे वन्दनीय गुरुवर** (आचार्य श्री विमर्शसागरजी द्वारा रचित भजनों का संग्रह, परम गुरु आचार्य श्री विरागसागरजी मुनिराज के पावन कर कमलों में सादर समर्पित)
* **गीतांजलि** (आचार्य श्री विमर्शसागरी महाराज द्वारा लिखित भजनों का महत्वपूर्ण संकलन एवं सुन्दर आकर्षक प्रकाशन)
* **जनवरी विमर्श** (आचार्य श्री विमर्शसागरजी महाराज द्वारा गहन चिन्तन से उद्‌भूत, दिल और दिमाग को झकझोरने वाला सुंदर सूक्ति संग्रह)
* **शब्द-शब्द अमृत** (आचार्य श्री विमर्शसागरजी के हृदय स्पर्शी एवं चिंतन को नई ऊर्जा देने वाले महत्वपूर्ण प्रवचनांशों का सुंदर एवं आकर्षक प्रकाशन)
* **जैन श्रावक और दीपावली पर्व** (आचार्य श्री विमर्शसागरजी महाराज द्वारा रचित, जैन श्रावकों को दीपावली क्यों और कैसे मनाना चाहिये ? आदि अनेक प्रश्नों का मांगलिक समाधान एवं दीपावली पर्व का सुंदर विवेचन)
* **आओ सीखें जिन स्तोत्र** (आचार्य श्री विमर्शसागरजी द्वारा पद्यानुवादकृत महत्वपूर्ण जिनस्तोत्रों का संग्रह, पठन-पाठन हेतु उपयोगी कृति)

* **भरत जी घर में वैरागी** (आचार्य श्री विमर्शसागरजी द्वारा जैन श्रावकों की जीवनशैली पर दिया गया एक प्रेरणास्पद प्रवचन संग्रह)
* **मेरा प्रेम स्वीकार करो** (आचार्य श्री विमर्शसागरजी महाराज द्वारा रचित प्रभु भक्ति में समर्पित सर्वोपयोगी काव्य संग्रह का सुन्दर आकर्षक प्रकाशन)
* **करलो गुरु गुणगान** (आचार्य श्री विमर्शसागरजी महाराज द्वारा रचित गुरुभक्ति में समर्पित सर्वोपयोगी काव्य संग्रह का सुन्दर, आकर्षक प्रकाशन)
* **व़ाह क्या खूब कही** (आचार्य श्री विमर्शसागरजी महाराज द्वारा रचित सर्वोपयोगी पूजा आकर्षक काव्य संग्रह का प्रकाशन)
* **पुरुषार्थ सिद्ध उपाय अनुशीलन** (राष्ट्रीय विद्वत् संगोष्ठी)आचार्यश्री सान्निध्य में आयोजित देश के मूर्धन विद्वानों की डॉ. सुरेन्द्र भारती के संयोजकत्व में राष्ट्रीय संगोष्ठी के सार गरिभीत आलेखों का सुन्दर प्रकाशन
* **प्रज्ञाशील महामनिषी** (राष्ट्रसंत गणाचार्य श्री विरागसागरजी महाराज के जीवन पर डॉ. अल्पना जैन की सुन्दर कृति)
* **आचार्य विरागसागर विधान** (आचार्य श्री विमर्शसागरजी महाराज द्वारा रचित– गुरुभक्ति में समर्पित सुन्दर कृति)
* **जतारा का ध्रुव तारा** (आचार्य श्री विमर्शसागरजी महाराज की जीवनी)

प्राप्ति स्थान

श्री विमर्श जागृति मंच

C/o श्री सुखानन्द साड़ी सेन्टर

बतासा बाजार, भिण्ड (म.प्र.) • मो.: 9826244355, 9826217291

श्री विमर्श जागृति मंच भिण्ड (रजि.)

के अन्तर्गत

आचार्य विरागसागर ग्रन्थमाला

(रजत मुनिदीक्षा जयन्ती के पावन अवसर पर स्थापित)

उद्देश्य

मूल जिनागम का संरक्षण, प्रकाशन, प्रचार-प्रसार एवं लोकोपयोगी, धार्मिक-नैतिक साहित्य का निर्माण व प्रकाशन

शुभाशीष एवं प्रेरणा

प.पू. श्रमणाचार्य विमर्शसागरजी महाराज

स्थापना ग्रन्थमाला : 09 दिसम्बर, 2007

कार्यालय : **116, भूता कम्पाउण्ड, इटावा रोड, भिण्ड (म.प्र.)**

श्री विमर्श जागृति मंच, प्रकाशन

मुद्रक : राजू ग्राफिक आर्ट, जयपुर • मो.: 9829050791, फोन : 2363339, Email : rajugraphicart@gmail.com